ISSN– 2395-1699

निरयणं दृक्तुल्यञ्च केतकीपक्षसम्मतम्। नैसर्गिकं हि पञ्चाङ्गं भारते भासतां सदा।।

भारतीय शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य निरयण चित्रापक्षीय

नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग

संवत्सर-कालयुक्त

राजा-सूर्य

मन्त्री-सूर्य

विक्रम संवत् - २०८२

शक संवत् - १९४७

कलि संवत् - ५१२६

ईशवीय वर्ष - २०२५-२६

संरक्षक एवं प्रधानसम्पादक - प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

सम्पादक - प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

सह सम्पादक - प्रो. अशोक थपलियाल

प्रकाशक - नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, नई दिल्ली

संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक

प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय

अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग, सङ्काय प्रमुखचर - सं.वि.ध.वि.सङ्काय
काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

सम्पादक एवं गणितकर्त्ता (अवैतनिक)

प्रो० देवीप्रसाद त्रिपाठी

अध्यक्ष-वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि. (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली-110016

प्रबन्ध सम्पादक (अवैतनिक)
प्रो० मीनाक्षी मिश्र
आचार्या शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सह सम्पादक (अवैतनिक)
प्रो० अशोक थपलियाल
आचार्य - वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सम्पादन सहायक (अवैतनिक)
डॉ० देशबन्धु, डॉ० प्रवेश व्यास,
डॉ० योगेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ० दीपक वशिष्ठ,
डॉ० नवीन पाण्डेय, डॉ० अव्यक्त रैणा, श्री मनीष झा

प्रकाशक - नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, RZG-271, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली
मुख्य कार्यालय - 38 मानस नगर कालोनी, वाराणसी-5

प्रकाशन वर्ष - 2025 ई., **पुष्प** - एकादश **मूल्य** - रु. 80/-

पञ्चाङ्ग परिचय

अक्षांश 28°39'N, रेखांश 77°12'E, पलभा 06°33'

भारतवर्ष में सम्प्रति विभिन्न पद्धतियों से पञ्चाङ्ग निर्माण होता है। इनमें तिथ्यादि के मानों में विसंगति के कारण व्रत पर्वोत्सव में भी विसंगतियां दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय में ध्यातव्य है कि हमारे ऋषि-महर्षियों एवं आचार्यों ने सदैव ही दृक्तुल्य गणित का समर्थन किया है। ऋषि वसिष्ठ का कथन है कि-

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ॥

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्षग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त कालभेदानुसार गणित में अन्तर को - **युगानां परिवर्तनेन कालभेदोऽत्र केवलः** कहकर दृक्तुल्यता का ही समर्थन करता है। यथा -

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात् ॥

एवमेव भास्कराचार्य द्वितीय, आचार्य गणेश दैवज्ञ आदि प्रायः सभी सिद्धान्त ज्योतिष के महान आचार्य दृक्तुल्य गणित को ही विवाहादि संस्कारों तथा व्रत-पर्वोत्सवादि कार्यों के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह पञ्चाङ्ग दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकीय ग्रहगणितीय पद्धति पर दिल्ली के अक्षांश एवं रेखांश के अनुसार निर्मित है।

इस पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र, योग और करण के आगे निर्दिष्ट घटी व पल तत्सम्बन्धी तिथ्यादि के सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है। इसी प्रकार तिथि व नक्षत्र के घटी पल के आगे निर्दिष्ट घण्टा मिनट उसके समाप्ति काल को प्रदर्शित करता है। इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त घण्टा व मिनट मान भारतीय स्टैण्डर्ड समय अर्थात् रेडियो टाइम के अनुसार दिये गये हैं। अतः इस पञ्चाङ्ग के समय को भारत में अपनी घडी के अनुरूप मिलाकर समय का अनुपालन कर सकते हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए मान यथासम्भव विशुद्ध देने के प्रयास किए गए हैं। फिर भी यान्त्रिकीय एवं मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। अतः पाठकों से नम्र जी निवेदन है कि वे त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए पञ्चाङ्ग के उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करेंगे। यतः -

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥

- सम्पादक

विषय सूची

मङ्गलवाक्

सर्वविद्या की राजधानी के अधिष्ठाता एवं सभी विद्याओं के गुरु बाबा विश्वनाथ के अनुग्रह से नैसर्गिक शोध संस्था विगत छह वर्षों से नैसर्गिक पञ्चाङ्ग का प्रकाशन करती आ रही है॥ भारतीय पद्धति से दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का निर्माण एवं प्रकाशन नैसर्गिक शोधसंस्था का मुख्य उद्देश्य रहा है। भारतीय दैवज्ञों के सिद्धान्तों का सदैव मैं आदर करता रहा हूँ। इसीलिए आचार्यों के निर्देशानुसार सूर्यसिद्धान्त में अपेक्षित परिष्कारों के साथ उसी सिद्धान्त के अनुसरण का पक्षपाती रहा हूँ। आचार्यों के वचन हमें नित्य नये परिष्कारों के लिए प्रेरित करते हैं-

सौरोऽर्को ऽपि विधूच्चमङ्कलिको नाब्जस्तमस्तवार्यज-
स्तेभ्यः स्याद्ग्रहणादिदृग्समिमियं प्रोक्ता मया सा तिथिः।
ग्राह्या मङ्गलधर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समाऽ-
थापेक्षा यदि चालितोपकरणैस्तत्पक्षजा स्यात्तिथिः ॥

तिथिचिन्तामणि 18

मुझे प्रसन्नता है कि सूर्यसिद्धान्त के परिष्कार सम्बन्धी अनुसन्धान में कई युवा विद्वान कार्यरत हैं। इसी बीच भारतीय शुद्ध पञ्चाङ्गों की आवश्यकता को देखते हुए आचार्य गणेशदैवज्ञ एवं आचार्य केतकर के मार्गों का अनुसरण करते हुए दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का प्रयास किया गया। केतकीय ग्रहगणित सिद्धान्त पर आधारित नैसर्गिक पञ्चाङ्ग शास्त्रसम्मत एवं दृक्तुल्य है। संस्था किसी भी आर्थिक लाभ की दृष्टि से नही अपितु भारतीय विद्याओं के प्रसार एवं संवर्धन हेतु कार्य करती है। इस महनीय कार्य में प्रयास करने के बाद भी कुछ त्रुटियां सम्भव हैं। अतः प्रबुद्ध पाठकगण उनका मार्जन करते हुए अवगत कराने का कष्ट करेंगे ताकि अग्रिम अङ्कों में उनका समुचित समाधान किया जा सके। सहयोग हेतु संस्था सदैव आभारी रहेगी।

मैं इस श्रमसाध्य कार्य के लिए प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने संस्था के लिए निःस्वार्थभाव से अपने व्यस्त क्षणों से समय निकाल कर इस कार्य को पूर्णता तक पहुंचाया। वास्तुशास्त्रविभाग के प्राध्यापकगण के साथ ही संस्था के सभी सदस्यों एवं सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। अन्त में संस्था की ओर से आगामी भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें। नववर्ष देश एवं देशवासियों के लिए सभी प्रकार से सुख एवं सम्मान में वृद्धिकारक हो। शुभमिति।

वसन्त पञ्चमी सं 2081 — **प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय**
नैसर्गिक शोध संस्था, वाराणसी — **संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक**

प्रास्ताविकम्

अथर्ववेद का उपवेद स्थापत्यवेद भवनादि निर्माण कला की अत्यन्त सुप्रसिद्ध प्राचीन विधा है, जो भारतीय वास्तुशास्त्र नाम से जानी जाती है। यह उत्तरवर्ती काल में वास्तुविद्या के नाम से सुविख्यात हुई। इस विद्या का उल्लेख वराहमिहिराचार्य ने बृहत्संहिता में किया है। महाराज भोजदेव ने वास्तुशास्त्र के अङ्ग के रूप में ज्योतिष को स्वीकार किया है-

सामुद्रं गणितञ्चैव ज्योतिषं छन्द एव च।
सिराज्ञानं तथा शिल्पं यन्त्रकर्मविधिस्तथा॥
एतान्यङ्गानि जानीयाद्वास्तुशास्त्रस्य बुद्धिमान्। स.सू. 44/3-04

वस्तुतः वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष अङ्ग अङ्गी के रूप में परस्पर सम्बन्धित तथा एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। अतः वास्तुशास्त्र के अध्येताओं के लिए भी ज्योतिष का अध्ययन आवश्यक है। इसी कारण वास्तुशास्त्र विभाग ने अपने पाठ्यक्रम में ज्योतिष के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को स्थान दिया है। वास्तुशास्त्र में ज्योतिष के मानविधान, मुहूर्त आदि अनेक भागों का उपयोग होता है।

ज्योतिषशास्त्र का मुख्य लक्ष्य घटनाओं का पूर्वानुमान करना है, जो ग्रहों की गति एवं स्थिति के सम्यक् ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है -

ज्योतिः शास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते।
नूनं लग्नबलाश्रितः पुनरयं तत्स्पष्टखेटाश्रयम्॥ सि.शि.गो.प्र.6

इसी ग्रहगणना के सदुद्देश्य से प्राचीन काल से ही पञ्चाङ्ग निर्माण करना ज्योतिर्विदों का प्रमुख कार्य रहा है। सम्प्रति भारतवर्ष में अनेक पद्धतियों के आधार पर पञ्चाङ्ग प्रचलित हैं, परन्तु इन पञ्चाङ्गों के तिथ्यादि मानों में विविधता के कारण व्रत, पर्वोत्सवों में भिन्नता परिलक्षित होती है। हमारे मनीषियों ने सदैव दृक्तुल्यता को व्रतपर्वोत्सवों के आचरण में प्रमाण माना है। आचार्य भास्कर कहते

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या॥ सि.शि.स्प. 1

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकी - ग्रहगणितीय पद्धति के आधार पर नैसर्गिक शोध संस्था द्वारा प्रख्यात ज्योतिर्विद - प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय जी के मार्गनिर्देशन में नैसर्गिक पञ्चाङ्ग प्रकाशित किया जाता रहा है। इस पञ्चाङ्ग के प्रकाशन से न केवल वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, वेद एवं पौरोहित्य के छात्र, अध्यापक एवं जिज्ञासुजन अपितु भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले सामान्य लोग भी लाभान्वित होंगे। अतः मैं इस महनीय कार्य से जुड़े । सभी विद्वानों को साधुवाद देते हुए सुधीजनों के करकमलों में यह ज्ञानपुष्प समर्पित कर अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। शमिति ।

महाशिवरात्रि सं 2081 — **प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी**
नई दिल्ली — **सम्पादक**

संवत्सरादिफलम् 2025-26 ई.

कलियुगाब्द -	5126	ईसवी सन् -	2025 -26
फसली -	1432-33	शालिवाहन शक -	1947
हिजरी -	1446-47	विक्रम संवत् -	2082
सप्तर्षिसंवत् -	5101	महावीरजैननिर्वाणसंवत् -	2550-51
श्रीबुद्धसंवत् -	2648 - 49	भारतीय गणराज्यवर्ष -	75-76

वर्षादिकृत्य –

अब्दादौ प्रातरुत्थाय दन्तधावनपूर्वकम् ।
स्नानं सन्ध्याविधिं कृत्वा वर्णाचारक्रमेण तु ॥
अब्दादौ मित्रसंयुक्तो मङ्गलस्नानमाचरेत् ।
वस्त्रैराभरणैर्देहमलङ्कृत्य ततश्शुचिः ॥
अब्दादौ ग्रहपूजाञ्च पूजाञ्च चिरजीविनाम् ।
मिष्टान्नेन द्विजान् बन्धून् पितृन् सन्तर्पयेत्ततः ॥

वर्षारम्भ के दिन प्रातःकाल में दन्तधावनादि कार्योपरान्त मंगलस्नान करके सन्ध्यादि कृत्य पूरा करने के बाद नववस्त्र धारण करके ग्रहादि का पूजन करना चाहिए। साथ ही बन्धुजन, ब्राह्मण और पितरों को मिष्ठान्नादि से संतृप्त करना चाहिए।

प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद् ध्वजारोपणम् ।
स्नानं मङ्गलमाचरेद् द्विजवरैः सार्धं सुपूजोत्सवम् ॥
देवानां गुरुयोषिताञ्च विभवालङ्कारवस्त्रादिभिः ।
सम्पूज्यो गणकः फलञ्च श्रुणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम् ॥
परिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः ।
सुपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः ॥
मरीचिर्लवणं हिंगुजीरकेण च संयुतम् ।
अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद् रोगशान्तये ॥
यद् वर्षादौ निम्बसुमं शर्कराम्लघृतैर्युतम् ।
भक्षितं पूर्वयामे स्यात् तद्वर्षं सौख्यदायकम् ॥

संवत्सरादि फल श्रवण का माहात्म्य-

राज्यं स्यादचलं नृपश्रवणतो मन्त्रीश्रवात् कौशलम् ।
धान्येशात् कमला स्थिरा च सुरसा वाणी भवेन्मेघपात् ॥
धर्मे बुद्धिरधिष्ठिता रसपतेर्दीर्घायुषत्वं भवेत् ।
सस्येशाद् विमला मतिः शुभकरी वर्षावली श्रूयताम् ॥

वर्षारम्भ में संवत्सर के राजा का फल सुनने से राज्य स्थिर होता है। मंत्री का फल सुनने से कुशलता बढ़ती है। धान्येश का फल श्रवण से लक्ष्मी स्थिर होती है। मेघपति का फल सुनने से वाणी रम्या होती है। रसपति के फल श्रवण से दीर्घायु मिलती है। अतः शुभ एवं कल्याणकारी वत्सरावली का श्रवण करना चाहिए।

संवत्सरादि फलश्रवणविधि-

उदङ्मुखः प्राङ्मुखो वा दैवज्ञस्य तु सन्निधौ ।
विघ्नेशं भारतीं खेटान् दैवज्ञं ब्राह्मणान् गुरून् ॥
सम्पूज्य वत्सरफलं साङ्गोपाङ्गं यथाक्रमम् ।
विकासवदनो भूत्वा ब्रह्मणो जन्मतः फलम् ॥
अब्दाधीशचमूनाथसस्यपानां बलाबले।
तत्कालग्रहचारांश्च सम्यक् ज्ञात्वा फलं लभेत् ॥

दैवज्ञ के समीप में पूर्वमुख या उत्तरमुख होकर गणेश, सरस्वती, नवग्रह, गुरु, ब्राह्मण आदि का पूजन करके सांगोपांग वर्ष का फल सुनना चाहिए।

ब्रह्मायुर्निरूपणम् - श्रीमद्भगवतो विष्णोः नाभिकमलोद्भवस्य ब्रह्मणो ब्राह्ममानेन परमायुः १०० वर्षाणि । ३११०४०००००००००० सौरवर्षाणि ब्रह्मणः परमायुः। ब्रह्मणः जन्मादिगतसौरवर्षाणि १५५५२१९७२९४९१२६ कल्पादितः गतसौरवर्षाणि १९७२९४९१२६ सृष्टयादितः गतवर्षाणि १९५५८८५१२६ अथ ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तविंशतिमहायुगानि व्यतीतानि। अष्टाविंशमहायुगस्य च कृतत्रेताद्वापराख्ययुगचरणत्रयं व्यतीतम्।

कृतयुगवर्णनम् – कार्तिकशुक्लनवम्यां प्रथमयामे श्रवणनक्षत्रे वृद्धियोगे कृतयुगोत्पत्तिः। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् १७२८००० सौरवर्षाणि। अस्मिन् युगे श्रीविष्णोः मत्स्यकच्छपवाराहनृसिंहाः चत्वारोऽवताराः । तत्र पापम् ० पुण्यम् २० ।

त्रेतायुगवर्णनम् - वैशाखशुक्लतृतीयायां द्वितीययामे रोहिणीनक्षत्रे शोभनयोगे त्रेतायुगोत्पत्तिः। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् १२९६००० सौरवर्षाणि। अस्मिन्युगे श्रीविष्णोः वामनपरशुरामरामास्त्रयोवताराः। तत्र पापम् ५ पुण्यम् १५ ।

द्वापरयुगवर्णनम्- माघकृष्णामावस्यायां तृतीययामे धनिष्ठानक्षत्रे वरीयानयोगे द्वापरयुगोत्पत्तिः। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् ८६४००० सौरवर्षाणि। अस्मिन्युगे श्रीविष्णोः श्रीकृष्णबलरामावतारौ, तत्र पापम् १० पुण्यम् १०।

कलियुगवर्णनम् – भाद्रपदकृष्णत्रयोदश्यां निशीथे कृत्तिकानक्षत्रे व्यतीपातयोगे कलियुगोत्पत्तिः, सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् ४,३२,००० सौरवर्षाणि। अस्मिन्युगे श्रीविष्णोः बुद्धाऽवतारोऽभवत्। कलियुगस्य ८२१ वर्षावशेषकाले कल्क्यवतारो भविष्यति। तत्र पापम् १५ पुण्यम् ५। सम्प्रति कलेः ५१२४ सौरवर्षाणि गतानि। भोग्यवर्षाणि ४२६८७६ कलिसम्वत् ५१२५।

बार्हस्पत्यवर्षफलम् – तत्र बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्ट्यब्दानां मध्ये चैत्रशुक्लप्रतिपदि कालयुक्त नाम संवत्सरः। तस्य गतमासादयः 11/00/05/24, भोग्यमासादयः 00/29/54/36।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सिद्धार्थ नाम का संवत्सर है। वर्षारम्भ में होने के कारण वर्षान्तपर्यन्त सिद्धार्थ संवत्सर का प्रयोग संकल्पादि में किया जाएगा। सिद्धार्थ संवत्सर का फल इस प्रकार है –

तोयपूर्णो भवेन्मेघो बहुसस्या वसुन्धरा।
सुखिनः पार्थिवाः सर्वे सिद्धार्थे श्रृणु सुन्दरी॥

अर्थात् सिद्धार्थ नामक संवत्सर में मेघ जल पूर्ण रहेंगे, पृथ्वी सस्ययुक्त रहेगी। अन्न का उत्पादन अधिक होगा तथा राजा लोग सुखी रहेंगे। इस सम्वत्सर के स्वामी सूर्य है। इसमें सुभिक्ष की स्थिति रहती है। चैत्र-वैशाख में लोगों को पीड़ा रहती है। ज्येष्ठ-आषाढ़ में प्रचण्ड वायु प्रवाहित होती है। श्रावण में 3 दिन अतिवृष्टि की संभावना होती है। वर्ष में सभी प्रकार के अन्न महँगे होते हैं। भाद्रपद माह में खण्डवृष्टि की स्थिति रहती है। आश्विन में अन्न का भाव एक समान रहता है। कार्तिक में अन्न का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है, अन्न सस्ता रहता है। मार्गशीर्ष से 4 महीने के भीतर कहीं-कहीं राजाओं में विरोध होता है। यथोक्तम् -

सिद्धार्थः ५३, रविः स्वामी, सुभिक्षम्, चैत्रे वैशाखे लोकपीड़ा, ज्येष्ठाषाढयोः उद्दंडवायुः, श्रावणे दिनत्रयं महावर्षा, सर्वान्नमहर्घता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, आश्विने अन्नसमता, कार्तिके धान्यनिष्पत्तिर्बहुला, अन्नसमर्घता, मार्गादिमासचतुष्टये ४ क्वचिद्राजविरोधः॥

वर्षेश सूर्य का फल -

चैत्र -शुक्ल प्रतिपदा को रविवार होने के कारण वर्ष का राजा सूर्य है। यदि वर्ष का राजा सूर्य हो तो अल्प वर्षा होती है, अन्न तथा फल का उत्पादन कम होता है। गायें अल्प मात्रा में दूध प्रदान करती है। जनता को पीड़ा रहती है। चोर तथा अग्नि का भय रहता है तथा राजाओं का मरण होता है। यथोक्तम्-

सूर्ये नृपे स्वल्पजलाश्च मेघाः स्वल्पं धान्यमल्पफलाश्चवृक्षाः।
स्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीडा चौराग्निबाधा निधनं नृपाणम्॥

सूर्य के वर्षेश होने के कारण समय का वाहन अश्व है। अतः इस वर्ष में भूकम्पादि उत्पात, महाभय की स्थिति, राजाओं से युद्ध तथा वर्षा की कमी होती है। यथोक्तम्-

अश्वारूढो वत्सरश्च भूमिकम्पो महाभयम्।
राजानो विग्रहं याति वृष्टिनाशो महर्घता॥

मन्त्री सूर्य का फल-

संवत् का मन्त्री सूर्य होने पर जनता को राजा, रोग तथा चोरों से भय रहता है। पृथ्वी पर प्रचुर मात्रा में अन्न का उत्पादन होता है तता रसपदार्थ सस्ते होते हैं। यथोक्तम्-

नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात्प्रचुरधान्यधनानि महीतले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः॥

सस्येश बुध का फल-

संवत् का सस्येश बुध होने पर मेघ अत्यधिक वर्षा करते हैं। जनता सुख तथा समृद्धि से युक्त रहती हैं। किसी भी प्रकार के उपद्रव की सम्भावना अत्यन्त न्यून होती हैं तथा द्विज लोग शान्तिपूर्वक विविध प्रकार के अनुष्ठानों का सम्पादन करते हैं। यथोक्तम्-

जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम्।
द्विजगणः स्तुतिपाठकरः सदा प्रथमसस्यपतौ सति बोधने॥

धान्येश चन्द्र का फल-

संवत् का धान्येश चन्द्र होने पर पृथ्वी जल से परिपूर्ण रहती हैं। सभी फसलों में वृद्धि होती है तथा संसार में विविध प्रकार के उत्सव होते हैं। यथोक्तम्-

चन्द्रे धान्याधिपे जाते तोयपूर्णा वसुन्धरा।
वर्द्धन्ते सर्वसस्यानि राजते विविधोत्सवैः॥

रसेश शुक्र का फल-

संवत् का रसेश शुक्र होने पर अच्छी वृष्टि से जनता प्रसन्न होती हैं। सुख-समृद्धि सम्पन्न तथा शासक लोग जनता के पालन में तत्पर रहते हैं। यथोक्तम्-

भृगुसुते रसनायकतां गते जनपदा जलतोषितमानसाः।
सुखसुभिक्षप्रमोदवती धरा धरणिपा नरपालनतत्पराः॥

नीरसेश बुध का फल –

इस संवत् में नीरसेश बुध है । यदि नीरसेश बुध हो तो चित्र, वस्त्र, शंख तथा चन्दनादि का मूल्य महँगा होता है । यथोक्तम्-

चित्रवस्त्रादिकं चैव शंखचन्दनपूर्वकम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि ॥

मेघेश सूर्य का फल -

इस वर्ष में मेघेश सूर्य है । मेघेश सूर्य होने पर मेघों द्वारा अत्यल्प वर्षा होती है । स्वल्प अन्न का उत्पादन होता है तथा संसार में भय व्याप्त रहता है। यथोक्तम्-

रवौ मेघाधिपे जाते स्वल्पतोयप्रदा घनाः।
स्वल्पं धान्यं भवेल्लोके भयं च भूतले सदा॥

दुर्गेश शनि का फल –

इस संवत् में दुर्गेश शनि है । यदि दुर्गेश शनि हो तो सभी देशों में विग्रह की स्थिति रहती है तथा लोगों में अत्यन्त व्यग्रता रहती हैं। नागरिकों में परस्पर वैरभाव होता है तथा वर्ष भर कृषि पदार्थों का अभाव रहता है। यथोक्तम्-

रविसुते गढपालिनि विग्रहो सकलदेशगताश्चलिता जनाः।
विविधवैरिविशेषितनागराः कृषिधनं न लभेद्भुवि कश्चन ॥

धनेश मंगल का फल –

इस संवत् में धनेश मंगल है । मंगल के धनेश होने पर काले रंग के पदार्थों के मूल्य में अत्यधिक वृद्धि होती है । शरद् ऋतु में सूखा पड़ता है तथा भूसी वाले अन्नों का नाश होता है। सभी देशों के लोग अशान्त रहते हैं तथा शासक वर्ग जनता को कष्ट देने वाला होता है। यथोक्तम् –

असित मौल्यकरो धरणीसुतः शरदि ताम्रकरस्तुषधान्यहृत् ।
सकलदेशगताश्चलिता नरा नरपतिर्जनशोकविधायकः॥

फलेश शनि का फल –

इस संवत् में फलेश शनि है । यदि फलेश शनि हो तो उस वर्ष में फल-पुष्प तथा वृक्षों को लेकर के लोगों में लड़ाई-झगड़ों की स्थिति रहती है।मनुष्यों तथा चोरों के द्वारा द्विजातियों को कष्ट प्राप्त होता है। विविध जनपदों में जनसमूह व्याकुल रहता है। यथोक्तम्-

यदि शनिः फलपः कलहो भवेज्जनितपुष्पगणास्तरवः सदा।
द्विजभयं नरतस्करजं तदा जनपदा जनराशिसमाकुला॥

रोहिणी तथा संवत्सरवास –

वर्तमान संवत् में रोहिणी का वास समुद्र में है और संवत्सर का वास मालाकार के गृह में है । **समुद्रे तु महावृष्टिः** के अनुसार यदि रोहिणी का वास समुद्र में हो तो उस वर्ष में अत्यधिक वृष्टि होती है और संवत्सर का वास मालाकार के गृह में होने पर सभी वस्तुएं सस्ती होती है। यथोक्तम् -

सर्ववस्तुसमर्घं स्यान्मालाकारगृहेऽब्दके ॥

सूर्यस्यार्द्रानक्षत्रे प्रवेशकालविचारः-

प्रवेशकाले यदि रौद्रभस्य वृष्टिर्भवेदीतिरनर्घता च ।
शेषेषु पादत्रितयेषु भीतिरत्यल्पवृष्टिर्महती गदाश्च ॥

आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करते समय यदि वर्षा होती है तो अनर्घता अर्थात् मंदी जानना चाहिए । आर्द्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में वृष्टि होने पर भय, तृतीय चरण में अत्यल्प वृष्टि तथा चतुर्थ चरण में भयंकर रोगो की सम्भावना बनती है ।

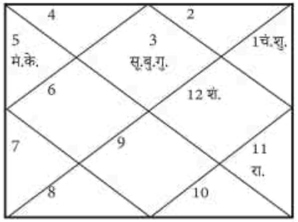
आर्द्राप्रवेशे वृष्टिश्चेद्दिवा यदि वा निशि ।
स्तोकवृष्टिरनर्घत्वमवृष्टौ सस्यसम्पदः॥
आर्द्रायाः प्रथमे पादे यदि वर्षति वासवः।
तुषारमल्पवृष्टिः स्यादित्येव केचिदूचिरे ॥
सूर्ये मेषगते वृष्टिरार्द्रायाश्चाद्यपादके ।
एकादशसु ऋक्षेषु त्रिपक्षे वृष्टिनाशनम् ॥

विक्रमसंवत् 2082 शाके 1947 आषाढ़मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां शुभतिथौ रविवासरे सुकर्मायोगे चन्द्रस्य भरणीनक्षत्रे बालवकरणे मार्तण्डमण्डलोदयादिष्टकालः 00/49/00 मिथुनलग्ने सूर्यस्यार्द्रानक्षत्रे प्रवेशः। यथा -

त्रयोदशी-तिथिफलम्	-	जलप्लवम्।
रविवासरफलम्	-	पशुनाशनम्।
भरणीनक्षत्रफलम्	-	अशुभं प्रोक्तम् ।

आर्द्राप्रवेशस्य फलम् –

॥ अथार्कस्यार्द्राप्रवेशकालिककुण्डली ॥



सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश का समय प्रातःकाल 06 बजकर 17 मि. पर होगा, जिसके अनुसार आर्द्रा प्रवेश लग्न मिथुन है । उषाकाल के समय सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश होने पर संसार में विपत्ति की संभावना होती है। यथोक्तम्-

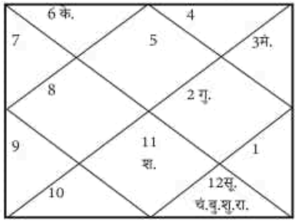
उषस्यकालो जगतो विपत्तिः

आर्द्रा प्रेवश का लग्न मिथुन है । सूर्य, बुध तथा गुरु की स्थिति लग्न में ही है। केन्द्र तथा त्रिकोण भावों में चन्द्रमा तथा अन्य शुभग्रहों की स्थिति भी नहीं है। चन्द्रमा की स्थिति जलचर राशि में नहीं है । अतः ये सब ग्रहस्थिति वर्षा में न्यूनता की द्योतक है । यद्यपि चन्द्रमा के साथ शुक्र की स्थिति तथा लग्न में शुभग्रह बृहस्पति तथा बुध की स्वराशि मिथुन में स्थिति मध्यम वर्षा की द्योतक है। शनि की स्थिति जलचर राशि मीन में है तथा राहु भी जलचर राशि कुम्भ में है । जलचर राशि कुम्भ तथा मीन पर मंगल की दृष्टि भी वर्षा की अल्पता की सूचक है । उपरोक्त ग्रहस्थिति के अनुसार मध्यम से थोड़ी कम वर्षा की सम्भावना है क्योंकि लग्नस्थ मिथुन जलचरराशि नहीं है तथा लग्नेश की स्थिति भी जलचरराशि में नहीं है । पाप ग्रहों शनि तथा राहु की स्थिति जलचर राशि में होने के कारण तथा मंगल की दृष्टि जलचर राशि कुम्भ तथा मीन पर होने से वर्षा की न्यूनता द्योतित होती है । अतः उपरोक्त ग्रह स्थिति के अनुसार इस वर्ष में मध्यम से अल्प वृष्टि की सम्भावना है ।

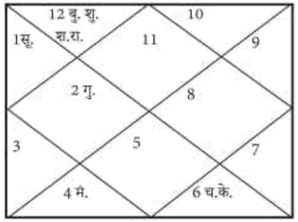
नवमेघों में से इस वर्ष नील नाम का मेघ है **नीलः क्षिप्रं तु वर्षति** के अनुसार शीघ्र-शीघ्र वर्षा की सम्भावना है । चतुर्मेघों में से संवर्त नाम का मेघ है और **संवर्तो जलपूरितः** के अनुसार संवर्त नामक मेघ में जलपूर्णता रहती है । द्वादश मेघों में से **वासुकि** नाम का मेघ है । **वासुकी सस्यकर्ता च बहुवृष्टिकरः शुभः** के अनुसार वासुकि मेघ होने पर वर्षा की अधिकता रहती है तथा अत्यधिक कृषि होती है। अतः पूर्ववर्णित मेघों और आर्द्रा प्रवेश कुण्डली की ग्रहस्थिति के अध्ययन के आधार पर वृष्टि के योगो की मिश्रित स्थिति है, परन्तु शुभग्रहों की जलचरराशि में स्थिति ना होने के कारण तथा पाप ग्रहों की जलचरराशि पर दृष्टि तथा स्थिति होने के कारण मध्यम से थोड़ी न्यून वृष्टि की सम्भावना है । इस सम्पूर्ण विश्लेषण के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि देश में कुछ स्थानों पर मध्यमवृष्टि तथा कुछ स्थानों पर वर्षा की न्यूनता रहेगी विशेष रूप से देश के दक्षिण-पश्चिम भागों में वर्षा की न्यूनता की संभावना है तथा पूर्वी भागों में वर्षा की अच्छी स्थिति बन सकती है तथा पर्वतीय क्षेत्रों में बादल फटने की घटनाओं तथा भूस्खलन की सम्भावना है। जिसके कारण व्यापक जन-धन की हानि होने की प्रबल सम्भावना है ।

कालयुक्त नामक विक्रम संवत्सर 2082 का प्रवेश 29 मार्च 2025 ई. शनिवार को रात्रि 16 बज कर 33 मिनट पर नई दिल्ली के इष्टकालानुसार – 25 घ. 37 प. 30 विप. पर उत्तराभाद्रपद नक्षत्र , ब्रह्म योग, नाग करण, और मीनस्थ चन्द्र के समय में सिंह लग्न में होगा

॥ अथ वर्षप्रवेशकालिककुण्डली ॥



॥ अथ जगल्लग्नकुण्डली ॥



वसन्त नवरात्रारम्भ 30 मार्च 2025 ई. चैत्र मास 17 प्रविष्टे ,रविवार को प्रातःकाल , रेवती नक्षत्र, ऐन्द्र योग,बव करण में होगा । नवरात्र के प्रथम दिन किसी योग्य विद्वान द्वारा विधिपूर्वक घटस्थापन संवत्सरपूजन एवं श्रीगणेश, विष्णु, शिव व देवी दुर्गा के पूजन करने का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य प्रतिपादित है । इस दिन सम्पूर्ण अग्रिम संवत्सर के मंगलमय यापन हेतु विद्वान ब्राह्मणों का विधिपूर्वक पूजन एवं सम्मान कर, उन्हे विविध प्रकार के दानों से सन्तुष्ट एवं प्रसन्न कर नानाविध फलों एवं मिठाईयों आदि का भोजन करवाकर , उनके मुखारविन्द से परिवार के समस्त सदस्यों को संवत् का नाम, संवत् का वास, राजा, मंत्री आदि का फल श्रवण करने का विधान भी शास्त्रों में उल्लिखित है। जो बुद्धिमान व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को संवत्सर का पवित्र फल सुनता है ,वह बहुत धन वाला होता है तथा वर्ष भर के लिए उसके शरीर की समस्त पीड़ाएं समाप्त हो जाती है । इस संवत्सर का राजा सूर्य और मंत्री सूर्य है ।

वर्ष में सस्येश और नीरसेश का पद बुध के पास है। धान्येश का दायित्व चन्द्रमा के पास है और धनेश का दायित्व मंगल के पास है। रसेश शुक्र है । मेघेश का दायित्व सूर्य के पास है। दुर्गेश और फलेश का दायित्व शनि के पास है। इस वर्ष के दायित्वों में से सर्वाधिक प्रमुख दायित्व राजा तथा मन्त्री दोनों ही सूर्य के पास है। इसके अतिरिक्त शुभ ग्रह बृहस्पति के पास कोई भी दायित्व नहीं है। शुभ ग्रह शुक्र के पास केवल एक रसेश का ही दायित्व है । इसके अतिरिक्त पाप ग्रह शनि के पास फलेश तथा दुर्गेश का दायित्व, मंगल के पास धनेश का दायित्व तथा सूर्य के पास मेघेश का दायित्व है। इस प्रकार से इस वर्ष में ग्रहों की आकाशीय परिषद् के 10 पदाधिकारियों में से अतिविशिष्ट महत्त्वपूर्ण दायित्व राजा, मन्त्री तथा मेघेश का दायित्व अति क्रूर सूर्य के पास है। फलेश तथा दुर्गेश का दायित्व पापी ग्रह शनि के पास और धनेश का दायित्व पापी ग्रह मंगल के पास है। इस प्रकार 10 में से 6 महत्त्वपूर्ण दायित्व पाप ग्रहों के पास है, जो इस वर्ष में विविध प्रकार के उपद्रवों का सूचक है । राजा,मन्त्री तथा मेघेश आदि दायित्व सूर्य के पास होने के कारण जन समुदाय में क्रोध,उत्तेजना,उग्रता आदि के कारण समाज में विविध प्रकार के उपद्रव आदि की सम्भावना है। समाज के अपराधी वर्ग में राज-भय व्याप्त रहेगा। सरकार की कठोर नीतियों के कारण समाज के कुछ वर्गों में असन्तोष तथा विक्षोभ के कारण आन्दोलन की स्थिति रहेगी। वर्षप्रवेश कालिक कुण्डली में अष्टम भाव में सूर्य,चन्द्र,बुध,शुक्र,राहु की स्थिति विश्व में तनावपूर्ण वातावरण की सूचक है। सूर्य वर्षलग्नेश होकर अष्टमगत है तथा शुक्र-राहु की मीन राशि में स्थिति पशुओं तथा जनता के पीड़ित होने की सूचक है। इस वर्ष आम जनसमूह विविध प्रकार के रोगों, उपद्रवों, प्राकृतिक उत्पातों आदि के कारण असन्तुष्ट रहेगा। दशम भाव में बृहस्पति वृष राशि में स्थिति विविध प्रकार के वस्त्रों में महँगाई की सूचक है। मीन राशि में पंचग्रही योग पृथ्वी पर विविध प्रकार के रक्त-पात की सम्भावना का सूचक है। केवल मनुष्य ही नहीं अपितु पशुओं के भी नाश की सम्भावना है , जिसका मुख्य कारण विश्व के विविध राष्ट्रों में पारस्पिक संघर्ष होगा । विविध प्रकार के शस्त्रों के प्रयोग के कारण तथा विविध प्रकार के रोगों के कारण , अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि की घटनाओं के कारण इस वर्ष पृथ्वी पर मनुष्यों तथा पशुओं के नाश की सम्भावना हैं । विश्व के विविध राष्ट्रों में पारस्परिक विश्वास में कमी रहेगी तथा विश्व के कई पड़ोसी राष्ट्रों में परस्पर युद्ध की स्थिति बनी रहेगी । शनि की कुम्भ राशि में स्थिति गोदावरी तीर पर दुर्भिक्षकारक है तथा पृथ्वी पर विविध रोगों की वृद्धि के कारण उत्पातकारक है। तद्यथा-

शनौ गते कुम्भराशौ दुर्भिक्षं गौतमीतटे ।
उपद्रवो भवेद्भूमौ बहुरोगो महीतले ॥

लग्न का स्वामी सूर्य अष्टम भाव में मित्र राशि में स्थित होने के कारण तथा विविध प्रकार के ग्रहों की युति के कारण देश की राजनीति में अप्रत्याशित घटनाक्रम की संभावना है, जिसके कारण देश के शीर्ष नेतृत्व तथा मंत्रिमण्डल में कुछ बड़ा बदलाव भी संभव हो सकता है। दशम भाव में बृहस्पति की स्थिति राष्ट्र के लिए उन्नतिकारक होगी तथा देश के नेताओं तथा बुद्धिजीवियों के माध्यम से भारत का वर्चस्व विश्व भर में बढ़ेगा । बृहस्पति की वृष राशि में स्थिति वर्ष में अल्पवृष्टि की द्योतक है । जनता में विग्रह तथा अराजकता की स्थिति रहेगी तथा जनता विविध प्रकार से पीड़ित रहेगी। तद्यथा-

वृषे गुरौ स्वल्पवृष्टिश्च प्रजापीड़ा च विग्रहः ॥

मीन राशि में राहु की स्थिति पशुओं के लिए अरिष्टकारक है । किसी रोग विशेष के कारण पशुओं का नाश सम्भावित है । इसी प्रकार से शुक्र की मीन राशि में स्थिति भी प्रजा के लिए अरिष्टकारी है । शनि के स्वराशि में स्थिति देश की आर्थिक सुदृढता की सूचक है । राष्ट्रीय धन में वृद्धि की सम्भावना है । देश में यातायात के साधनों तथा सड़क, रेल, वायुयानादि के निर्माण में द्रुतगति से कार्यवृद्धि होगी । देश में खेल, सिनेमा ,शिक्षा के क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित होंगे । भारत की प्रतिष्ठा विश्व भर में बढ़ेगी । देश में शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये संस्थानों की स्थापना होगी तथा शोध के क्षेत्र में भारत नयी सफलताएं प्राप्त करेगा । भारत के विरोधी राष्ट्र भारत की बढ़ती शक्ति के आगे पस्त दृष्टिगोचर होंगे । विश्व की विविध समस्याओं के समाधान में भारत की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेगी । भारत के शत्रु राष्ट्र भारत की शक्ति का लोहा मानेंगे । भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री आदि की भूमिका विश्व में महत्त्वपूर्ण रहेगी । देश की सरकार विविध प्रकार के सशक्त निर्णय लेते हुए देश को अग्रणी राष्ट्रों की श्रेणी में लेकर आएगी । यद्यपि देश में कुछ वर्ग सरकार की कार्य प्रणाली से असंतुष्ट होकर आन्दोलन आदि भी करेंगे तथा कुछ पड़ोसी राष्ट्रों के साथ संघर्ष की स्थिति बनने की सम्भावनाएं भी इस वर्ष में रहेंगी । इस वर्ष में जनमानस में विविध प्रकार के मानसिक रोगों में वृद्धि हो सकती है । अवसाद, असंतोष आदि के कारण आत्महत्या अथवा विविध प्रकार के अपराधों में वृद्धि हो सकती है । बृहस्पति की दशम भाव में स्थिति ग्रन्थकार, लेखक, बुद्धिजीवी वर्ग, व्यापारी वर्ग, शिक्षक वर्ग, छात्र वर्ग, धर्मगुरुओं आदि के उन्नयन की सूचक है। आम जनमानस की धर्म में आस्था प्रबल होगी तथा देश में धार्मिक वातावरण की स्थिति रहेगी । लोगों की संतो, सन्यासियों, साधुयों तथा विद्वजनों के प्रति आस्था तथा विश्वास में वृद्धि होगी । देश की राजनीति में धर्म तथा आध्यात्म का प्रभाव भी बढ़ेगा । शासक वर्ग तथा नेता लोग धर्म-गुरुओं के शरणागत रहेंगे । प्राचीन मन्दिरों के जीर्णोद्धार की ओर सरकार का विशेष ध्यान रहेगा तथा कुछ भव्य मन्दिरों के निर्माण में भी गति आएगी । संस्कृत भाषा तथा शास्त्रों के अध्ययन में आम जन की रुचि बढेगी। सर्वकार पक्ष से भी

संस्कृत संरक्षण,शास्त्र संरक्षण तथा विविध प्रकार की कलाओं के संरक्षण तथा संवर्धन में विशेष प्रयास किये जाएंगे , जिससे विश्व भर में भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी ।

शनि साढेसाती एवं ढैय्याविचार

अथ गोचरवशाच्छनेः पादविचारः –

जन्मांगरुद्रेषु(1,6,11) सुवर्णपादं द्विपंचनन्दैः (2,5,9) रजतस्य पादम् ।
त्रिसप्तदिक्ताम्रपदं (3,7,10) वदन्ति वेदाष्टचार्कष्विह (4,8,12) लौहपादम् ॥

शनेः पादफलम्-

लोहे वित्तविनाशःस्यात्सर्वसौख्यं च कांचने ।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेत् ॥

इदानीं शनिः मीनराशौ संचरति, वर्षान्तं यावत् मीनराशावेव संचरिष्यति अतः येषां कुम्भमीनमेषराशिर्वा वर्तते ते जनाः शनेः सार्धसप्ताब्दतः(साढेसाती) प्रभाविताः भविष्यन्ति अथ च येषां सिंहराशिर्धनुराशिर्वा वर्तते ते जनाः सार्धद्व्याब्दतः (ढैया) प्रभाविताः भविष्यन्ति । पादविचारः - 30-03-2025 तमे दिनाङ्के शनेः प्रवेशः मीनराशौ भवति । तस्मिन् दिवसे चन्द्रस्य स्थितिरपि मीनराशौ भविष्यति अतः तदा आरभ्य वर्षान्तं यावत् मेषस्य लौहपादः, वृषस्य सुवर्णपादः,मिथुनस्य ताम्रपादः,कर्कस्य रजतपादः,सिंहस्य लौहपादः, कन्यायाः ताम्रपादः, तुलायाः सुवर्णपादः, वृश्चिकस्य रजतपादः, धनोः लौहपादः , मकरस्य ताम्रपादः, कुम्भस्य रजतपादः, मीनस्य सुवर्णपादो भविष्यति ।

शनिशान्त्यर्थमुपायाः - शनेः बीजमन्त्रादीनां जपः, शनिस्तोत्रस्य पाठः,अश्वत्थवृक्षस्य मूले तिलमाषादिमिश्रितजलदानं सायंकाले च दीपदानं, महामृत्युंजयजपः, शिवोपासना, हनुमदुपासना, सुन्दरकाण्डादिकानां पाठः, पक्षिणां कृते अन्नादिदानम्, सदक्षिणां लौहपात्रस्य दानम्, दरिद्र-कुष्ठादिरोगार्तानां कृते भोजनवस्त्रादिदानम्,तुलादानम्, माषादिवस्तूनां दानम्, वृद्धजनानां परिचर्यादिकम्। भौतिकोपचारेषु शनिवासरे अमावस्यायां वा लौहमुद्रिकायाः धारणम्। शनेःदानपदार्थाः- नीलमणिः,सुवर्णः, लौहः, माषः, कुलथः, तैलम्, कृष्णवस्त्रम्, कस्तूरिका, कृष्णपुष्पम्, कृष्णांगमहिषः, उपानहौ च। दानसमयः- मध्याह्नकालः । जपमन्त्रः- ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः। जपसंख्या- 23000, बीजमन्त्रः- ॐ शं शनैश्चराय नमः। हवनसमिधा- कुशा इति ज्ञेयम्। शनिस्तुतिः- कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः रुद्रः रौद्रान्तको यमः। सौरिःशनैश्चरो मन्दः पिप्लादेन संस्तुतः। एवं ध्यात्वा शनेः पीडा शमं याति न संशयः।

डॉ. देशबन्धुः
सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभाग
श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय,नई दिल्ली।

वार्षिक राशिफल विक्रम सम्वत -2082, सन् - 2025-26

मेष राशि (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

अप्रैल -

इस माह आर्थिक लाभ होने की संभावना दिखाई दे रही है लेकिन इस अवधि में व्यर्थ खर्च करने से बचें। आपके पिता को किसी गंभीर समस्या का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए सावधान रहें। इस माह मानसिक तनाव अधिक होने की वजह से व्यावसायिक जीवन में आप थकान और परेशानी महसूस करेंगे। इस दौरान वरिष्ठों के साथ कुछ मतभेद हो सकते हैं, जिन्हें सुलझाने की आवश्यकता होगी वरना इस कारण से कार्यस्थल पर आपकी एकाग्रता भंग होगी। अपने काम में गुणवत्ता लाने के लिए आप अधिक से अधिक प्रयास करेंगे। इस माह आप ज्यादा प्रसन्न नहीं रहेंगे, इसलिए बीती हुई बातों को याद ना करें और आराम करें। क्योंकि ज्यादा सोचने और निराश होने से आपके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है। इस माह वैवाहिक जीवन के भी सुखद और समृद्ध रहने की पूरी संभावना है। आप जीवनसाथी के साथ बहुत ही अच्छे पल व्यतीत करेंगे। इस मास 6, 7, 16, 17, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मई -

इस माह आपके पिता को सेहत संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए उनकी खास देखभाल करें। जरा सी लापरवाही उनके स्वास्थ्य के लिए घातक साबित हो सकती है। यदि बात करें आपकी प्रोफेशनल लाइफ की तो, इस माह सीनियर्स के साथ कुछ परेशानियां हो सकती हैं। सहकर्मियों की वजह से उच्च अधिकारियों के साथ भी विवाद की स्थिति बन सकती है। इसलिए ऑफिस में बेकार की बातें करने से बचें। इस माह अपने कार्यक्षेत्र में होने वाली परेशानियों का आपके व्यक्तिगत जीवन पर बुरा असर पड़ेगा। समझदारी से काम लेने की वजह से सब कुछ ठीक हो जाएगा। इस महीने मेडिकल संबंधी खर्च अधिक होने की वजह से आपका बजट बिगड़ सकता है। हालांकि इस माह आपकी सेहत बहुत अच्छी रहने वाली है लेकिन फिर भी स्वास्थ्य को लेकर कोई लापरवाही नहीं बरतें। आपका रुझान आध्यात्मिकता और रहस्यमयी विज्ञान जैसे विषयों की ओर बढ़ेगा। इस मास 3, 4, 5, 13, 14, 15, 23, 24, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जून -

यह महीना आपके लिए बहुत ही सकारात्मक और अच्छा रहने वाला है। इस माह आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और आप अपने सभी अधूरे कार्यों को पूर्ण कर लेंगे। आपको लगातार सफलता मिलेगी और कठिन परिश्रम से उत्तम फल की प्राप्ति होगी। इस माह आध्यात्मिक चिंतन को लेकर आपकी रुचि बढ़ेगी। महीने के उत्तरार्ध में व्यक्तिगत जीवन में सुधार होगा। इस दौरान सभी तरह की चिंताएं खत्म होंगी और परिजनों से स्नेह और सहयोग मिलेगा, विशेषकर परिवार के बड़े लोगों से। इस माह आपकी आर्थिक स्थिति तो ठीक रहेगी लेकिन आपको खर्चों पर नियंत्रण रखना होगा, इसलिए बेवजह खर्च ना करें। आमदनी के नए साधन मिलने से पारिवारिक आय में बढ़ोत्तरी होगी। इसके अलावा कुछ लोगों का कानूनी मामलों का भी सामना करना पड़ सकता है । अपनी व्यस्त दिनचर्या से कुछ समय

निकालकर योग करें। यह आपकी सेहत के लिए अत्यंत लाभकारी रहेगा। इस मास 1, 9, 10, 11, 19, 20, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जुलाई -

आर्थिक पक्ष से भी यह महीना आपके लिए अच्छा नहीं होगा। अचानक कोई आर्थिक नुकसान होने की वजह से वित्तीय स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है। इस अवधि में पैसा उधार देने और उधार लेने से बचें। इस माह आप को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। सेहत पर खासतौर से ध्यान देने की ज़रुरत होगी। इस दौरान कुछ लोग हृदय और पेट से संबंधी बीमारी से परेशान रह सकते हैं। जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं दिखाई दे रहा है, इसलिए स्वास्थ्य को लेकर सावधान रहें। घर में या बाहर रहते हुए किसी प्रकार की शीघ्रता ना करें, यही आपके लिए बेहतर होगा। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें, क्योंकि दुर्घटना की आशंका नज़र आ रही है। इन सबके अलावा आपके पारिवारिक जीवन में तनाव बढ़ सकता है। इस दौरान गलतफहमी की वजह से विवाद की संभावना है, विशेषकर घर की महिलाओं से रिश्ते प्रभावित हो सकते हैं। कार्यक्षेत्र में भी काम की अधिकता की वजह से आप व्यस्त और तनाव में रहेंगे। इस मास 6, 7, 8, 16, 17, 24, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अगस्त -

इस महीने में आपको व्यक्तिगत जीवन में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। संतुलन की कमी की वजह से स्थिति और भी बिगड़ सकती है, इसलिए कार्यक्षेत्र और व्यक्तिगत जीवन में खुशियों के लिए शांति और संतुलन बनाकर चलें। आर्थिक रूप से यह महीना आपके लिए समृद्धशाली रहेगा और इस दौरान आपको अचानक कोई वित्तीय लाभ हो सकता है। पारिवारिक व्यवसाय भी अच्छे से चलता रहेगा और आमदनी बढ़ेगी। वहीं दूसरी ओर व्यावसायिक साझेदार से कुछ मामूली परेशानी हो सकती हैं, लेकिन यदि कुशलता के साथ काम लेंगे तो ये परेशानी आसानी से हल हो जाएगी। इस माह आमदनी अच्छी रहेगी लेकिन जीवन में खुशियों का अभाव रहेगा। विवाहित जातकों के लिए भी समय अच्छा नहीं है। वैवाहिक जीवन में कुछ बड़े समस्याएं आ सकती हैं, जिन्हें बहुत ही नरमी के साथ हल करने की कोशिश करनी होगी अन्यथा आपको कानूनी मामलों का भी सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह अच्छा रहने वाला है। इस मास 3, 4, 12, 13, 21, 22, 30, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

सितम्बर -

आर्थिक लिहाज से यह महीना आपके लिए सामान्य रहने वाला है। इस अवधि में यदि आप कोई बड़ा निवेश करने के बारे में सोच रहे हैं तो रुक जाएं। क्योंकि यह समय इस काम के लिए उपयुक्त नहीं है। इस माह अपने खर्चों पर नियंत्रण रखें। पेट संबंधी कुछ रोगों से पीड़ित रह सकते हैं। यदि आप सेहतमंद रहना चाहते हैं तो अपनी संयमित जीवनशैली और स्वच्छ भोजन की आदत डालें। यह माह आपके जीवनसाथी की सेहत के लिए बिल्कुल ठीक नहीं है। इस दौरान वे हाई ब्लड प्रेशर, बुखार या संक्रमण की समस्या से पीड़ित रह सकते हैं, इसलिए थोड़ा सावधान रहें। इस माह आपके विरोधी मजबूत स्थिति में रहेंगे और आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे, अत: थोड़ी सावधानी रखें। अपने कार्यक्षेत्र और व्यक्तिगत जीवन में जल्दबाजी में आकर कोई भी निर्णय लेने से बचें, क्योंकि ऐसा करना आपके लिए घातक साबित हो सकता है। आपके व्यक्तिगत जीवन में विवाद और अशांति रह सकती है। प्रियजनों के साथ रिश्तों में दूरियां आ सकती है। हालांकि प्रयास करने से रिश्तों में सुधार होगा और संबंध सामान्य हो जाएंगे। इस मास 1, 9, 10, 17, 18, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर -

यह महीना आपके लिए बेहद चुनौतीपूर्ण रहेगा। मानसिक तनाव और क्रोध की अधिकता से हालात और भी खराब होने की संभावना है। इस दौरान बड़े भाई-बहनों से विवाद हो सकता है। आपके कड़वे शब्द और बेवजह के विवादों में उलझने से लोग आपकी निंदा करेंगे। कुल मिलाकर शांतिपूर्ण जीवन के लिए इस माह आपको अपने क्रोध और स्वभाव पर नियंत्रण रखना होगा। माह के उत्तरार्ध में बच्चों की शिक्षा में कुछ परेशानियां आ सकती हैं, इसलिए आपको उनको अतिरिक्त समय देना होगा। किन बच्चों से दोस्ती की जाए इस बात को भी लेकर उन्हें आपसे सलाह की आवश्यकता होगी वरना ऐसा भी हो सकता है कि वे गलत संगत में पड़ जाएं। गर्भवती महिलाओं के लिए समय थोड़ा सावधानी से चलने वाला है, अतः ज्यादा तनाव न लें, खुश रहें और डॉक्टरी परामर्श लेते रहें। जुलाई के महीने में बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए आपको अपने विचारों में स्पष्टता रखनी होगी। इस मास 6, 7, 14, 15, 24, 21, 25 दिनांक नेष्ट रहेगी।

नवम्बर -

इस माह आपको स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए अपने स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दें। क्योंकि किसी भी तरह की लापरवाही कष्टकारक हो सकती है। इस महीने आप घर पर हालात को बेहतर करने के लिए अपनी ओर से पूरी कोशिश करेंगे। वहीं कार्य स्थल पर भी आप सफलता पाने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे। अपने बेहतर काम से मिलने वाली प्रशंसा से आप खुद हैरान हो जाएंगे। वरिष्ठों और उच्च अधिकारियों से अच्छे संबंध रखने से आपको अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। आपका पारिवारिक जीवन भी सुखद और आनंदमय व्यतीत होगा। इस दौरान परिवार में शांति और सद्भाव का वातावरण रहेगा। जून के महीने में आपके व्यक्तिगत संबंधों में कुछ बदलाव होंगे और नए रिश्ते बनने की भी संभावना है। महिला जातकों को प्रेम-प्रसंग में आनी वाली परेशानियों को लेकर सावधान रहना होगा। क्योंकि संभव है कि प्रेम-प्रसंग के मामले में धोखा हो जाएं। इस मास 2, 3, 10, 11, 12, 20, 21, 22, 30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

दिसम्बर -

आप इस माह कठिन परिश्रम से धन कमाएंगे। कार्यस्थल पर आपकी कड़ी मेहनत और बेहतर प्रदर्शन को देखते हुए आपको पदोन्नति प्राप्त हो सकती है, साथ ही कार्यक्षेत्र में उच्च अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। जो जातक व्यवसाय कर रहे हैं उन्हें इस माह अप्रत्याशित मौद्रिक लाभ मिल सकता है।

इस मास जो भी निवेश करें सूझबूझ और दूरदृष्टि रखते हुए करें। यह महीना आर्थिक मामलों में बेहद अच्छा रहने वाला है। इस अवधि में आपको धन कमाने के कई नए अवसर मिलेंगे, जिससे आपकी वित्तीय स्थिति और सुदृढ होगी। घर और बाहर दोनों जगह कठोर भाषा बोलने से बचें, क्योंकि इससे किसी की भावनाओं को चोट पहुंच सकती है और ये आपके लिए परेशानी का कारण बन सकती है। इस माह आपकी रुचि कलात्मक कार्यों के प्रति ज्यादा रहेगी और विभिन्न कलात्मक गतिविधियों में शामिल होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों के लिए यह समय बेहद समृद्धशाली रहेगा और परिवार में उनकी स्थिति और मजबूत होगी। इस मास 1, 8, 9, 17, 18, 19, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जनवरी 2026

इस माह में आप को अपनी भाषा और शब्दों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। क्योंकि इस कारण गलतफहमी होने की आशंका बन रही है। इस माह आय बढ़ने के साथ-साथ खर्च भी बढ़ेंगे। यदि आप अपने व्यापार का विस्तार करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए बहुत अच्छा रहेगा और आपको अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। पारिवारिक जीवन में उतार-चढ़ाव होने से आप थोड़ा तनाव अनुभव करेंगे। जीवनसाथी के साथ वैचारिक मतभेद होने से छोटे-मोटे विवाद हो सकते हैं, इसलिए समय रहते हुए इन सभी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करें अन्यथा स्थिति और बिगड़ सकती है। इसके अलावा व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए आपको साहस दिखाते हुए पहल करनी होगी। इस मास में बच्चे पढ़ाई-लिखाई में बहुत अच्छा प्रदर्शन करेंगे। उनके बारे में ज्यादा चिंता करने की आवश्यकता नहीं होगी लेकिन उनका ध्यान अवश्य ही रखना होगा। इस मास 4, 5, 14, 15, 16, 23, 24, 25 दिनांक नेष्ट रहेगी।

फरवरी -

इस माह परिजनों से आपको बहुत प्यार मिलेगा। परिवार की महिलाओं से आपको अप्रत्याशित लाभ प्राप्त हो सकता है। आप ज्यादातर दिन तनाव मुक्त और उत्साहित जीवन व्यतीत करेंगे। इस महीने आपके व्यापारिक क्षेत्र में बहुत से सकारात्मक बदलाव होंगे। आपके काम और कठिन परिश्रम की प्रशंसा की जाएगी। ऐसे में यदि आप नौकरी में हैं तो इस माह आपको पदोन्नति मिलने की संभावना है। कार्य की अधिकता के चलते तनाव नहीं लें अन्यथा आप आत्मविश्वास की कमी अनुभव कर सकते हैं। इस माह आपकी आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी और आप कठिन परिश्रम से धन कमाएंगे। स्वभाव में उग्रता अधिक रहने से विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी और कुछ लोग आपके विरोधी बन जाएंगे, अतः आप अपने मित्रवत व्यवहार और मधुर भाषा से संबंध बनाये रखने का प्रयास करें। इस महीने स्वास्थ्य को लेकर बिल्कुल लापरवाही नहीं बरतें। नेत्र से संबंधी पीड़ा आपको परेशान कर सकती है। इस मास 1, 2, 10, 11, 12, 20, 21, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मार्च-

इस माह परिवार में आपके पिता का मान और बढ़ेगा। घर में कोई विवाद की स्थिति बनतहै तो उनके दखल देने से मामला शांत हो जाएगा। आपके जीवनसाथी का विवाद घर के किसी बड़े सदस्य के साथ हो सकता है और यह बात आपको परेशानी कर सकती है। यदि आप पारिवारिक जीवन में शांति और सद्भाव चाहते हैं तो इस तरह के घरेलू मुद्दों को बेहद परिपक्वता के साथ सुलझाएं। बच्चों के साथ स्नेह बढेगा। शांति और संयम के साथ काम लें अन्यथा परिस्थितियां नियंत्रण से बाहर जा सकती है। इस माह बड़े भाई-बहनों के साथ भी आपके रिश्ते अच्छे रहने की संभावना कम है। कठिन वक्त के दौरान संयम बनाए रखें और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें। इस माह खर्च अधिक रहने की संभावना है इसलिए इस अवधि में सोच- समझकर पैसा खर्च करें। इन सबके अलावा जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, साथ ही उनके खानपान पर भी ध्यान दें। इस मास 1, 9, 10, 11, 19, 20 दिनांक नेष्ट रहेगी।

वृषभ राशि (इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

अप्रैल -

इस महीने आप अपने कार्य पर ज़्यादा ध्यान देंगे और इस कारण आप अपने पारिवारिक जीवन को कम समय दे पायेंगे। जीवनसाथी के साथ आपके आपके रिश्ते तनावपूर्ण हो सकते हैं, लिहाज़ा ऐसी स्थिति को न आने दें और अपने पारिवारिक व व्यावसायिक जीवन के बीच सामंजस्य बिठाने का प्रयास करें। कार्यक्षेत्र में यह माह आपके लिए आसान नहीं है। इसमें आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। सहकर्मियों से भी आपके रिश्ते बिगड़ सकते हैं। इस दौरान आप सभी के साथ अपना मधुर व्यवहार बनाए रखें और किसी को अपशब्द न कहें। व्यापार की दृष्टि से यह महीना आपके लिए अच्छा रहेगा परंतु व्यापार में साझेदार के साथ आपकी बन नहीं रही है तो आपको इस समस्या का समाधान निकालना होगा। स्वास्थ्य पक्ष से आपको इस महीने थोड़ा सावधान रहने की आवश्यकता है। किसी दुर्घटना से आपको चोट भी लग सकती हैं। वाहन चलाते समय जल्दबाज़ी न करें और अधिक गति से गाड़ी न चलाएँ। वहीं अपने पिताजी की सेहत का भी ख़्याल रखें। घर में परिजनों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे। मास 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मई -

इस महीने आप अपने कार्य को नये उत्साह से व बड़े ही कलात्मक ढंग से करेंगे। नई-नई चीज़ों को सीखने जानने के लिए आप लालायित रहेंगे और अपनी प्रतिभा का विकास करेंगे। आपकी कलात्मक शैली की प्रशंसा होगी और यह प्रशंसा आपको ऊर्जावान बनाएगी। अपने उत्कृष्ट कार्य से आपको भी प्रसन्नता होगी। कार्टूनिस्ट, समीक्षकों, लेखकों और व्यंगकारों के लिए यह माह उत्तम रहेगा। उन्हें अपने क्षेत्र में विशेष सफलता मिलने के योग हैं। माह के दूसरे चरण के बाद कार्यक्षेत्र आपको अपने वरिष्ठकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखना होगा। आपके घरेलू जीवन में कोई मांगलिक कार्य के होने संभावना दिखाई दे रहे हैं। विवाहित जोड़ों को संतान प्राप्ति के भी योग हैं। इस मास 6, 7, 16,

17, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जून -

जून माह आपके लिए उत्तम रहेगा। आपके घर का वातावरण सामान्य रहेगा और रिश्तों को सुधारने में भी आपको सफलता मिलने की संभावना है। हालाँकि छोटे-मोटे विवाद सामने आ सकते हैं परंतु आपको इसमें चिंता करने की ज़रुरत नहीं है। कार्यक्षेत्र में सफलता पाने के लिए आप अधिक परिश्रम करेंगे। नौकरी में आपकी आय में वृद्धि होने के योग हैं और यदि आप अपनी वर्तमान नौकरी में परिवर्तन करने का विचार कर रहे हैं तो समय आपके लिए अनुकूल है। इस महीने में आपको शुभ परिणामों की प्राप्ति होगी। कुछ लोगों को कार्यक्षेत्र में बहुत ही अच्छा वातावरण देखने को मिलेगा। पढ़ाई पूरी कर चुके छात्रों को नौकरी प्राप्त होगी। इस माह आप अधिक ऊर्जावान रहेंगे और आपके अंदर सकारात्मक उत्साह दिखाई देगा। अपने उद्देश्यों को भी आप पूरा करेंगे। 2, 3, 12, 13, 21, 22, 29, 30 दिनांक इस मास नेष्ट रहेंगी।

जुलाई -

जुलाई माह आपके लिए सामान्य रहेगा। आर्थिक दृष्टि से जुलाई मास आपके लिए ज़्यादा अनुकूल नहीं है। आपके ख़र्चों में वृद्धि की संभावना है। साथ ही आपके सामने आर्थिक संकट की स्थिति भी आ सकती है। अपने अनावश्यक ख़र्चों में लगाम लगाएँ और धन की बचत पर ध्यान दें। आपकी निजी समस्या आपके कार्यक्षेत्र को प्रभावित कर सकती है। अपने कार्य में ध्यान दें और तनाव को अपने ऊपर हावी न होने दें। इस दौरान आपकी ऊर्जा में कमी देखी जा सकती है। पढ़ाई में बच्चों का कमज़ोर प्रदर्शन आपके तनाव का कारण बन सकता है। वहीं यदि आप व्यापार में साझेदारी कर रहे हैं तो सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि इस दौरान आपको धोखा हो सकता है। मन में नकारात्मक विचारों को क़तई जगह न दें और विपरीत परिस्थितियों का डटकर सामना करें। अपनी वाणी में संयम रखें। 1, 9, 10, 11, 18, 19, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

अगस्त -

आर्थिक दृष्टि से आपके लिए अगस्त माह अच्छा रहेगा। यदि आप अपने बेवज़ह के व्यय पर लगाम लगाएंगे तो आपको इसमें और भी अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। अपनी आर्थिक स्थिति को और मज़बूत बनाने के लिए आपको इस मास प्रयास करने होंगे। धन संबंधित क्षेत्र में किसी पर विश्वास करना आपके लिए नुकसानदायक रह सकता है। पारिवारिक जीवन में भी आपको सावधान रहना होगा। जीवनसाथी और परिवार के अन्य सदस्यों के सामने कोई बड़ी चुनौती आ सकती है। आप अपने परिवार से दूर भी जा सकते हैं। प्रेम संबंधों हेतु यह मास शुभ रहने वाला है। निजी जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए बड़े-बजुर्गों की सलाह लें। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास आपके लिए सामान्य रहेगा। स्वस्थ रहने के लिए आप योग व ध्यान कर सकते हैं। अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाएँ और अपने लक्ष्य पर ध्यान दें। 5, 6, 7, 14, 15, 23, 24 दिनांके नेष्ट रहेंगी।

सितम्बर -

सितम्बर माह आपके के लिए महत्वपूर्ण रहेगा। इस महीने आपको अपने भाग्य को सुधारने के कई अवसर प्राप्त होंगे। इस माह लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा आपके योग में है। निजी अथवा व्यवसाय संबंधित कारणों से आप विदेश यात्रा पर भी जा सकते हैं। जो छात्र अनुसंधान एवं विकास संबंधी विषय से जुड़े हुए हैं उन्हें अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। आर्थिक क्षेत्र में आपको उतार-चढ़ाव की परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। अचानक लाभ अथवा हानि संभव है। इस माह मित्रों के सहयोग से व्यापार करना आपके लिए लाभकारी रहेगा। आपको जीवनसाथी की भावनाओं का ध्यान रखें और उनके साथ अधिक से अधिक समय बिताएँ। अपने प्रेम जीवन पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। कोई आपको धोखा दे सकता है इसलिए आप सतर्क रहें। इस मास 2, 3, 11, 12, 19, 20, 21, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर -

इस साल अक्टूबर माह की शुरुआत में आपके ख़र्च में वृद्धि संभव है। आपके लिए अच्छा तो यह रहेगा कि आप अपने व्यर्थ के ख़र्चों पर नियन्त्रण करें और धन का व्यय समझदारी के साथ करें। इस दौरान न तो किसी से उधार लें और न ही किसी को उधार दें। आपके पारिवारिक एवं निजी संबंधों में कमी रह सकती है और इस अवस्था से आपको उभरने के लिए काफ़ी प्रयास करने होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से इस महीने आपको ज़्यादा सावधान रहने की आवश्यकता है। इस महीने आपको ज्वर और संक्रमण रह सकता है। इसके अलावा आपको चोट भी लग सकती हैं। आपको अजीर्ण की भी शिक़ायत रह सकती है इसलिए अपने ख़ान-पान पर भी विशेष ध्यान दें। माह का दूसरा चरण स्वास्थ्य के लिहाज़ से अच्छा है। इसमें आपके निजी संबंध भी सुधरते हुए नज़र आएंगे। इस दौरान आप सकारात्मक भाव से सोचेंगे। इस मास 1, 8, 9, 16, 17, 18, 26, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

नवम्बर -

आपके लिए नवम्बर माह थोड़ा प्रतिकूल रहेगा। इस महीने आपको हर क्षेत्र में थोड़ा ध्यान रखना होगा। आपके पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन में परिस्थितियाँ आपके विपरीत हैं। यदि आपने इन परिस्थितियों को सुधारने का प्रयास नहीं किया तो आपके रिश्ते में समस्या पैदा हो सकती है। यदि आपने समझदारी के साथ क़दम बढ़ाया तो ऐसी परेशानियाँ नहीं आएंगी। संतान पक्ष से आपको कोई सुखद समाचार प्राप्त हो सकता है। पढ़ाई में उनकी सफलता आपकी खुशियों का कारण बनेंगी। नई विद्याओं को सीखने में आपकी रुचि बढ़ेगी और आप अपने काम को और कलात्मक तरीक़े से करेंगे। आपके आत्मविश्वास एवं साहस में वृद्धि होगी। इस माह आपके आसपास एक सकारात्मक वातावरण पैदा होगा। नौकरी क्षेत्र से जुड़े जातकों के लिए यह महीना विशेष रहने वाला है। आपके कार्यों की प्रशंसा होगी और आपकी पदोन्नति के भी योग बनेंगे। किसी क्षेत्र में किया गया निवेश आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा। इस मास स्टॉक मार्केट में निवेश करने से भी अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। इस मास 4, 5, 13, 14, 23, 24 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

दिसम्बर -

दिसंबर मास आपके लिए उत्तम रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र में आपको आगे बढ़ने की कई अवसर

प्राप्त होंगे। कार्यक्षेत्र में आपको सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेंगे। अपने कार्यक्षेत्र में अनुकूल स्थिति रहेगी। विद्यार्थी अपनी शिक्षा के साथ-साथ आजीविका हेतु नौकरी आदि भी कर सकते हैं। पिताजी को विशेष लाभ होगा। सामाजिक रूप से भी यह मास उत्तम रहेगा। परन्तु वैवाहिक जीवन में कुछ समस्याएँ आ सकती है। इस दौरान जीवनसाथी की भावनाओं को समझने का प्रयास करें व उसके अनुसार व्यवहार करें। अपने घर में कुछ नवनिर्माण का कार्य इस महीने करा सकते हैं। जो जातक कला क्षेत्र से संबंध रखतें है उनको सफलता मिलने के योग हैं। इस मास आपको धन और प्रतिष्ठा दोनों प्राप्त होगी। इस मास 2, 3, 10, 11, 20, 21, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

जनवरी 2026

यह मास आपके लिए अनुकूल रहने वाला है। यदि आप छात्र है तो इस माह में आपको अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। विदेश में शिक्षा पाने की इच्छा रखने वाले छात्रों की इच्छा पूर्ण होगी। आपके पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन में ख़ुशियों का आगमन होगा। प्रेम जीवन अच्छा रहेगा। आप अपने जीवनसाथी अथवा प्रेमसाथी के साथ मधुर पल व्यतीत करेंगे। परिजनों से वार्तालाप करते समय आप अच्छे शब्दों का चयन करें। घर में किसी को ऐसी बात न बोलें जिससे उन्हें ठेस पहुँचे। इस माह आपको अपने पुराने प्रयासों का शुभ परिणाम प्राप्त होगा और आपके सभी काम पूर्ण होंगे। आपकी रुचि आध्यात्मिक क्रियाओं की ओर बढ़ेगी। सामाजिक जीवन में आपको कई अवसर प्राप्त करेंगे जिससे आपको अच्छी पहचान मिलेगी। फलस्वरूप सोसायटी में न केवल आपका रुतबा बढ़ेगा, बल्कि आपके दोस्तों की संख्या में भी गुणात्मक रूप से वृद्धि होगी। इस मास 6, 7, 8, 17, 18, 26, 27 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

फरवरी -

इस माह आपके सामने उतार-चढ़ाव भरी परिस्थितियाँ रहेगी। घर का माहौल अशांत रह सकता है। परिजनों के बीच ग़लतफ़हमी, संवाद का अभाव, तनाव आदि रह सकता है। प्रयास करें कि घर में आपका व्यवहार विनम्र रहे और बातचीत के माध्यम से पारिवारिक समस्याएँ को सुलझाने में आप पहल करें। यदि आपके वैवाहिक जीवन में आपको अपने जीवनसाथी पर विश्वास सबल करना होगा एवं उनका आदर-सम्मान करना होगा। इससे आपके वैवाहिक जीवन में ख़ुशियाँ आएंगी। इस दौरान आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। आप अपने धैर्य को बनाए रखें। प्रेम जीवन के लिए यह माह उत्तम रहने वाला है। अध्ययन क्षेत्र में छात्रों को इस माह अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। पढ़ाई में उनकी मेहनत का उत्तम परिणाम प्राप्त होगा। अपने कार्यक्षेत्र के लिए माह शुभ रहने के संकेत दे रहा है। अपने कार्यक्षेत्र में कड़ी मेहनत करने से आपको और भी ज़्यादा फ़ायदा होगा। इससे आपकी आय में वृद्धि होगी और आपकी पदोन्नति भी संभव है। हालाँकि मास के प्रारम्भ में आप थोड़े हताश और निराश हो सकते हैं लेकिन घबराने जैसी कोई बात नहीं है आपकी यह समस्या माह के उत्तरार्ध में समाप्त हो जाएगी। इस मास 3, 4, 13, 14, 22, 23 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

मार्च -

कला विषय के छात्रों के लिए यह महीना अच्छा रहेगा। इसमें आपकी कलात्मक शैली का विकास होगा और करियर में आपको इसका लाभ मिलेगा। इस दौरान इंजीनियरिंग क्षेत्र से संबंध रखने वाले जातकों को अधिक सफलता मिलने के योग हैं। यदि आप निजी क्षेत्र में प्रबंधन में करियर की सोच रहे हैं तो इसमें आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। व्यापार में साझेदारी से आपको मुनाफ़ा प्राप्त होगा। पैतृक क़ारोबार में आपकी सभी बाधाएँ दुर होंगी। कार्यक्षेत्र में आपकी मेहनत और लगन से प्रतिष्ठा प्राप्त होगी और पदोन्नति भी संभव है। आपके वरिष्ठ जन हर संभव आपकी मदद को तैयार रहेंगे। आप थोड़े सावधान रहें और ज़्यादा अफवाहों पर ध्यान न दें। धैर्य के साथ किसी समस्या का समाधान करें। इस मास 2, 3, 4, 12, 13 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मिथुन राशि(का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

अप्रैल-

इस माह वैवाहिक जीवन में सुखद और सकारात्मक बदलाव होने की संभावना है। यदि आपने प्रयास जारी रखें तो अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। वैवाहिक रिश्तों में तनाव कम होगा और हर्ष व सद्भाव बना रहेगा। आप जीवनसाथी और बच्चों के साथ मिलकर अच्छा समय व्यतीत करेंगे। इसके अलावा परिजन भी आपसे खुश रहेंगे और परिवार की एकता बनी रहेगी। इस समय अवधि में जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना आप बड़ी ही कुशलता के साथ करेंगे। इस महीने आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, लेकिन स्वस्थ रहने के लिए अपनी दिनचर्या को नियमित रखें। स्कूली और कॉलेज में पढ़ने वाले जातकों के लिए भी यह महीना शुभ संकेत दे रहा है। अच्छे काम की वजह से आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और सम्मान भी बढ़ेगा। इसके अलावा इस माह आपका रुचि धार्मिक कार्यो के प्रति बढ़ेगी। मानसिक शांति प्राप्त करने के लिए आप नियमित रूप से ध्यान और मंत्र जाप करेंगे। इस मास 2, 3, 11, 12, 21, 22, 29, 30 दिनांक कुछ कष्टकारक रह सकती है।

मई -

इस महीने में आप अपने सभी कार्यो को बहुत चतुराई और कुशलता के साथ पूरा करेंगे। भाई-बहन या दोस्तों के साथ साझेदारी में बिजनेस कर रहे जातकों को आर्थिक लाभ की प्राप्ति होगी। हालांकि पैसों के लेनदेन में थोड़ी सावधानी बरतने की ज़रुरत पड़ेगी। किसी अनजान व्यक्ति पर जल्दी भरोसा नहीं करे। किसी भी व्यक्ति को अपना साझेदार बनाने से पहले अच्छी तरह से सोच लें। इस महीने आपके साहस और आत्म विश्वास में भी वृद्धि होगी। महीने के पहले 15 दिन किसी भी तरह के नये निवेश के लिए अच्छा समय है। क्योंकि इस अवधि में आपको अप्रत्याशित आर्थिक लाभ की प्राप्ति होगी। वहीं महीने का दुसरा पखवाड़े किसी दीर्घकालिक योजना के लिए उत्तम रहेगा। विवाहित जातकों के लिए भी यह समय अच्छा रहने वाला है। इस दौरान वे परिवार नियोजन के बारे में सोच सकते हैं। वहीं दूसरी ओर जो महिला जातक गर्भवती हैं उनका प्रसव सफल और सुरक्षित तरीके से हो जाएगा। जो सॉफ्टवेयर तकनीक के क्षेत्र में काम कर रहे हैं उन्हें कार्यक्षेत्र में उन्नति मिलेगी। इस मास 8, 9, 10, 18, 19, 27, 28 दिनांक नेष्ट है।

जून -

इस महीने आपको घर-परिवार से जुड़े मामलों में बड़े लोगों की सलाह लेनी होगी। बड़े भाई-बहन, माता-पिता की सलाह से परिवार की शांति और समृद्धि के लिए लाभकारी रहेगी। इन सभी का मार्गदर्शन मिलने से व्यक्तिगत जीवन में होने वाला तनाव भी कम होगा। इस माह परिजनों के साथ मिलकर कोई शुभ कार्य करने का अवसर मिलेगा। वहीं आर्थिक मोर्चे पर पैसा कमाने के कुछ अच्छे अवसर मिलेंगे, लेकिन खर्च भी बढ़ेंगे। आप मनोरंजन और सर्व-सुविधायुक्त सामानों पर अधिक खर्च करेंगे। जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे, हालांकि छोटे-मोटे मतभेद होने की भी संभावना है। इसलिए जीवनसाथी के साथ मधुर व्यवहार करें और किसी भी तरह के विवाद में पड़ने से बचें। कार्यस्थल पर वरिष्ठ सहकर्मी आपके कठिन परिश्रम और काम की गुणवत्ता की तारीफ करेंगे। इसके अलावा आपके सहकर्मी भी आपका सहयोग करेंगे। इस माह विरोधी भी आपका कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगे। कामकाजी महिलाओं के लिए यह समय बहुत अच्छा रहने वाला है। कार्यस्थल पर उनकी पदोन्नति होगी और वे अपने सभी काम बड़े आत्म विश्वास के साथ पूर्ण करेंगी। इस मास 4, 5, 6, 14, 15, 16, 23, 24 दिनांक नेष्ट हैं।

जुलाई -

इस महीने आपके वैवाहिक जीवन में दु:खद मोड़ आ सकता है। विशेषकर महिलाओं को अपने वैवाहिक जीवन में अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इस दौरान महिला जातकों को प्रताड़ना का सामना करना पड़ सकता है। वैवाहिक जीवन में तनाव होने से पारिवारिक जीवन प्रभावित होगा और बच्चों पर इसका गलत प्रभाव पड़ेगा। जीवनसाथी के साथ सभी विवादों को शांति से बैठकर सुलझाएं। वहीं दूसरी ओर इस माह आपका ध्यान अपने काम पर होगा। आपकी दृढ इच्छाशक्ति के कारण व्यक्तिगत जीवन में होने वाला कष्ट आपके व्यावसायिक जीवन को प्रभावित नहीं कर पाएगा। अपने व्यवसाय संबंधी सभी योजनाओं पर आप काम करेंगे और आपको उसका उत्तम फल प्राप्त होगा। कार्य स्थल पर आप वरिष्ठ अधिकारियों और सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाकर चलेंगे। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का व्यवसाय कर रहे जातकों को लाभ की प्राप्ति होगी। यह माह किसी भी नए तरह के निवेश के लिए बिल्कुल उपयुक्त नहीं है। माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। अपनी वैवाहिक जीवन से जुड़ी समस्याओं को हल करने के लिए आप माता-पिता से सहयोग ले सकते हैं। इस मास 2, 3, 12, 13, 20, 21, 29, 30 दिनांक नेष्ट है।

अगस्त -

यह महीना आपके लिए आर्थिक उन्नति का माह रहेगा। अपने प्रयासों से सफलता मिलेगी और विदेशी स्रोतों से भी आय होगी। यदि आपके परिवार का कोई सदस्य विदेश में रहकर कार्य कर रहा है या फिर आपके परिवार के व्यवसाय का संबंध विदेश से है, तो निश्चित रूप से आपकी पारिवारिक आय में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी मधुर वाणी आपको विवाद और विषम परिस्थितियों से बचाएगी। इस माह मन में अनेक प्रकार के विचार आने से तनाव बढ़ सकता है, जो पारिवारिक और व्यावसायिक संबंधों को प्रभावित करेगा। आपके व्यवहार में कुछ रुखापन आएगा। इस माह कुछ समय के लिए आप काम के बोझ से स्वयं को तनावग्रस्त महसूस करेंगे, इसलिए कुछ समय आराम करने के लिए निकालें। भाषा विज्ञानी और अनुवादकों के लिए यह समय बहुत अच्छा रहने वाला है। वे जातक जो चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े हैं उनके लिए भी यह समय बहुत लाभकारी रहेगा। इस मास 8, 9, 16, 17, 18, 25, 26, 27 दिनांक नेष्ट रहेगी।

सितम्बर -

आपके जातकों का स्वास्थ्य इस मास में थोडा खराब रह सकता है। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति बिल्कुल लापरवाही न रहें। विशेष रूप से महिलाओं को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा, क्योंकि इस अवधि में उन्हें प्रजनन क्षमता से जुड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। कई जातकों को नेत्र से संबंधी पीड़ा भी हो सकती है। मानसिक तनाव बढ़ने से अनिद्रा की समस्या होने की भी संभावना है। अकारण तनाव लेने से बचें। कुछ समय के लिए काम से छुट्टी लें और आराम करें। ऐसा करने से आप बेहतर महसूस करेंगे। वैवाहिक जीवन में परेशानियों के लिए एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराने से बचें। छोटी-छोटी गलतियों पर ध्यान देने की बजाय स्नेह और शांति के साथ वैवाहिक जीवन को मधुर बनाएं। आर्थिक क्षेत्र हेतु यह महीना सामान्य दिखाई दे रहा है। वहीं छात्रों के लिए यह माह बहुत शुभ संकेत दे रहा है, खासतौर पर वे छात्र जो किसी विषय पर अनुसंधान कर रहे हैं। इस अवधि में वे लोग बहुत ही अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस मास 4, 5, 13, 14, 22, 23 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर -

यह महीना विवाहित जातकों के लिए कुछ कठिन रहने वाला है। इस दौरान वैवाहिक जीवन में आपको कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इस महीने जीवनसाथी के साथ विवाद व बहस करने से बचें और उनके साथ विनम्रता से व्यवहार करें। परिवार के बड़े लोगों की सलाह लें और उसका अनुसरण करें। इस माह विदेश यात्रा पर जाने के योग बन रहे हैं। वहीं विदेश में कार्य करने को लेकर आपके भाई-बहनों की इच्छा पूरी होगी। कठिन परिश्रम करने से उन्हें इच्छित सफलता मिलेगी। इस समय अवधि में परिजनों के साथ आपके रिश्ते मधुर रहेंगे। आपके घर में सुख और शांति बनी रहेगी। आर्थिक उन्नति और पारिवारिक व्यवसाय के लिए भी यह समय शुभ संकेत दे रहा है। इस दौरान धन और संपत्ति में वृद्धि होगी। महंगे सामान खरीदने की वजह से इस माह खर्च ज्यादा हो सकता है। इस मास 2, 3, 10, 11, 19, 20, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

नवम्बर -

इस महीने में अपनी योजनाओं में सफलता मिलने से आत्मविश्वास बढ़ेगा। पिता और गुरु से मिलने वाला सहयोग आपके अंदर साहस और इच्छाशक्ति पैदा करेगा। महीने के उत्तरार्ध में आपके पिता की सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सभी तरह के सलाहकारों के लिए यह समय अच्छा रहेगा, क्योंकि इस अवधि में उनकी बहुत मांग होगी। यह मास छात्रों के लिए बहुत अच्छा रहने वाला है। क्योंकि इस दौरान उन्हें उनकी मेहनत का उत्तम परिणाम मिलेगा, साथ ही अच्छे शिक्षण संस्थानों में प्रवेश मिलेगा। वे जातक जो नौकरी की तलाश में हैं उन्हें कई अच्छे विकल्प मिलेंगे, परन्तु और भी बेहतर

सफलता प्राप्ति के लिए आपको और मेहनत करनी होगी। करियर को लेकर महत्वाकांक्षी जातकों को इस अवधि में बहुत उन्नति और सफलता मिलेगी। इस मास 6, 7, 15, 16, 17, 25, 26, 27 दिनांक नेष्ट रहेगी।

दिसम्बर -

यह मास आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। अपने कार्य में मिलने वाली सफलता को लेकर आप उत्साहित रहेंगे। इस माह आपको भाग्य का सहयोग मिलेगा और जीवन में आप जैसा चाहेंगे वैसा ही होता रहेगा। यात्राएं अधिक होने से आप थकान महसूस करेंगे। वे जातक जो व्यापार से जुडे हैं उनके विदेशों में संपर्क बनेंगे और ये संबंध उनके लिए बहुत लाभकारी होंगे। जातक जो बिल्डिंग, रियल इस्टेट और प्रॉपर्टी डीलिंग से जुड़ा कार्य कर रहे हैं, उनको इस अवधि में अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। घर में शांति और सद्भाव का वातावरण रहेगा। आप परिवार के सदस्यों के साथ अधिक समय व्यतीत करेंगे। इस माह घर की साज-सज्जा और पुनर्निर्माण का काम कराना आपका प्रमुख कार्य रहेगा। इसके अलावा धार्मिक और परोपकारी कार्यों में भी आपकी रुचि बढ़ेगी। इसकी वजह से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस महीने आपको थोड़ा सावधान रहना होगा। पेट संबंधी कुछ बीमारी आपको परेशान कर सकती है। इस मास 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23, 24, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जनवरी 2026

इस महीने आपको अपने वैवाहिक जीवन में संभलकर चलना होगा। इस अवधि में क्रोध पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी होगा । अपनी वाणी पर भी संयम रखें, क्योंकि कठोर शब्द आपके जीवनसाथी की भावना को ठेस पहुंचा सकते हैं। बेवजह शक करना और नियंत्रण रखने की भावना मन में नहीं रखें। जीवनसाथी की भावनाओं का सम्मान करें। इस माह धन का आवागमन अच्छा रहेगा, परिवार की आय में वृद्धि होगी। वित्तीय मामलों में फिर भी थोड़ा सावधान रहना होगा, क्योंकि आर्थिक मामलों से जुड़ी चिंताएं परेशान कर सकती हैं। इसलिए बेवजह खर्च करने से बचें। यदि आप कोई आवासीय संपत्ति खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो आपको सलाह है कि इस महीने यह काम ना करें। विरोधी और शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति और वृद्धि के लिए यह महीना बेहद अच्छा रहने वाला है। इस मास 1, 9, 10, 19, 20, 28, 29 दिनांक नेष्ट रहेगी।

फरवरी -

इस मास आपको अपने कार्यक्षेत्र में सुधार लाने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। प्रयासों की बदौलत आपको कामयाबी भी मिलेगी। वे जातक जो व्यवसाय कर रहे हैं उन्हें इस महीने बड़ा आर्थिक लाभ मिलने की संभावना है। पारिवारिक जीवन में कुछ परेशानियां आएंगी लेकिन परिजनों के साथ अच्छा समय व्यतीत होगा। वहीं वैवाहिक जीवन में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए जीवनसाथी के साथ विवाद करने से बचें वरना स्थिति और खराब हो सकती है। इस दौरान जीवनसाथी को समय प्रदान करें। स्वास्थ्य हेतु भी यह महीना आपके लिए अच्छा दिखाई दे रहा है। सुबह की नियमित सैर और व्यायाम करने से आप स्वस्थ रहेंगे। छात्रों के लिए यह महीना अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि उन्हें अपनी कड़ी मेहनत का परिणाम मिलेगा। इस मास 5, 6, 7, 15, 16, 24, 25 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मार्च -

इस माह आपका झुकाव मनोविज्ञान जैसे विषयों की ओर बढ़ेगा। आप में से कुछ लोग इस दौरान तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। सितारों की चाल कहती है कि, वे लोग जो नौकरी कर रहे हैं अपनी नौकरी में परिवर्तन करने के बारे में सोच सकते हैं। इस दौरान आपको लंबी और छोटी दूरी की यात्रा भी करनी पड़ सकती है। महीने के उत्तरार्ध में आपको लगातार कड़ा परिश्रम करना पड़ेगा। कार्यस्थल पर अच्छा माहौल बना रहेगा और वरिष्ठों के साथ आपके रिश्ते मधुर रहेंगे। इस माह आपका वैवाहिक जीवन भी आनंद से भरा रहेगा। आप दोनों के बीच अच्छी समझ होगी और विषम परिस्थितियों में आप एक-दूसरे का सहयोग करेंगे। परिवार के बड़े लोगों और बच्चों के लिए यह समय अच्छा साबित होगा। वहीं आर्थिक मोर्चे पर यह महीना थोड़ा उतार-चढ़ाव से भरा रहेगा। वे जातक जो व्यवसाय से जुडे हैं, यदि इस अवधि में किसी नई योजना में निवेश करते हैं तो उन्हें अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। इस महीने स्वास्थ्य के विषय में ज्यादा चिंता करने की ज़रुरत नहीं है। बेहतर स्वास्थ्य के लिए आपकी रुचि योग और प्राणायाम की ओर होगी। इस मास 5, 6, 14, 15, 16 दिनांक कुछ कष्टकारक हो सकती हैं।

कर्क राशि (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

अप्रैल

इस मास आपको पिता या पैतृक रिश्तों से आर्थिक लाभ और सहयोग प्राप्त होने की संभावना है। अधिक तनाव और चिंताग्रस्त रहने की वजह से आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, इसलिए ज्यादा तनाव नहीं लें। संतान पक्ष से भी कुछ परेशानियां हो सकती हैं। घर में सुख और समृद्धि का वातावरण रहेगा और आपका जीवनसाथी आपकी हरसंभव मदद करेगा। उनके प्यार और लगाव से परिस्थितियां निश्चित ही बेहतर होंगी। भाई-बहन के साथ मिलकर शुरु किए व्यवसाय से लाभ प्राप्त होने की संभावना है। करियर के क्षेत्र में भी आप अच्छा कार्य करेंगे। व्यावसायिक जीवन में स्थिरता बनी रहेगी और लगातार वृद्धि होगी। माह के दूसरे पड़ाव में आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा। आपकी नेतृत्व क्षमता आपको और शक्तिशाली बनाएगी एवं आप कुछ अच्छी पहल करेंगे। इस मास 4, 5, 13, 14, 15, 23, 24 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मई -

यह महीना आपके लिए आर्थिक रूप से अच्छा रहने वाला है। आप ज्यादा से ज्यादा कमाएंगे और धन की बचत करने में समर्थ होंगे। साथ ही इस माह आपको आय के कई साधन मिलेंगे और धनार्जन होगा। वे जातक जो व्यवसाय कर रहे हैं उन्हें इस महीने बड़ा लाभ होगा। नए प्रतिष्ठान की शुरुआत और व्यवसाय में विस्तार की संभावना भी बन रही है। बैंककर्मी, लेखाधिकारी, आर्थिक और बीमा सलाहकारों के रूप में कार्य कर रहे जातकों के लिए यह महीना बहुत अनुकूल रहेगा। इस अवधि में उन्नति करेंगे और आपकी मांग बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन में शांति और सद्भाव बना रहेगा। जीवनसाथी के साथ रिश्ते और

भी मजबूत होंगे। बच्चों को मिलने वाली सफलता से आप बेहद खुश रहेंगे। बच्चे पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। नौकरी पेशा और बिजनेस से जुड़ी महिलाओं की तरक्की होगी और उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस मास 1, 2, 11, 12, 20, 21, 22, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जून -

आप इस महीने अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस अवधि में आप मनोरंजन और कलात्मक गतिविधि में अपना समय व्यतीत करेंगे। संतान पक्ष की ओर से आप थोड़े चिंतित रहेंगे। क्योंकि बच्चे पढ़ाई-लिखाई में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएंगे। किशोरावस्था वाले बच्चों पर माता-पिता को अतिरिक्त ध्यान देना पड़ेगा और उनकी संगति का ध्यान रखें। बच्चों का मार्गदर्शन करना होगा। इस महीने आप विचारों से स्पष्ट और आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होंगे। संतुलित विचार और दृष्टिकोण से आप स्वयं को बेहतर स्थिति में पाएंगे। यदि आप किसी बड़े निवेश के बारे में विचार कर रहे हैं तो अवश्य करें क्योंकि यह समय आपके लिए उत्तम है। मास के अंत में इस निवेश से बड़ा आर्थिक लाभ मिलने की संभावना है। पारिवारिक जीवन के लिए भी यह माह अच्छा संकेत दे रहा है। आप परिजनों के साथ अच्छे क्षण व्यतीत करेंगे। इस मास मनोरंजक गतिविधियों में व्यस्त रहेंगे। वाचक, वक्ता और मीडिया से जुड़े जातकों के लिए समय बेहद अनुकूल है। इसके अलावा कला, डिजाईन और फिल्म प्रॉडक्शन से जुड़े व्यवसाय वाले लोगों की लोकप्रियता में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त चित्रकारी और कला से जुड़े लोगों की भी बहुत मांग रहेगी। इस मास 7, 8, 17, 18, 25, 26 दिनांके नेष्ट रहेगी।

जुलाई -

आपके लिए महीने का पूर्वार्ध थोड़ा परेशानी भरा रह सकता है, विशेषकर अपने कार्यक्षेत्र में थोड़ी समस्याएं आ सकती हैं। जीवन के प्रति अरुचि पैदा हो सकती है जो परेशानी का कारण बनेगी लेकिन ये परिस्थितियां ज्यादा दिन तक नहीं रहेंगी। महीने के उत्तरार्ध में आत्मविश्वास और साहस आने से सामान्य हो जाएंगे। इस महीने में कुछ दिन आर्थिक अस्थिरता बनी रह सकती है। व्यर्थ के खर्च करने से बचें और अपने बजट पर ध्यान दें। जीवनसाथी से आपके रिश्ते अच्छे रहेंगे और आप दोनों एक-दूसरे के साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे। जीवनसाथी के स्वास्थ्य को लेकर थोड़ा सावधान रहें। मानसिक शांति भंग होने से अनिद्रा जैसी परेशानी हो सकती है। सकारात्मकता के साथ एकाग्र होकर अपने लक्ष्य पर ध्यान दें। दिमागी खेल जैसे- शतरंज आदि के खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस मास 1, 9, 10, 11, 19, 20, 27, 28, 29 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अगस्त -

आप इस महीने की शुरुआत में अपने लक्ष्यों में परिवर्तन कर सकते हैं। आत्मविश्वास बढ़ने से आपके व्यक्तित्व में मजबूती आएगी और आप सफलता प्राप्त करेंगे। माह के उत्तरार्ध में विश्वास की कमी होने से आपको स्वयं पर संशय होगा। इसकी वजह से आप परेशान रह सकते हैं। इस महीने आपको अपने खर्चों पर नियंत्रण रखना होगा। क्योंकि आपकी उच्च जीवनशैली और इच्छाओं की वजह से आपका खर्च अधिक होगा। आप आय से ज्यादा पैसा खर्च करेंगे। इसके अलावा आप भ्रमित और निराश रहेंगे, साथ ही आप अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में असमर्थ रहेंगे। माह के उत्तरार्ध में स्थिति अनुकूल हो जाएंगी। अपनी क्षमता पर आपको पूरा भरोसा होगा और इसकी मदद से आप सफलता प्राप्त करेंगे। आपका जीवनसाथी भी बहुत सहयोगी होगा। नौकरी में आप बेहतर प्रदर्शन करेंगे और उन्हें प्रशंसा मिलेगी। जीवनसाथी आपकी शक्ति का स्त्रोत होगा। इस माह आपका स्वास्थ्य कमजोर रह सकता है अतः सावधान रहें। इस मास 1, 2, 10, 11, 19, 20, 28, 29 दिनांक नेष्ट रहेगी।

सितम्बर -

आप इस महीने अपनी तय धन-संपत्ति अर्जित करने के बारे में सोचेंगे। जबकि दूसरी ओर बेवजह की वस्तुओं पर खर्च करने से आपका बजट बिगड़ सकता है, इसलिए सावधान रहें और
किसी भी तरह के आर्थिक संकट से बचने के लिए अधिक से अधिक बचत करें। कार्य स्थल पर आपकी ज़िम्मेदारियां बढ़ेंगी और वरिष्ठ अधिकारियों को आप से बहुत उम्मीदें होंगी। व्यावसायिक जीवन में आपका कद बढ़ेगा और सम्मान की प्राप्ति होगी। कुछ लोग विदेश यात्रा पर जा सकते हैं। पारिवारिक जीवन में तनाव रहने की संभावना है क्योंकि परिवार के कई लोग आप से नाराज रहेंगे। जीवनसाथी के साथ रिश्तों में तनाव बढ़ने से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप एक छात्र हैं तो शुरुआती संघर्ष के बाद आपको अपने परिश्रम का अच्छा फल मिलेगा। इस मास 6, 7, 8, 15, 16, 24, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर -

आपको इस महीने अपनी स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की ज़रुरत है, इसलिए बेहतर होगा कि
आप व्यायाम करें। आप में से कुछ लोग योग सीख सकते हैं। आकर्षक व्यक्तित्व की वजह से
आपको प्रशंसा मिलेगी और आपके परिपक्व स्वभाव के कारण आपकी सामाजिक छवि और
अच्छी होगी। दुसरी ओर आप बेहद सक्रिय, साहसी और जबर्दस्त ऊर्जा से परिपूर्ण रहेंगे। सकारात्मक ऊर्जा मिलने से आप सफलता और वृद्धि का अनुभव करेंगे। कार्य स्थल पर वरिष्ठ अधिकारी आपके प्रदर्शन से बेहद खुश रहेंगे। इसकी बदौलत आपको उच्च पद की प्राप्ति हो सकती है। यदि कार्य क्षेत्र में आप सोच-समझकर निर्णय लेंगे तो आप बहुत उन्नति करेंगे। वहीं आर्थिक मोर्चे पर आपकी आमदनी संतोषजनक रहेगी लेकिन भौतिक सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए खर्च अधिक होगा। इस मास 4, 5, 12, 13, 21, 22, 23, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

नवम्बर -

इस मास में आपको पिता या पैतृक रिश्तों से आर्थिक लाभ और सहयोग प्राप्त होने की संभावना है। अधिक तनाव और चिंताग्रस्त रहने की वजह से आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, इसलिए ज्यादा तनाव नहीं लें। संतान पक्ष से भी कुछ परेशानियां हो सकती हैं। घर में सुख और समृद्धि का वातावरण रहेगा और आपका जीवनसाथी आपकी हरसंभव मदद करेगा। उनके प्यार और लगाव से परिस्थितियां निश्चित ही बेहतर होंगी। भाई-बहन के साथ मिलकर शुरु किए व्यवसाय से लाभ प्राप्त होने की संभावना है। करियर के क्षेत्र में भी आप अच्छा कार्य करेंगे। व्यावसायिक जीवन में स्थिरता बनी रहेगी और लगातार वृद्धि होगी। माह के दूसरे पड़ाव में आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा। आपकी नेतृत्व

क्षमता आपको और शक्तिशाली बनाएगी एवं आप कुछ अच्छी पहल करेंगे। इस मास 1, 8, 9, 18, 19, 28, 29 दिनांक नेष्ट रहेगी।

दिसम्बर

यह महीना आप के लिए थोड़ा संभलकर चलने का है। इस समय में किसी भी तरह का निवेश करने से बचें अन्यथा बड़ा नुकसान हो सकता है। लाभ और धनार्जन की संभावनाऐं बनेंगी। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो इस महीने आपको अपनी कड़ी मेहनत का नतीजा अवश्य ही मिलेगा। वेतन वृद्धि के साथ पदोन्नति की संभावना है। संतति के संबंध में आपको बेहद संयम से व्यवहार करना होगा। प्रयास करें कि उनके साथ विनम्रता से व्यवहार करें, क्योंकि आपके ज्यादा क्रोधित होने के कारण वे नाराज़ हो सकते हैं। जीवनसाथी के साथ आपका रिश्ते सद्भावपूर्ण रहेंगे। मास के उत्तरार्ध में स्वास्थ्य संबंधी विकार आपको परेशान कर सकते हैं, इसलिए स्वास्थ्य को लेकर लापरवाही नहीं बरतें। यह समय आप एकांत में व्यतीत करना पसंद करेंगे और आपका झुकाव आध्यात्मिकता की ओर होगा। इस मास 6, 7, 15, 16, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जनवरी 2026

आपको इस महीने व्यक्तिगत जीवन पर ध्यान देने की ज्यादा आवश्यकता रहेगी। इसलिए इस दौरान विवादों से बचने का प्रयास करें। क्योंकि इससे आपकी खुशियां और प्रगति दोनों प्रभावित हो सकती हैं। यह महीना आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। वे लोग जो नौकरी कर रहे हैं वे कार्य स्थल पर बेहद ऊर्जावान और उत्साहित रहेंगे। आप अपने बेहतर प्रदर्शन से दूसरों को अचंभित कर देंगे। वे लोग जो व्यवसाय कर रहे हैं यदि वे संपत्ति में निवेश करते हैं तो उन्हें अच्छा लाभ होगा। विदेशी स्त्रोतों से भी आपको कोई अच्छी सूचना मिल सकती है जो आपके लिए लाभकारी होगी। विदेश में संपर्क बढ़ने से आपको इसका लाभ मिलेगा। आपका वैवाहिक जीवन उत्साह और सद्भाव से परिपूर्ण रहेगा। जीवनसाथी के साथ मिलकर संयुक्त रूप से कुछ नया करने की संभावना बन रही है। आर्थिक रूप से यह महीना आपके लिए अच्छा रहेगा। आपको किसी तरह के आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ेगा और आपकी बचत भी अच्छी रहेगी। इस मास 2, 3, 11, 12, 13, 21, 22, 30, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

फरवरी -

यह महीना आपके लिए सकारात्मक बदलाव लेकर आएगा। आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए आप अधिक से अधिक प्रयास करेंगे। इस वर्ष आप आर्थिक योजना बनाने में व्यस्त रहेंगे। वित्तीय मामलों को लेकर आप भाग्यशाली रहेंगे और धन का संचय करने में समर्थ रहेंगे। आपके पिता के लिए भी यह समय अच्छा रहेगा। उन्हें अचानक आर्थिक लाभ हो सकता है। इस वर्ष आपके भाई-बहनों का जीवन भी सुखद रहेगा। वे कार्य क्षेत्र में उन्नति का अनुभव करेंगे। जबकि दूसरी ओर बच्चों के साथ आपका टकराव हो सकता है। विशेषकर वे बच्चे जो घर से बाहर रह रहे हैं, उनके साथ व्यवहार में थोड़ी परिपक्वता दिखाएं। बात अगर जीवनसाथी की करें तो, वे आपकी व्यस्त दिनचर्या को लेकर स्वयं को उपेक्षित महसूस कर सकती हैं। इसलिए अपने जीवनसाथी के साथ अधिक समय व्यतीत करने की कोशिश करें और उनके साथ अच्छी बातें करें। महीने के दूसरे पड़ाव में व्यावसायिक मामलों में अधिक ध्यान देने की वजह से आपके व्यक्तिगत जीवन में कुछ परेशानियां हो सकती हैं। स्वास्थ्य के संबंध से भी यह महीना थोड़ा संभलकर चलने का है इसलिए सावधान रहें। इस मास 7, 8, 9, 17, 18, 19, 26, 27 दिनांक
नेष्ट रहेगी।

मार्च -

इस महीने आपकी रुचि योग, आध्यात्म और प्राणायाम के प्रति बढ़ेगी। आपका झुकाव अध्यात्म की ओर होगा और आप आध्यात्मिक क्रियाओं में व्यस्त रहेंगे। यह समय स्वयं के मूल्यांकन के लिए बहुत अच्छा होगा। वहीं वैवाहिक जीवन में जीवनसाथी के साथ अहंकार की वजह से टकराव हो सकता है। कभी बच्चों के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते है परिवार के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करें। इस माह मन की इच्छा के अनुसार काम नहीं होने की वजह से आप थोड़े परेशान रहेंगे। कार्यस्थल पर स्थिरता बनी रहेगी और वरिष्ठ अधिकारी आपके काम की प्रशंसा करेंगे। वे जातक जो प्रिंटिंग और पब्लिशिंग के काम से जुड़े हैं उनके लिए यह महीना अच्छा रहने वाला है। यदि आप किसी के साथ साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो पार्टनर के साथ आपके रिश्ते अच्छे नहीं रहेंगे। हो सकता है कि आप साझेदारी तोड़कर व्यवसाय को अकेले ही संभालें। इस मास 7, 8, 17, 18 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

सिंह राशि (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

अप्रैल -

पारिवारिक कारणों से मानसिक क्लेश रह सकता है। जीवन में उथल-पुथल रह सकती है, इसलिए बेवजह के विवादों से बचने की कोशिश करें। जीवनसाथी से भी मतभेद होने की संभावना है। वाणी पर नियन्त्रण रखें। १६ अप्रैल के उपरान्त वाहन सम्पत्ति आदि सुख साधनों की प्राप्ति होगी। मातृपक्ष से लाभ होगा। पारिवारिक तनाव का असर आपके कार्य पर भी पड़ सकता है। भाई-बहनों का सहयोग मिलेगा। काम में कुछ ज्यादा ही व्यस्तता रह सकती है अतः अपने परिवार को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। यही वजह आपके पारिवारिक जीवन में कलह का कारण बन सकती है। कलात्मक कार्यों में रुचि रह सकती है। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों को अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। प्रॉपर्टी खरीद सकते हैं लेकिन आर्थिक मामलों में थोड़ा संभलकर चलने का समय है। सुख की प्राप्ति होगी। इस मास 6, 7, 16, 17, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मई -

धन प्राप्ति के नये साधन उत्पन्न होंगे। मातृ पक्ष में मामा नाना मौसी इत्यादि को कष्ट हो सकता है। गुदा संबंधित विकार हो सकते हैं। मानहानि से बचे। प्रशासनिक व सरकारी तन्त्र से परेशानी हो सकती है। मशीनरी व विद्युतीय उपकरणों से संबंधित कार्य करने वालों को लाभ होगा। विद्या व संतान प्राप्ति में बाधा हो सकती है। घरेलू कलह हो सकती है। यदि आप सुखमय वैवाहिक जीवन चाहते हैं, तो आपको

इस महीने एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करना होगा। परिवार से जुड़ा कोई भी निर्णय लेने से पहले अच्छे से सोच-विचार कर लें। ज्योतिष विज्ञान और गूढ़ विज्ञान जैसे विषयों से जुड़े लोगों के लिए यह समय अच्छा रहेगा। बेहतर कार्य के लिए आपको प्रशंसा और पुरस्कार प्राप्त होगा। वहीं मेडिकल रिसर्च का कार्य कर रहे जातकों को शोध के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। इस महीने आर्थिक उतार-चढ़ाव देखने को भी मिलेंगे। किसी नए कार्य में निवेश करने से और उधारी व ऋण लेने से बचें। आपके व्यक्तिगत प्रयासों की बदौलत आपको कुछ अच्छे अवसर प्राप्त हो सकते हैं। आपकी आमदनी में वृद्धि होगी और आपको आय के नए साधन मिलेंगे। इस महीना आपके पिता की सेहत में गिरावट देखने को मिल सकती है या फिर पिता के साथ आपके रिश्ते प्रभावित हो सकते हैं। भाईयों से विवाद हो सकता है। इस मास 3, 4, 5, 13, 14, 15, 23, 24, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जून -

जून का महीना प्रायः शुभ रहने वाला है। अपने प्रियजनों के साथ सुखद समय व्यतीत करेंगे। प्रियजनों के साथ कंधे से कंधे मिलाकर आगे बढ़ेंगे और अपने रिश्ते अच्छे होंगे परन्तु माता का स्वास्थ्य कुछ कमजोर रह सकता है। जीवनसाथी से किसी भी तरह का विवाद करने से बचें। साथ ही सौहार्दपूर्ण रिश्ते बनाये रखने के लिए एक-दूसरे के विचारों को महत्व दें। इस महीने अपने स्वास्थ्य का खास ख्याल रखें। क्योंकि अनिद्रा से पीड़ित रहने की संभावना अधिक है। नेत्रों में कष्ट हो सकता है। वाहन सावधानीपूर्वक चलाये। गलतफहमी की वजह से सामाजिक रिश्ते प्रभावित हो सकते हैं इसलिए दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ मिलकर हर तरह की शंका को दूर करने की कोशिश करें। धर्म के प्रति आलस्य रहेगा अतः तीर्थ दर्शन के लिए जाना चाहिए । शुभ कार्यों में विशेष व्यय हो सकता है। इस मास 1, 9, 10, 11, 19, 20, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जुलाई -

नेत्र संबंधी रोग होने की संभावना है। कमर में पीडा हो सकती है। कार्य कुशलता में वृद्धि होगी। विद्या प्राप्ति में कुछ बाधा होने के योग है। विद्यार्थियों को अध्ययन में अधिक परिश्रम करना होगा। संतान से मनमुटाव हो सकता है। शेयर सट्टा व्यापार में हानि हो सकती है। १५ जुलाई के पश्चात् शारीरिक कष्ट हो सकता है। आर्थिक सलाहकार और वैवाहिक सलाहकारों के लिए यह समय बेहद अच्छा रहने वाला है। जुलाई मास आप के लिए आर्थिक रूप से सामान्य रहेगा। मास के उत्तरार्ध में कोई बड़ा निवेश करने से बचें और अपने संसाधनों को सुरक्षित रखें। धन से संबंधित मामलों में विशेष सावधानी बरतें। जीवनसाथी को कुछ गंभीर परेशानी का सामना करना पड़ सकता है । इस महीने आपको अपने वैवाहिक जीवन में मधुरता बनाये रखने के लिए अधिक प्रयास करने होंगे। इस माह नये विषयों के प्रति रूचि बढ़ सकती है। आप इस अवधि में कुछ नई चीजें सीखने की कोशिश करेंगे। मानसिक शांति के लिए योग, आसन, प्राणायाम का सहारा लेंगे और जीवन की समस्त चिंताओं से मुक्ति पाएंगे। व्यवसाय करते हैं तो थोड़ा सावधान रहने की ज़रुरत है, अपने साझेदार पर आंख बंद करके भरोसा नहीं करें। इस मास 6, 7, 8, 16, 17, 24, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अगस्त -

अगस्त के मास में विवाह संबंधित बाधायें दूर होगी। जीवनसाथी के साथ अपने रिश्तों में मधुरता बनेगी। अविवाहितों का रिश्ते तय होंगे। इसके अलावा बच्चों के साथ रिश्ते अच्छे नहीं रहेंगे और उनसे आपके मतभेद हो सकते हैं। घर के बड़े लोगों का सम्मान करें और उनकी देखभाल करें। परिवार में बड़े व्यक्तियों से खासकर पुरुषों से विवाद करने से बचें। अविवाहित इस महीने विवाह के बंधन में बंध सकते हैं। प्रेम संबंध प्रगाढ होंगे। कृषि, पर्यावरण, सांख्यिकी और योजना से संबंधित क्षेत्रों में कार्य कर रहे लोगों को सफलता मिलेगी और अपने कार्य से संतुष्ट होंगे। सेल्स, मार्केटिंग, कस्टमर सर्विस और हेल्थ सेक्टर से संबंधित व्यवसाय करने वालों को अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। यह महीना उन लोगों के लिए भी अच्छा है जो स्वयं का व्यापार कर रहे हैं। साझेदारी में व्यवसाय आरम्भ करे तो श्रेष्ठ फल प्राप्त होंगे। त्वचा संबंधी विकार हो सकते है, शत्रु से संबंधित बाधा दूर होगी। आपकी सभी योजनाओं को बल मिलेगा और नए कार्यों से आपको लाभ होगा। इस मास 3, 4, 12, 13, 21, 22, 30, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

सितम्बर -

सितम्बर के महीने में कुछ वैवाहिक जीवन से जुड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। जीवनसाथी से तनाव रिश्ते को परेशान कर सकते हैं। माता को कष्ट रह सकता है। भूमि संबंधित विवाद हो सकते हैं। हृदय व श्वसन संबंधित विकार हो सकते हैं। खर्चों पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता होगी। आप को इस महीने आर्थिक संकट का सामना भी करना पड़ सकता है। इस महीने विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। यदि आप स्वयं का कोई व्यवसाय कर रहे हैं तो आपको थोड़ा सावधान रहने की जरुरत है। विवाद राजकीय बाधा हो सकती है। आर्थिक विषयों को लेकर किसी भी व्यक्ति पर आंख मूंदकर भरोसा न करें। बन्धुओं से संबंध के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। इस महीने आप धार्मिक कार्य और धार्मिक संस्थाओं से जुड़े कार्यों में व्यस्त रहेंगे। इसके अलावा कुछ लोग तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। व्यय में वृद्धि हो सकती है। गर्भवती महिलाएं नियमित आराम करें और डॉक्टर के परामर्श का अनुसरण करें। इस मास 1, 9, 10, 17, 18, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर -

अक्टूबर मास उत्तम रहेगा। जो रियल इस्टेट, ट्रैवल-टूरिज्म और सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी से जुड़े हैं उन्हे अनेक अच्छे अवसर प्राप्त होंगे और उनसे लाभ प्राप्त होगा। कार्य करने की क्षमता में वृद्धि होगी। पराक्रम व साहस बढेगा। प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। यात्रा योग बन सकते है। पिता को कुछ शारीरिक कष्ट हो सकता है। जीवनसाथी से मतभेद हो सकते हैं । अपने शब्द और वाणी पर संयम रखें क्योंकि शब्दों के गलत चयन के कारण आपके रिश्ते प्रभावित हो सकते हैं। क्रोधित होने की बजाय विवेक से काम लें। प्रेमी युगल के लिए यह समय अच्छा है, वे शादी के बंधन में बंध सकते हैं। यदि अविवाहित हैं तो इस महीने प्रेम संबंध बन सकते हैं। किसी खास से मुलाकात हो सकती है। माता को स्वास्थ्य संबंधी कुछ परेशानियां हो सकती हैं उनका विशेष ध्यान रखें। अपनी सेहत का ध्यान रखें। स्वास्थ्य संबंधी किसी भी समस्या को हल्के में नहीं लें वरना यह बड़ी बीमारी का रूप ले सकती है। दम्पत्ति को सन्तान लाभ होगा। विद्यार्थियों को परीक्षा में सफलता प्राप्त हो सकती है। इस मास 6, 7, 14, 15, 24, 21, 25 दिनांक

नेष्ट रहेगी।

नवम्बर -

व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। अपने कार्य में अच्छी मेहनत के लिए आपको प्रशंसा और पदोन्नति मिल सकती है। पराक्रम में वृद्धि होगी। धन प्राप्ति के नये साधन उत्पन्न होंगे। अतिरिक्त लाभ की संभावना बनेगी। आर्थिक रूप से यह महीना आपके लिए अच्छा रहने वाला है। इस अवधि में धन का आवागमन अच्छा रहेगा और पूंजी निवेश से लाभ प्राप्त होगा। सुखद और लाभकारी यात्रा के योग भी बन रहे हैं। परिवार का सुख प्राप्त होगा। संबंध प्रगाढ होंगे। अत्यधिक व्यस्तता रह सकती है। शारीरिक क्षमता व स्वास्थ्य में वृद्धि होगी। विद्यार्थियों को विशेष सफलता प्राप्त होगी। लोगों से आपका मेल-जोल बढ़ेगा। परिश्रमी छात्रों के लिए यह समय बहुत अच्छा रहेगा। क्योंकि उन्हें अपनी मेहनत की बदौलत सम्मान और किसी प्रतिष्ठित संस्था से छात्रवृत्ति मिलेगी। इस मास 2, 3, 10, 11, 12, 20, 21, 22, 30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

दिसम्बर -

दिसम्बर के महीने में आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे ज्वरपीडा हो सकती है। शारीरिक तेज व ऊर्जा में वृद्धि होगी, श्वसन संबंधित विकार हो सकते है। संगीत, कला आदि मनोरंजन में रुचि बढेगी। मन में अत्यधिक विचार आने से भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। कार्यस्थल पर वरिष्ठ जनों से आपका सहयोग मिलेगा और आप बेहतर काम करेंगे। इस मास आप सामाजिक जीवन में अधिक व्यस्त रहेंगे और परिजनों और मित्रों के साथ अच्छा समय गुजारेंगे। जीवनसाथी के साथ व्यर्थ विवाद का सामना करना पड़ सकता है और इससे आपके संबंध प्रभावित हो सकते हैं। यदि आप अपने वैवाहिक जीवन में स्नेह और मधुरता को बढ़ाना चाहते हैं तो जीवनसाथी के साथ बातचीत कर गलतफहमियों को दूर करें। घर वाहन आदि का लाभ होगा। इस मास में आपके पिता को शारीरिक कष्ट हो सकता हैं। धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा। कुछ विषयों पर धार्मिक गुरु से मतभेद भी हो सकता है। इस मास 1, 8, 9, 17, 18, 19, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जनवरी 2026

इस महीने आपको माता जी के स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा। इस अवधि में आपका रुझान रहस्यमयी विज्ञान जैसे विषयों की ओर बढ़ेगा। जो लोक कल्याण और मानव संसाधन से जुड़े क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं उन्हें बड़ी सफलता मिलने की संभावना है। इसके अलावा मैनजमेंट जैसे विषय की पढ़ाई कर रहे छात्र भी अच्छा प्रदर्शन करने में समर्थ होंगे। क्रोध में वृद्धि हो सकती है, परन्तु शारीरिक बल बढेगा। विद्यार्थियों की खेलों में रूचि बढेगी। पिता से लाभ प्राप्त होगा। व्यापार में वृद्धि होगी। विवाह के योग बनेंगे। आजीविका के साधन प्राप्त होंगे। फरवरी महीना उतार चढ़ाव से भरा रहेगा। कार्य स्थल पर कुछ मामूली विवाद हो सकते हैं, इसकी वजह से आप अच्छा महसूस नहीं करेंगे। अपने विचारों को संक्षेप में स्पष्टता के साथ व्यक्त करें। इसके अलावा उच्च अधिकारी और सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाकर चलें। यदि पारिवारिक जीवन की बात करें तो इस महीने जीवनसाथी के साथ किसी भी तरह का विवाद न करें। क्योंकि यह विवाद आपके रिश्तों में परेशानी उत्पन्न कर सकता है इसलिए शांत रहें और सोच- समझकर ही बोलें। बेवजह की बातों पर ज्यादा ध्यान न दें वरना इससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है इसलिए सकारात्मक सोच रखें क्योंकि अच्छी सोच ही आपको जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी। भविष्यकथन कहता है कि मातृ पक्ष से लाभ होगा। इस मास 4, 5, 14, 15, 16, 23, 24, 25 दिनांक नेष्ट रहेगी।

फरवरी -

धन प्राप्ति की संभावना बनेगी। जीवनसाथी को कष्ट हो सकता है। तीर्थयात्रा व धार्मिक कार्यों में रूचि बढेगी। पिता को कष्ट हो सकता है। ऋण से मुक्ति मिलेगी व शत्रुओं का विनाश होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। प्रशासनिक लाभ मिलेगा। विद्यार्थियों को परीक्षा सफलता प्राप्त होगी। साल के पहले महीने में आपका वैवाहिक जीवन बहुत ही सुखमय रहेगा। आप जीवनसाथी के साथ मिलकर कुछ नया कर सकते हैं। परिवार के साथ यात्रा पर जाने के योग बन रहे हैं। आप जीवनसाथी और बच्चों के साथ कुछ यादगार क्षण व्यतीत करेंगे। आप इस महीने घर बदलने या मकान के सौंदर्यीकरण के बारे में योजना बना सकते हैं। पारिवारिक जीवन में थोड़ा सावधान रहने की जरुरत है, क्योंकि परिजनों के बीच विवाद होने की संभावना नज़र आ रही है। इन विवादों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है इसलिए सभी लोगों से अच्छे रिश्ते रखें। इसके अलावा कार्य स्थल पर अपने व्यवहार को लेकर संयम बरतें और बेकार की बातों पर ध्यान देने की बजाय, अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करें। प्रिंट मीडिया में काम करने वाले लोगों के लिए अच्छा रहेगा। कोई बड़ी सफलता मिलने की संभावना है। काम के सिलसिले में होने वाली यात्राएं आपके लिए लाभकारी रहेंगी। इस मास 1, 2, 10, 11, 12, 20, 21, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मार्च -

इस महीने आपको पैतृक संपत्ति से लाभ मिल सकता है। वहीं आप को व्यवसाय से अच्छा लाभ होने की संभावना है। कार्य स्थल पर आप बेहतर कार्य करने में सक्षम होंगे और अच्छे काम के लिए आपको सम्मानित किया जाएगा। हालांकि इस माह कार्य स्थल पर सहकर्मियों के साथ कुछ मतभेद भी हो सकते हैं इसलिए अपने व्यवहार में परिपक्वता दिखाएं। पार्टनरशिप में बिजनेस कर रहे है लोगों को अचानक बड़े लाभ की प्राप्ति हो सकती है। अधिक काम करने की वजह से ज्यादा थकान महसूस होगी। इस माह वैवाहिक जीवन में शांति और सद्भाव बना रहेगा। आप परिवार के बीच रहकर जीवनसाथी और बच्चों के साथ अच्छा समय गुजारेंगे। मेडिकल की पढ़ाई कर रहे छात्रों को इच्छित सफलता मिलने की संभावना है। डॉक्टर और मेडिकल के क्षेत्र में काम कर रहे लोगों के लिए यह समय बेहद अच्छा है । दुर्घटना की संभावना बनेगी। भाई बहनों को कष्ट हो सकता है। व्यापार में लाभ के योग बनेंगे। माङ्गलिक कार्यों में व्यय होगा। विवाह संबंधित बाधाऐं दुर होगी। हृदय संबंधी विकार हो सकते है। प्रेम संबंधों में सफलता प्राप्त होगी। उदर संबंधी विकार की भी संभावना है। इस मास 1, 9, 10, 11, 19, 20 दिनांक नेष्ट रहेगी।

कन्या राशि (टो पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

अप्रैल -

दाम्पत्य संबंधों व सामाजिक सहयोग की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। जातक अपने परिवार के साथ अच्छा समय बिताएंगे। व्यावसायिक क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। जीवन साथी को भी अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। स्त्री व पुरुष दोनों को इस दौरान मान व सम्मान प्राप्त होगा। मनोवैज्ञानिक विषय में शोध करने वाले छात्र इस माह बहुत अच्छा प्रदर्शन करेंगे। साझेदारी से व्यापार करने वालों को इस दौरान सावधान रहना चाहिये। व्यवसाय में संसाधनों का दुरुपयोग समस्याएं खड़ी कर सकता है। इस महीने की शुरुआत में आर्थिक रूप से सतर्क रहने की आवश्यकता है। घरेलू व्यय में वृद्धि होगी जो कि वित्तीय संकट की ओर लेकर जा सकती है लेकिन बेहतर वित्तीय योजना की मदद से आप इन मौद्रिक समस्याओं को आसानी से हल कर सकेंगे। मास 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मई -

इस मास असंयमित खान-पान, जीवनशैली के कारण स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। स्वभाव में कठोरता आ सकती सकती है। अत्यधिक कार्यभार के कारण आप उचित आराम नहीं कर पाएंगे, जिस कारण काफी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। इस माह जातक को आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। लम्बे समय से फंसा हुआ पैसा वापस मिलने की संभावना है और कर्ज से पीडित जातक इस मास कर्ज से मुक्ति पाएंगे। कोई नया क़र्ज़ लेने से बचें और इस मास किसी नई योजना में पैसा न लगाएं। इस मास जातक अच्छी बचत कर लेंगे लेकिन घरेलू व्यय में वृद्धि भी हो जायेगी। इस माह पारिवारिक जीवन में अच्छा संतुलन बनाने की आवश्यकता होगी। परिवार के सदस्यों में आपसी मनमुटाव रह सकता है। न्यायिक सेवा से जुड़े जातकों के लिए यह मास अच्छा रहेगा क्योंकि इस अवधि के दौरान उन्हे सफलता प्राप्त होगी। सामाजिक कार्यों में संघर्ष कार्यकर्ताओं को सम्मान व प्रतिष्ठा मिलेगी। इस मास 6, 7, 16, 17, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जून -

औषधि क्षेत्र से संबंधित कार्य करने वाले जातकों को इस मास अच्छा लाभ होगा। लंबे संघर्ष के बाद महिला उद्यमियों को बड़ी सफलता मिलेगी और अपनी परिश्रम के लिए प्रतिष्ठा व पुरस्कार भी प्राप्त होगा। इस मास सन्तान पक्ष से आपके जीवन में खुशी प्राप्त होगी। बच्चों को अध्ययन से संबंधित कोई परेशानी नहीं होगी और वो अपने क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करेंगे। परिवार में शांति व सौहार्द बना रहेगा। जीवनसाथी से संबंध प्रगाढ होगा। स्वास्थ्य के प्रति इस माह सजग रहें क्योंकि लापरवाही बरतने से गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। योग, व्यायाम आदि के लिए भी समय अवश्य निकालें जिससे आप स्वस्थ रह सकें। स्वास्थ्य सेवा से जुड़े व्यवसायी विशेष चिकित्सा के क्षेत्र से जुड़े लोगों को इस मास लाभ प्राप्त होगा। स्वास्थ्य, बीमा से जुड़े जातक भी अपने कार्यों में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। 2, 3, 12, 13, 21, 22, 29, 30 दिनांक इस मास नेष्ट रहेंगी।

जुलाई -

आप बच्चों के प्रति थोड़े चिंताग्रस्त हो सकते हैं खासतौर पर उनकी पढ़ाई को लेकर ज़्यादा परेशान हो सकते हैं। बच्चों के साथ अपना ज़्यादा से ज़्यादा समय बिताएंगे और उन्हें उनकी पढ़ाई में मदद करेंगे। इस माह आपके प्रेम संबंधों में भी टकराव संभव है। आपके लव पार्टनर आपसे नाखुश रहेंगे और आपस में बहस होती रहेगी। इसलिए आपको कोमलता के साथ स्थिति को संभालने का सुझाव दिया जाता है। इस दौरान आपको अपने भाई-बहनों व दोस्तों का पूरा सहयोग मिलेगा जो आपको लाभकारी परिणाम देगा। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। अगर किसी प्रकार का लाभ नहीं मिलेगा तो हानि भी नहीं होगी। निजी या कार्य संबंधी यात्राएं हो सकती हैं। सितारों की चाल कहती है कि प्रतियोगी परीक्षा में बैठने वाले छात्र अच्छा प्रदर्शन करेंगे और अपनी मेहनत से अच्छे नंबर प्राप्त करेंगे। कम्प्यूटर क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा नाटक, थिएटर, फिल्म आर्टिस्ट आदि के लिए अच्छा समय है। कार्यक्षेत्र में इस मास सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलेंगे। मित्रों व बंधुओं से लाभ प्राप्त होगा तथा उनसे सहायता प्राप्त होगी। समाज व लोगों के मध्य विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। प्रेम संबंध बनेंगे। त्वचा व मुख संबंधित रोग हो सकता है। 1, 9, 10, 11, 18, 19, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

अगस्त -

आपको इस माह समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। धन की हानि हो सकती है। परिवार में लड़ाई-झगड़े हो सकते हैं। छोटे भाई बहनों से मन मुटाव हो सकता है। आपस में आप लोगों के बीच कुछ गलतफ़हमियां उत्पन्न हो सकती हैं जिससे घर के वातावरण में सौहार्द की भावना भंग हो जाएगी। अगर आप संयम के साथ स्थिति को संभालने की कोशिश करेंगे तो माह के अंत तक सब चीज़ों के सुधरने के आसार हैं। मानसिक परेशानियां अधिक हो सकती हैं। पराक्रम की हानि होगी। वाणी में दोष उत्पन्न हो सकता है। विद्यार्थियों को विद्याप्राप्ति में अधिक परिश्रम करना होगा। जो सरकारी नौकरी कर रहे हैं या फिर सरकारी क्षेत्र से लाभ प्राप्त रहे हैं यह माह आपके लिए चुनौती पूर्ण रहेगा। वैज्ञानिकों व इंजीनियरों के लिए भी ये बिल्कुल उचित समय है। शोध व ज्ञान के प्रति रूचि बढेगी। इस माह आपको अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा। हृदय रोग या रक्त विकार की समस्या से पीडित लोगों को संभल कर रहने की आवश्यकता है। बाहर या घर में कोई जल्दबाज़ी न दिखाएं अन्यथा चोट लगने के संभावना हैं। मातृ पक्ष से लाभ हो सकता है। कठिन समय में संयम से काम लें और झगड़ों व विवादों से दूर रहें। 5, 6, 7, 14, 15, 23, 24 दिनांके नेष्ट रहेंगी।

सितम्बर -

नया कार्य आरम्भ करने हेतु के लिए यह महीना काफी शुभ है। व्यापार में उन्नति होगी। वाणी का प्रभाव बढेगा। धन में वृद्धि होगी। नेत्र संबंधी विकार हो सकते है। त्वचा संबंधी विकार भी हो सकते हैं। निजी जीवन में खुशियों की बहार आएगी और भाई-बहन के साथ मिलकर चलने से आपको अच्छे परिणाम मिलेंगे। पिता को कुछ कष्ट हो सकता है। बच्चों पर इस दौरान ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है। उन्हें प्यार व स्नेह के साथ रखने की ज़रूरत है। किशोरावस्था

के बच्चों को विशेष रूप से आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है, खासतौर पर बात जब उनके दोस्तों को चुनने की हो। जातक की आर्थिक स्थिति पूरे माह अच्छी रहेगी। परिवार से आय के कई नए स्रोत प्राप्त होंगे और आप समय का आनंद उठाएंगे। इस दौरान खेल-कूद, पुलिस, सेना, रेस्टोरेन्ट से जुड़े व्यक्ति अपने कार्यस्थल पर अच्छा प्रदर्शन करेंगे। चिकित्सा, सर्जरी, हेल्थ व फिटनेस से जुड़े उपकरणों का बिजनेस अच्छा लाभ देगा। कुछ जातक कलात्मकता का भाव अनुभव करेंगे और उस कला का बेहतरीन प्रयोग करेंगे। लेखन व विज्ञापन से जुड़े लोगों के लिए समय शुभ है और इस दौरान उन्हें अनेक नये अवसर प्राप्त होंगे। इस मास 2, 3, 11, 12, 19, 20, 21, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर -

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन प्राप्ति के नए मार्ग खुलेंगे। प्रशासनिक सेवा की तैयारी करने वाले छात्रों को सफलता प्राप्त होगी। पिता को शारीरिक कष्ट हो सकता है। वैवाहिक अड़चन दूर होगी। व्यापारी वर्ग को लाभ होगा। सेना, पुलिस, रेस्टोरेन्ट, मेडिकल संबंधी कार्य करने वालों को लाभ होगा। १८ तारीख के बाद ज्वर, शिरो वेदना पित्त विकार आदि कष्ट हो सकते हैं। धन धान्य की वृद्धि होगी। आप अपने ऊर्जा व उत्साह में वृद्धि देखेंगे और जो भी कार्य करेंगे, उसमें सफलता हासिल करेंगे। इस माह आपको बार-बार यात्रा पर जाना पड़ सकता है। बाहरी देशों के साथ व्यापार करने वालों को बड़ा मुनाफ़ा हो सकता है। आपका निर्यात से जुड़ा व्यवसाय बढ़ता रहेगा और भविष्य में भी लाभ देगा। सॉफ्टवेयर टेक्नॉलिजी से जुड़े जातकों को भी इस माह लाभ होगा। मर्चेन्ट नेवी या नौसेना से जुड़े लोगों के लिए ये समय काफी अच्छा है। सरकारी फंड से संबंधित परियोजनाओं को संभालने वाले सलाहकारों को विदेश यात्रा का अवसर मिल सकता है। विदेश में काम करने वाले राजनयिकों व संपर्क अधिकारियों के लिए समय अच्छा है। वो अपने कार्य में सफलता हासिल करेंगे। छात्रों के लिए ये माह काफी शुभ है क्योंकि इस दौरान उन्हें सफलता मिल सकती है। उच्च शिक्षा के लिए यदि विदेश जाने की इच्छा रखते हैं तो आपकी ये कामना इस मास पूर्ण हो सकती है। इस मास 1, 8, 9, 16, 17, 18, 26, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

नवम्बर -

विद्यार्थीयों को परीक्षाओं में सफलता प्राप्त होगी। व्यापारी वर्ग को लाभ प्राप्ति हेतु अधिक परिश्रम करना होगा। ससुराल पक्ष से कुछ अनबन हो सकती है। विदेश यात्राओं के योग भी बनते हैं। नेत्र संबंधित रोग होने की संभावनाऐ बनती है। राजकीय व राजनैतिक उद्देश्यों हेतु विशेष व्यय हो सकता है। १९ अप्रैल के उपरांत कार्यों में सफलता प्राप्त होगी व स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होगा। मान व प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। संगीत, साहित्य, मनोरंजन के प्रति रूचि बढेगी। इस माह ख़र्चों में वृद्धि आपको मुश्किल में डाल सकती है इसलिए बजट के अनुसार ही चलें। शुरुआत के 15 दिनों तक किसी से भी उधार लेने से बचें और फाइनेंस से जुड़ा अच्छी योजनाऐं बनाएं। तथापि अचल संपत्तियों से लाभ प्राप्त हो सकता है। नई प्रॉपर्टी लेने की संभावनाऐं हैं। पेट में संक्रमण, अपच या अनिद्रा जैसी समस्याएं आपको परेशान कर सकती हैं। बीमारियों के कारण ख़र्च संभव है। आपका निजी जीवन संघर्ष व चुनौतियों से भरा रहेगा। वैवाहिक जीवन में टकराव हो सकते हैं जिस कारण आप और आपके जीवनसाथी के मध्य दूरी भी हो सकती है। ऐसी स्थिति में संभलकर रहें । कानूनी मामलों में भी फंस सकते हैं। निजी जीवन में किसी-किसी को अलगाव का सामना भी करना पड़ सकता है। मेडिकल या रिसर्च से जुड़े छात्रों के लिए समय अच्छा है। मातृ पक्ष से लाभ हो सकता है। इस मास 4, 5, 13, 14, 23, 24 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

दिसम्बर -

इस मास भाइयों से कुछ अनबन रहेगी। हाथों पर चोट लगने की संभावना है। नौकरों से धोखा हो सकता है। पराक्रम में वृद्धि होगी। वाहन, भूमि, जायदाद का लाभ हो सकता है। विद्यार्थियों को अधिक परिश्रम करना होगा। मधुमेह, पेट रोग, कफ संबंधी विकार होने की संभावना है। जीवनसाथी का स्वास्थ्य कुछ कमजोर रह सकता है। स्वयं भी सावधानी रखें, दुर्घटना हो सकती है। आध्यात्म की ओर रुझान बढेगा। भाग्य का सहयोग कम मिलेगा। व्यापारी वर्ग को वस्त्र, प्रसाधन, मनोरंजन सामग्रीयों से लाभ होगा। मांगलिक कार्यों में विशेष व्यय हो सकता है। अपने कार्यों में बड़ी सफलता हासिल करेंगे। कामयाब व्यावसायिक जीवन का आनंद उठाएंगे और अगर आप नौकरी में बदलाव का प्रयास कर रहे हैं तो आपको कुछ अच्छे अवसर प्राप्त हो सकते हैं। नौकरी में ये बदलाव आपके लिए बहुत लाभकारी होंगे और आपके करियर को ऊंचाई देंगे। इस माह प्रमोशन के साथ सैलेरी बढ़ने के भी आसार हैं। अगर आप बिजनेस कर रहे हैं तो उससे भी अप्रत्याशित लाभ की संभावना है। यदि आपका कार्य कला, थिएटर आदि से जुड़ा है तो आपको इस बीच नाम और प्रसिद्धी दोनों मिलेगी। कामकाजी महिलाओं को इस दौरान प्रशंसा, सम्मान व सफलता मिलेगी जिससे उन्हें संतुष्टि की अनुभूति होगी। आपको अपने परिवार विशेष रूप से घर की महिलाओं से पूरा सहयोग प्राप्त होगा। जीवन साथी आपकी ज़रूरतों को समझेंगे और आपका रिश्ता खुशी व आनंद से भरा रहेगा। जीवन साथी की मदद से आपको अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। सामाजिक तौर पर घुलने-मिलने के लिए समय ठीक है। जीवन में नए दोस्तों के आगमन से खुशियां आएंगी। छात्रों के लिए भी ये माह शुभ रहेगा। विशेष रूप से उन छात्रों के लिए जो कला या चिकित्सा विषयों से जुड़े हैं। इस मास 2, 3, 10, 11, 20, 21, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

जनवरी 2026

आपको इस माह भाग्य का साथ मिलेगा और आपका पूरा मास बहुत अच्छा रहेगा। समाज में लोगों से संबंध प्रगाढ होंगे। लोगों से मिलना-जुलना बढ़ेगा जिससे सामाजिक स्थिति अच्छी होगी। पारिवारिक व निजी आय में वृद्धि होगी । शेयर आदि में निवेश न करें बल्कि कोई अन्य सुरक्षित उपाय अपनाएं। इस मास पैसों से जुड़े मामलों में कोई फैसला लेने से पहले एक बार अवश्य चिन्तन कर लें। निजी जीवन की उन्नति हेतु माह आपके लिए अच्छा रहेगा। वैवाहिक जीवन में आनंद बना रहेगा। पारिवारिक माहौल में खुशी बढेगी और आप परिवार के लोगों के साथ अच्छा समय बिताएंगे। कार्यक्षेत्र पर सफलता मिलेगी, विशेष रूप से व्यवसाय करने वालों के लिए समय शुभ है। साझेदारी से किया गया व्यापार भी इस दौरान लाभदायक साबित होगा। व्यवसाय व कार्यक्षेत्र संबंधित विशेष कार्य हेतु विदेश यात्रा की संभावनाऐं बनेंगी व अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। इस मास 6, 7, 8, 17, 18, 26, 27 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

फरवरी -

इस मास आपकों को अपने कार्यक्षेत्र को बेहतर बनाने हेतु अधिक प्रयास करने होंगे। इस मास क्रोध में गलत शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं, जिससे व्यर्थ कलह की संभावनाऐं बनेगी। स्वास्थ्य हेतु प्रारम्भ का आधा महीना अच्छा नहीं जाएगा और छोटी-छोटी स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। लेकिन बाद में आपका स्वास्थ्य उत्तम हो जाएगा और आप ज़्यादा शक्ति व स्फूर्ति का अनुभव करेंगे। इस माह भाई-बहन के साथ मतभेद हो सकते हैं, परिवार के मुखिया से इस दौरान विवाद की संभावनाएं हैं। पिता का स्वास्थ्य कमजोर रह सकता है। वकील व सर्जन के लिए ये समय काफी अच्छा है, आप इस दौरान अपने कार्य में सफलता प्राप्त करेंगे। इस मास 3, 4, 13, 14, 22, 23 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

मार्च -

इस मास आध्यात्मिक गतिविधियों में आपकी रुचि बढ़ेगी। आपके जीवन साथी आपसे प्रेरणा पा कर खुद भी अध्यात्म की ओर झुक सकते हैं। वैवाहिक जीवन हेतु मास अच्छा रहेगा। कुछ जातक को इस मास अपने आत्म-विश्वास में कमी महसूस कर सकते हैं तो कुछ पारिवारिक जीवन में तनाव महसूस करेंगे। आर्थिक स्थिति के लिए काफी अच्छा रहेगा और आपका बैंक बैलेंस अच्छा हो जाएगा। भाग्य आपके पक्ष में रहेगा और आपको मेहनत से ज़्यादा कामयाबी मिलेगी। इस माह नई प्रॉपर्टी में आप पूंजी निवेश कर सकते हैं और अचल संपत्ति में भी बढ़ोत्तरी की संभावना है। इस माह कारोबार में भी भारी लाभ की उम्मीद है। इस दौरान बैंक, बीमा क्षेत्र और अन्य ऋण देने वाली एजेंसियों को भी उन्नति प्राप्त होगी। इस उद्योग से जुड़े लोगों को अधिक लाभ होगा। इस मास 2, 3, 4, 12, 13 दिनांक नेष्ट रहेगी।

तुला राशि (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

अप्रैल -

इस माह का प्रारम्भ ही आपके लिए अच्छा रहेगा। जीवन के सभी विषयों से सुख मिलेगा और यह समय अच्छे से बीतेगा। परिवार में अपने जीवनसाथी व बच्चों के साथ स्मरणीय समय बिताएंगे। वैवाहिक ज़िंदगी शांति, प्रेम व सौहार्द के साथ आगे बढ़ती रहेगी। इस माह आपको सफलता मिलेगी और आपके करियर में नई ऊंचाई देखने को मिलेगी। हालांकि इस बीच घर में पिता या बड़े भाई-बहन के साथ थोड़े बहुत विवाद हो सकते हैं, लेकिन बातचीत से ये सभी समस्याएं सुलझ जाएंगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और आप स्वयं को ज़्यादा ऊर्जावान और पॉज़ीटिव महसूस करेंगे। जनवरी के महीने में आपको भाग्य का साथ मिलेगा और लॉटरी, शेयर आदि से अप्रत्याशित धन भी प्राप्त हो सकता है। जो जातक इस दौरान नौकरी परिवर्तित करने की योजना बना रहे हैं, उन्हें कई अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। इस मास 2, 3, 11, 12, 21, 22, 29, 30 दिनांक कुछ कष्टकारक रह सकती है।

मई -

इस माह आपको ध्यान व योगा से जुड़ी गतिविधियों को करने में फायदा होगा। कार्य स्थल पर सफलता हासिल करने के लिए आपको बहुत ज़्यादा प्रयास करने की आवश्यकता है लेकिन आप बार-बार अपने लक्ष्य से भटक जाएंगे। ऐसा कार्यालय में अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ कुछ कहा-सुनी होने के कारण हो सकता है। इसलिए अपने सारे विवादों को सुलझाने की कोशिश करें और उन सभी के साथ एक अच्छा रिश्ता कायम करें। इस दौरान अपने स्वभाव में अहंकार को न पनपने दें। फैसले लेते वक्त समझदारी दिखाएं और भावनाओं को बीच में न आने दें क्योंकि आपका गलत फैसला भविष्य में मंहगा पड़ सकता है। आप में से कुछ जातक विदेश में अपना घर ख़रीद सकते हैं। इस मास आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। व्यय बढ़ सकता हैं और आप आय से ज़्यादा ख़र्च करेंगे, इसलिए व्यर्थ के ख़र्चों से बचें। इस बीच आपकी सकारात्मक सोच आपकी बहुत सहायता करेगी और आप अपने सभी कार्यों को पूरा करने में सक्षम होंगे। इस मास 8, 9, 10, 18, 19, 27, 28 दिनांक नेष्ट है।

जून -

इस माह आपके सामाजिक जीवन से अलगाव की संभावनाएं हैं। आप सामाजिक गतिविधियों व भौतिक जीवन से जुड़ी चीज़ों में कम रुचि लेंगे। इस दौरान आपके जीवन साथी और संतान को समय नहीं दे पायेंगे और घरेलू जीवन भी अस्त-व्यस्त रहेगा। अध्यात्म में आपकी रुचि बढ़ने लग जाएगी। इस दौरान आपका मिलन कुछ आध्यात्मिक व धार्मिक लोगों से होगी जिनसे आपको आध्यात्मिक लाभ भी होगा। प्रारम्भ में आपको कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है लेकिन धीरे-धीरे सभी चीज़ें ठीक हो जाएंगी। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी परन्तु आप धन जमा करने में ज़्यादा इच्छुक नहीं रहेंगे। किसी विशेष शुभ कार्य में व्यय हो सकता है। कुछ जातक अपने कार्य के कारण इस बीच विदेश में भी बस सकते हैं। अच्छा होगा कि इस दौरान आप अपनी सेहत का ख़्याल रखें। स्वस्थ आहार व थोड़ा सा व्यायाम आपकी सभी समस्याओं को दूर कर सकता है। इस मास 4, 5, 6, 14, 15, 16, 23, 24 दिनांक नेष्ट हैं।

जुलाई -

आपको इस माह आर्थिक रूप से कोई संघर्ष नहीं करना पड़ेगा। आय के कई नए स्रोत प्राप्त होंगे। मनोरंजन व विलासिता से जुड़ी वस्तुओं पर व्यय होगा। जीवनसाथी और सन्तति के सहयोग से भी आपको लाभ मिलेगा। इस मास आप अपने परिवार के साथ अच्छा समय बिताएंगे। ये स्थिति किसी शुभ कार्य की तरफ संकेत दे रही है जिसके चलते परिवार में सब लोग एक-साथ एकत्र होंगे। परिवार के प्रति आप अपने सभी कर्तव्यों को बखूबी निभाएंगे। अपने लक्ष्यों को पाने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे और उसमें सफलता प्राप्त करेंगे। इस दौरान कुछ लंबी अवधि की योजनाएं बना सकते हैं। आप इस बीच अपने व्यापार में विस्तार कर सकते हैं अथवा कोई नया उद्योग भी प्रारम्भ कर सकते हैं। बड़े भाई-बहनों से लाभ प्राप्त हो सकता है। स्वास्थ्य के संबंध में देखा जाए तो आपको छोटी-मोटी समस्याएं हो सकती हैं। अच्छी जीवनशैली व स्वस्थ आहार आपको स्वस्थ रखने में मदद करेगा। इस मास 2, 3, 12, 13, 20, 21, 29, 30 दिनांक नेष्ट है।

अगस्त -

इस माह व्यापारी वर्ग को सफलता मिल सकती है। इस दौरान अच्छे लाभ की संभावना हैं। कुछ जातक इस मास व्यापार के संबंध में सात समुंद्र पार भी जा सकते हैं और अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते

हैं। यदि आप जॉब कर रहे हैं तो इस दौरान उच्च पद मिलने के आसार हैं। वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा और आप सफलता प्राप्त करेंगे। अपनी सकारात्मक सोच व कार्यों के कारण आप अपने व्यावसायिक जीवन की हर दिशा में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही साथ आप ज़्यादा ऊर्जावान व उत्सुक रहेंगे। पारिवारिक जीवन में कुछ तनाव देखने को मिल सकता है। बहस व लड़ाई-झगड़ों से रिश्तों पर प्रभाव पड़ेगा। इन परिवारिक मुद्दों को जल्द ही सुलझाने की आवश्यकता है अन्यथा ये नियंत्रण से बाहर हो सकते हैं। कुछ समय अपने परिवार वालों के साथ भी बिताएं, ऐसा करने से संबंधों में मधुरता आएगी। इसके साथ ही अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आंखों से संबंधित कोई समस्या उन्हें इस महीने परेशान कर सकती है। इस मास 8, 9, 16, 17, 18, 25, 26, 27 दिनांक नेष्ट रहेगी।

सितम्बर -

यह माह आपके लिए उलझन भरा रहेगा। एकाग्रता में कमी आ जाने से आपको परेशानी हो सकती है। कई बार आपको चिड़चिड़ापन भी महसूस हो सकता है और आपका गुस्सा पारिवारिक समस्याओं को बढ़ा सकता है। इस दौरान आपको अपने बिजनेस व आर्थिक चीज़ों से जुड़े विषयों में सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि आपका अपना ही कोई करीबी आपके साथ धोखा कर सकता है। इस बीच आप आर्थिक तंगी से भी गुज़र सकते हैं। बेहतर वित्तीय नियोजन की आवश्यकता है और ख़र्चों पर ध्यान देने की ज़रूरत है। नकारात्मक ऊर्जा को अपने ऊपर हावी न होने दें और सकारात्मक रहें। लगभग आधा माह बीत जाने के बाद आपका अच्छा समय प्रारम्भ हो जाएगा। कामकाजी महिलाओं के लिए समय अनुकूल नहीं है क्योंकि इस दौरान वो अपने घरेलू जीवन व कार्यक्षेत्र में सामञ्जस्य नहीं बना पाएंगी। कार्यभार के चलते आपको तनाव हो सकता हैं। इस मास 1, 9, 10, 11, 18, 19, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर -

यह महीना आपके स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है। इस दौरान स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं आपको परेशान कर सकती हैं, इसलिए बिल्कुल भी लापरवाही न रखें और अपना ध्यान रखें। दवाइयों के व्यय बढ़ जाने से बजट बिगड़ सकता है। कुछ जातक इस दौरान ज्वर आदि से बीमार भी पड़ सकते हैं। इस दौरान पिता को आर्थिक रूप से बड़ा नुकसान उठाना पड़ सकता है। इसके साथ ही ये स्थिति कुछ और गंभीर पारिवारिक समस्याओं को इंगित कर रही है। परिवार के सदस्यों में आपस में न बनने से घर की सुख-शांति भंग हो सकती है। जल्द ही सभी जटिल समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करें। बच्चों पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि इस दौरान वे गलत संगत के कारण किसी समस्या में फंस सकते हैं। उन्हें हर दिशा में आपके मार्गदर्शन, प्रेम और स्नेह की आवश्यकता होगी। इस अवधि के दौरान चिकित्सा अनुसंधान से जुड़े लोग अपने कार्य में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। इस मास 2, 3, 10, 11, 19, 20, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

नवम्बर -

इस माह आप अपनी नौकरी बदलने की योजना बना सकते हैं और इस बीच कुछ नये अवसर भी प्राप्त कर सकते हैं। किसी अच्छे मौके को ठुकराने की गलती न करें। व्यावसायिक जीवन में कुछ सकारात्मक बदलाव आएंगे जो आपको नई ऊंचाइयों पर लेकर जाएंगे। इस मास आपको अपने जीवनसाथी के साथ ज़्यादा से ज़्यादा समय बिताना चाहिए अन्यथा आपकी उनके प्रति अनदेखी वैवाहिक जीवन में समस्या उत्पन्न कर सकती हैं। अपने जीवनसाथी के साथ बाहर घूमने की योजना बनाये, ऐसा करने से भी आपके रिश्तों में मिठास आएगी। साथी की सेहत का ख़्याल रखें, उसमें बिल्कुल भी लापरवाही न बरतें। कार्यरत्त लोगों को अपने सहभागियों के साथ अच्छा संबंध बनाये रखने की सलाह दी जाती है। अनावश्यक बहस से बचें। उत्तम होगा यदि आप अपने साथी पर थोड़ा विश्वास दिखाएं। धन का आगमन होता रहेगा और आय के कई नए स्रोत प्राप्त होंगे। कंप्यूटर के व्यवसाय से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलने की उम्मीद है। इस मास 6, 7, 15, 16, 17, 25, 26, 27 दिनांक नेष्ट रहेगी।

दिसम्बर -

इस माह आपके पिता को उनके सत्कर्मों के लिए सम्मानित किया जाएगा व समाज में उनकी प्रशंसा होगी। बच्चों के द्वारा अर्जित की गई सफलता आपको खुशी देगी व परिवार का नाम ऊंचा करेगी। अचानक से आपकी रुचि कलात्मक कार्यों और मनोरंजन से जुड़ी गतिविधियों में बढ़ जाएगी। अपने रिश्तों के प्रति कोई लापरवाही न बरतें और गलत शब्दों के प्रयोग से बचें क्योंकि स्वभाव में कठोरता दूसरों, खासतौर पर आपके परिवार वालों का दिल दुखा सकती है। इस माह अपने गुस्से पर काबू पाने की कोशिश करें वरना विवादित बोल से स्थिति बिगड़ सकती है। परिवार के कुछ सदस्य चीज़ों को सुधारने व बदलने के लिए इस दौरान अलग रहना पसंद करेंगे। लेकिन निजी ज़िंदगी में तनाव बरकरार रहेगा जिसके चलते आप भी परेशान रहेंगे। इसलिए मुश्किल परिस्थितियों में अपने स्वभाव में विनम्रता लाएं व गुस्से पर कंट्रोल करें। इस दौरान आपकी तबियत बिगड़ भी सकती है। आंख, दांत, गले से संबंधित रोग हो सकता है। खान-पान की गलत आदतें अपच, गैस या एसिडिटी की समस्या उत्पन्न कर सकती हैं, इसलिए अपने भोजन का विशेष ध्यान रखें। इस मास 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23, 24, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जनवरी 2026

इस मास आपके पिता को कई अवसर मिलेंगे जो उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाएंगे। विद्यार्थी वर्ग की ओर से अच्छी सूचना प्राप्ति की उम्मीद है। वे परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करेंगे और अच्छे अंक प्राप्त करेंगे। कुछ छात्रों को प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध अकादमिक संस्थानों में प्रवेश मिलेगा। रचनात्मक क्षेत्रों में कार्य कर रहे पेशेवरों के लिए अनुकूल समय है। इस दौरान बड़ी सफलता मिलने के आसार हैं। इस माह अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने की अधिक आवश्यकता होगी। पेट में दर्द, अपच या जलन की शिकायत रह सकती है। सड़क किनारे मिलने वाले व तैलीय खाने से परहेज करें। इस माह आपको अपनी वैवाहिक जीवन के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है। बहस और झगड़ों की स्थिति बन रही है जिसके चलते रिश्तों में तनाव हो सकता है। इस मास 1, 9, 10, 19, 20, 28, 29 दिनांक नेष्ट रहेगी।

फरवरी -

इस माह आपको आर्थिक रूप से किसी प्रकार की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। देवी लक्ष्मी

की कृपा आप पर पूरी तरह से बनी रहेगी और आप इस बीच सुख साधनों की प्राप्ति पर विशेष खर्च कर सकते हैं। वाहन चलाते समय सावधान रहें। इसके अलावा इसी दौरान आप अपने घर की मरम्मत या उसकी सजावट में भी रुपये ख़र्च कर सकते हैं। कुछ जातक इस बीच बचत के तौर पर या फिर खेती के लिए भी ज़मीन ख़रीद सकते हैं। लेकिन ज़मीन ख़रीदते वक्त थोड़ी सावधानी रखें खासतौर पर कागजात या फिर जमीन संबंधित पुराने कानूनी मामलों में ध्यान रखने की आवश्यकता होगी। इस मास जीवन साथी के साथ थोड़े बहुत झगड़े हो सकते हैं। एक-दूसरे के विचार से सहमत न हो पाने के कारण ये विवाद हो सकते हैं। स्वभाव में थोड़ा सा बदलाव जीवन में खुशी व शांति लेकर आ सकता है इसलिए अपने जीवनसाथी की बात को समझें और उनकी भावनाओं का सम्मान करें अन्यथा बात बढ़ सकती है। इस दौरान आप अपना समय घर की जिम्मेवारी में अधिक व्यस्त रहेंगे जिस कारण से व्यावसायिक जीवन में मुश्किल में कुछ समस्या आ सकती है। इस दौरान स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अतिरिक्त भार व थकान आदि से आप परेशान हो सकते हैं। काम का भार अपने ऊपर बहुत ज़्यादा न डालें, ऐसा करने से सेहत कमजोर हो सकती है। इस मास 5, 6, 7, 15, 16, 24, 25 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मार्च -

इस माह आप अपने निजी व व्यावसायिक जीवन में संतुलन बनाकर चलें। कुछ बोलने से पहले सोच-विचार ज़रूर कर लें। कार्यस्थल व परिवार में कुछ ग़लतफ़हमियां उत्पन्न हो सकती हैं। पारिवारिक आय में अप्रत्याशित वृद्धि हो सकती है। वहीं दूसरी तरफ आपके व्यय भी बढ़ने की कृपा आप पर पूरी तरह से बनी रहेगी और आप इस बीच सुख साधनों की प्राप्ति पर विशेष खर्च कर सकते हैं। वाहन चलाते समय सावधान रहें। इसके अलावा इसी दौरान आप अपने घर की मरम्मत या उसकी सजावट में भी रुपये ख़र्च कर सकते हैं। कुछ जातक इस बीच बचत के तौर पर या फिर खेती के लिए भी ज़मीन ख़रीद सकते हैं। लेकिन ज़मीन ख़रीदते वक्त थोड़ी सावधानी रखें खासतौर पर कागजात या फिर जमीन संबंधित पुराने कानूनी मामलों में ध्यान रखने की आवश्यकता होगी। इस मास जीवन साथी के साथ थोड़े बहुत झगड़े हो सकते हैं। एक-दूसरे के विचार से सहमत न हो पाने के कारण ये विवाद हो सकते हैं। स्वभाव में थोड़ा सा बदलाव जीवन में खुशी व शांति लेकर आ सकता है इसलिए अपने जीवनसाथी की बात को समझें और उनकी भावनाओं का सम्मान करें अन्यथा बात बढ़ सकती है। इस दौरान आप अपना समय घर की जिम्मेवारी में अधिक व्यस्त रहेंगे जिस कारण से व्यावसायिक जीवन में मुश्किल में कुछ समस्या आ सकती है। इस दौरान स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अतिरिक्त भार व थकान आदि से आप परेशान हो सकते हैं। काम का भार अपने ऊपर बहुत ज़्यादा न डालें, ऐसा करने से सेहत कमजोर हो सकती है। इस मास 5, 6, 7, 15, 16, 24, 25 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मार्च -

इस माह आप अपने निजी व व्यावसायिक जीवन में संतुलन बनाकर चलें। कुछ बोलने से पहले सोच-विचार ज़रूर कर लें। कार्यस्थल व परिवार में कुछ ग़लतफ़हमियां उत्पन्न हो सकती हैं। पारिवारिक आय में अप्रत्याशित वृद्धि हो सकती है। वहीं दूसरी तरफ आपके व्यय भी बढ़ने वाले हैं। यदि बजट बनाकर नहीं चले तो भविष्य में आर्थिक तंगी देखने को मिल सकती है और संघर्ष करना पड़ सकता है। कार्यक्षेत्र में तेजी से कुछ महत्वपूर्ण बदलाव आएंगे जिससे भी लाभकारी परिणाम प्राप्त होंगे। ज़्यादा लाभ कमाने के लिए आप व्यापार में भाई-बहनों का सहयोग भी प्राप्त कर सकते हैं। कार्यस्थल पर अपने बेहतर प्रदर्शन से आप लोगों को आश्चर्यचकित कर देंगे। सहभागियों को आपसे ईर्ष्या की भावना हो सकती है और वो आपके लिए समस्याएं उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए सतर्क रहें और सावधानीपूर्वक कार्य करें। इस मास 5, 6, 14, 15, 16 दिनांक कुछ कष्टकारक हो सकती हैं।

वृश्चिक राशि (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

अप्रैल -

इस माह आप अपने अंदर आत्म-विश्वास की अनुभूति महसूस करेंगे और खुद को साहसी भी पाएंगे। अपनी मेहनत व सकारात्मक व्यवहार के ज़रिए आप सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे और यदि आपको पदोन्नति या वेतन बढ़ने की उम्मीद है तो आपकी इच्छा इस अवधि के दौरान पूरी हो सकती है। इन कुछ अच्छे परिणामों के साथ-साथ आप कुछ बुरे लोगों से भी मिल सकते हैं। मां के लिए ये समय थोड़ा कष्टदायी हो सकता है। इस दौरान उन्हें दुःख का अनुभव हो सकता है या वे किसी बड़ी समस्या में भी पड़ सकती हैं। इसके अलावा घर में आपकी व्यंग्यपूर्ण भाषाशैली और कठोर व्यवहार गलतफ़हमी और असंतोष उत्पन्न कर सकता है। इसके अतिरिक्त इस बीच ख़र्चे बढ़ जाएंगे क्योंकि आप घर की आवश्यकताओं के कुछ सामान ख़रीदेंगे। बच्चों से संबंधित जो भी परेशानियां आपको हैं, वो सभी दूर हो जाएंगी। शिक्षा के क्षेत्र में उनका प्रदर्शन संतोषजनक रहेगा। वाहन चलाते समय आपको सावधानी रखने की आवश्यकता है क्योंकि चोट लगने की संभावना दिखाई दे रही हैं। इस मास 4, 5, 13, 14, 15, 23, 24 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मई -

व्यापार क्षेत्र से जुडे जातकों के लिए यह माह बहुत अच्छा रहने वाला है। व्यापार को बढ़ाने का विचार अच्छे परिणाम देगा और आपका व्यापार नई ऊंचाइयों पर पहुंच जाएगा। जिन जातकों ने बैंक में लोन के लिए अर्ज़ी लगा रखी है तो इस दौरान उसे स्वीकृति प्राप्त हो सकती है। कार्यस्थल में आपके द्वारा किए गए प्रयासों और संसाधनों में वृद्धि के संकेत दिखाई दे रहे हैं। इस दौरान आपके आपके बच्चों के साथ कुछ विवाद हो सकते हैं। इस महीने के शुरू होते ही आपके स्वभाव में अहंकार आ सकता है जिस पर नियन्त्रण रखने की आवश्यकता है। अपने बच्चों को इतना भी लाड़-प्यार न करें कि वो इसका फायदा उठाने लगें। अपनी संवादशैली, बुद्धि आदि के लिए आपको दोस्तों, सहभागियों व पड़ोसियों से इस दौरान प्रशंसा प्राप्त हो सकती है। इसी माह आप अपने अंदर गुस्से का भाव महसूस करने लग जाएंगे। इस दौरान अपने ऊपर काबू पाएं और गुस्से से बचें, अन्यथा समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। इस बीच आपके ख़र्चे बढ़ेंगे। इस मास 1, 2, 11, 12, 20, 21, 22, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जून -

इस महीने के प्रारम्भ में परिवार के कुछ सदस्यों का स्वास्थ्य ख़राब रहने से आप परेशान हो सकते हैं। डॉक्टर, दवाई आदि पर ख़र्चे ज़रूरत से ज्यादा हो सकते हैं। लेकिन ये अवधि बस थोड़े ही समय के लिए

है अतः चिन्ता न करें। चीज़ें बहुत जल्दी संभल जाएंगी और आपकी सभी शीघ्र समाप्त हो जाएंगी। आय के नए स्रोत प्राप्त होंगे और बचत भी ज़्यादा होगी। आप अपने भीतर सकारात्मकता व मानसिक शांति का अनुभव करेंगे। आपका मन अति सक्रिय हो जाएगा और आपका काम अच्छा होगा। लोग आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे और इस दौरान आप प्रेम संबंधों में भी अपनी रुचि दिखाएंगे। जीवन साथी का सहयोग प्राप्त होगा। ज़मीन-जायदाद खरीदने से पहले सभी बातें अच्छे से साफ कर लें। यदि निवेश का प्लान बना रहे हैं तो समय बिल्कुल अनुकूल है। बीते समय में किए गए सभी निवेश इस दौरान लाभदायक फल देंगे। इस मास 7, 8, 17, 18, 25, 26 दिनांके नेष्ट रहेगी।

जुलाई -

व्यापार क्षेत्र से जुडे जातक इस माह अच्छा लाभ कमाएंगे। इस मास आपको किसी विदेशी कंपनी से भी सहयोग प्राप्त हो सकता है। लेकिन साझेदार के साथ काम करते वक्त आपको सतर्क रहने की आवश्यकता है। अपने फैसलों व वित्तीय मामलों को पूरी तरह से सुलझाए रखें अन्यथा कोई समस्या हो सकती है। नौकरी करते हैं और अगर कुछ बदलाव करने की योजना बना रहे हैं तो यह समय इसके लिए ठीक नहीं है, थोड़ा और इंतजार करें। अगर आप नौकरी छोड़ भी देंगे तब भी वक्त वैसा ही रहेगा। तो बेहतर यही है कि अभी जिस नौकरी में हैं, उसी पर ध्यान केंद्रित करें। निजी जीवन में परेशानियां आ सकती हैं लेकिन शांति व खुशी फिर भी बनी रहेगी। इस माह आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आपको पैसों से संबंधित कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी अपनी व पारिवारिक आय में बढ़ोत्तरी होगी। दूसरों के ऊपर हावी होने का आपका स्वभाव परेशानियों को उत्पन्न कर सकता है। इन्हें दूर करने के लिए संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। इस मास 4, 5, 14, 15, 22, 23, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अगस्त -

आर्थिक रूप से समय अच्छा रहेगा। बड़े भाई-बहन जो विदेश में अथवा अन्यत्र कहीं दूर कार्यरत हैं, उनकी सहायता से पैसों का आगमन होगा जिससे आर्थिक स्थिति सुधरेगी। सामाजिक स्थिति में भी पहले से बढ़ोत्तरी होगी और लोग आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे। आप जीवन साथी के साथ कोई नया व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं जो आपके लिए बहुत लाभदायक होगा। खुश रहें और नकारात्मक ऊर्जा व विचारों को अपने भीतर न आने दें। अपने ऊपर ध्यान दें और खुद को जीवन में आगे ले जाने के रास्ते निकालें। नव विवाहित जोड़ों के लिए ये माह चुनौतीपूर्ण रहेगा। लड़ाई, झगड़े व विवाद इस दौरान आपके जीवन में रहेंगे जिससे मानसिक शांति भी भंग होगी। यदि आप स्थिति को सुधारना चाहते हैं तो ध्यान व समझदारी के साथ काम लें। माह के लगभग पंद्रह दिन बाद चीज़ें सुधरने लग जाएंगी और भाग्य आपका साथ देगा। इस मास 1, 2, 10, 11, 19, 20, 28, 29 दिनांक नेष्ट रहेगी।

सितम्बर -

विदेश में काम करने वाले जातकों को सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि ऐसी संभावनाएं हैं कि आप पर कोई बड़ा जैसे कागज़ात या पैसों की चोरी का आरोप लग सकता है। कार्यस्थल पर उच्च अधिकारियों से भी विवाद हो सकता है। माह की शुरुआत में आप लक्ष्यहीन होकर कार्य करेंगे लेकिन आधा माह बीत जाने पर आप अपनी एक नई शुरुआत करेंगे। ये समय आपके परिवार वालों के लिए काफी चुनौतीपूर्ण रहेगा। माता-पिता के लिए समय उचित नहीं है। उन्हें किसी भी प्रकार की मानसिक अशांति या स्वास्थ्य संबंधी समस्या से गुज़रना पड़ सकता है, इसलिए उन पर इस दौरान ज़्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। पारिवारिक जीवन इस दौरान थोडा अस्त-व्यस्त रह सकता है। आपके परिवार वालों को आपसे कुछ समस्या हो सकती हैं और वो आपसे नाखुश हो सकते हैं। परिवार की ये समस्याएं कार्यक्षेत्र में भी देखने को मिल सकती हैं। इन सभी समस्याओं को जल्द से जल्द हल करें और परिवारिक व व्यावसायिक जीवन में संतुलन बनाएं। इस मास 6, 7, 8, 15, 16, 24, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर -

मल्टी नेशनल कंपनी में कार्यरत लोगों को इस दौरान करियर में सफलता मिलेगी और आगे की ट्रेनिंग के लिए विदेश जाने का मौका मिलेगा। निजी मामलों में आपकी ज़िंदगी में खुशी भरपूर रहेगी और आप परिवार के साथ अच्छा समय बिताएंगे। बड़े भाई-बहनों के लिए भी ये समय तरक्की लेकर आएगा। वो अपने जीवन में इस दौरान काफी अच्छा प्रदर्शन करेंगे और बड़ी सफलता हासिल करेंगे। लेकिन आपके पिता को इस दौरान कार्य से संबंधी कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। कार्यस्थल पर कुछ समस्याएं हो सकती हैं या व्यापार में साथ काम करने वालों के साथ विवाद हो सकते हैं। इसलिए उन्हें संयम से कार्य करने की सलाह दी जाती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से इस माह आप मानसिक रूप से थोड़ा नीरस अनुभव करेंगे हालांकि शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। कार्यभार के कारण समय-समय पर दबाव अनुभव करेंगे। ऐसे में ध्यान करने से लाभ प्राप्त होगा। स्थानांतरण की भी संभावना है। सरकारी फंड के प्रोजेक्ट से जुड़े लोगों को किसी समस्या से गुज़रना पड़ सकता है। इस मास 4, 5, 12, 13, 21, 22, 23, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

नवम्बर -

आपके पिता के लिए यह समय थोड़ा कष्टदायी हो सकता है। वो इस दौरान किसी समस्या में फँस सकते हैं। लेकिन अपने प्रयास के ज़रिए वो इस बड़ी मुसीबत से बाहर भी निकल जाएंगे। आपके व्यावसायिक जीवन में कोई बड़ा बदलाव आएगा। कुछ सकारात्मक बदलाव व उन्नति की संभावना है और आपके दर तक कुछ अच्छे अवसर भी प्राप्त होंगे। जून माह का भविष्यफल यह इशारा कर रहा है कि, बाहर की किसी बड़ी कंपनी से नौकरी का अवसर भी प्राप्त हो सकता है। लेकिन सतर्क रहने की आवश्यकता है चाहें चीजें सही ही क्यों न जा रही हों। किसी गलतफहमी को अपने अंदर न पनपने दे और अगर यदि हो जाएं तो उन्हें सुलझाने की जल्द से जल्द कोशिश करें। कार्यस्थल पर किसी भी प्रकार का वैरभाव न पनपने दें अन्यथा प्रॉब्लम्स खड़ी हो सकती हैं। इससे आपकी छवि भी बिगड़ सकती है। वित्तीय मामलों के लिए समय अनुकूल रहेगा और आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। इस मास 1, 8, 9, 18, 19, 28, 29 दिनांक नेष्ट रहेगी।

दिसम्बर -

इस मास जातक के जीवनसाथी की सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी और वो अपने कार्यक्षेत्र में उत्तम प्रदर्शन करेंगे। उनकी सफलता आपको खुशी देगी । कुछ दम्पतियों के बीच अहंकार आ सकता है जिससे घर में असंतोष व विवाद बढ़ सकता है। वरिष्ठ जनों की सलाह आपकी समस्याओं को हल

कर सकती है। आपकी माता को भावनात्मक व मानसिक रूप से देखभाल की आवश्यकता होगी, उनका विशेष ध्यान रखें। छात्रों के लिए समय अनुकूल है, उन्हें उनकी मेहनत का फल मिल सकता है। विदेश में पढ़ाई की इच्छा रखने वाले छात्रों को इस दौरान किसी बड़े संस्थान में प्रवेश मिल सकता है। स्वास्थ्य के संबंध से थोड़ी समस्याएं देखने को मिल सकती हैं, ध्यान रखे अन्यथा ये आपके लिए बड़ी समस्या भी खड़ी कर सकती हैं। वैवाहिक संबंधों के लिए भी समय अच्छा है। आप इस दौरान अपने साथी के साथ यादगार समय बिताएंगे। इस मास 6, 7, 15, 16, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जनवरी 2026

विवाह योग्य जातकों को अपना जीवनसाथी मिल सकता है और जो पहले से ही प्रेम संबंध में है उन्हें शादी के लिए माता-पिता से अनुमति प्राप्त हो सकती है। कुछ जातक इस बीच नौकरी बदलने का विचार कर रहे हैं लेकिन थोड़े से संघर्ष के बाद माह के पंद्रह दिन बीत जाने के बाद अच्छे विकल्प प्राप्त होंगे। कार्य से संबंधित यात्राएं भी इस दौरान हो सकती हैं अथवा जातक ऐसी नौकरी का चयन कर सकते हैं जिसमें बहुत ज़्यादा यात्रा करनी पड़ती हो। ये समय सफलता, संसाधनों के संचय व सकारात्मकता से भरा रहेगा। जो विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए पढ़ाई कर रहे हैं उन्हे अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए कडा परिश्रम करना होगा क्योंकि उनकी तैयारी संतोषजनक नहीं होगी। वैवाहिक युगलों को इस समय का लाभ मिलेगा। संबंधों में प्रेम बढ़ेगा और आप एक खुशहाल और शांतिपूर्वक जीवन बिताएंगे। स्वास्थ्य के संबंध में आपको ज़्यादा चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। प्रतिदिन ध्यान व योग करने से आप स्वयं को स्वस्थ रख सकते हैं। इस मास 2, 3, 11, 12, 13, 21, 22, 30, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

फरवरी -

इस मास धार्मिक व आध्यात्मिक विषयों में आपकी रुचि बढ़ेगी। इस दौरान आपकी महात्माओं व आध्यात्मिक गुरुओं से वार्ता हो सकती है। परिवार के सदस्यों के साथ कोई व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं, लेकिन ध्यान रहें कि किसी भी कार्य की शुरुआत से पहले अच्छे से विचार-विमर्श कर लें ताकि आगे चलकर कोई परेशानी न आए। व्यापार के विस्तार के लिए ये उचित समय है। परिश्रम ही सफलता की कुंजी है, इसी बात को ध्यान में रखकर मेहनत करते रहें और आगे बढ़ते रहें। शेयर बाजार या प्रॉपर्टी में निवेश आपके लिए लाभकारक साबित होगा। कुछ लोग विश्रान्त महसूस कर सकते हैं जिससे एकाग्रता में कमी आ सकती है। जबकि कुछ लोग अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं और दोबारा कार्य की शुरुआत करने से पहले अपने लिए थोड़ा समय ले सकते हैं। इस समय के दौरान उधार लेने से बचें अन्यथा आप ऋण के जाल में फँस सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी का पूर्ण समर्थन मिलेगा और आप एक सुखी वैवाहिक जीवन बिताएंगे। लेकिन अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य का विशेष ख़्याल रखें। इस मास 7, 8, 9, 17, 18, 19, 26, 27 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मार्च -

इस महीने में आपको परिवार की ओर ध्यान देने की आवश्यकता होगी। पारिवारिक विवादों को जल्द से जल्द सुलझाएं अन्यथा देर भी हो सकती है। वहीं दूसरी ओर किसी शुभ कार्य जैसे शादी, विवाह आदि के चलते परिवार में मेहमानों का आना-जाना हो सकता है। परिवार की आय इस दौरान बढ़ेगी लेकिन ख़र्चों पर नियन्त्रण नहीं रह पाएगा जिसके चलते बजट बिगड़ सकता है। काफी संघर्षों के बाद घर बैठकर काम करने वाले लोगों या उद्यमियों के लिए ये अच्छा समय है। इस दौरान आपको बड़े-बड़े प्रोजेक्ट भी मिल सकते हैं। लेखक, कवि, संपादकों को इस दौरान अपने कार्यक्षेत्र में उन्नति मिलेगी। व्यावसायिक लोगों को अपने से उच्च अधिकारियों व सहभागियों के साथ ऑफिस में अच्छा संबंध बनाए रखने की सलाह दी जाती है। जल्दबाजी में कार्यालय से जुड़े मामलों में कोई गलत फैसला न लें। इस माह आपको व्यवसाय में भी बड़ा लाभ मिलेगा। व्यापार को बढ़ाने के लिए ये समय अनुकूल है। गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य ठीक रहेगा व वो बच्चे को जन्म देते वक्त सुरक्षित रहेंगी। इस मास 7, 8, 17, 18 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

धनु राशि (ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

अप्रैल -

इस माह आप अपने धन व ऊर्जा को अनावश्यक मामलों में व्यय कर सकते हैं, जिससे आपको दुःख भी हो सकता है। किसी भी फैसले को लेने या कार्य करने से पहले अच्छे से विचार-विमर्श अवश्य कर लें। स्वास्थ्य के संबंध में यह माह आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। एक समय के बाद आप थका हुआ महसूस कर सकते हैं और अपने काम में ध्यान नहीं लगा पाएंगे। कार्यभार या तनाव के कारण स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से व्यय बढ़ने लग जाएंगे जिसके चलते भी आर्थिक स्थिति कमज़ोर पड़ सकती है। आप अच्छा धन इस दौरान एकत्रित कर लेंगे लेकिन फिर भी उसे बचा कर नहीं रख पाएंगे। इस माह वैवाहिक जीवन में कुछ समस्या हो सकती है। इस दौरान जीवनसाथी से कुछ विवाद हो सकते हैं। निजी जिम्मेदारियों से जी चुराने की आदत जीवनसाथी के साथ आपका संबंध ख़राब कर सकती है। परिवार में वाद-विवाद की स्थिति हो सकती है इसलिए इन सभी मामलों को अपनी बुद्धि व समझदारी से हल करने का प्रयास करें। साहस व हिम्मत के साथ इस मुश्किल परिस्थिति से निकलने की कोशिश करें। इस मास 6, 7, 16, 17, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मई -

यह माह आपके लिए उन्नति लेकर आएगा और आपके काम वैसे ही पूर्ण होंगे जैसे आप चाहते हैं। कार्यक्षेत्र पर आप अच्छा प्रदर्शन करेंगे और उच्च पद भी प्राप्त करेंगे। आपके साझा संसाधनों में वृद्धि होगी और ये आपको तरक्की की ओर लेकर जाएंगी। इस दौरान आपको अच्छे लाभ की प्राप्ति होगी और आप ज़्यादा से ज़्यादा बचत कर सकेंगे। बड़े निवेशों से बड़ा लाभ मिलेगा। व्यापार में कोई नया साझेदार जुड़ सकता है जिसका आगमन व्यापार के लिए लाभदायक होगा। वैवाहिक जीवन खुशहाल व प्रेम से भरा रहेगा। आप एक-दूसरे को अपना सहयोग देंगे और आपका संबंध मज़बूत होता जाएगा। विद्यार्थी अपने पढ़ाई के क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करेंगे और सफलता आपको खुशी देगी। विवाह योग्य जातक इस माह शादी के बंधन में बंध सकते हैं। प्रशासकों, योजनाकारों और सार्वजनिक कार्य से जुड़े लोगों के लिए समय अनुकूल है। इस मास 3, 4, 5, 13, 14, 15, 23, 24, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जून -

आपके लिये यह माह बहुत ही अच्छा रहने वाला है। इस महीने में किए गए आपके सभी प्रयास सफल होंगे। शादीशुदा लोग इस समय का जम कर आनंद उठाएंगे। उनके जीवन में शांति, खुशी व सौहार्द बना रहेगा। महीने के पूर्वार्ध में ही कोई अच्छी सूचना प्राप्त हो सकती है। इस सूचना से आपके आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी। इस दौरान आप स्वयं को अधिक ऊर्जावान व आशावादी अनुभव करेंगे। सभी कार्य योजनानुसार पूर्ण होंगे। परोपकार से जुड़े कार्यों में भाग लेने से आपकी छवि भी अच्छी होगी। घर व कार्यस्थल पर सुखद वातावरण रहेगा। इस माह परिवार के सभी सदस्य आपसे प्रसन्न रहेंगे और आपके उनके साथ संबंध भी प्रगाढ होंगे। लोग आपका साथ पसंद करेंगे और आपकी लोकप्रियता भी बढ़ेगी। नए दोस्त बनेंगे और आपका सामाजिक दायरा भी बढ़ेगा। रियल-एस्टेट का बिजनेस कर रहे लोगों को इस माह सफलता मिलेगी। प्रॉपर्टी ख़रीदने व बेचने के लिए भी बिल्कुल उपयुक्त समय है। इस मास 1, 9, 10, 11, 19, 20, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जुलाई -

आपको इस दौरान कई संघर्षों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी निजी व व्यावसायिक ज़िंदगी में इस दौरान कुछ समस्याएं आ सकती हैं। इस दौरान आपकी प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है साथ ही अनिद्रा व एलर्जी की समस्या भी हो सकती है। अति सक्रिय और परेशान मन होने के कारण एकाग्रता में कमी आ सकती है। थका हुआ महसूस होने के कारण आपको परेशानियां हो सकती हैं। आप समय-समय पर बीमार भी पड़ सकते हैं। कुछ जातक अपनी वर्तमान नौकरी से संतुष्ट नहीं रहेंगे और नौकरी में परिवर्तन कर सकते हैं। अथवा वर्तमान कार्यक्षेत्र में भी बदलाव आ सकते हैं। घर में थोड़े बहुत विवाद संभव हैं। जीवन साथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। लेकिन इन सभी चीज़ों से परेशान व निराश न हों क्योंकि आपको खुशी ज़रूर मिलेगी। बस संयम रखें और हर मोड़ पर सकारात्मक रूप से सोचें। इस मास 6, 7, 8, 16, 17, 24, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अगस्त -

जातक जो व्यापार क्षेत्र से जुडे हैं, उनके लिए यह काफी अच्छा समय है। इस दौरान उन्हें सात समुंद्र पार से कोई अच्छी सूचना प्राप्त हो सकती है जो उनके लिए काफी लाभदायक होगी। आमदनी अच्छी हो जाएगी लेकिन साथ ही साथ ख़र्चें भी बढ़ जाएंगे। इस दौरान आप भौतिक सुखों से परिपूर्ण व विलासिता की ज़िंदगी जिएंगे। भूतकाल में किया निवेश इस दौरान आपको दोगुना मुनाफ़ा देगा। इस माह शेयर बाजार में यदि निवेश किया है तो इससे भी अच्छे परिणाम हासिल होंगे। परिवार के सभी सदस्य आपसे खुश रहेंगे और आपको अपना प्यार व सहयोग प्रदान करेंगे। वैवाहिक जीवन आनंदपूर्वक बीतेगा और आप इस बीच पत्नी, बच्चों के साथ छुट्टियां बिताने दूर यात्रा पर या विदेश जा सकते हैं। महीने के मध्य में जाकर आपकी कार्यक्षेत्र में भी इस समय का लाभ होगा। अच्छे वेतन के साथ-साथ पदोन्नति की भी संभावना दिखाई दे रही हैं। बड़े भाई-बहनों के लिए भी समय शुभ है। इस मास 3, 4, 12, 13, 21, 22, 30, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

सितम्बर -

शादीशुदा जोड़ों के लिए यह माह थोड़ा चुनौती पूर्ण हो सकता है। एक-दूसरे के प्रति समय न दे पाने व ग़लतफ़हमियों की उत्पत्ति होने के कारण आपके वैवाहिक जीवन में तनाव रह सकता है। झगड़ों व वाद-विवादों के कारण घर-परिवार से खुशहाल वातावरण कम हो जायेगा। परिवार में वरिष्ठ जनों के साथ भी विचार सहमत न हो पाने के कारण बहस हो सकती है। शीघ्रता में लिए गए आपके निर्णय और दूसरों पर हावी होने का स्वभाव लोगों को दुःखी कर सकता है। विदेश जाने की इच्छा रखने वाले जातकों के लिए समय ठीक नहीं है। जो लोग अपने काम की वजह से पहले से ही विदेश में रह रहे हैं, उन्हें इस वक्त अपने पैसों के प्रति सतर्क रहने की सलाह दी जाती है। बात करें अगर आपके बच्चों की तो अभी उन पर ज़्यादा ध्यान देने की आवश्यकता होगी। यदि ऐसा नहीं हुआ तो वो भटक भी सकते हैं। आधा माह गुज़र जाने के बाद आपके व्यावसायिक जीवन में सकारात्मक बदलाव आने लग जाएंगे। इस मास 1, 9, 10, 17, 18, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर -

आपके जीवन साथी इस मास प्रगति की ओर बढ़ेंगे। इस दौरान उन्हें भाग्य को संवारने के लिए कई मौके प्राप्त होंगे। वो इन अवसरों का भली-भांति तरीके से उपयोग करेंगे और सफलता प्राप्त करेंगे। जीवन साथी को इस दौरान बड़ा पद व वेतन प्राप्त होगा। अपने स्वास्थ्य के प्रति आप थोड़ी लापरवाही कर सकते हैं। इस लापरवाही के कारण आप परेशानी में भी पड़ सकते हैं। जीवन में निराश रहने व अन्य गतिविधियों में रुझान न होने के कारण आप तनावग्रस्त हो सकते हैं। सड़क पर सावधानी से गाड़ी चलायें क्योंकि इस मास चोट लगने के आसार हैं। मां की तबियत अच्छी रहेगी लेकिन पिता की सेहत को नुक़सान पहुंच सकता है इसलिए सावधान रहें। कार्यक्षेत्र पर वरिष्ठ जनों व सहभागियों के साथ विवाद हो सकते हैं जिससे आपका प्रदर्शन ख़राब हो सकता है। ऐसे में बहस से बचें और विवादों को समाप्त करने का प्रयास करें क्योंकि इससे आपकी छवि भी बिगड़ सकती है। प्रोफेशनल लाइफ में आपका करियर ग्राफ़ नीचे जा सकता है, इसलिए मेहनत करें व एकाग्रता के साथ अपना काम करें। इस मास 6, 7, 14, 15, 24, 21, 25 दिनांक नेष्ट रहेगी।

नवम्बर -

आपके जीवन साथी को इस माह विदेश जाने का अवसर मिल सकता है। इस मास भाग्य उनका साथ देगा और वो सफलता प्राप्त करेंगे। कार्य संबंधी कुछ छोटी-बड़ी यात्राएं हो सकती हैं। जीवन साथी की सेहत माह की शुरुआत में चिंता का कारण हो सकती है इसलिए उनका ध्यान रखें। वहीं दूसरी तरफ जीवन साथी से आपके कुछ मतभेद भी हो सकते हैं। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं ये सभी समस्याऐं आपके प्रयासों से दूर हो जाएंगी। यदि अगर आप अपना ज़्यादा से ज़्यादा समय अपने जीवन साथी के साथ बिताएं तो उत्तम रहेगा। व्यापार कर रहे जातकों के लिए समय अच्छा है। निर्यात में वृद्धि होगी और व्यापार में विदेशी सहयोग प्राप्त होने से लाभ होगा। साझेदारी में व्यापार करते समय सावधानी रखें। आपके अपने साथी के साथ कुछ विवाद हो सकते हैं जिसको जल्द सुलझाने की ज़रुरत है अन्यथा साझेदारी समाप्त भी हो सकती है और व्यापार में हानि हो सकती है। बढ़ते ख़र्चों के कारण परिवार में

सौहार्द की भावना कम हो सकती है। इस मास 2, 3, 10, 11, 12, 20, 21, 22,30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

दिसम्बर -

यह माह शांति व खुशी से परिपूर्ण रहेगा। आत्म-विश्वास में बढ़ोत्तरी होगी। आप समय- समय पर आक्रामक रवैया भी अपना सकते हैं। अपने निजी व व्यावसायिक जीवन में अधिक प्रयास करेंगे और थोड़े समय बाद सफलता भी प्राप्त करेंगें। कार्य स्थल पर विरोधी आपके लिए समस्याएं उत्पन्न कर सकते हैं लेकिन चिंता की कोई बात नहीं क्योंकि उन्हें सफलता नहीं मिलेगी। आपके साथ काम करने वाले कुछ सहभागी आपसे ईर्ष्या का भाव भी रख सकते हैं जिससे ऑफिस का वातावरण अनुकूल नहीं रह पाएगा। लेकिन चिन्ता न करते हुए केवल अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करें और आगे बढ़ते रहें। इस दौरान आप अच्छी रक़म जुटा पाएंगे और सभी कर्ज़ से मुक्त हो जाएंगे। लेकिन जोख़िम भरे निवेश से खुद को दूर ही रखें क्योंकि आर्थिक हानि होने की सम्भावना हो सकती है। स्वास्थ्य हेतु यह माह उत्तम रहेगा। आप अपने स्वास्थ्य पर ज़्यादा ध्यान देने लग जाएंगे। व्यायाम, योग व ध्यान को अपने रोजाना के नियम में सम्मिलित कर लेंगे। इस मास 1, 8, 9, 17, 18, 19, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जनवरी 2026

इस मास आप शांति व सौहार्द की खोज में आध्यात्मिक व धार्मिक चीज़ों की ओर झुकने लग जाएंगे। अधिक आशावादी होने का प्रयास करें, इससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। नकारात्मक भाव जैसे डर, ईर्ष्या, जलन, नफरत व बदले की भावना से स्वयं को दूर रखें। आर्थिक रूप से यह माह सामान्य रहेगा। संघर्ष व मेहनत से ही आप इस दौरान पैसे कमा पाएंगे। अनावश्यक चीज़ों पर ख़र्च न करने की आपको सलाह दी जाती है। वहीं दूसरी तरफ सेहत संबंधी कुछ समस्याएं आपके जीवनसाथी को परेशान कर सकती हैं। तो ऐसे में दवा आदि में आपका ख़र्च होगा जिससे बजट बिगड़ जाएगा। इस माह निजी संबंधों में बहस व लड़ाई के कारण अशांति रह सकती है। परिवार के कुछ सदस्य आपके फैसले से ना खुश हो सकते हैं। विद्यार्थियों का शिक्षा में प्रदर्शन उत्तम रहेगा। कुछ लोग को आत्म-विश्वास में कमी भी महसूस हो सकती है। इन सबके अलावा आपकी ग़लत व ख़राब भाषा शैली से भी समस्याएं बढ़ सकती हैं। इस मास 4, 5, 14, 15, 16, 23, 24, 25 दिनांक नेष्ट रहेगी।

फरवरी -

इस माह कलात्मक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी और इससे जुड़ी गतिविधियों में आप भाग लेंगें। जीवनसाथी से आपका रिश्ता इस दौरान और भी ज़्यादा मज़बूत होगा और आपके व आपके साथी के बीच प्यार बढ़ता जाएगा। नये स्थलों का भ्रमण भी हो सकता है। आपके जीवन साथी इस माह आपके जीवन में बडी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे और आपकी सफलता में अपना योगदान देंगे। शादीशुदा जीवन शांति व खुशी के साथ आगे बढ़ता रहेगा और आप दोनों अपना समय आनंदपूर्वक साथ-साथ बिताएंगे। परन्तु परिवार में कुछ विवाद भी उत्पन्न हो सकते हैं। परिवार के सदस्यों के साथ आपका रिश्ता ग़लतफ़हमियों के कारण बिगड़ सकता है। विद्यार्थियों को इस मास सफलता प्राप्त होगी। परिणाम का यदि इंतजार कर रहे हैं तो इस दौरान आपको काफी अच्छे अंक प्राप्त होंगे। लेखकों व कलाकारों के लिए समय अच्छा है। उनके रचनात्मक कार्यों की प्रशंसा की जाएगी। इस मास 1, 2, 10, 11, 12, 20, 21, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मार्च -

आप अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को कुशल तरीके से सुलझाने का प्रयास करेंगे और इस कार्य के लिए आपकी अंदर ही अंदर तारीफ भी की जाएगी। इस दौरान आप एक नई दिनचर्या अपनाएगे और स्वस्थ रहना आपकी पहली ज़रूरत बन जाएगी। इस मास आप अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देंगे। इस बीच आप अपने भोजन में भी बदलाव करेंगे। निजी संबंधों में कुछ सकारात्मक बदलाव नज़र आएंगे। इस माह परिवार का साथ व प्यार आपको खुश व संपन्न रखेगा। वैवाहिक ज़िंदगी भी अच्छी रहेगी और आप अपने जीवनसाथी व बच्चों के साथ अच्छा समय बिताएंगे। कुछ जातक अपनी वर्तमान नौकरी में बदलाव करने की योजना बना सकते हैं। कार्यस्थल पर कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं जो आपके निजी जीवन में भी पहुंचकर घर की शांति व सौहार्द को बिगाड़ सकती हैं। आर्थिक स्थिति इस बीच अच्छी रहेगी। कुछ अप्रत्याशित आर्थिक लाभ से आय में वृद्धि होगी। इस मास 1, 9, 10, 11, 19, 20 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मकर राशि (भो, जा, जी, (जू, जे, जो, ख) खी, खू, खे, खो, गा, गी)

अप्रैल -

आप इस महीने के पूर्वार्ध में स्वयं को उत्साहित और सक्रिय अनुभव करेंगे। वहीं माह के उत्तरार्ध में आप प्रभावी और सकारात्मक बातचीत करेंगे। इस माह आप अपने कार्यक्षेत्र में अत्यधिक व्यस्त रहेंगे। किसी बड़े निवेश के लिए यह समय अच्छा है लेकिन कठिन परिश्रम करना होगा। व्यवसाय में भागीदारी को लेकर भाई-बहनों के साथ परेशानी आ सकती है। आप अच्छे प्रयास करेंगे लेकिन व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सुधार लाने के लिए आपको अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। इसके अलावा आपकी बेहतर कार्यशैली के कारण आपकी प्रशंसा होगी। बिना सोचे-समझे और गुस्से में आकर कोई भी निर्णय लेने से बचें अन्यथा इसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। किसी की आलोचना या उसके साथ किसी भी तरह की राजनीति करने से बचें, क्योंकि ऐसा करने से आपके व्यक्तिगत संबंध प्रभावित हो सकते हैं। इस माह आपकी सेहत बिल्कुल अच्छी रहेगी। आप अपनी फिटनेस को लेकर ज्यादा रुचि दिखाएंगे। स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए खेल या व्यायाम जैसी गतिविधियों में शामिल होंगे। मास 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मई -

विवाहित जातकों के लिए यह महीना अच्छा रहने वाला है लेकिन प्रेमी युगल को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इस माह कार्यस्थल पर बड़ी सफलता मिलने की संभावना है, साथ ही वरिष्ठ सहकर्मियों से भरपूर सहयोग मिलेगा। यह महीना उन जातकों के लिए उत्तम रहेगा, जो शेयर बाजार व मार्केट रिसर्च से जुड़ा व्यवसाय करते हैं। इस अवधि में शेयर मार्केट में उनके द्वारा व्यक्त की गई संभावना सही साबित होंगी। पारिवारिक और न्यायिक सलाहकारों के लिए भी यह महीना अच्छा रहेगा।

इस माह आपके जीवन में धनागमन सुचारु रूप से होता रहेगा लेकिन महीने के उत्तरार्ध में व्यर्थ के खर्च करने से बचें। पारिवारिक जीवन खुशियों से भरा रहेगा। आप व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में अच्छा तालमेल बनाकर चलेंगे। हालांकि परिवार के लोगों से छोटे-मोटे मतभेद भी हो सकते हैं लेकिन आपसी बातचीत से सभी मुद्दे सुलझ जाएंगे। इस मास 6, 7, 16, 17, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जून -

इस माह आपका पारिवारिक जीवन अच्छा रहने वाला है। घर की खुशियों में वृद्धि होगी और आप परिजनों के साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे। इस माह आप परिवार के साथ घूमने जा सकते हैं। घर में किसी शुभकार्य का आयोजन भी होने की संभावना है। इस महीने आपके जीवनसाथी को कार्यस्थल पर उन्नति मिलने की प्रबल संभावना है, साथ ही आर्थिक वृद्धि भी होगी। यदि आप कोई जमीन खरीदने या बेचने की योजना बना रहे हैं तो महीना का अंत इस काम के लिए अत्यंत शुभ है। इस माह आप पूरी तरह से स्वस्थ रहेंगे। आप ऊर्जा से भरपूर रहेंगे और अपनी बात साफ शब्दों में स्पष्टता के साथ कहेंगे। आपके स्पष्ट बोलने की यह क्षमता निश्चित रूप से आपके लिए लाभकारी रहेगी। आपकी कार्य कुशलता के कारण अधिकारी और सहकर्मी आपकी प्रशंसा करेंगे। यदि आप प्रबंधन या प्रशासनिक क्षेत्र में कार्यरत हैं तो आपको इस माह कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। 2, 3, 12, 13, 21, 22, 29, 30 दिनांक इस मास नेष्ट रहेंगी।

जुलाई -

यह महीना आपके लिए अच्छे संकेत नहीं दे रहा है। महीने की शुरुआत में आपके मन में असमंजस की स्थिति बनी रहेगी। इस वजह से आप विवेकपूर्ण निर्णय लेने में असमर्थ रहेंगे। आर्थिक विषयों पर पर भी इस महीने आपको संभलकर चलना होगा। व्यर्थ खर्च करने से बचें और पैसों के लेनदेन पर विशेष ध्यान रखें अन्यथा धोखाधड़ी होने की संभावना है। यह महीना पारिवारिक जीवन के लिए भी शुभ संकेत नहीं दे रहा है। तनाव बढ़ने से परिवार में शांति और सद्भाव का अभाव रहेगा, इसलिए हर परिस्थिति में संयम व समझदारी से काम लें और मधुर रिश्ते बनाकर चलें। कम्प्यूटर के उपकरण से संबंधित व्यवसाय करने वाले जातकों के लिए यह महीना उत्तम है, इस अवधि में अच्छा लाभ प्राप्त होने की संभावना बन रही है। कम्प्यूटर हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और सॉफ्टवेयर डेवलपर्स से जुड़े जातक अपने कार्यक्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस दौरान वे अपने कार्यक्षेत्र में उच्च पदों को प्राप्त कर सकते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह महीना अच्छा दिखाई दे रहा है लेकिन आंखों की विशेष देखभाल करें। 1, 9, 10, 11, 18, 19, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

अगस्त -

यह आपके लिए उतार-चढ़ाव से भरा रहेगा। इस माह पिता का खराब स्वास्थ्य आपकी चिंता का कारण बन सकती है, इसलिए इस अवधि में उनकी सेहत का पूरा ध्यान रखें। इसके अलावा इलाज पर अधिक खर्च होने से आपका बजट बिगड़ सकता है। इस समय में आप पारिवारिक कार्यों में और कार्यक्षेत्र में अत्यधिक व्यस्त रहेंगे। इस महीने छोटी या लंबी दूरी की यात्रा की संभावना बन रही है। वे जातक जिनका झुकाव धार्मिक प्रवृत्ति की ओर ज्यादा है, वे लोग तीर्थ यात्रा पर जा सकते हैं। इस महीने आप कोई भी कार्य करने से पहले अच्छे से सोचें और शीघ्रता में कोई भी निर्णय लेने से बचें। कार्यस्थल पर वरिष्ठ अधिकारियों से कुछ मतभेद होने की संभावना है, इसलिए अपने व्यवहार में संयम बरतें और अच्छे संबंध बनाकर चलें। 5, 6, 7, 14, 15, 23, 24 दिनांके नेष्ट रहेंगी।

सितम्बर -

इस महीने में आपके भाग्य में वृद्धि होगी। चुनौतियों के बावजूद इस माह आप प्रगति करेंगे। नौकरी या व्यवसाय के संबंध में विदेश यात्रा की संभावना है। पारिवारिक व्यवसाय में समृद्धि आएगी और आपको माता-पिता का सहयोग मिलेगा। इस माह पारिवारिक जीवन में शांति और सद्भाव बना रहेगा, लेकिन किशोरावस्था के बच्चों से आपको स्नेह और धैर्य के साथ व्यवहार करना होगा। इस माह आप हर तरफ से सकारात्मक ऊर्जा और आत्म विश्वास से भरे रहेंगे। इस माह नए दोस्त बनेंगे और आप पार्टियों में व्यस्त रहेंगे। आपको कुछ ऐसे अवसर मिलेंगे, जिससे आपकी सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी और यह आपके लिए लाभकारी रहेगी। फिल्म, अभिनय, नृत्य निर्देशक, फोटोग्राफर और वीडियो एडिटर्स को इस अवधि में लाभ होगा। इस मास 2, 3, 11, 12, 19, 20, 21, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर -

इस महीने में संतान पक्ष की ओर से आपको परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। बच्चों के साथ संबंध तनावपूर्ण होंगे और आप उनके साथ संबंध सामान्य करने में असमर्थ रह सकते हैं। अतः बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करें और विषम परिस्थितियों में धैर्य के साथ काम लें। अत्यधिक क्रोध करने से बचें अन्यथा आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन माँ का स्वास्थ्य थोडा कमजोर रह सकती है, उनका विशेष ख्याल रखें। परिवार का पूरा सहयोग मिलेगा, विशेषकर घर के बड़े लोगों से अधिक सहायता मिलेगी। परिवार से मिलने वाले इस सहयोग के कारण आपके अंदर एक नई ऊर्जा आएगी और आप कुछ बेहतर करने में समर्थ होंगे। अपने कार्यक्षेत्र में हर विषय को लेकर अपना मत स्पष्ट रखें। वरिष्ठ सहकर्मियों की सलाह से स्थितियां अनुकूल होगी। जो छात्र तकनीकी विषय की पढ़ाई कर रहे हैं उनके लिए समय अनुकूल है। क्योंकि उन्हें कठिन परिश्रम का अच्छा फल मिलेगा। इस मास 1, 8, 9, 16, 17, 18, 26, 27, 28 दिनांक नेष्ट रहेंगी। नवम्बर

आपको इस महीने में वाणी पर संयम रखना होगा। वैवाहिक जीवन में थोड़ी सावधानी रखनी होगी। जीवनसाथी के साथ जो भी मतभेद हैं उन्हें जल्द से जल्द दुर करने की कोशिश करें अन्यथा समस्या खड़ी हो सकती है। कार्यस्थल पर भी सतर्क रहना आपके लिए अच्छा होगा। अभद्र भाषा के प्रयोग से समस्या उत्पन्न हो सकती है। कार्यस्थल पर व्यर्थ की बातें और कार्यक्षेत्र में आपसी राजनीति करने से बचें। यह माह आर्थिक तौर पर आपके लिए लाभकारी रहेगा। आप अधिक से अधिक पैसों की बचत करेंगे और इससे आर्थिक स्थिरता रहेगी। यह समय अचल संपत्ति के क्षेत्र में निवेश करने के लिए सही नहीं है, इसलिए जमीन/मकान खरीदने या बेचने से बचें। प्रॉपर्टी या कार्य से जुड़े हर दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से पहले उसे अच्छे से पढ़ लें। क्योंकि धोखेबाजी की संभावना है। इस माह पिता की सेहत पर ध्यान

देने की आवश्यकता होगी। इस अवधि में उन्हें कोई गंभीर बीमारी से कष्ट हो सकता है हालांकि महीने के उत्तरार्ध में उनकी सेहत में सुधार देखने को मिलेगा। इस मास 4, 5, 13, 14, 23, 24 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

दिसम्बर -

मार्च का महीना आपके लिए बहुत ही सकारात्मक रहेगा। जीवन में खुशियां बनी रहेंगी और सब कुछ अच्छा रहेगा। विशेषकर विवाहित जातकों के लिए यह समय सुखद होगा। इस दौरान वैवाहिक जीवन में मधुरता और शांति बनी रहेगी। आप एक-दुसरे की आवश्यकता को समझेंगे। जीवनसाथी से आपको सहयोग मिलेगा और आपका बंधन मजबूत होता जाएगा। इस माह घर में कोई मांगलिक कार्य का आयोजन भी संभव है। विवाह संपन्न होने के भी योग बन रहे हैं। आप अपना वर्तमान निवास स्थान बदलकर किसी बड़े घर में स्थानान्तरित हो सकते हैं। इस महीने अत्यधिक व्यस्त होने के कारण आपके परिजन स्वयं को उपेक्षित महसूस करेंगे, अतः परिवार के लोगों को पर्याप्त समय दें। वे जातक जो सौंदर्य प्रसाधन, कलात्मक वस्तु, आभूषण और सर्वसुविधा युक्त सामानों का व्यवसाय करते हैं उनके लिए यह समय बेहद अनुकूल है। इस महीने व्यापार में अच्छा लाभ होने की संभावना है। इस अवधि में आप अपने व्यवसाय को विस्तार देने की योजना बनाएंगे। आप अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर भी कुछ नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। यह कार्य मनोरंजक, व्यावसायिक या यात्रा से जुड़ा भी हो सकता है। इस मास 2, 3, 10, 11, 20, 21, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

जनवरी 2026

इस महीने में आपको कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। महीने के पूर्वार्ध में बच्चों की ओर से तनाव मिल सकता है। तनाव और चिंता के कारण आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। इस दौरान बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के लिए आपको कुछ निवेश करना होगा। बच्चे पढ़ाई के लिए घर से दूर भी जा सकते हैं। अपने प्रेम जीवन को लेकर आपको थोड़ा सावधान रहना होगा। क्योंकि कुछ विवादों की संभावना बन रही है। अपने प्रेम जीवन में संतुलन बनाये रखने की कोशिश करें और अपने साथी को अधिक समय देने का प्रयास करें। इस माह सेहत को लेकर भी आपको अपना विशेष ध्यान रखना होगा। अजीर्ण, उदर विकार, मुंह में छाला और कोई घाव हो सकता है। आपके स्वभाव में साहस, क्रोध और वीरता की वृद्धि होगी। ग्राफिक आर्टिस्ट, विदेशी भाषा के जानकार और तकनीकी लेखन से जुड़े जातकों के लिए समय बहुत अच्छा है। इस मास 6, 7, 8, 17, 18, 26, 27 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

फरवरी -

यह महीना आपके लिए सामान्य रहने वाला है। इस अवधि में यदि आपको लाभ नहीं मिलेगा तो हानि भी नहीं होगी। पारिवारिक संसाधनों में बढ़ोत्तरी की संभावना है इससे आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। इस माह महंगे घरेलू सामान खरीदने से आपका खर्च बहुत बढ़ सकता है, इसलिए सोच-समझकर खर्च करें। मानसिक, बौद्धिक और कलात्मक क्षमता में वृद्धि होने से आप अपने लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर लेंगे। वकील, शिक्षक, सलाहकार और वक्ताओं के लिए यह महीना अच्छा रहने वाला है। आप जनवरी के महीने में सभी क्षेत्रों में अच्छा कार्य करेंगे। क्रोध और वाणी पर संयम रखें क्योंकि गलत शब्दों के प्रयोग से आपके और परिजनों के बीच गलतफहमी उत्पन्न हो सकती है। इसलिए कड़वे वचन बिल्कुल नहीं बोलें। इस माह के अंत में आपको कठिन परिश्रम का फल मिलेगा और सब कुछ सुव्यवस्थित हो जाएगा। इस मास 3, 4, 13, 14, 22, 23 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

मार्च -

यह महीना आपके लिए सामान्य रहेगा। इस माह के पूर्वार्ध में बच्चों के कारण आप परेशान रहेंगे। इस दौरान बच्चों के साथ कुछ मतभेद हो सकते हैं लेकिन ऐसी स्थिति में आपको धैर्य से काम लेना होगा। जीवनसाथी से आपके संबंध अच्छे रहेंगे और उनकी सफलता से आप खुश रहेंगे। इस अवधि में आपको जीवनसाथी की ओर से पूरा सहयोग मिलेगा और आपका संबंध और मजबूत होगा। इस महीने जीवनसाथी की सेहत को लेकर आपको थोड़ा सावधान रहना होगा। कार्यस्थल पर अपने कार्य के रहस्य किसी के साथ साझा नहीं करें अन्यथा आप कठिनाई में पड़ सकते हैं। वरिष्ठ अधिकारियों से अच्छे संबंध बनाकर चलें, क्योंकि उनके सहयोग और मार्गदर्शन से आप कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और लेखन से जुड़े जातकों के लिए यह महीना अच्छा है। इस मास 2, 3, 4, 12, 13 दिनांक नेष्ट रहेगी।

कुम्भ राशि (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

अप्रैल -

इस मास स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं से आप ग्रसित रहेंगे। अस्थि विकार, एलर्जी, वायु विकार, रक्त विकार के कारण आप व्यथित रहेंगे। भूमि व संपत्ति संबंधी कार्यों में सफलता रहेगी। परन्तु अत्यधिक यात्राओं के कारण आप दुखी रहेंगे। परिवार का वातावरण भी प्रायः अच्छा नहीं रहेगा। मास के उत्तरार्ध में पत्नी के स्वास्थ्य को लेकर भी आप परेशान रह सकते है। धार्मिक कार्यों में रूचि कम रहेगी। धन के अपव्यय से आप दुखी रह सकते है। शत्रुओं की प्रबलता रहेगी परन्तु आप अन्त में उन्हें परास्त करने में सफल होंगे। वाहन चलाने में सावधानी रखें। इस मास 2, 3, 11, 12, 21, 22, 29, 30 दिनांक कुछ कष्टकारक रह सकती है।

मई -

यह मास प्रायः आपके लिए तनावपूर्ण रहेगा। पारिवारिक क्लेश एवं शारीरिक स्वास्थ्य से आप व्यथित रहेंगे, परन्तु पराक्रम में वृद्धि रहेगी। छोटे भाई बहनों का स्वास्थ्य भी कुछ प्रतिकूल रह सकता है। आप उनके लिए चिंतित रहेंगे। भूमि व संपत्ति संबंधित विवादों में धनव्यय संभावित है। न्यायालयीय निर्णय में विलम्ब से आप व्यथित रहेंगे। धनागम का अच्छा योग बनेगा। परन्तु धार्मिक कार्यों एवं यात्राओं में धनव्यय होगा। जिस कारण समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा रहेगी। कार्यक्षेत्र में मित्रों के सहयोग से सफलता मिलेगी। प्रायः इस मास आप वायुविकार, पित्त विकार, त्वचा संबंधी रोग एवं संक्रमण जनित रोगों से पीड़ित रह सकते है। विद्याध्ययन एवं रोजगार क्षेत्र में किये गए प्रयास सफल हो सकते है। इस मास 8, 9, 10, 18, 19, 27, 28 दिनांक नेष्ट है।

जून -

यह मास आपके लिए प्रायः अच्छा रहेगा। पराक्रम में वृद्धि रहेगी। माता के स्वास्थ्य में कुछ सुधार सम्भव है। धनागम अच्छा रहेगा। धन संपत्ति व भूमि क्रय के योग बनते है। परन्तु यदा कदा अध्ययन में बाधा उत्पन्न हो सकती है। जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रायः ठीक रहेगा परन्तु कभी कभी पित्त विकार, नेत्र विकार एवं शिरोवेदना से कष्ट संभावित है। भाग्य के साथ देने से कुछ रुके हुए काम बन सकते है। पद प्रतिष्ठा प्राप्ति के योग भी बनते है। इस मास धार्मिक यात्राएं भी संभावित है। पारिवारिक वातावरण प्रायः सौहार्दपूर्ण होगा परन्तु मासान्त में पारिवारिक मनमुटाव व झगडे की स्थिति बनती है। रोजगार के क्षेत्र में कुछ अच्छी संभावनाऐ बनती है। इस मास 4, 5, 6, 14, 15, 16, 23, 24 दिनांक नेष्ट हैं।

जुलाई –

इस मास के प्रारम्भ में यदा कदा नेत्र कष्ट, रक्त विकार, मानसिक उलझनों से आप व्यथित रह सकते है। माता का स्वास्थ्य भी कष्टकारी रह सकता है। पारिवारिक वातावरण सौहार्दपूर्ण रहने की संभावना है। धन का आगमन अच्छा रहेगा। आय के नए स्रोत उत्पन्न हो सकते है। मास के उत्तरार्ध में धन सम्पत्ति प्राप्ति के कुछ योग बनते है परन्तु वाहन चलाते समय सावधानी अपेक्षित है। विद्याप्राप्ति के कुछ योग बनते है, परन्तु परिश्रम की आवश्यकता रहेगी। रोजगार के क्षेत्र में नवीन संभावनाऐ बनेंगी, परन्तु पिता का स्वास्थ्य शिथिल रह सकता है। इस मास 2, 3, 12, 13, 20, 21, 29, 30 दिनांक नेष्ट है।

अगस्त –

इस मास कार्य करने की क्षमता में वृद्धि होगी। अपना कार्य दुगुने उत्साह से संपन्न करेंगे। रुके हुए कार्य पुनः प्रारम्भ होंगे। इच्छित योजनाएं साकार रूप लेगी। लम्बे समय से अटका धन प्राप्त होगा। विद्यार्थियों को भी अध्ययन में विशेष लाभ होगा। अध्ययन में किये गये परिश्रम का शुभ परिणाम प्राप्त होगा। विवाह योग्य जातकों के संबंधों की चर्चा होगी व विवाह संबंध तय होंगे। प्रेम संबंध भी सफल होंगे व संबंध विवाह में परिणित होंगे। दंपत्तियों को सन्तति की प्राप्ति होगी। भाग्य में वृद्धि होगी। सभी प्रकार की सुख सम्पदा में वृद्धि होगी। आजीविका प्राप्ति के नये अवसर उत्पन्न होंगे। बेरोजगार जातकों को शीघ्र ही आजीविका प्राप्त होगी। व्यापारी वर्ग को भी लाभ होगा। इस मास 8, 9, 16, 17, 18, 25, 26, 27 दिनांक नेष्ट रहेगी।

सितम्बर –

इस मास मित्र व जनता का विशेष सहयोग प्राप्त होगा। विशेष रूप से राजनैतिक क्षैत्र से संबंधित जातकों को अपने कार्य में लाभ होगा। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे बालकों के लिये यह मास अतिउत्तम रहेगा। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे जातकों की गहन शोध के प्रति रूचि बढेगी। नये विषयों का अध्ययन करेंगे। सन्तान पक्ष से शुभ सूचना प्राप्त होगी। भाई-बहनों से संबंध मधुर होगा व उनके सहयोग से रूके हुए कार्य पूर्ण होंगे। त्वचा, मुख व वाणी संबंधित विकार हो सकते है। स्वास्थ्य कुछ कमजोर रह सकता है। इस मास 4, 5, 13, 14, 22, 23 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर –

इस मास व्यापारी वर्ग को उत्तम लाभ होगा। धन प्राप्ति के नये अवसर प्राप्त होंगे। नेत्र विकार हो सकते है। पिता को कष्ट व राजनीतिक पक्ष से बाधाऐं हो सकती है। हृदय व अस्थि विकार की संभावना हो सकती है। वात विकार से शारीरिक कष्ट हो सकता है। दिनांक १७ के उपरान्त साझेदार व जीवनसाथी के साथ अनबन हो सकती है। यात्रा के योग बनेंगे। मित्रों व समाज के साथ संबंध प्रगाढ होंगे। वाहन, भूमि आदि सुख साधनों का लाभ होगा। इस मास 2, 3, 10, 11, 19, 20, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

नवम्बर –

संतान से अनबन रह सकती है। नये विषयों का ज्ञान होगा। क्रोध व ऊर्जा में कुछ वृद्धि होगी। मुख, उदर व त्वचा संबंधित विकार हो सकते है। विद्यार्थियों को परिश्रम अधिक करना होगा, विद्याध्ययन व प्रतियोगी परिक्षाओं में कुछ बाधा रहेगी। मधुमेह, मूत्र विकार व गुप्त विकार हो सकते हैं। जीवनसाथी से व्यर्थ विवाद व आपसी अनबन रह सकती है। सन्तान संबंधित कष्ट होगा। भाई बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। परिश्रम का उचित फल न मिलने से निराशा हो सकती है। इस मास 6, 7, 15, 16, 17, 25, 26, 27 दिनांक नेष्ट रहेगी।

दिसम्बर –

भूमि, जमीन, प्रोपर्टी, वाहन संबंधित लाभ होंगे। उत्साह व ऊर्जा बढेगी। योग, औषधि, स्वास्थ्य आदि के प्रति रुचि बढेगी। परन्तु दुर्घटना, चोट, अग्निभय आदि की संभावनाऐं बढेगी। व्यर्थ के विवादों से बचना चाहिये। लाभ प्राप्ति के अवसर बढेगे। भोजनालय, रेस्टोरेन्ट, मशीनरी, प्रोपर्टी, अग्नि संबंधित कार्य करने वाले जातकों को लाभ होगा। बच्चों की खेल के प्रति रुचि बढेगी। खेल व खेल सामग्री से जुडे जातकों को विशेष लाभ होगा। मनोरंजन व सुख साधनों की प्राप्ति हेतु विशेष व्यय होगा। वाणी का प्रभाव बढेगा। माता व ननिहाल पक्ष से विशेष लाभ हो सकता है। इस मास 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23, 24, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जनवरी 2026

इस मास विशेष सम्मान की प्राप्ति होगी। राजकीय सहयोग प्राप्त होगा। क्रोध में कुछ वृद्धि होगी व मन में संताप होगा। नव दम्पत्तियों को सन्तान लाभ होगा। विद्याध्ययन में उन्नति होगी। सुख साधन व मनोरंजन के नवीन साधन उपलब्ध होंगे। शेयर मार्केट से संबंधित कार्य करने वालों को लाभ होगा। नौकरी आजीविका संबंधित बाधाऐं दुर होगी। पिता को लाभ होगा। अपने कार्यक्षेत्र में प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। वस्त्र उद्योग, साफ्टवेयर, कम्प्यूटर, सौन्दर्य प्रसाधन संबंधित कार्य करने वाले जातकों को लाभ प्राप्त होगा। विवाह योग्य जातकों के संबंध तय होंगे। इस मास 1, 9, 10, 19, 20, 28, 29 दिनांक नेष्ट रहेगी।

फरवरी –

इस मास में आपके मन में भ्रम की स्थिति रहेगी। यात्रा व स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। विदेश यात्राओं हेतु भी यह मास उत्तम है। जीवनसाथी से कुछ अनबन रह सकती है। व्यापार में कुछ बाधा हो सकती है। भाई-बहनों से संबंध मधुर बनेंगे। जिन जातकों को आजीविका की चिंता है, उनकी चिन्ता

दूर होगी। युवाओं को आजीविका के नए अवसर प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों हेतु भी यह मास उत्तम रहेगा। वाहन-भूमि आदि का सुख प्राप्त होगा। माता का स्वास्थ्य कुछ कमजोर रह सकता है। पैरों व हाथ में चोट लगने की संभावना है। बायीं आँख में चोट लग सकती है। त्वचा संबंधित रोग हो सकते हैं। इस मास 5, 6, 7, 15, 16, 24, 25 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मार्च -

यह मास आपके लिए अधिकांशतः शुभ रहेगा। पराक्रम में वृद्धि, वाहन लाभ विद्याध्ययन में रूचि, शत्रु पराजय, भाग्योदय, आय के स्रोतों में वृद्धि एवं धार्मिक यात्राओं व सद्-व्यय से आप प्रफुल्लित रहेंगे। परन्तु जीवनसाथी का स्वास्थ्य कुछ शिथिल रह सकता है। स्वयं का स्वास्थ्य भी रक्तविकार एवं वायुविकार के कारण कुछ प्रतिकूल रह सकता है। विद्याध्ययन में कुछ बाधाएं आ सकती है। भूमि संपत्ति एवं वाहनप्राप्ति के कुछ अच्छे योग बन सकते है। कार्यक्षेत्र में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परन्तु कभी कभी विपक्षियों के हावी होने के कारण परेशानी हो सकती है। रोजगार के क्षेत्र में कड़े संघर्ष के उपरान्त सफलता प्राप्ति के योग बनते है। पारिवारिक वातावरण प्रायः अच्छा रहेगा। इस मास 5, 6, 14, 15, 16 दिनांक कुछ कष्टकारक हो सकती हैं।

मीन राशि (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

अप्रैल -

इस महीने की शुरुआत आपके लिए बेहद अच्छी रहेगी। व्यक्तिगत जीवन व कार्यक्षेत्र में आप सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ेंगे। व्यक्तिगत जीवन में आप सौहार्दपूर्ण रिश्तों का आनंद लेंगे। इस माह आपका झुकाव आध्यात्मिक और धार्मिक कार्यों के प्रति अधिक होगा और आप इन कार्यों में सम्मिलित होंगे। कार्यस्थल पर अच्छा काम करने के कारण आपको पदोन्नति मिलने की संभावना है। सहकर्मी और वरिष्ठ अधिकारी आपके काम की प्रशंसा करेंगे। परन्तु कार्यक्षेत्र में साथ काम करने वाले लोगों से विवाद करने से बचें। भाई-बहन के साथ कर रहे व्यापार में लाभ की प्राप्ति होगी। इस माह आप कड़ी मेहनत से ढेर सारा धन कमाएंगे और आपको तरक्की के कई अवसर प्राप्त होंगे। यदि आप एक छात्र हैं तो परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए आपको पूरी एकाग्रता के साथ पढ़ना होगा। इस मास 4, 5, 13, 14, 15, 23, 24 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मई -

यह महीना आपके लिए अच्छा रहेगा। इस अवधि में आप काम और वित्तीय मामलों को लेकर सुखद स्थिति का अनुभव करेंगे। कार्यस्थल पर आप अपने काम और बेहतर प्रदर्शन से अधिकारियों को प्रसन्न कर देंगे। इसके फलस्वरुप ऑफिस में आपको विशेष ज़िम्मेदारी सौंपी जा सकती है, साथ ही आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। आर्थिक मोर्चे पर इस माह धन का आवागमन अच्छा रहेगा और आप सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे। इस अवधि में आप जो भी निवेश करेंगे उससे लाभ की प्राप्ति होगी। व्यापार को बढ़ाने के लिए यह समय बिल्कुल उपयुक्त है। परिवार में शांति, सद्भाव, स्नेह और एकता बनी रहेगी। आपके घर का वातावरण बहुत ही अच्छा रहेगा। इसके अलावा आपका वैवाहिक जीवन भी बहुत सुखमय रहेगा। आप दोनों के रिश्तों में मधुरता बनी रहेगी। सार्वजनिक जीवन में लोग आपके सकारात्मक व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे और इससे आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी। इस मास 1, 2, 11, 12, 20, 21, 22, 29, 30 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जून -

इस माह आप भाग्यशाली और खुशी रहेंगे। आप पर्सनल और प्रोफेशनल दोनों क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस अवधि में आप आवश्य निर्णय लेने हेतु साहस और बुद्धि से काम लेंगे। कार्यस्थल पर सफलता प्राप्त करने के लिए आप बेहतर प्रयास करेंगे और निश्चित ही आपको अपनी मेहनत का परिणाम मिलेगा। कार्य में अधिक व्यस्त रहने के कारण आप परिवार को ज्यादा समय नहीं दे पाएंगे। जीवनसाथी से आपके रिश्ते अच्छे बने रहेंगे लेकिन काम से समय निकालकर उनके साथ कुछ समय व्यतीत करें तो यह आपके संबंधों के लिए बेहतर होगा। बच्चे पढ़ाई-लिखाई में बहुत ही अच्छा प्रदर्शन करेंगे। वे अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार आगे की पढ़ाई के लिए विषय चयन कर सकते है। यदि आप छात्र हैं तो इस महीने ऊर्जा से भरपूर रहेंगे और समय का भरपूर प्रयोग करेंगे। इस मास 7, 8, 17, 18, 25, 26 दिनांके नेष्ट रहेगी।

जुलाई -

इस महिने आपकी पदोन्नति और वेतन में बढ़ोत्तरी भी हो सकती है। वहीं पारिवारिक जीवन भी इस माह अच्छा रहने वाला है। इस महीने आपको भाग्य का सहयोग प्राप्त होने वाला है। कार्यस्थल पर आप अपने अच्छे प्रदर्शन से सबको आश्चर्यचकित कर देंगेइस दौरान आप परिवार के साथ यात्रा पर जा सकते हैं और उनके साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे। इस माह घर पर शादी-विवाह व अन्य मांगलिक कार्यों का आयोजन संभव होगा। इस माह धन का आवागमन अच्छा रहने से आपको किसी प्रकार के आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ेगा, लेकिन जोखिम भरे मामलों में निवेश करने से बचें। निवेश करने से पहले अच्छी तरह शोध कर लें। आप उत्साह और आत्म विश्वास से भरपूर रहेंगे इसलिए सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें। अगर बात करें आपके बिजनेस की तो, आपका व्यावसायिक साझेदार असंतुष्ट दिखाई दे सकता है इसलिए सभी मतभेदों को सुलझाएं और नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ें। अंत में इस माह सेहत को लेकर कोई लापरवाही नहीं बरतें। यदि किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो नियमित जांच और परामर्श लें। इस मास 4, 5, 14, 15, 22, 23, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अगस्त -

यह महीना आपके पिता के लिए अच्छा रहेगा। इस अवधि में उनकी स्थिति मजबूत रहेगी और उन्हें प्रसिद्धि मिलेगी, साथ ही समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। परोपकारी कार्यों में उनकी सहभागिता रहने से उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन में शांति और सद्भाव बना रहेगा। परिवार के प्रत्येक सदस्यों से आपको स्नेह और सहयोग मिलेगा। यह समय आपके लिए अत्यंत शुभ रहेगा। इस दौरान आपको माता-पिता से भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। महीने के अंतिम दिनों में जीवनसाथी/प्रियतम के साथ आपके संबंध मजबूत होंगे। जीवनसाथी की सेहत आपके लिए चिंता का कारण बन सकती है, इसलिए उनका विशेष ध्यान रखें। यह समय किसी भी तरह का लोन या कर्ज लेने के लिए

उपयुक्त नहीं है, अत: सावधान रहें क्योंकि इस दौरान वित्तीय नुकसान हो सकता है। इस मास 1, 2, 10, 11, 19, 20, 28, 29 दिनांक नेष्ट रहेगी।

सितम्बर -

यह महीना विशेषकर महिला जातकों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। इस माह उन्हें कुछ शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए अपना ध्यान रखें और डॉक्टर से परामर्श लेते रहें। आप अपने व्यक्तिगत जीवन में कुछ परेशानियों को महसूस करेंगे। वहीं कार्यस्थल पर सहकर्मीयों व वरिष्ठों के साथ अच्छे संबंध बनाकर चलें। कार्यक्षेत्र में किसी की बुराई करने से बचें और सभी से विनम्रता से बात करें। महीने के उत्तरार्ध में रिश्तों को लेकर अपना दृष्टिकोण साफ रखना होगा। आपकी उन्नति में जीवनसाथी का महत्त्वपूर्ण योगदान होगा और आपका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। इस माह आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और यदि आप किसी योजना में निवेश करेंगे तो आपको इससे अच्छा लाभ होगा। इस मास 6, 7, 8, 15, 16, 24, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

अक्टूबर -

आप इस महीने स्वस्थ रहेंगे हालांकि मानसिक रूप से थोड़े परेशान रह सकते हैं। इस कारण उनकी एकाग्रता और सोचने की क्षमता पर प्रभाव पड़ेगा, इसलिए नकारात्मक विचारों को अपने ऊपर बिल्कुल हावी नहीं होने दें। मानसिक शांति के लिए आपको योग व प्राणायाम का सहारा लेना चाहिये। इस माह वैवाहिक जीवन में विषम परिस्थितियां उत्पन्न होगी। इस दौरान छोटा मतभेद भी किसी बड़े विवाद का कारण बन सकता है। महीने के उत्तरार्ध में भी आपको वैवाहिक जीवन में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए सावधान रहें। वहीं इस माह पारिवारिक संबंधों में भी आपको उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान आपका अपने साझेदार से विवाद हो सकता है। वे जातक जो अकेले हैं इस माह किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर सकते हैं। इस माह आप व्यर्थ के कामों में अपनी ऊर्जा नष्ट नहीं करें बल्कि अपना ध्यान लक्ष्य की ओर रखें। कार्यक्षेत्र में उन्नति इस माह अच्छी रहने वाली है और पदोन्नति के योग बन रहे हैं। आर्थिक मामलों में आंख मूंदकर किसी पर विश्वास ना करें, यह आपके लिए बेहतर होगा। इस मास 4, 5, 12, 13, 21, 22, 23, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

नवम्बर -

यह महीना उन छात्रों के लिए अच्छा रहने वाला है, जो कलात्मक विषय की पढ़ाई कर रहे हैं। इस अवधि में वे अपने अंदर छुपी हुई प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे और प्रशंसा पाएंगे। वहीं दूसरी ओर इस माह आपकी आर्थिक स्थिति और बेहतर होगी एवं आप कोई नई संपत्ति खरीद सकते हैं। इस दौरान आपके खर्चों में अत्यधिक वृद्धि भी होगी। जातक जो विदेशों में काम कर रहे हैं उन्हें कार्य स्थल पर परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, अतः वे धैर्य से काम लें। क्योंकि इस अवधि में जो भी विवाद व मतभेद सामने आएंगे वे जल्द ही हल हो जाएंगे। वे जातक जो इस माह विदेश जाने की योजना बना रहे हैं उन्हें अभी अपने इस विचार को त्याग देना चाहिए। क्योंकि यह महीना विदेश यात्रा के लिए उपयुक्त नहीं है। आपको कई अच्छे अवसर मिलेंगे लेकिन अच्छा अवसर सही समय पर ही आएगा। पारिवारिक जीवन में तनाव और विवाद की संभावना है। घर में जीवनसाथी और परिजनों के साथ मनमुटाव हो सकता है, इसलिए सभी मतभेदों को धैर्य और परिपक्वता के साथ निपटाएं। इस मास 1, 8, 9, 18, 19, 28, 29 दिनांक नेष्ट रहेगी।

दिसम्बर -

इस महीने आप को कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और काम में सफलता मिलने से आप प्रसन्न रहेंगे। विदेशी संपर्क और संबंध आपके लिए लाभकारी होंगे और उनक द्वारा आपको अच्छा लाभ मिलने की संभावना है। छोटे भाई-बहनों के लिए यह महीना अच्छा रह सकता है क्योंकि इस दौरान उच्च शिक्षा के लिए उनके विदेश जाने की संभावना बन रही है लेकिन इस संबंध में थोड़ी सावधानी बरतें। आप मानसिक रूप से बेहद खुश रहेंगे और आपके उत्साह में वृद्धि होगी। माँ का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, पुराने रोग शान्त होंगे। सामाजिक कार्यों में उनकी सहभागिता रहने से उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी, साथ ही वे आर्थिक रूप से आपकी मदद भी करेंगी। इस महीने आप तीर्थदर्शन के लिए जा सकते हैं। इस महीने आपकी सेहत अच्छी रहेगी लेकिन नियमित व्यायाम करना आपके लिए और भी लाभकारी रहेगा। इस मास 6, 7, 15, 16, 25, 26 दिनांक नेष्ट रहेगी।

जनवरी 2026

इस महीने में आप को स्वास्थ्य संबंधी समस्या का सामना करना पड़ सकता है, विशेष रूप से पेट से जुड़ी कोई बीमारी परेशान कर सकती है। इसलिए अपने खानपान पर विशेष ध्यान दें। मुंह में छाले, घाव और नेत्र संबंधी पीड़ा भी हो सकती है। पारिवारिक जीवन इस माह अच्छा रहने वाला है। घर-परिवार में खुशियां बनी रहेगी और आप परिजनों के साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे। जीवनसाथी आपको कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा और आप दोनों के बीच अच्छे संबंध रहेंगे। कार्य स्थल पर आप कठिन परिश्रम करेंगे और आपको सफलता प्राप्त होगी। इस माह विरोधी आपको चोट पहुंचाने की कोशिश करेंगे लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। इस माह आप अपना सारा उधार चुका देंगे और आपकी वित्तीय स्थिति में मजबूती आएगी। शेयर बाजार में पूंजी निवेश करने से बचें अन्यथा बड़ा नुकसान उठाना पड़ सकता है। वे छात्र जो उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने की योजना बना रहे हैं उन्हें सलाह की आवश्यकता होगी। इसलिए सही मार्गदर्शन और सुझाव लेकर ही आगे बढ़ें। इस मास 2, 3, 11, 12, 13, 21, 22, 30, 31 दिनांक नेष्ट रहेगी।

फरवरी

इस महीने में आपको को किसी भी तरह की आर्थिक चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ेगा, बल्कि इस अवधि में उन्हें अच्छा लाभ होने की संभावना है। क्योंकि इस दौरान किए गए निवेश से अप्रत्याशित लाभ होगा। यदि आपने प्रॉपर्टी में कोई निवेश किया हो तो बड़ा लाभ मिलने से आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी, साथ ही जीवनसाथी की ओर से मिलने वाले आर्थिक योगदान से परिवार की आय में वृद्धि होगी। इस माह आपको व्यवसाय में भी सफलता मिलने के योग हैं। इस समय अवधि में भाई-बहन या दोस्तों के साथ मिलकर किसी बिजनेस की शुरुआत करना आपके लिए लाभकारी हो सकती है। जो जातक साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं उन्हे साझेदार की मदद से लाभ की प्राप्ति होगी। इस मास आपके दयालु स्वभाव और मधुर वाणी के कारण आपकी प्रशंसा होगी। इस मास 7, 8, 9, 17, 18, 19, 26,

27 दिनांक नेष्ट रहेगी।

मार्च -

यह महीना आपके लिए सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहेगा। आपका आकर्षक व्यक्तित्व लोगों को अपनी ओर आकर्षित करेगा। इस अवधि में आपके द्वारा विवेकपूर्ण तरीके से लिए गए फैसलों से अच्छे परिणाम प्राप्त होने की संभावना है। आपका पारिवारिक जीवन हर्ष और उल्लास से भरा होगा और आप परिजनों के साथ अच्छा समय बिताएंगे। इसके अतिरिक्त जीवनसाथी के साथ आपका बंधन और भी मजबूत होगा एवं आप दोनों एक साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे। इस माह आपको मिलने वाली सफलता से आपके माता-पिता बहुत प्रसन्न होंगे। साथ ही उनकी ओर से मिलने वाला स्नेह और सहयोग आपके लिए लाभकारी रहेगा। इस माह आपके माता-पिता को भी कोई अप्रत्याशित लाभ मिलने की संभावना है। कुछ विवाहित जोड़े मिलकर कोई संपत्ति खरीद सकते हैं। परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्र या परिणाम का इंतजार कर रहे छात्र, दोनों के लिए यह समय अच्छा रहने वाला है। इस अवधि में आपको सफलता प्राप्त होगी। नए दोस्त बनने से सामाजिक प्रभाव बढेगा । दोस्तों और परिजनों के बीच आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी। इस मास 7, 8, 17, 18 दिनांक नेष्ट रहेंगी।

डॉ. प्रवेश व्यास
सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभाग
श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय,नई दिल्ली।

ग्रह उदयास्त

मंगल ग्रह का उदयास्त -

दिनांक	समय	स्थिति	दिशा
06-11-2025	25:06	अस्त	पश्चिम

बुध ग्रह का उदयास्त -

दिनांक	समय	स्थिति	दिशा
01-04-2025	08:30	उदय	पूर्व
18-05-2025	24:29	अस्त	पूर्व
10-06-2025	09:23	उदय	पश्चिम
23-07-2025	27:29	अस्त	पश्चिम
09-08-2025	19:52	उदय	पूर्व

दिनांक	समय	स्थिति	दिशा
30-08-2025	21:03	अस्त	पूर्व
30-09-2025	24:45	उदय	पश्चिम
14-11-2025	13:49	अस्त	पश्चिम
26-11-2025	19:57	उदय	पूर्व
29-12-2025	18:30	अस्त	पूर्व
08-02-2026	18:03	उदय	पश्चिम
27-02-2026	30:29	अस्त	पश्चिम
14-03-2026	11:45	उदय	पूर्व

गुरु ग्रह का उदयास्त -

दिनांक	समय	स्थिति	दिशा
14-06-2025	17:15	अस्त	पश्चिम
08-07-2025	11:44	उदय	पूर्व

शुक्र ग्रह का उदयास्त -

दिनांक	समय	स्थिति	दिशा
14-12-2025	29:29	अस्त	पूर्व
31-01-2026	22:17	उदय	पश्चिम

शनि ग्रह का उदयास्त -

दिनांक	समय	स्थिति	दिशा
08-03-2026	07:09	अस्त	पश्चिम

अगस्त्य का उदयास्त -

दिनांक	समय	स्थिति	दिशा
25-04-2025	25:07	अस्त	-
29-08-2025	21:56	उदय	-

ग्रहों का राशि प्रवेशकाल विचार

2025-26 (भा.स्टै. समय में)

सूर्य राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	समय
मेष	13-04-2025	27:12
वृष	14-05-2025	24:05
मिथुन	15-06-2025	06:41
कर्क	16-07-2025	17:33
सिंह	16-08-2025	25:57
कन्या	16-09-2025	25:55
तुला	17-10-2025	13:54
वृश्चिक	16-11-2025	13:42
धनु	15-12-2025	28:20
मकर	14-01-2026	15:05
कुम्भ	12-02-2026	28:04
मीन	14-03-2026	24:54

सूर्य आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश 22-06-2025 06:17

बुध राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	समय
मेष	06-05-2025	23:37
वृष	23-05-2025	12:49
मिथुन	06-06-2025	08:51
कर्क	22-06-2025	20:21
सिंह	30-08-2025	17:19
कन्या	15-09-2025	10:58
तुला	02-10-2025	27:41
वृश्चिक	24-10-2025	10:07
तुला(वक्री)	08-12-2025	18:30
वृश्चिक	06-12-2025	24:04
धनु	28-12-2025	31:14
मकर	17-01-2026	10:20
कुम्भ	03-02-2026	21:10

शुक्र राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	समय
मेष	31-05-2025	12:32
वृष	29-06-2025	15:44
मिथुन	26-07-2025	09:37
कर्क	20-08-2025	25:13
सिंह	14-09-2025	24:13
कन्या	09-10-2025	10:59
तुला	02-11-2025	13:16
वृश्चिक	26-11-2025	11:06
धनु	20-12-2025	07:23
मकर	12-01-2026	27:35
कुम्भ	05-02-2026	24:44
मीन	01-03-2026	24:28

सायन सूर्य राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	समय
वृष	19-04-2025	25:42
मिथुन	20-05-2025	24:43
कर्क	21-06-2025	08:36
सिंह	22-07-2025	19:28
कन्या	22-08-2025	26:38
तुला	22-09-2025	24:26
वृश्चिक	23-10-2025	09:57
धनु	22-11-2025	07:38
मकर	21-12-2025	20:59
कुम्भ	20-01-2026	07:41
मीन	18-02-2026	21:46
मेष	20-03-2026	20:37

भौम राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	समय
कर्क	02-04-2025	20:33
सिंह	06-06-2025	24:56
कन्या	28-07-2025	19:24
तुला	13-09-2025	21:01
वृश्चिक	27-10-2025	15:29
धनु	07-12-2025	20:06
मकर	15-01-2026	28:21
कुम्भ	23-02-2026	11:45

गुरु राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	समय
मिथुन	15-05-2025	08:04
कर्क	20-10-2025	07:08
मिथुन(वक्री)	03-12-2025	15:24

देवानां च मुनीनाञ्च
गुरुं काञ्चनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं
तं नमामि बृहस्पतिम् ॥

शनि राशिप्रवेश

राशि	दिनांक	समय
मीन	30-03-2025	16:57

राहु राशि प्रवेश

कुम्भ (वक्री) 18-05-2025 11:51

केतु राशि प्रवेश

सिंह (वक्री) 18-05-2025 11:51

उदये राज्यदा ज्ञेया
वक्रे देशाटनप्रदाः ।
मार्गे चारोग्यकर्त्तारो
ग्रहा नामसदृक् फलाः ॥

स्यात्तैतिले नागचतुष्पदे रविः
सुप्तो निविष्टस्तु गरादिपञ्चके ।
किंस्तुघ्न ऊर्ध्वः शकुनौ सकौलवे
नेष्ट समः श्रेष्ठ इहार्घवर्षणे ॥

ग्रहों का नक्षत्र प्रवेशकाल विचार

2025-26 (भा.स्टै. समय में)

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

नक्षत्र	दिनांक	समय
रेवती	31-03-2025	13:53
अश्विनी	13-04-2025	27:12
भरणी	27-04-2025	19:03
कृत्तिका	11-05-2025	13:13
रोहिणी	25-05-2025	09:26
मृगशिरा	08-06-2025	07:18
आर्द्रा	22-06-2025	06:17
पुनर्वसु	06-07-2025	05:52
पुष्य	19-07-2025	29:23
आश्लेषा	02-08-2025	28:16
मघा	16-08-2025	25:57
पूर्वाफाल्गुनी	30-08-2025	21:55
उत्तराफाल्गुनी	13-09-2025	15:49
हस्त	27-09-2025	07:20
चित्रा	10-10-2025	20:20
स्वाती	24-10-2025	06:51
विशाखा	06-11-2025	14:59
अनुराधा	19-11-2025	21:01
ज्येष्ठा	02-12-2025	25:19
मूल	15-12-2025	28:20
पूर्वाषाढ़ा	28-12-2025	30:34
उत्तराषाढ़ा	11-01-2026	08:33
श्रवण	24-01-2026	10:51
धनिष्ठा	06-02-2026	14:00
शतभिषा	19-02-2026	18:30
पूर्वाभाद्रपद	04-03-2026	24:48
उत्तराभाद्रपद	18-03-2026	09:13

भौम नक्षत्र प्रवेश

नक्षत्र	दिनांक	समय
पुष्य	11-04-2025	26:27
आश्लेषा	12-05-2025	06:37
मघा	06-06-2025	24:56
पूर्वाफाल्गुनी	30-06-2025	19:25
उत्तराफाल्गुनी	23-07-2025	07:58
हस्त	13-08-2025	22:03
चित्रा	03-09-2025	17:32
स्वाती	23-09-2025	20:38
विशाखा	13-10-2025	09:01
अनुराधा	01-11-2025	08:05
ज्येष्ठा	19-11-2025	19:17
मूल	07-12-2025	20:06
पूर्वाषाढ़ा	25-12-2025	12:07
उत्तराषाढ़ा	11-01-2026	21:02
श्रवण	28-01-2026	24:33
धनिष्ठा	14-02-2026	24:32
शतभिषा	03-03-2026	22:48
पूर्वाभाद्रपद	20-03-2026	21:14

बुध नक्षत्र प्रवेश

नक्षत्र	दिनांक	समय
पूर्वाभाद्रपद(वक्री)	03-04-2025	18:21
उत्तराभाद्रपद(मार्गी)	11-04-2025	18:14
रेवती	27-04-2025	17:58
अश्विनी	06-05-2025	23:37
भरणी	14-05-2025	25:55
कृत्तिका	21-05-2025	22:11
रोहिणी	27-05-2025	28:54
मृगशिरा	03-06-2025	06:36
आर्द्रा	09-06-2025	14:03
पुनर्वसु	16-06-2025	15:38
पुष्य (वक्री)	24-06-2025	28:13
आश्लेषा	07-07-2025	06:14
पुष्य	29-07-2025	16:52
आश्लेषा	21-08-2025	28:21
मघा	30-08-2025	17:19
पूर्वाफाल्गुनी	06-09-2025	17:03
उत्तराफाल्गुनी	13-09-2025	15:56
हस्त	20-09-2025	24:40
चित्रा	28-09-2025	23:06
स्वाती	07-10-2025	12:01
विशाखा	16-10-2025	17:54
अनुराधा	26-10-2025	30:15
विशाखा(वक्री)	20-11-2025	09:58
अनुराधा	09-12-2025	28:46
ज्येष्ठा	19-12-2025	30:19
मूल	28-12-2025	31:14
पूर्वाषाढ़ा	06-01-2026	24:01
उत्तराषाढ़ा	15-01-2026	09:18
श्रवण	23-01-2026	10:09
धनिष्ठा	30-01-2026	26:45
शतभिषा	07-02-2026	15:59
पूर्वाभाद्रपद	15-02-2026	21:25
शतभिषा(वक्री)	10-03-2026	30:34

गुरु नक्षत्र प्रवेश

नक्षत्र	दिनांक	समय
मृगशिरा	11-04-2025	07:26
आर्द्रा	14-06-2025	08:10
पुनर्वसु	13-08-2025	15:19

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

नक्षत्र	दिनांक	समय
पूर्वा भा. (वक्री)	31-03-2025	14:26
उत्तराभाद्रपद	25-04-2025	25:51
रेवती	16-05-2025	13:01
अश्विनी	31-05-2025	12:32
भरणी	13-06-2025	22:36
कृत्तिका	26-06-2025	13:53
रोहिणी	08-07-2025	17:40
मृगशिरा	20-07-2025	13:49
आर्द्रा	31-07-2025	28:11
पुनर्वसु	12-08-2025	14:09

पुष्य	23-08-2025	20:30
आश्लेषा	03-09-2025	23:43
मघा	14-09-2025	24:13
पूर्वाफाल्गुनी	25-09-2025	22:18
उत्तराफाल्गुनी	06-10-2025	18:16
हस्त	17-10-2025	12:28
चित्रा	27-10-2025	29:16
स्वाती	07-11-2025	21:03
विशाखा	18-11-2025	12:07
अनुराधा	28-11-2025	26:43
ज्येष्ठा	09-12-2025	17:07
मूल	20-12-2025	07:23
पूर्वाषाढ़ा	30-12-2025	21:40
उत्तराषाढ़ा	10-01-2026	11:59
श्रवण	20-01-2026	26:28
धनिष्ठा	31-01-2026	17:13
शतभिषा	11-02-2026	08:23
पूर्वाभाद्रपद	21-02-2026	24:09
उत्तराभाद्रपद	04-03-2026	16:41
रेवती	15-03-2026	10:11

शनि नक्षत्र प्रवेश

नक्षत्र	दिनांक	समय
उत्तराभाद्रपद	29-04-2025	06:09
पूर्वा भ.(वक्री)	02-10-2025	29:03
उत्तराभाद्रपद	21-01-2026	13:01

राहू नक्षत्र प्रवेश

शतभिषा (वक्री)	22-11-2025	28:52

केतु नक्षत्र प्रवेश

पू.फा. (वक्री)	20-07-2025	09:33

ग्रहों का मार्गत्व वक्रत्व

मंगल ग्रह का मार्गत्व वक्रत्व

मार्गी/वक्री	दिनांक	समय
मार्गी	07-04-2025	28:52

बुध ग्रह का मार्गत्व वक्रत्व

मार्गी/वक्री	दिनांक	समय
मार्गी	18-07-2025	22 :25
वक्री	11-08-2025	22 :01
मार्गी	10-11-2025	09 :08
वक्री	30-11-2025	12 :53
मार्गी	26-02-2026	24 :36

गुरु ग्रह का मार्गत्व वक्रत्व

मार्गी/वक्री	दिनांक	समय
वक्री	12-11-2025	08:17
मार्गी	11-03-2026	16:17

शुक्रग्रह का मार्गत्व वक्रत्व

मार्गी	13-04-2025	14 :36

शनि ग्रह का मार्गत्व वक्रत्व

वक्री	13-07-2025	15:49
मार्गी	28-11-2025	20:44

विक्रम संवत् 2082 (ई० सन् 2025-26) के प्रमुख व्रत, पर्व एवं उत्सव

विनायक चतुर्थी व्रत

मास	पक्ष	दिनांक
चैत्र	शुक्ल	01/04/2025
वैशाख	शुक्ल	01/05/2025
ज्येष्ठ	शुक्ल	30/05/2025
आषाढ	शुक्ल	28/06/2025
श्रावण	शुक्ल	28/07/2025
भाद्रपद	शुक्ल	27/08/2025
आश्विन	शुक्ल	25/09/2025
कार्तिक	शुक्ल	25/10/2025
मार्गशीर्ष	शुक्ल	24/11/2025
पौष	शुक्ल	24/12/2025
माघ	शुक्ल	22/01/2026
फाल्गुन	शुक्ल	21/02/2026

संकष्ट चतुर्थी व्रत

मास	पक्ष	दिनांक
वैशाख	कृष्ण	16/04/2025
ज्येष्ठ	कृष्ण	16/05/2025
आषाढ	कृष्ण	14/06/2025
श्रावण	कृष्ण	14/07/2025
भाद्रपद	कृष्ण	12/08/2025
आश्विन	कृष्ण	10/09/2025
कार्तिक	कृष्ण	10/10/2025
मार्गशीर्ष	कृष्ण	08/11/2025
पौष	कृष्ण	07/12/2025
माघ	कृष्ण	06/01/2026
फाल्गुन	कृष्ण	05/02/2026
चैत्र	कृष्ण	06/03/2026

दुर्गाष्टमी व्रत

मास	पक्ष	दिनांक
चैत्र	शुक्ल	05/04/2025
वैशाख	शुक्ल	05/05/2025
ज्येष्ठ	शुक्ल	03/06/2025
आषाढ	शुक्ल	03/07/2025
श्रावण	शुक्ल	01/08/2025
भाद्रपद	शुक्ल	31/08/2025
आश्विन	शुक्ल	30/09/2025
कार्तिक	शुक्ल	30/10/2025
मार्गशीर्ष	शुक्ल	28/11/2025
पौष	शुक्ल	28/12/2025
माघ	शुक्ल	26/01/2026
फाल्गुन	शुक्ल	24/02/2026

कालाष्टमी व्रत

मास	पक्ष	दिनांक
वैशाख	कृष्ण	21/04/2025
ज्येष्ठ	कृष्ण	20/05/2025
आषाढ	कृष्ण	18/06/2025
श्रावण	कृष्ण	17/07/2025
भाद्रपद	कृष्ण	15/08/2025
आश्विन	कृष्ण	14/09/2025
कार्तिक	कृष्ण	13/10/2025
मार्गशीर्ष	कृष्ण	12/11/2025
पौष	कृष्ण	11/12/2025
माघ	कृष्ण	10/01/2026
फाल्गुन	कृष्ण	09/02/2026
चैत्र	कृष्ण	11/03/2026

विक्रम संवत् 2082 (ई० सन् 2025-26) के प्रमुख व्रत, पर्व एवं उत्सव

मास शिवरात्रि व्रत

मास	पक्ष	दिनांक
वैशाख	कृष्ण	26/04/2025
ज्येष्ठ	कृष्ण	25/05/2025
आषाढ	कृष्ण	23/06/2025
श्रावण	कृष्ण	23/07/2025
भाद्रपद	कृष्ण	21/08/2025
आश्विन	कृष्ण	20/09/2025
कार्तिक	कृष्ण	19/10/2025
मार्गशीर्ष	कृष्ण	18/11/2025
पौष	कृष्ण	18/12/2025
माघ	कृष्ण	17/01/2026
फाल्गुन	कृष्ण	16/02/2026
चैत्र	कृष्ण	17/03/2026

पूर्णिमा व्रत

मास	पक्ष	दिनांक
चैत्र	शुक्ल	12/04/2025
वैशाख	शुक्ल	12/05/2025
ज्येष्ठ	शुक्ल	10/06/2025
आषाढ	शुक्ल	10/07/2025
श्रावण	शुक्ल	08/08/2025
भाद्रपद	शुक्ल	07/09/2025
आश्विन	शुक्ल	06/10/2025
कार्तिक	शुक्ल	05/11/2025
मार्गशीर्ष	शुक्ल	04/12/2025
पौष	शुक्ल	02/01/2026
माघ	शुक्ल	01/02/2026
फाल्गुन	शुक्ल	02/03/2026

एकादशी व्रत

मास	पक्ष	दिनांक
चैत्र	शुक्ल	08/04/2025
वैशाख	कृष्ण	24/04/2025
वैशाख	शुक्ल	08/05/2025
ज्येष्ठ	कृष्ण	23/05/2025
ज्येष्ठ	शुक्ल(स्मा.)	06/05/2025
आषाढ	कृष्ण(स्मा.)	21/06/2025
आषाढ	शुक्ल	06/07/2025
श्रावण	कृष्ण	21/07/2025
श्रावण	शुक्ल	05/08/2025
भाद्रपद	कृष्ण	19/08/2025
भाद्रपद	शुक्ल	03/09/2025
आश्विन	कृष्ण	17/09/2025
आश्विन	शुक्ल	03/10/2025
कार्तिक	कृष्ण	16/10/2025
कार्तिक	शुक्ल(स्मा.)	01/11/2025
मार्गशीर्ष	कृष्ण	15/11/2025
मार्गशीर्ष	शुक्ल	01/12/2025
पौष	कृष्ण	15/12/2025
पौष	शुक्ल(स्मा.)	30/12/2025
माघ	कृष्ण	14/01/2026
माघ	शुक्ल	29/01/2026
फाल्गुन	कृष्ण	13/02/2026
फाल्गुन	शुक्ल	27/02/2026
चैत्र	कृष्ण	15/03/2026

मास शिवरात्रि व्रत

मास	पक्ष	दिनांक
चैत्र	शुक्ल	10/04/2025
वैशाख	कृष्ण	25/04/2025
वैशाख	शुक्ल	09/05/2025
ज्येष्ठ	कृष्ण	24/05/2025
ज्येष्ठ	शुक्ल	08/06/2025
आषाढ	कृष्ण	23/06/2025
आषाढ	शुक्ल	08/07/2025
श्रावण	कृष्ण	22/07/2025
श्रावण	शुक्ल	06/08/2025
भाद्रपद	कृष्ण	20/08/2025
भाद्रपद	शुक्ल	05/09/2025
आश्विन	कृष्ण	19/09/2025
आश्विन	शुक्ल	04/10/2025
कार्तिक	कृष्ण	18/10/2025
कार्तिक	शुक्ल	03/11/2025
मार्गशीर्ष	कृष्ण	17/11/2025
मार्गशीर्ष	शुक्ल	02/12/2025
पौष	कृष्ण	17/12/2025
पौष	शुक्ल	01/01/2026
माघ	कृष्ण	16/01/2026
माघ	शुक्ल	30/01/2026
फाल्गुन	कृष्ण	14/02/2026
फाल्गुन	शुक्ल	01/03/2026
चैत्र	कृष्ण	16/03/2026

विक्रम संवत् 2082 (ई० सन् 2025-26) के प्रमुख व्रत, पर्व एवं उत्सव

व्रत, पर्व एवं उत्सव	दिनांक	व्रत, पर्व एवं उत्सव	दिनांक	व्रत, पर्व एवं उत्सव	दिनांक
वासन्तिक नवरात्रारम्भ	30/03/2025	मातंगी जयन्ती	30/04/2025	निर्जला एकादशीव्रत (स्मा.)	06/06/2025
घटस्थापन	30/03/2025	आदिगुरु शंकराचार्य जयन्ती	02/05/2025	चम्पक द्वादशी	07/06/2025
मत्स्य जयन्ती	31/03/2025	रामानुजाचार्य जयन्ती	03/05/2025	त्रिविक्रम द्वादशी	07/06/2025
गणगौरी तृतीया	31/03/2025	चन्दन षष्ठी	03/05/2025	वटसावित्री व्रत पूर्णिमा	10/06/2025
सौभाग्य गौरीव्रतम्	31/03/2025	गंगोत्पत्ति	03/05/2025	कबीर दास जयन्ती	11/06/2025
विनायक चतुर्थी व्रतम्	01/04/2025	भानु सप्तमी	04/05/2025	शीतला अष्टमी	19/06/2025
श्री पंचमी	02/04/2025	सीता जयन्ती	05/05/2025	योगिनी एकादशीव्रत (स्मा.)	21/06/2025
रामराज्य महोत्सव	02/04/2025	मोहिनी एकादशीव्रत	08/05/2025	वंश वर्धक अमावस्या	25/06/2025
यमुना छठ	03/04/2025	मधुसूदन द्वादशी	09/05/2025	गुप्त नवरात्रारम्भ	26/06/2025
कालरात्री पूजन	03/04/2025	नृसिंह जयन्ती	11/05/2025	श्री जगन्नाथ रथ यात्रा	27/06/2025
दुर्गाष्टमी व्रत	05/04/2025	छिन्नमस्ता जयन्ती	11/05/2025	स्कन्द पञ्चमी	30/06/2025
रामनवमी	06/04/2025	कूर्म जयन्ती	12/05/2025	कुमार षष्ठी	30/06/2025
नवरात्र समाप्त	06/04/2025	नारद जयन्ती	12/05/2025	विवस्वत् सप्तमी	01/07/2025
देवी विसर्जन	07/04/2025	बुद्ध पूर्णिमा	12/05/2025	महिषासुरमर्दिनी पूजा	03/07/2025
धर्मराज दशमी	07/04/2025	सम्पद्गौरी व्रत	12/05/2025	मेला शरीक भवानी	04/07/2025
कामदा एकादशीव्रत	08/04/2025	शीतला अष्टमी	20/05/2025	भड्डली नवमी	04/07/2025
वामन द्वादशी	09/04/2025	अपरा एकादशीव्रत	23/05/2025	गुप्त नवरात्र समाप्त	04/07/2025
अनंग त्रयोदशी	10/04/2025	वट सावित्री व्रत अमा.	26/05/2025	हरिशयनी एकादशी	06/07/2025
महावीर जयन्ती (जैन)	10/04/2025	भावुका अमावस्या	27/05/2025	वासुदेव द्वादशी	07/07/2025
नृसिंह दोलोत्सव	11/04/2025	शनैश्चर जयन्ती	27/05/2025	कोकिला व्रत	10/07/2025
हनुमान जयन्ती (द.भा.)	12/04/2025	रम्भा तृतीया	29/05/2025	गुरु/व्यास पूर्णिमा	10/07/2025
वैशाखी	14/04/2025	महाराणाप्रताप जयन्ती	29/05/2025	श्रावण सोमवार व्रतारम्भ	14/07/2025
अनसूया जयन्ती	17/04/2025	महादेव विवाह	31/05/2025	शीतला सप्तमी	17/07/2025
कोकिला षष्ठी	18/04/2025	स्कन्द षष्ठी	01/06/2025	कामिका एकादशीव्रत	21/07/2025
शीतला अष्टमी	21/04/2025	विन्ध्यवासिनी पूजन	01/06/2025	हरियाली अमावस्या	24/07/2025
वरूथिनी एकादशी	24/04/2025	आरण्यक गौरी व्रत	01/06/2025	चितऊ अमावस्या	24/07/2025
मेला पिंजौर	27/04/2025	मेला क्षीर भवानी	03/06/2025	दोलोत्सवारम्भ	25/07/2025
परशुराम जयन्ती	29/04/2025	सुरकण्डा देवी पूजा	04/06/2025	मेला छिन्नमस्ता	25/07/2025
अक्षय तृतीया	30/04/2025	गंगा दशहरा	05/06/2025	सिन्धारा व्रत	26/07/2025
बगुलामुखी जयन्ती	30/04/2025	वटुकभैरव जयन्ती	05/06/2025	मधुश्रवा तृतीया	27/07/2025
गौरी पूजा	30/04/2025	गायत्री जयन्ती	06/06/2025	हरियाली तीज	27/07/2025

व्रत, पर्व एवं उत्सव	दिनांक	व्रत, पर्व एवं उत्सव	दिनांक	व्रत, पर्व एवं उत्सव	दिनांक
दूर्वागणपति व्रत	28/07/2025	पूर्णिमा श्राद्ध	07/09/2025	कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ	07/10/2025
नाग पंचमी	29/07/2025	प्रतिपदा का श्राद्ध	08/09/2025	वाल्मीकि जयन्ती	07/10/2025
भित्तिनागपूजा	29/07/2025	द्वितीया का श्राद्ध	09/09/2025	अशून्यशयन व्रत	08/10/2025
कल्की जयन्ती	30/07/2025	अशून्यशयन व्रत	09/09/2025	करवाचौथ व्रत	10/10/2025
शीतला सप्तमी (सिंध)	31/07/2025	तृतीया का श्राद्ध	10/09/2025	अहोई अष्टमी	13/10/2025
श्री तुलसी दास जयन्ती	31/07/2025	चतुर्थी का श्राद्ध	11/09/2025	राधा जयन्ती	14/10/2025
कौमारी देवी पूजा	01/08/2025	पंचमी का श्राद्ध	11/09/2025	रमा एकादशीव्रत	17/10/2025
पवित्रा एकादशीव्रत	05/08/2025	षष्ठी का श्राद्ध	12/09/2025	गोवत्स द्वादशी	17/10/2025
पुत्रदा एकादशी	05/08/2025	सप्तमी का श्राद्ध	13/09/2025	धनवन्तरी जयन्ती	18/10/2025
दामोदर द्वादशी	06/08/2025	अष्टमी का श्राद्ध	14/09/2025	धनतेरस	18/10/2025
श्रावणी उपाकर्म	09/08/2025	जीवित पुत्रिका व्रत	14/09/2025	नरक चतुर्दशी	19/10/2025
रक्षाबन्धन	09/08/2025	नवमी का श्राद्ध	15/09/2025	दीपावली	20/10/2025
कज्जली तृतीया	12/08/2025	मातृ नवमी	15/09/2025	महालक्ष्मी पूजा	20/10/2025
ललही छठ	14/08/2025	दशमी का श्राद्ध	16/09/2025	यम तर्पण	21/10/2025
हल षष्ठी	14/08/2025	एकादशी का श्राद्ध	17/09/2025	अन्नकूट	22/10/2025
बलराम जयन्ती	14/08/2025	इन्दिरा एकादशीव्रत	17/09/2025	गोवर्धन पूजा	22/10/2025
श्रीकृष्णजन्माष्टमी (स्मार्त)	15/08/2025	द्वादशी का श्राद्ध	18/09/2025	विश्वकर्मा पूजा	22/10/2025
स्वतन्त्रता दिवस	15/08/2025	त्रयोदशी का श्राद्ध	19/09/2025	भैयादूज, यमद्वितीया	23/10/2025
गोगा नवमी	17/08/2025	चतुर्दशी का श्राद्ध	20/09/2025	सूर्यषष्ठी व्रत	27/10/2025
अजा एकादशीव्रत	19/08/2025	अमावस्या का श्राद्ध	21/09/2025	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी	31/10/2025
कुशोत्पाटिनी अमावस्या	23/08/2025	सर्व पितृ विसर्जन	21/09/2025	हरिप्रबोधिनी एकादशी (वै.)	02/11/2025
हरितालिका तीज	26/08/2025	मातामह श्राद्ध	22/09/2025	तुलसी विवाह	02/11/2025
ऋषि पंचमी	28/08/2025	शारदीय नवरात्रारम्भ	22/09/2025	वैकुण्ठ चतुर्दशी	04/11/2025
लोलार्क षष्ठी	29/08/2025	कलश स्थापना	22/09/2025	विश्वनाथ स्थापना दिवस	04/11/2025
आमुक्ताभरण सप्तमी	30/08/2025	उपांगललिता व्रत	26/09/2025	गुरु नानक जयन्ती	05/11/2025
दूर्वा अष्टमी	31/08/2025	सरस्वती आवाहन	28/09/2025	देव दीपावली	05/11/2025
नन्दा देवी पूजा	31/08/2025	कालरात्रि पूजा	28/09/2025	कार्तिकव्रत स्नान समाप्त	05/11/2025
राधा अष्टमी	31/08/2025	महानिशा पूजा	29/09/2025	सौभाग्य सुन्दरी व्रत	08/11/2025
अदुःख नवमी (नन्दपाती पूजन)	01/09/2025	महाष्टमी व्रत	30/09/2025	कालभैरवाष्टमी	12/11/2025
दशावतार व्रत	02/09/2025	महानवमी व्रत	01/10/2025	रुक्मिणी व्रत	12/11/2025
पद्मा एकादशीव्रत	03/09/2025	विजया दशमी	02/10/2025	उत्पन्ना एकादशीव्रत	15/11/2025
शक्र द्वादशी	04/09/2025	पापांकुशा एकादशीव्रत	03/10/2025	प्रतिपत्प्रदोष	20/11/2025
अनन्तचतुर्दशी व्रत	06/09/2025	शरद पूर्णिमा	06/10/2025	कार्त्तिक पूजा बंगाल	20/11/2025

व्रत, पर्व एवं उत्सव	दिनांक	व्रत, पर्व एवं उत्सव	दिनांक	व्रत, पर्व एवं उत्सव	दिनांक
रुद्रव्रत	21/11/2025	तिल चतुर्थी	22/01/2026	आम्रकलिका प्राशन	04/03/2026
रम्भा व्रत	21/11/2025	वसन्त पंचमी	23/01/2026	रंग पंचमी	08/03/2026
रामविवाहोत्सव	25/11/2025	सरस्वती पूजा	23/01/2026	मेला नौचंदी प्रारम्भ (मेरठ)	08/03/2026
संहार षष्ठी	26/11/2025	रथसप्तमी	25/01/2026	मेला नौचंदी समाप्त (मेरठ)	10/03/2026
मल्लार षष्ठी	26/11/2025	अचला सप्तमी	25/01/2026	शीतला पूजा/बासोड़ा	11/03/2026
चम्पा षष्ठी	26/11/2025	अभोज्यार्कव्रत	25/01/2026	अष्टका श्राद्ध	11/03/2026
महानवमीव्रत	29/11/2025	भीमाष्टमी	26/01/2026	अन्वष्टका श्राद्ध	12/03/2026
गीता जयन्ती	01/12/2025	नन्दिनीदेवी पूजन	27/01/2026	पापमोचनी एकादशीव्रत	15/03/2026
मोक्षदा एकादशीव्रत	01/12/2025	जया एकादशीव्रत	29/01/2026	चैती अमावस्या	04/03/2026
मत्स्य द्वादशी	02/12/2025	भक्त पुण्डरीक उत्सव	29/01/2026	मेला पेहवा	18/03/2026
अखण्ड द्वादशी	02/12/2025	आमलकी द्वादशी	30/01/2026	विक्रम संवत् समाप्ति 2082	19/03/2026
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	04/12/2025	माघस्नान समाप्ति	01/02/2026	विक्रम संवत् प्रारम्भ 2083	19/03/2026
अष्टका श्राद्ध	12/12/2025	सन्त रविदास जयन्ती	01/02/2026		
सफला एकादशीव्रत	15/12/2025	अष्टका श्राद्ध	09/02/2026		
सुरूपाद्वादशी	16/12/2025	अन्वष्टका श्राद्ध	10/02/2026		
पौषी शनैश्चरी अमावस्या	20/12/2025	विजया एकादशीव्रत	13/02/2026		
बकुला अमावस्या	20/12/2025	महाशिवरात्रि व्रत	15/02/2026		
पुत्रदा एकादशीव्रत (स्मा.)	30/12/2025	रामकृष्ण परमहंस जयन्ती	19/02/2026		
कुर्म द्वादशी	31/12/2025	पुत्र गणपति व्रत	21/02/2026		
माघस्नानारम्भ	03/01/2026	कामदा सप्तमी व्रत	24/02/2026		
खिचडी संक्रान्ति	14/01/2026	सीता पूजन	24/02/2026		
माघी (हिमाचल)	14/01/2026	होलाष्टक प्रारम्भ	24/02/2026		
तिल संक्रान्ति	14/01/2026	दुर्गाष्टमी	24/02/2026		
पोंगल	14/01/2026	फल्गु दशमी	26/02/2026		
संकट चौथ	06/01/2026	रंगभरी एकादशी	27/02/2026		
अष्टका श्राद्ध	10/01/2026	आमलकी एकादशीव्रत	27/02/2026		
लोहड़ी (पंजाब)	13/01/2026	गोविन्द द्वादशी	28/02/2026		
षट्तिला एकादशीव्रत	14/01/2026	होलिकादहन	02/03/2026		
तिल द्वादशी	15/01/2026	होलिकाष्टक समाप्ति	02/03/2026		
गणतन्त्र दिवस	26/01/2026	चैतन्यमहाप्रभु जयन्ती	03/03/2026		
मौनी अमावस्या	18/01/2026	होली (धुलैण्डी, छरोली)	04/03/2026		
शिशिर गुप्त नवरात्रारम्भ	19/01/2026	होलिका भस्मधारण (उदयव्या. प्रति.)	04/03/2026		
गौरी तृतीया व्रत	21/01/2026	वसन्तोत्सव	04/03/2026		

सूर्यसंक्रान्ति पुण्यकाल

राशि	दिनांक	समय
मेष	14/04/2025	सूर्योदय से मध्याह्न तक
वृष	14/05/2025	मध्याह्न से सूर्यास्त तक
मिथुन	15/06/2025	सूर्योदय से मध्याह्न तक
कर्क	16/07/2025	सम्पूर्ण दिन
सिंह	17/08/2025	सूर्योदय से मध्याह्न तक
कन्या	17/09/2025	सूर्योदय से मध्याह्न तक
तुला	17/10/2025	09:54 से सूर्यास्त तक
वृश्चिक	16/11/2025	सूर्योदय से 13:42 तक
धनु	16/12/2025	सूर्योदय से मध्याह्न तक
मकर	14/01/2026	मध्याह्न से सूर्यास्त तक
कुम्भ	13/02/2026	सूर्योदय से मध्याह्न तक
मीन	15/03/2026	सूर्योदय से मध्याह्न तक

विक्रम संवत् 2082 (ई० सन् 2025-26) के विविध शुभ योग

सर्वार्थसिद्ध योग

दिनांक	समय
02-04-2025	08:49 तक
06-04-2025	29:46 तक
08-04-2025	07:57 तक
16-04-2025	29:53 तक
27-04-2025	24:52 तक
29-04-2025	18:43 तक
30-04-2025	16:11 तक
04-05-2025	12:46 तक
14-05-2025	12:46 तक
18-05-2025	19:08 तक
19-05-2025	19:40 तक
25-05-2025	11:19 तक
28-05-2025	24:15 तक
30-05-2025	21:07 तक
20-06-2025	22:04 तक
25-06-2025	10:40 तक
27-06-2025	07:23 तक
05-07-2025	19:53 तक
07-07-2025	25:27 तक
17-07-2025	27:56 तक
21-07-2025	21:07 तक
24-07-2025	16:35 तक
30-07-2025	21:35 तक
04-08-2025	09:16 तक
09-08-2025	14:26 तक
14-08-2025	09:08 तक
15-08-2025	07:38 तक
18-08-2025	25:53 तक
21-08-2025	23:52 तक
05-09-2025	23:59 तक
09-09-2025	18:11 तक
11-09-2025	13:58 तक
15-09-2025	07:28 तक
18-09-2025	06:21 तक
03-10-2025	09:36 तक
11-10-2025	15:13 तक
19-10-2025	17:46 तक
24-10-2025	28:44 तक
16-11-2025	26:00 तक
21-11-2025	13:54 तक
23-11-2025	19:30 तक
30-11-2025	25:44 तक
08-12-2025	26:26 तक
09-12-2025	25:45 तक
14-12-2025	18:17 तक
18-12-2025	20:12 तक
28-12-2025	08:47 तक
31-12-2025	25:50 तक
05-01-2026	13:19 तक
06-01-2026	12:14 तक
14-01-2026	27:10 तक
28-01-2026	09:29 तक
01-02-2026	23:45 तक
11-02-2026	10:55 तक
15-02-2026	20:02 तक
16-02-2026	21:00 तक
22-02-2026	18:04 तक
29-02-2026	15:22 तक
25-02-2026	13:39 तक
01-03-2026	08:34 तक

सिद्धयोग

दिनांक	समय
09-04-2025	22:47 तक
26-04-2025	08:53 से
14-05-2025	26:39 तक
20-05-2025	05:59 से
22-05-2025	25:44 तक
23-05-2025	22:57 तक
28-05-2025	25:37 तक
03-06-2025	21:36 तक
05-06-2025	26:05 तक
06-06-2025	28:45 तक
15-06-2025	13:45 तक
02-07-2025	11:52 तक
08-07-2025	24:55 तक
10-07-2025	26:24 तक
11-07-2025	26:28 तक
19-07-2025	14:48 तक
22-07-2025	07:05 से
25-07-2025	23:03 तक
06-08-2025	14:17 तक
12-08-2025	08:40 तक
20-08-2025	23:50 तक
26-08-2025	13:45 तक
28-08-2025	17:42 तक
29-08-2025	20:11 तक
06-09-2025	26:06 तक
20-09-2025	24:02 तक
30-09-2025	18:18 तक
02-10-2025	19:28 तक
03-10-2025	18:48 तक
08-10-2025	26:32 तक
14-10-2025	11:01 तक
16-10-2025	10:30 तक
17-10-2025	11:08 तक
25-10-2025	27:50 तक
29-10-2025	09:25 तक
08-11-2025	07:34से
18-11-2025	07:13 तक
21-11-2025	14:45 तक
29-11-2025	23:45 तक
04-12-2025	08:41से
05-12-2025	24:52 तक
13-12-2025	16:29 तक
23-12-2025	12:15 तक
25-12-2025	13:49 तक
26-12-2025	13:51 तक
31-12-2025	26:10 तक
06-01-2026	08:03से
17-01-2026	24:19 तक
31-01-2026	08:24 से
10-02-2026	07:27 तक
12-02-2026	12:29 तक
13-02-2026	14:36 तक
21-02-2026	13:08 तक
24-02-2026	07:06से
27-02-2026	22:27 तक
07-03-2026	19:00 तक
17-03-2026	09:25 तक

डॉ० नवीन पाण्डेय

विक्रम संवत् 2082 (ई० सन् 2025-26) के विविध शुभ योग

सिद्धि योग

दिनांक	समय
02-04-2025	08:49 तक
19-05-2025	19:46 तक
05-06-2025	19:53 तक
24-07-2025	16:35 तक
09-09-2025	18:11 तक
26-10-2025	10:46से
14-11-2025	21:05 तक
23-11-2025	19:30 तक
31-12-2025	28:26 तक
28-01-2026	09:29 तक
16-02-2026	21:00 तक

अमृत योग

दिनांक	समय
07-04-2025	19:45 तक
10-04-2025	24:54 तक
11-04-2025	27:17 तक
15-04-2025	10:52 तक
19-04-2025	18:37 तक
29-04-2025	17:28 तक
03-05-2025	07:50 तक
12-05-2025	22:29 तक
15-05-2025	28:19 तक
16-05-2025	29:17 तक
18-05-2025	06:02 तक
24-05-2025	22:55 तक
30-05-2025	20:59 तक
16-06-2025	15:42 तक
19-06-2025	12:04 तक
20-06-2025	09:57 तक
21-06-2025	07:23से
30-06-2025	09:21 तक
03-07-2025	14:00 तक
04-07-2025	16:29 तक
16-07-2025	21:15 तक
20-07-2025	12:15 तक
22-07-2025	07:05से
30-07-2025	26:15 तक
04-08-2025	11:47 तक
07-08-2025	14:34 तक
08-08-2025	14:15 तक
18-08-2025	17:15 तक
21-08-2025	12:38 तक
22-08-2025	11:51 तक
03-09-2025	28:58 तक
07-09-2025	23:54 तक
09-09-2025	18:33 तक
13-09-2025	07:28से
17-09-2025	23:18 तक
09-10-2025	22:53 तक
10-10-2025	19:31 तक
22-10-2025	20:10 तक
26-10-2025	30:14 तक
30-10-2025	10:10 तक
31-10-2025	10:06 तक
09-11-2025	25:20 तक
11-11-2025	22:37 तक
15-11-2025	26:20 तक
26-11-2025	24:19 तक
30-11-2025	21:55 तक
02-12-2025	16:12 तक
10-12-2025	13:37 तक
14-12-2025	18:41 तक
16-12-2025	23:58 तक
01-01-2026	22:32 तक
02-01-2026	18:53 तक
14-01-2026	17:57 तक
20-01-2026	27:01 तक
24-01-2026	25:04 तक
01-02-2026	27:20 तक
03-02-2026	24:19 तक
07-02-2026	26:22 तक
18-02-2026	17:06 तक
22-02-2026	11:57 तक
24-02-2026	07:06से
04-03-2026	16:43 तक
08-03-2026	20:55 तक
10-03-2026	25:51 तक

रविपुष्य योग

दिनांक	समय
06-04-2025	29:46 तक
04-05-2025	12:46 तक
07-12-2025	27:39 से
04-01-2026	15:05 से
01-02-2026	23:45 तक
01-03-2026	08:34 तक

डॉ० नवीन पाण्डेय

गुरुपुष्य योग

दिनांक	समय
24-07-2025	16:35 से
21-08-2025	23:52 तक
18-09-2025	06:30 तक

डॉ० नवीन पाण्डेय

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्त्रं चन्द्रे
श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं
ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् ॥
जोवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं
शुक्रेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोभम् ।
शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि
सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वैः ॥

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः
कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः ।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं
यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान् ॥
यात्राविवाहोत्सवजातकादौ
खेटैः स्फुटैरेव फलं स्फुटत्वम् ।
स्यात् प्रोच्यते तेन नभश्चराणां
स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या ॥

ग्रहण विवरण संवत् 2082 (2025-26 ई.)

उपमर्दे लक्षगुणं ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः।
पुण्यकोटिगुणं मध्ये मुक्तिकाले त्वनन्तकम्॥

- स्कन्दपुराण

बहुफलं जपदानहुतादिके स्मृतिपुराणविदः प्रवदन्ति हि।
सदुपयोगि जने सचमत्कृतिः ग्रहणमिन्द्वनयोः कथयाम्यतः॥

- सि.शि.च.ग्र श्लो.1

विक्रम संवत् 2082 (2025-26 ई.) में समस्त विश्व में 02 सूर्यग्रहण तथा 02 चन्द्रग्रहण ही दिखाई देंगे। इनमें से दोनों सूर्यग्रहण भारत में दृश्य नहीं होंगे। केवल 02 चन्द्रग्रहण ही भारत में दृश्य होंगे। समस्त ग्रहणों का विस्तृत विवरण निम्नलिखित प्रकार से हैं-

1- भारत में दृश्य खग्रास चन्द्रग्रहण (7-8 सितम्बर 2025 ई.) – यह चन्द्रग्रहण भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा, रविवार दिनांक 07 सितम्बर 2025 को भारत में सभी स्थानों पर दिखाई देगा। साथ ही समस्त यूरोप, एशिया, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, ब्राजील के पूर्वी भाग, दक्षिणी अमेरिका के पूर्वी क्षेत्र तथा पश्चिम उत्तरी अमेरिका में भारतीय समयानुसार 21 बजकर 56 मिनट से 25 बजकर 26 मिनट तक दिखाई देगा। ग्रहण का विवरण इस प्रकार है-

स्पर्शकाल		–	21:56
खग्रास	**प्रारम्भ**	–	23:00
ग्रहण	**मध्य**	–	23:41
खग्रास	**समाप्त**	–	24:22
मोक्षकाल		–	25:26

इस ग्रहण का सूतक 07 सितम्बर 2025 को मध्याह्न 12 बजकर 56 मिनट से प्रारम्भ होगा। सूतककाल में शिशुओं, गर्भवती महिलाओं, वृद्धों तथा निःशक्त जनों को छोड़कर अन्य को भोजनादि नहीं करना चाहिए। यथा –

सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं यामचतुष्टयम्।
चन्द्रग्रहे तु यामास्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना॥

ग्रहण समय में स्नान, दान, जप इत्यादि का अत्यधिक महत्त्व धर्मशास्त्र में वर्णित है। इस चन्द्रग्रहण का स्पर्शादि कुम्भ राशि व पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र में हैं। अतः इन राशि व नक्षत्र के जातकों के लिए यह ग्रहण विशेष कष्टकारी रहेगा। बृहत्संहिता के अनुसार कुम्भ राशि में चन्द्रग्रहण का फल इस प्रकार से है-

कुम्भेऽ न्तर्गिरिजान् स पश्चिमजनान् भारोद्वाहांस्तस्करानभीरान्।
दरदार्यसिंहपुरकान् हन्यात्तथा बर्बरान्॥

- बृ.सं.राहुचार. श्लोक -42

अर्थात् गिरि(पर्वतों) में रहने वाले, पश्चिमी देशों के निवासियों, भारवाहक श्रमिकों, तस्करों, अभीरों, दरद देश के निवासियों, आर्य (श्रेष्ठ) जनों, सिंहपुर के निवासियों तथा बर्बर जाति के मनुष्यों के लिए कुम्भ राशि में ग्रहण अत्यधिक कष्टप्रद होता है। इसी प्रकार भाद्रपदमास की पूर्णिमा में होने वाले चन्द्रग्रहण के फल के विषय में आचार्य वराहमिहिर का कथन है-

कलिङ्गवङ्गान् मगधान् सुराष्ट्रान् म्लेच्छान् सुवीरान् दरदाश्मकांश्च।
स्त्रीणां च गर्भानसुरो निहन्ति सुभिक्षकृद् भाद्रपदेऽभ्युपेतः॥

- बृ.सं.राहु.श्लोक -79

अर्थात् कलिङ्ग, बंगाल, मगध, सौराष्ट्र (गुजरात), म्लेच्छ, सुवीरक, दरद व अश्मकदेशों के निवासियों के लिए भाद्रपद मास का ग्रहण कष्टप्रद होता है। इसी प्रकार गर्भवती स्त्रियों के लिए भी यह अशुभ है। तथापि प्रजा के लिए सुभिक्षकारक होने से अन्न की वृद्धि का द्योतक है।

कुम्भ राशि में ग्रहण होने के कारण सभी राशियों के जातकों के लिए इस चन्द्रग्रहण का शुभाशुभ फल निम्नलिखित प्रकार से है-

मेष -	**धनलाभ एवं कार्यसिद्धि**
वृष -	**धनहानि, शारीरिक एवं पारिवारिक सुख**
मिथुन -	**रोग, अपमान व व्ययाधिक्य**
कर्क -	**चिन्ता व कष्ट**
सिंह -	**स्त्री या पति कष्ट व अपमान**
कन्या -	**कार्यसिद्धि व सुख**
तुला -	**सन्ततिकष्ट, चिन्ता, अपव्यय एवं व्यय**
वृश्चिक -	**कष्ट व अपमान**
धनु -	**कार्यसिद्धि व धनप्राप्ति**
मकर -	**धनहानि व पारिवारिक कलह**
कुम्भ -	**चोटभय एवं कष्ट**
मीन –	**धन का अपव्यय एवं वाणिज्य हानि**

अनिष्ट फल के शमनोपाय के विषय में कहा गया है-

सुवर्णं निर्मितं नागं सतिलं कांस्य च भोजनम्।
सदक्षिणं सवस्त्रञ्च श्रोत्रियाय निवेदयेत्॥
सौवर्णं रजतं वापि बिम्बं कृत्वा शक्तितः।
उपरोगोद्भवक्लेशच्छिदे विप्राय कल्पयेत्॥

अर्थात् सोने से निर्मित नाग, तिलों से परिपूर्ण कांस्यपात्र, दक्षिणा व वस्त्र सहित भोजन श्रोत्रिय ब्राह्मण को श्रद्धापूर्वक निवेदित करना चाहिए। इसी प्रकार सामर्थ्य के अनुरूप सोने अथवा चाँदी से बिम्ब (सूर्यग्रहण में सूर्य व चन्द्रग्रहण में चन्द्र की प्रतिमा) निर्मित कर ग्रहण से उत्पन्न क्लेश के प्रशमन के लिए ब्राह्मण को दान करना चाहिए।

2- भारत में अदृश्य सूर्यग्रहण (21 सितम्बर 2025 ई.) –आश्विन कृष्ण अमावस्या, रविवार दिनांक 21 सितम्बर 2025 को घटित होने वाला यह खण्डग्रास सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। यह सूर्यग्रहण मुख्य रूप से न्यूजीलैण्ड, फिजी, आस्ट्रेलिया के दक्षिणी क्षेत्र अण्टार्कटिका के कुछ क्षेत्रों में खण्डग्रास के रूप में भारतीय समयानुसार 23 बजे से 27 अण्टार्कटिका के कुछ क्षेत्रों में खण्डग्रास के रूप में क्षेत्रों में सूर्यग्रहण प्रारम्भ होने से 12 घण्टे पूर्व ग्रहण सूतक प्रारम्भ जानना चाहिए। भारत में यह ग्रहण दृश्य न होने से ग्रहण का सूतक नहीं होगा।

3- भारत में अदृश्य सूर्यग्रहण (17 फरवरी 2026 ई,)- फाल्गुन कृष्ण अमावस्या, मंगलवार दिनांक 17 फरवरी 2026 को घटित होने वाला यह कंकण/ खग्रास सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। यह सूर्यग्रहण मुख्य रूप से दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी क्षेत्र, अर्जेन्टीना, चीली,

दक्षिणी अफ्रीका, जाम्बिया, नाम्बिया, तंजानिया, जिम्बाब्वे, वोत्स्वाना, मौरिशस तथा अण्टार्कटिका के कुछ क्षेत्रों में प्रायः कंकणग्रास के रूप में भारतीय समयानुसार 15 बजकर 26 मिनट से 19 बजकर 57 मिनट तक दिखाई देगा। इन क्षेत्रों में सूर्यग्रहण प्रारम्भ होने से 12 घण्टे पूर्व ग्रहण सूतक प्रारम्भ जानना चाहिए। भारत में यह ग्रहण दृश्य न होने से ग्रहण का सूतक नहीं होगा।

4- भारत में दृश्य ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्रग्रहण (03 मार्च 2026 ई.)- यह चन्द्रग्रहण फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा, मंगलवार दिनांक 03 सितम्बर 2026 को भारत में ग्रस्तोदित दिखाई देगा। साथ ही पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इराक, ईरान आदि पश्चिम एशिया के देशों को छोड़कर समस्त एशिया, आस्ट्रेलिया, अंटार्कटिका, अमेरिका, रूस आदि में भारतीय समयानुसार 15 बजकर 20 मिनट से 18 बजकर 47 मिनट तक दिखाई देगा। दिल्ली में ग्रहण का विवरण इस प्रकार है-

ग्रस्तोदित खण्डग्रासकाल	**– 18:21**
मोक्षकाल	**– 18:47**

इस ग्रहण का सूतक 03 मार्च 2026 को प्रातः 12 बजकर 21 मिनट से प्रारम्भ होगा। सूतककाल में शिशुओं, गर्भवती महिलाओं, वृद्धों तथा निःशक्त जनों को छोड़कर अन्य को भोजनादि नहीं करना चाहिए।

यथा –

सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं यामचतुष्टयम्।
चन्द्रग्रहे तु यामास्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना॥

ग्रहण समय में स्नान, दान, जप इत्यादि का अत्यधिक महत्त्व धर्मशास्त्र में वर्णित है। इस चन्द्रग्रहण का स्पर्शादि सिंह राशि व पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में हैं। अतः इन राशि व नक्षत्र के जातकों के लिए यह ग्रहण विशेष कष्टकारी रहेगा। बृहत्संहिता के अनुसार सिंह राशि में चन्द्रग्रहण का फल इस प्रकार से है-

सिंहे पुलिन्दगणमेकलसत्त्वयुक्तान् राजोपमान्नरपतीन् वनगोचरांश्च।

- बृ.सं.राहुचार. श्लोक -39

अर्थात् पुलिन्दगण व मेकल जाति के मनुष्यों, बलशाली प्राणियों, राजा के समान प्रभुत्ववाले एवं राजाओं तथा वन में भ्रमण करने वाले मनुष्यों के लिए सिंह राशि में ग्रहण अत्यधिक कष्टप्रद होता है। इसी प्रकार फाल्गुन मास की पूर्णिमा में होने वाले चन्द्रग्रहण के फल के विषय में आचार्य वराहमिहिर का कथन है-

पीडाकरं फाल्गुनमासि पर्व वङ्गाश्मकावन्तिकमेकलानाम्।
नृत्यज्ञसस्यप्रवराङ्गनानां धनुष्करक्षत्रतपस्विनाञ्च॥

- बृ.सं.राहु.श्लोक -73

अर्थात् बंगाल, अश्मक, अवन्ति, देशों के निवासियों के लिए फाल्गुन मास का ग्रहण कष्टप्रद होता है। इसी प्रकार नर्तक-नर्तकियों व नृत्यकला विशेषज्ञों, सस्य (धान्य), श्रेष्ठ महिलाओं, धनुषादि अस्त्र-शस्त्र निर्माता शिल्पकारों, क्षत्रियों तथा तपस्वियों के लिए भी यह अशुभ है।

सिंह राशि में ग्रहण होने के कारण सभी राशियों के जातकों के लिए इस चन्द्रग्रहण का शुभाशुभ फल निम्नलिखित प्रकार से है-

मेष	-	**सन्ततिकष्ट, चिन्ता, अपव्यय एवं व्यय**
वृष	-	**कष्ट व अपमान**
मिथुन	-	**कार्यसिद्धि व धनप्राप्ति**
कर्क	-	**धनहानि व पारिवारिक कलह**
सिंह	-	**चोटभय एवं कष्ट**
कन्या	-	**धन का अपव्यय एवं वाणिज्य हानि**
तुला	-	**धनलाभ एवं कार्यसिद्धि**
वृश्चिक	-	**धनहानि, शारीरिक एवं पारिवारिक सुख**
धनु	-	**रोग, अपमान व व्ययाधिक्य**
मकर	-	**चिन्ता व कष्ट**
कुम्भ	-	**स्त्री या पति कष्ट व अपमान**
मीन	–	**कार्यसिद्धि व सुख**

अनिष्ट फल के शमनोपाय के विषय में कहा गया है-

सुवर्णं निर्मितं नागं सतिलं कांस्य च भोजनम्।
सदक्षिणं सवस्त्रञ्च श्रोत्रियाय निवेदयेत्॥
सौवर्णं रजतं वापि बिम्बं कृत्वा शक्तितः।
उपरोगोद्भवक्लेशच्छिदे विप्राय कल्पयेत्॥

अर्थात् सोने से निर्मित नाग, तिलों से परिपूर्ण कांस्यपात्र, दक्षिणा व वस्त्र सहित भोजन श्रोत्रिय ब्राह्मण को श्रद्धापूर्वक निवेदित करना चाहिए। इसी प्रकार सामर्थ्य के अनुरूप सोने अथवा चाँदी से बिम्ब (सूर्यग्रहण में सूर्य व चन्द्रग्रहण में चन्द्र की प्रतिमा) निर्मित कर ग्रहण से उत्पन्न क्लेश के प्रशमन के लिए ब्राह्मण को दान करना चाहिए।

ग्रहणे स्नानमाहात्म्यम् -

गंगास्नानं तु कुर्वीत ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥
महानदीषु चान्यासु स्नानं कुर्याद्यथाविधि ॥
प्रयागे देविका रेवा संनिहत्या च वारणम् ।
सरस्वती चन्द्रभागा कौशिका तापिका तथा ।
सिन्धुर्गण्डकिका चैव सरयूः कार्तिकादितः ॥
इन्दोर्लक्षगुणं पुण्यं रवेर्दशगुणं ततः ॥
गंगातोये तु संप्राप्ते इन्दोः कोटी रवेर्दश ।
गवां कोटिसहस्रस्य यत्फलं लभते नरः ॥
तत्फलं लभते मर्त्यो ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥
वापीकूप-तडागेषु गिरिप्रस्रवणेषु च ।
नद्यां नदे देवखाते सरसीषूद्धृताम्बुनि ॥
उष्णोदकेन वा स्नायाद्ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 चैत्रशुक्ल पक्ष (दिनांक 30 मार्च से 12 अप्रैल 2025 ई. तक)

कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्तऋतु, केतकी अहर्गण- 5107, अयनांश 24/11/33

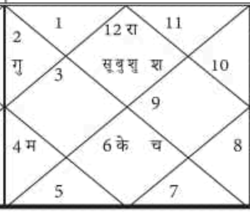
तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	रवि	16|28	12:52	रेवती	25|52	16:38	ऐन्द्र	29| 8	बव	16|28	6:17	18:33	30|41	25:37	मेष 16|38	17	30	पञ्चक समाप्ति16:38, नववर्षारम्भ, वि.सं. 2082 प्रारम्भ, A
2 3	सोम	07|21 58|48	09:12 29:47	अश्विनी	18|41	13:44	वैधृति	18|43	कौलव	7|21	6:16	18:34	30|45	25:19	मेष	18	31	सिन्धारा, झूलेलालजयन्ती, गणगौरी तृतीया, B
4	मंगल	50|06	26:17	भरणी	12|09	11:06	विष्कुम्भ प्रीति	08|53 59|47	वणिज	24|27	6:15	18:35	30|50	25:0	वृष 16|32	19	1अप्रै	भद्रा 16:02 से 26:17 तक, विनायकचतुर्थी, C
5	बुध	43|08	23:29	कृत्तिका	06|29	08:49	आयुष्मान	50|28	बव	16|37	6:13	18:35	30|54	24:42	वृष	20	2	श्रीपञ्चमी, श्वेतवाराहकल्पादि आरम्भ, रामराज्यमहोत्सव
6	गुरु	37|43	21:18	रोहिणी मृगशिरा	02|01 59|10	07:01 29:52	सौभाग्य	43|26	कौलव	10|26	6:12	18:36	30|58	24:23	मिथुन 18|26	21	3	स्कन्दषष्ठी, सूर्यषष्ठी व्रत (बिहार), कालरात्रि सप्तमी पूजा,D
7	शुक्र	34|11	19:52	आर्द्रा	56|11	28:40	शोभन	37|59	गर	5|57	6:11	18:36	31| 2	24:5	मिथुन	22	4	भद्रा 19:52 से, त्रिदिवसीय दुर्गापूजारम्भ, महासप्तमी,E
8	शनि	32|19	19: 06	पुनर्वसु	56|39	28:50	अतिगण्ड	33|52	विष्टि	3|15	6:10	18:37	31| 6	23:47	कर्क 26|47	23	5	भद्रा 7:29 तक, दुर्गाष्टमी, भवानीयात्रा,अशोकाष्टमी,
9	रवि	32|21	19: 05	पुष्य	59|02	29:46	सुकर्मा	31|16	बालव	2|20	6: 9	18:37	31|11	23:30	कर्क	24	6	श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त, नवमीहोमादि, F
10	सोम	34|02	19:45	आश्लेषा	60|00	-:-	धृति	29|56	तैतिल	3|11	6: 8	18:38	31|15	23:12	कर्क	25	7	नवरात्रव्रतपारराज, धर्मराजदशमी, देवीविसर्जन, G
11	मंगल	37|21	21: 03	आश्लेषा	04|35	07:57	शूल	29|52	वणिज	5|41	6: 7	18:38	31|19	22:55	सिंह 07|57	26	8	भद्रा 8:24 से 21:03 तक, कामदा एकादशी व्रत H
12	बुध	41|44	22:47	मघा	09|44	9:59	गण्ड	30|38	बव	9|33	6: 5	18:39	31|23	22:39	सिंह	27	9	वामन द्वादशी, अनन्त पूजा, मदन द्वादशी, दमनकोत्सव
13	गुरु	47|04	24:54	पू.फा.	15|54	12:26	वृद्धि	32|08	कौलव	14|24	6: 4	18:39	31|27	22:22	कन्या 19|07	28	10	अनङ्ग त्रयोदशी, प्रदोषव्रत, श्री महावीर जयन्ती(जैन)
14	शुक्र	53|03	27:17	उ.फा.	22|49	15:11	ध्रुव	34|09	गर	20|4	6: 3	18:40	31|31	22:6	कन्या	29	11	भद्रा 27:17 से, शैवचतुर्दशी, शिवदमनोत्सव, I
15	शनि	59|16	29:45	हस्त	30|07	18: 5	व्याघात	36|24	विष्टि	26|9	6: 2	18:41	31|36	21:50	कन्या	30	12	भद्रा 16:31 तक, पूर्णिमा व्रत, सत्यनारायण व्रत, J

A कल्पादि, वसन्त नवरात्रव्रत आरम्भ, तैलाभ्यंग, घटस्थापन, गुडीपडवा, रामायणनवाह्नपारायणप्रारम्भ, चन्द्रदर्शन B स्वायम्भुव मन्वादि, शिवगौरीदोलोत्सव, सौभाग्यगौरीव्रत, सौभाग्यशयनी तृतीया, मत्स्य जयन्ती, ईद उल फितर (मुस्लिम) C दमनक चतुर्थी, उत्कल दिवस D यमुनाछठ E महानिशापूजा F अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रारम्भ, अन्नपूर्णा पूजा मेला मनसादेवी प्रारम्भ, औलीजैन प्रारम्भ F राजराजेश्वरी मेला, सिद्धिदात्री नवमी, रामायण नवाह्न समाप्त, तारा जयन्ती G विश्व स्वास्थ्य दिवस H (समस्त), विष्णुदोलोत्सव I नृसिंह दोलोत्सव, हाटकेश्वर मेला (गुजरात) J हनुमान जयन्ती (दक्षिणभारत), वैशाख स्नान प्रारम्भ, सर्वदेवदमनोत्सव, औलीजैन समाप्त, मन्वादि 15, सिद्धाचल यात्रा। **वर्षादिकृत्य** - परिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः। सुपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः ॥ मरीचिर्लवणं हिंगुजीरकेण च संयुतम्। अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद् रोगशान्तये॥ **रामनवमी** - अशोककुसुमैर्युक्तमर्घ्यं दद्याद्विचक्षणः। दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च॥ परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः॥

चैत्र शुक्ल अष्टमी शनिवार **औदयिक स्पष्टग्रह** दि. 05/04/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	11	02	03	11	01	11	11	11	05
अंश	21	20	00	02	22	01	00	02	02
कला	16	28	49	53	18	38	39	17	17
विक.	49	32	16	26	59	28	35	29	29
गति	59	817	20	व15	09	व20	07	व3	व3
	06	03	48	54	41	34	8	10	10





चैत्र शुक्ल पूर्णिमा शनिवार **औदयिक स्पष्टग्रह** दि. 12/04/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	11	05	03	11	01	11	11	11	05
अंश	28	17	03	03	23	01	01	01	01
कला	09	20	23	54	29	19	29	55	55
विक.	17	58	27	56	49	37	38	14	14
गति	58	715	22	20	10	व03	06	व03	व03
	51	10	56	15	25	12	53	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 वैशाख कृष्णपक्ष (दिनांक 13 अप्रैल से 27 अप्रैल 2025 ई. तक)

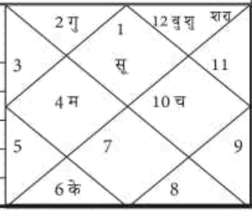
कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त/ग्रीष्म ऋतु, केतकी अहर्गण - 5121, अयनांश -24/11/35

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	रवि	60|00	-:-	चित्रा	37|45	21:7	हर्षण	38|54	बालव	32|35	6:1	18:41	31|40	21:35	तुला 07|36	1	13	प्रपाकार्य, घटदान, तुलसीदल से विष्णु पूजा, A
1	सोम	05|55	08:22	स्वाति	45|22	24:9	वज्र	41|22	कौलव	5|55	6:0	18:42	31|44	21:20	तुला	2	14	घटदान, तुलसीदल से विष्णुपूजा, सङ्क्रान्ति पुण्यकाल B
2	मंगल	12|12	10:52	विशाखा	52|56	27:9	सिद्धि	43|46	गर	12|12	5:59	18:42	31|48	21:5	वृश्चिक 20|24	3	15	भद्रा 24:04 से, हिमाचल दिवस
3	बुध	18|16	13:16	अनुराधा	59|49	29:53	व्यतिपात	45|56	विष्टि	18|16	5:58	18:43	31|52	20:51	वृश्चिक	4	16	भद्रा 13:16 तक, संकट चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22:00
4	गुरु	23|43	15:26	ज्येष्ठा	60|00	-:-	वरीयान	47|30	बालव	23|43	5:57	18:43	31|56	20:37	वृश्चिक	5	17	अनुसूया जयन्ती
5	शुक्र	28|25	17:18	ज्येष्ठा	6| 7	8:23	परिघ	48|26	तैतिल	28|25	5:56	18:44	32| 0	20:24	धनु 08|23	6	18	कोकिला षष्ठी, शर्करा षष्ठी, गुड फ्राई डे (ईसाई)
6	शनि	31|44	18:37	मूल	11|16	10:25	शिव	48| 9	वणिक	0|4	5:55	18:45	32| 4	20:11	धनु	7	19	भद्रा 18:37 से, सायन सूर्य वृष में 25:42, C
7	रवि	33|36	19:21	पू.षा.	15| 6	11:56	सिद्ध	46|44	विष्टि	2|40	5:54	18:45	32| 8	19:58	मकर 18|08	8	20	भद्रा 6:59 तक, गुरु-अर्जुनदेव जयन्ती, D
8	सोम	33|35	19:19	उ.षा.	17|12	12:46	साध्य	43|44	बालव	3|36	5:53	18:46	32|12	19:46	मकर	9	21	कालाष्टमी, शीतलाष्टमी व्रत, बासोडा,
9	मंगल	31|38	18:31	श्रवण	17|29	12:52	शुभ	39|11	तैतिल	2|37	5:52	18:46	32|15	19:35	कुम्भ 24|33	10	22	पञ्चक आरम्भ 24:33, विश्व पृथिवी दिवस
10	बुध	27|50	16:59	धनिष्ठा	15|57	12:14	शुक्ल	33| 9	विष्टि	27|50	5:51	18:47	32|19	19:24	कुम्भ	11	23	भद्रा 5:45 से 16:59 तक,
11	गुरु	22|12	14:43	शतभिषा	12|37	10:53	ब्रह्म	25|38	बालव	22|12	5:50	18:47	32|23	19:13	मीन 27|25	12	24	वरूथिनी एकादशी व्रत (समस्त), वल्लभाचार्य जयन्ती
12	शुक्र	15|05	11:51	पू.भा.	7|46	8:56	ऐन्द्र	16|56	तैतिल	15|5	5:49	18:48	32|27	19:3	मीन	13	25	प्रदोषव्रत
13 14	शनि	06|46 53|43	08:31 28:53	उ.भा. रेवती	01|38 54|42	06:28 27:41	वैधृति विष्कुम्भ	08|31 57|01	वणिक	6|46	5:48	18:49	32|31	18:54	मेष 27|41	14	26	पञ्चक समाप्त 27:41, भद्रा 08:31 से 18:42 तक, E
30	रवि	48|41	25:16	अश्विनी	47|41	24:52	प्रीति	46|48	चतुष्पाद	23|12	5:47	18:49	32|34	18:45	मेष	15	27	श्राद्धादि अमावस्या, शिवसन्निधि स्नान, मेलापिंजोर F

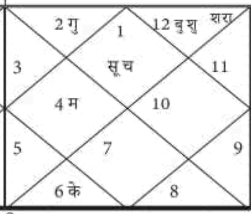
A सूर्य मेष में 27:12 बजे, जलियावाला बाग शहीदी दिवस, वैशाखी, सौर वैशाख प्रारम्भ, B सूर्योदय से मध्याह्न तक, आर्यभट जयन्ती,**अम्बेडकर जयन्ती, विखौती मेला (उत्तराखण्ड),** C शर्करा सप्तमी, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ D शीतला सप्तमी, ईस्टर सण्डे (ईसाई), E मासशिवरात्रिव्रत, वराहजयन्ती, F (हरियाणा), कूर्मकल्पादि, **वैशाखे कर्तव्यविचार** - तीर्थे चानुदिनं स्नानं तिलैश्च पितृतर्पणम्। दानं धर्मघटादीनां मधुसूदनपूजनम्। माधवे मासि कुर्वीत मधु सूदनतुष्टिदम् ॥ **वैशाखे त्याज्यवस्तूनि**- कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भाजनमैथुने ॥ वैशाखे दानमाहात्म्यम् ददाति यो हि मेषादी सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ **वैशाखे स्नानप्रार्थना** - प्रातः सनियमः स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदनः। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात् ॥ निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे नाथ फलदो भव पापहन्निति ॥

वैशाख कृष्ण अष्टमी सोमवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 21/04/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	00	09	03	11	01	11	11	11	05
अंश	06	06	07	09	25	01	02	01	01
कला	57	19	01	32	07	33	29	26	26
विक.	15	22	41	44	49	06	03	39	39
गति	58	769	25	54	11	16	06	व03	व03
	35	09	17	53	13	42	33	10	10



वैशाख कृष्ण अमावस्या रविवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 27/04/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	0	0	03	11	01	11	11	11	05
अंश	12	01	09	16	26	03	03	01	01
कला	37	20	37	16	16	51	07	07	07
विक.	46	13	52	39	56	26	28	35	35
गति	58	905	26	71	11	27	06	व03	व03
	21	31	35	14	43	15	17	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 वैशाख शुक्लपक्ष (दिनांक 28 अप्रैल से 12 मई 2025 ई. तक)

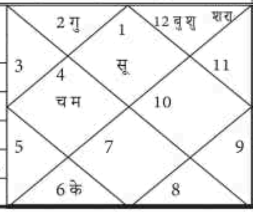
कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु, केतकी अहर्गण - 5136, अयनांश -24/11/37

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	सोम	38|37	21:14	भरणी	39|41	21:39	आयुष्मान	35|42	किस्तुघ्न	13|39	5:46	18:50	32|38	18:36	वृष 26|55	16	28	घटादि दान,
2	मंगल	29|17	17:28	कृत्तिका	32|22	18:43	सौभाग्य	25|13	बालव	3|57	5:46	18:50	32|42	18:28	वृष	17	29	चन्द्रदर्शन, परशुरामजयन्ती,
3	बुध	20|59	14: 08	रोहिणी	26| 6	16:11	शोभन	15|35	गर	20|59	5:45	18:51	32|45	18:21	मिथुन 27|11	18	30	भद्रा 24:44 से, अक्षयतृतीया, त्रेतायुगादि, A
4	गुरु	13|59	11:20	मृगशिरा	21|10	14:12	अतिगण्ड सुकर्मा	7| 2 59|51	विष्टि	13|59	5:44	18:52	32|49	18:14	मिथुन	19	1मई	भद्रा 11:28 तक, विनायकचतुर्थी, नागचतुर्थी,B
5	शुक्र	08|43	09:12	आर्द्रा	18| 1	12:56	धृति	52|27	बालव	8|43	5:43	18:52	32|53	18:8	मिथुन	20	2	आदिगुरु शंकराचार्य जयन्ती, सूरदास जयन्ती
6	शनि	05|19	07:50	पुनर्वसु	16|47	12:25	शूल	48|28	तैतिल	5|19	5:42	18:53	32|56	18:3	कर्क 06|33	21	3	गंगोत्पत्ति, श्री गंगा सप्तमी, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, C
7	रवि	04|04	07:19	पुष्य	17|42	12:46	गण्ड	46|19	वणिज	4|4	5:41	18:54	33| 0	17:58	कर्क	22	4	भद्रा 07:19 से 19:34 तक, भानुसप्तमी, D
8	सोम	04|48	07:36	आश्लेषा	20|31	13:53	वृद्धि	45|36	बव	4|48	5:41	18:54	33| 3	17:53	सिंह 13|53	23	5	दुर्गाष्टमी, चण्डिकादेवी पूजा, अपराजितादेवी पूजा, E
9	मंगल	07|28	08:39	मघा	25|11	15:45	ध्रुव	46|18	कौलव	7|28	5:40	18:55	33| 7	17:49	सिंह	24	6	
10	बुध	11|45	10:21	पू.फा.	31|20	18:11	व्याघात	48| 3	गर	11|45	5:39	18:55	33|10	17:46	कन्या 24|54	25	7	भद्रा 23:26 से, रवीन्द्रनाथठाकुर जयन्ती
11	गुरु	17|12	12:31	उ.फा.	38|30	21: 3	हर्षण	50|27	विष्टि	17|12	5:38	18:56	33|13	17:43	कन्या	26	8	भद्रा 12:31 तक, मोहिनी एकादशीव्रत (समस्त)
12	शुक्र	23|24	15: 00	हस्त	46|17	24: 9	वज्र	53|15	बालव	23|24	5:38	18:57	33|16	17:41	कन्या	27	9	प्रदोषव्रत, मधुसूदनद्वादशी, रुक्मिणीद्वादशी(बंगाल),F
13	शनि	29|46	17:32	चित्रा	54| 4	27:15	सिद्धि	55|56	तैतिल	29|46	5:37	18:57	33|20	17:39	तुला 13|42	28	10	
14	रवि	36|10	20: 05	स्वाति	60|00	-:-	व्यतिपात	58|36	गर	2|58	5:36	18:58	33|23	17:38	तुला	29	11	भद्रा 20:05 से, नृसिंहजयन्ती, नृसिंह चतुर्दशी, G
15	सोम	42|13	22:29	स्वाति	01|41	6:16	वरीयान	60|00	विष्टि	9|11	5:36	18:58	33|26	17:37	वृश्चिक 26|24	30	12	भद्रा 9:17 तक, पूर्णिमाव्रत, महावैशाखी, H

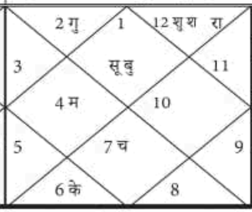
A मन्वादि, कल्पादि, मातंगी जयन्ती, बगलामुखी जयन्ती, लक्ष्मीनारायण पूजा, गौरीपूजा, समुद्रस्नान, सत्तुभोजन, काशी में त्रिलोचन यात्रा, बदरी-केदार यात्रा प्रारम्भ, रोहिणीव्रत, B विश्वश्रम दिवस, श्रमिक दिवस C चन्दन षष्ठी D विश्व हास्य दिवस E सीता नवमी, जानकी जयन्ती (मध्याह्न) F परशुरामद्वादशी, G छिन्नमस्तका जयन्ती, विश्व मातृदिवस H सत्यनारायणव्रत, बुद्ध जयन्ती, बुद्धपूर्णिमा, नारद जयन्ती, वैशाखपूर्णिमा, महावैशाखी, कूर्म जयन्ती, सम्पद्गौरी व्रत, वैशाखस्नान समाप्ति। **गंगोत्पत्तिः** - वैशाखे शुक्लसप्तम्यां जह्नुना जाह्नवी पुरा। क्रोधात्पीता पुनस्त्यक्त्वा कर्णरन्ध्रात्तु दक्षिणात्। तां तत्र पूजयेद्देवीं गंगां गगनमेखलाम्॥ **नृसिंह जयन्ती**- वैशाखस्य चतुर्दश्यां सोमवारेऽनिलर्क्षके, अवतारो नृसिंहस्य प्रदोषस्य समये, द्विजाः। स्वातीनक्षत्रयोगे च शनिवारे तु महद्व्रतम्। सिद्धियोगस्य संयोगे वणिजे करणे तथा॥

वैशाख शुक्ल अष्टमी सोमवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 05/05/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	00	03	03	11	01	11	11	11	05
अंश	20	25	13	26	27	08	03	00	00
कला	33	36	17	24	53	20	55	42	42
विक.	31	22	24	11	05	34	54	09	09
गति	58	770	28	88	12	38	05	व03	व03
	07	45	05	57	15	06	51	10	10



वैशाख शुक्ल पूर्णिमा सोमवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 12/05/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	00	06	03	00	01	11	11	11	05
अंश	27	19	16	08	29	13	04	00	00
कला	19	39	38	59	20	16	45	19	19
विक.	35	52	45	53	27	16	20	55	55
गति	57	711	29	103	12	45	05	व03	व03
	58	16	16	38	40	08	27	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 ज्येष्ठ कृष्णपक्ष (दिनांक 13 मई से 27 मई 2025 ई. तक)

कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु, केतकी अहर्गण - 5151, अयनांश -24/11/39

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	मंगल	47|42	24:40	विशाखा	8|49	9: 7	वरीयान	00|36	बालव	14|58	5:35	18:59	33|29	17:37	वृश्चिक	31	13	
2	बुध	52|41	26:39	अनुराधा	15|29	11:46	परिघ	02|21	तैतिल	20|11	5:35	19:00	33|32	17:38	वृश्चिक	1	14	सूर्य वृष में 24:05 बजे, सङ्क्रान्ति का पुण्यकाल A
3	गुरु	56|51	28:19	ज्येष्ठा	21|29	14:10	शिव	03|35	वणिज	24|46	5:34	19:00	33|35	17:39	धनु 14|10	2	15	भद्रा 15:19 से 28:19 तक, B
4	शुक्र	59|19	29:17	मूल	26|42	16:15	सिद्ध	04|13	बव	28|05	5:34	19:01	33|38	17:41	धनु	3	16	संकटचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22:39, C
5	शनि	60|00	-:-	पू.षा.	30|54	17:55	साध्य	04|04	कौलव	30|17	5:33	19:01	33|41	17:43	मकर 24|13	4	17	श्रीक्षेत्र पुरी में भौरी
5	रवि	01|15	06:02	उ.षा.	33|57	19: 8	शुभ	3| 2	तैतिल	01|15	5:32	19:02	33|44	17:45	मकर	5	18	
6	सोम	01|50	06:16	श्रवण	35|35	19:46	शुक्ल ब्रह्म	00|36 58|50	वणिज	01|50	5:32	19:03	33|46	17:49	मकर	6	19	भद्रा 06:16 से 18:05 तक,
7 8	मंगल	00|58 58|36	05:54 28:57	धनिष्ठा	35|44	19:49	ऐन्द्र	54|24	बव	00|58	5:31	19:03	33|49	17:52	कुम्भ 07|47	7	20	पञ्चक आरम्भः 07:47, कालाष्टमी, C
9	बुध	56|8	27:58	शतभिषा	34|19	19:15	वैधृति	48|40	तैतिल	27|22	5:31	19:04	33|52	17:57	कुम्भ	8	21	
10	गुरु	50|34	25:44	पू.भा.	31|19	18: 3	विष्कुम्भ	41|37	वणिज	23|21	5:31	19:04	33|54	18:1	मीन 12|21	9	22	भद्रा 14:15 से 25:44 तक, D
11	शुक्र	43|36	22:57	उ.भा.	26|54	16:16	प्रीति	33|25	बव	17|5	5:30	19:05	33|57	18:6	मीन	10	23	अपरा एकादशी व्रत (समस्त), भद्रकाली एकाशी
12	शनि	35|22	19:39	रेवती	21|10	13:58	आयुष्मान	24|11	कौलव	9|29	5:30	19:06	33|59	18:12	मेष 13|58	11	24	पञ्चकसमाप्तिः 13:58, शनिप्रदोषः, E
13	रवि	26|22	16: 03	अश्विनी	14|33	11:19	सौभाग्य	14|16	वणिज	0|52	5:29	19:06	34| 1	18:18	मेष	12	25	भद्रा 16:03 से 26:10 तक, मासशिवरात्रि,
14	सोम	17|1	12:18	भरणी	07|26	08:28	शोभन अतिगण्ड	04|00 53|43	शकुनि	17|1	5:29	19:07	34| 4	18:24	वृष 13|45	13	26	सावित्रीचतुर्दशी, वटसावित्रीव्रत (अमा पक्ष),
30	मंगल	07|46	08:35	कृत्तिका रोहिणी	00|17 53| 8	05:35 26:44	सुकर्मा	43|23	नाग	7|46	5:29	19:07	34| 6	18:31	वृष	14	27	ज्येष्ठी अमावस्या, भावुका-अमावस्या, F

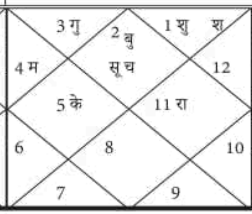
A मध्याह्न से सूर्यास्त तक। B अन्ताराष्ट्रिय परिवार दिवस मां आनन्दमयी जयन्ती C चण्डिका देवी का पूजा, शीतलाष्टमी, त्रिलोचनाष्टमी, सायन सूर्य मिथुन में 24:43 D विश्व जैव विविधता दिवस, E वटसावित्रीव्रतारम्भ (अमापक्ष), F शनैश्चर जयन्ती, भौमवती अमावस्या, **अमायां वटसावित्रीव्रतम्** - अमायां च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत्। **जन्ममासे विचारणीयः** - यो जन्ममासे क्षुरकर्म यात्रां कर्णस्य वेधं कुरुते हि मोहात्। मूढः स रोगी धनपुत्रनाशं प्राप्नोति गूढं निधनं तदाशु॥ **भद्रकाली प्रार्थना** - जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते।

ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी मंगलवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 20/05/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	01	09	03	00	02	11	11	10	04
अंश	05	28	20	23	01	19	05	29	29
कला	02	50	28	14	03	44	16	54	54
विक.	10	16	01	55	17	57	32	29	29
गति	57	788	30	119	13	51	04	व03	व03
	44	38	25	13	00	03	55	10	10



ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या मंगलवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 27/05/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	01	01	03	01	02	11	11	10	04
अंश	11	09	24	07	02	25	05	29	29
कला	45	55	14	03	35	58	48	32	32
विक.	46	38	26	39	26	34	52	14	14
गति	57	908	13	129	13	55	04	व03	व03
	37	17	18	40	17	01	23	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 ज्येष्ठ शुक्लपक्ष (दिनांक 27 मई से 11 जून 2025 ई. तक)

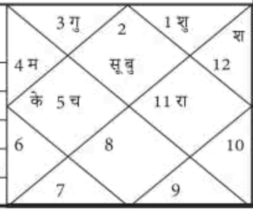
कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु, केतकी अहर्गण - 5197, अयनांश - 24/11/41

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	मंगल	59|06	29:07	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	14	27	प्रतिपदा क्षय, करवीरव्रत, गंगा दशहरा व्रतारम्भ,M
2	बुध	50|21	25:37	मृगशिरा	46|55	24:15	धृति	33|52	बालव	24|43	5:28	19:08	34| 8	18:39	मिथुन 13|29	15	28	चन्द्रदर्शन,
3	गुरु	43|36	22:55	आर्द्रा	42| 3	22:18	शूल	25|24	तैतिल	16|58	5:28	19:08	34|10	18:46	मिथुन	16	29	रम्भातृतीया व्रत, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती A
4	शुक्र	38|48	20:59	पुनर्वसु	39| 7	21: 7	गण्ड	18|25	वणिज	11|12	5:28	19:09	34|12	18:55	कर्क 15|25	17	30	भद्रा 9:57 से 20:59 तक, गणेश चतुर्थी, B
5	शनि	36|0	19:52	पुष्य	38| 8	20:43	वृद्धि	12|58	बव	7|24	5:28	19:09	34|14	19:3	कर्क	18	31	ताडकेश्वर महादेव पूजन, महादेव विवाह (उडीसा), C
6	रवि	35|25	19:38	आश्लेषा	39|21	21:12	ध्रुव	9|14	कौलव	5|43	5:28	19:10	34|15	19:12	सिंह 21|12	19	1जून	स्कन्दषष्ठी, अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, D
7	सोम	36|55	20:14	मघा	42|38	22:31	व्याघात	7| 9	गर	6|10	5:27	19:10	34|17	19:21	सिंह	20	2	भद्रा 20:14 से,
8	मंगल	40|22	21:36	पू.फा.	47|47	24:34	हर्षण	6|40	विष्टि	8|39	5:27	19:11	34|19	19:31	सिंह	21	3	भद्रा 8:55 तक, दुर्गाष्टमी, शुक्लादेवी पूजा, E
9	बुध	45|29	23:39	उ.फा.	54|33	27:16	वज्र	7|34	बालव	12|56	5:27	19:11	34|20	19:40	कन्या 07|14	22	4	नवमी का उपवास कर शुक्लादेवीपूजा, F
10	गुरु	51|35	26: 5	हस्त	60|00	-:-	सिद्धि	9|27	तैतिल	18|32	5:27	19:12	34|22	19:50	कन्या	23	5	श्री गंगा दशहरा, गंगावतरण, G
11	शुक्र	58|15	28:45	हस्त	2|52	6:36	व्यतिपात	11|58	वणिज	24|55	5:27	19:12	34|23	20:1	तुला 20|09	24	6	भद्रा 15:25 से 28:45 तक, निर्जला एकादशीव्रतI
12	शनि	60|00	-:-	चित्रा	10|39	9:43	वरीयान	14|42	बव	31|28	5:27	19:13	34|25	20:11	तुला	25	7	निर्जला एकादशीव्रत (वैष्णव), त्रिविक्रमद्वादशी, J
12	रवि	4|42	7:20	स्वाति	18|13	12:44	परिघ	17|12	बालव	4|42	5:27	19:13	34|26	20:22	तुला	26	8	रविप्रदोषव्रत, त्रिदिवसीय वटसावित्री व्रतारम्भ H
13	सोम	10|30	9:39	विशाखा	25|23	15:36	शिव	19|22	तैतिल	10|30	5:27	19:14	34|27	20:33	वृश्चिक 08|53	27	9	
14	मंगल	15|29	11:38	अनुराधा	31|41	18: 7	सिद्ध	20|51	वणिज	15|29	5:27	19:14	34|28	20:45	वृश्चिक	28	10	भद्रा 11:38 से 22:38 तक, पूर्णिमाव्रत, K
15	बुध	19|36	13:17	ज्येष्ठा	37| 9	20:18	साध्य	21|39	बव	19|36	5:27	19:14	34|29	20:56	धनु 20|18	29	11	ज्येष्ठी पूर्णिमा, कबीरदास जयन्ती, वैवस्वत मन्वादि, L

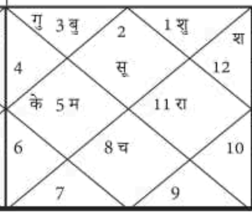
M काशी दशाश्वमेध स्नानारम्भ, A (राजस्थान), विनायक चतुर्थी, गुरु-अर्जुनदेव बलिदान दिवस, C श्रुतिपञ्चमी (जैन), विश्व तम्बाकू निषेध दिवस D आरण्यकगौरीव्रत E ब्रह्माणीदेवी पूजा, शीतलाष्टमी, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीरभवानी (कश्मीर), भौमाष्टमी F सुरकण्डादेवीपूजा G दशाश्वमेध गंगा स्नान समाप्त, बटुकभैरव जयन्ती, विश्व पर्यावरण दिवस I (स्मार्त), भीमसेनी एकादशीव्रत, गायत्री जयन्ती J चम्पकद्वादशी, ईद उल अजहा (मुस्लिम) H (पूर्णिमा पक्ष) K वटसावित्रीपूर्णिमा, सत्यनारायणव्रत, चम्पकचतुर्दशी, L हलपूर्णिमा, वृषभपूजन, स्नानदानादिपूर्णिमा, मन्वादि पूर्णिमा॥ **गङ्गामाहात्म्यम्** -दृष्ट्वा तु हरते पापं स्पृष्ट्वा तु त्रिदिवं नयेत्। प्रसङ्गेनापि या गङ्गा मोक्षदा त्ववगाहिता ॥ यैः पुण्यवाहिनी गङ्गा सकृद्भक्त्यावगाहिता। तेषां कुलानां लक्षन्तु भवात्तारयते शिवा ॥ अनेकजन्मसम्भूतं पापं पुंसां प्रणश्यति ॥

ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी मंगलवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 03/06/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	01	04	03	01	02	00	11	10	04
अंश	18	16	27	23	04	02	06	29	29
कला	28	41	56	24	09	26	17	09	09
विक.	27	41	42	46	08	07	26	59	59
गति	57	751	32	131	13	05	03	व03	व03
	30	07	05	22	28	06	50	10	10



ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा बुधवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 11/06/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	01	07	04	02	02	00	11	10	04
अंश	26	22	02	09	05	10	06	28	28
कला	07	28	17	53	57	33	45	44	44
विक.	43	08	11	26	33	25	04	33	33
गति	57	729	32	118	13	60	03	व03	व03
	23	34	54	46	36	50	08	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 आषाढ़ कृष्णपक्ष (दिनांक 12 जून से 25 जून 2025 ई. तक)

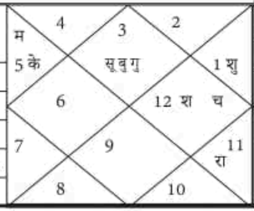
कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण/दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म/वर्षा ऋतु, केतकी अहर्गण - 5181, अयनांश - 24/11/43

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	गुरु	22|43	14:32	मूल	41|39	22: 6	शुभ	21|42	कौलव	22|43	5:27	19:15	34|30	21:8	धनु	30	12	
2	शुक्र	24|57	15:26	पू.षा.	45|17	23:34	शुक्ल	21| 2	गर	24|57	5:27	19:15	34|31	21:20	धनु	31	13	भद्रा 27:40 से,
3	शनि	26|9	15:55	उ.षा.	47|55	24:37	ब्रह्म	19|35	विष्टि	26|9	5:27	19:15	34|31	21:32	मकर 05|50	32	14	भद्रा 15:55 तक, श्रीसङ्कष्टचतुर्थीव्रत,
4	रवि	26|24	16: 1	श्रवण	49|36	25:17	ऐन्द्र	17|22	बालव	26|24	5:27	19:16	34|32	21:44	मकर	1	15	सूर्य मिथुन में 06:41, सङ्क्रान्ति पुण्यकाल B
5	सोम	25|37	15:42	धनिष्ठा	50|15	25:33	वैधृति	14|21	तैतिल	25|37	5:27	19:16	34|32	21:56	कुम्भ 13|25	2	16	पञ्चक का आरम्भः 13:25,
6	मंगल	23|43	14:56	शतभिषा	49|47	25:22	विष्कुम्भ	10|26	वणिज	23|43	5:27	19:16	34|33	22:8	कुम्भ	3	17	भद्रा 14:56 से 26:20 तक,
7	बुध	20|43	13:45	पू.भा.	48|14	24:45	प्रीति आयुष्मान	05|40 59|57	बव	20|43	5:27	19:17	34|33	22:20	मीन 18|54	4	18	कालाष्टमी,
8	गुरु	16|31	12: 4	उ.भा.	45|25	23:38	सौभाग्य	54|17	कौलव	16|31	5:27	19:17	34|33	22:32	मीन	5	19	श्रीशीतलाष्टमी, त्रिलोचन पूजा
9	शुक्र	11|13	9:57	रेवती	41|32	22: 4	शोभन	46|39	गर	11|13	5:27	19:17	34|34	22:45	मेष 22|04	6	20	भद्रा 20:40 से, पञ्चक समाप्त 21:4,
10 11	शनि	04|48 57|36	07:23 28:32	अश्विनी	36|31	20: 4	अतिगण्ड	38| 7	विष्टि	4|48	5:28	19:17	34|34	22:57	मेष	7	21	भद्रा 07:23 तक, योगिनी एकादशीव्रत (स्मार्त), C
12	रवि	50|25	25:38	भरणी	30|48	17:47	सुकर्मा	29| 2	कौलव	24|00	5:28	19:17	34|34	23:9	वृष 23|11	8	22	योगिनी एकादशीव्रत (वैष्णव)
13	सोम	42|2	22:17	कृत्तिका	24|43	15:22	धृति	19|42	गर	16|14	5:28	19:18	34|33	23:21	वृष	9	23	भद्रा 22:17 से, सोमप्रदोषव्रत, मासशिवरात्रि, D
14	मंगल	33|46	18:59	रोहिणी	18|36	12:55	शूल	10|20	विष्टि	7|54	5:28	19:18	34|33	23:33	मिथुन 22|47	10	24	भद्रा 8:38 तक, रोहिणी व्रत
30	बुध	26|12	15:58	मृगशिरा	12|59	10:40	गण्ड वृद्धि	01|22 52|22	नाग	26|12	5:29	19:18	34|33	23:45	मिथुन	11	25	आषाढी अमावस्या, वंशवर्धक अमावस्या

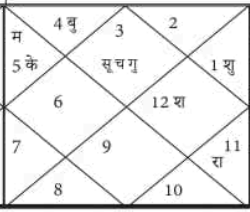
A चन्द्रोदय 22:07 सूर्योदय से मध्याह्न तक , विश्व पितृदिवस C सायन सूर्य कर्क में 08:36, दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रारम्भ, अन्ताराष्ट्रिय योग दिवस D कूर्मजयन्ती। **आषाढे प्रवर्षणविचारः**:- ज्यैष्ठ्यां समतीतायां पूर्वाषाढादिसम्प्रवृष्टेन । शुभमशुभं वा वाच्यं चाम्भसः तज्ज्ञैः ॥ येषु च भेष्वभिवृष्टं भूयस्तेष्वेव वर्षति प्रायः॥ **कादम्बिनीमतेन प्रवर्षणविमर्शः** - पूर्णिमामूलमुल्लंघ्य पूर्वाषाढादिभिः क्रमात्। सप्तविंशतिनक्षत्रैः प्रवर्षणपरीक्षणम्॥ ज्येष्ठ्यां समतीतायां पूर्वाषाढाविवर्षणे। परिमापजलं वृष्टं विजानीयाद्दतुक्रमम्॥ वृष्टौ हस्तविशाले तु कुण्डके पतितं जलम्। मापयेदाढकेनैव पंचाशत्पलमाढकम्। द्रोणमाला प्रस्थसंज्ञा द्रोणमक्षरसंज्ञकम्। जलानां गर्भविज्ञाने माने व्यवहरन्तिहि॥

आषाढ़ कृष्ण अष्टमी गुरुवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 19/06/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	02	11	04	02	02	00	11	10	04
अंश	03	06	06	24	07	18	07	28	28
कला	46	14	43	21	43	50	07	19	19
विक.	13	32	55	38	51	03	00	06	06
गति	57	826	33	99	13	62	02	व03	व03
	14	04	39	50	51	58	25	10	10



आषाढ़ कृष्ण अमावस्या बुधवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 25/06/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	02	02	04	03	02	00	11	10	04
अंश	09	03	10	03	09	25	07	38	38
कला	28	28	07	24	09	12	19	02	02
विक.	47	35	43	25	03	49	31	02	02
गति	57	883	34	83	13	64	01	व03	व03
	13	53	10	50	40	18	50	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 आषाढ़ शुक्लपक्ष (दिनांक 26 जून से 10 जुलाई 2025 ई. तक)

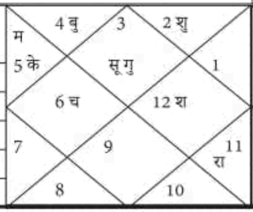
कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु, केतकी अहर्गण- 5195, अयनांश - 24/11/45

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	गुरु	19|39	13:21	आर्द्रा	8|14	8:47	ध्रुव	44|46	बव	19|39	5:29	19:18	34|33	23:57	कर्क 25|44	12	26	गुप्तनवरात्रारम्भ, घटस्थापन, चन्द्रदर्शन,
2	शुक्र	14|27	11:16	पुनर्वसु	4|44	7:23	व्याघात	38|29	कौलव	14|27	5:29	19:18	34|32	24:9	कर्क	13	27	जगन्नाथ रथयात्रा (पुरी), श्रीकृष्णबलराम रथोत्सव, A
3	शनि	10|54	9:51	पुष्य	2|47	6:37	हर्षण	33|42	गर	10|54	5:29	19:18	34|31	24:21	कर्क	14	28	भद्रा 21:31 से, गणेशचतुर्थीव्रत, विनायक चतुर्थी,
4	रवि	9|14	9:11	आश्लेषा	2|41	6:34	वज्र	30|32	विष्टि	9|14	5:30	19:18	34|31	24:32	सिंह 06|34	15	29	भद्रा 09:11 तक,
5	सोम	9|36	9:21	मघा	4|34	7:20	सिद्धि	29| 3	बालव	9|36	5:30	19:18	34|30	24:43	सिंह	16	30	स्कन्दपञ्चमी, कुमारषष्ठी, स्कन्दषष्ठी,
6	मंगल	11|50	10:15	पू.फा.	8|18	8:50	व्यतिपात	28|57	तैतिल	11|50	5:30	19:18	34|29	24:55	कन्या 15|29	17	1जु.	कर्दमषष्ठी (बंगाल), विवस्वतसप्तमी, सूर्यपूजा
7	बुध	15|52	11:52	उ.फा.	13|47	11: 2	वरीयान	30|11	वणिज	15|52	5:31	19:18	34|28	25:5	कन्या	18	2	भद्रा 11:52 से 24:56 तक, शीतलासप्तमी
8	गुरु	21|13	14: 0	हस्त	20|34	13:45	परिघ	32|21	बव	21|13	5:31	19:18	34|27	25:16	तुला 27|16	19	3	अष्टमी व्रत, दुर्गाष्टमी, शीतलाष्टमी,
9	शुक्र	27|24	16:29	चित्रा	28|10	16:48	शिव	35| 3	कौलव	27|24	5:32	19:18	34|26	25:26	तुला	20	4	गुप्तनवरात्र समाप्त, मेलाशरीक भवानी (कश्मीर), C
10	शनि	33|39	19: 0	स्वाति	35|51	19:53	सिद्ध	37|43	तैतिल	0|32	5:32	19:18	34|25	25:37	तुला	21	5	गिरिराज पूजा, रैवत मन्वादि, शाकव्रतारम्भ,
11	रवि	39|36	21:23	विशाखा	43|14	22:50	साध्य	40| 4	वणिज	6|38	5:32	19:18	34|24	25:46	वृश्चिक 06|06	22	6	भद्रा 8:11 से 21:23 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत D
12	सोम	44|40	23:25	अनुराधा	49|46	25:27	शुभ	41|43	बव	12|8	5:33	19:18	34|22	25:56	वृश्चिक	23	7	वासुदेवद्वादशी, विष्णुशयन उत्सव द्वादशी,
13	मंगल	48|23	24:55	ज्येष्ठा	55| 0	27:33	शुक्ल	42|18	कौलव	16|32	5:33	19:18	34|21	26:5	धनु 27|33	24	8	भौमप्रदोष व्रत
14	बुध	51|0	25:58	मूल	59| 9	29:14	ब्रह्म	42| 1	गर	19|42	5:34	19:18	34|19	26:14	धनु	25	9	भद्रा 25:58 से, शिवशयनव्रत, पवित्रारोपण, E
15	गुरु	52|5	26:24	पू.षा.	60|00	-:-	ऐन्द्र	40|33	विष्टि	21|32	5:34	19:17	34|18	26:22	धनु	26	10	भद्रा 14:11 तक, गुरुपूर्णिमा, व्यासपूर्णिमा, F

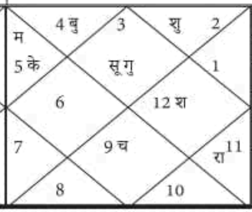
A मनोरथद्वितीया, B महिषासुरमर्दिनी पूजा, ऐन्द्रीदेवीपूजा, खर्चिपूजा (असम), अष्टाह्निक प्रारम्भ (जैन) C मृदलीनवमी, कन्दर्पनवमी, भड्डलीनवमी, D (समस्त), चातुर्मास्य व्रतारम्भ, मौहर्रम (मुस्लिम) E मेला चक्रेश्वरी (जैन) चौमासी चतुर्दशी (जैन) F पूर्णिमा व्रत, कोकिला व्रत, सत्यनारायण व्रत, अन्नादि दान, चाक्षुषमन्वादि, वायुपरीक्षण, चातुर्मास्यारम्भ (संन्यासी), जयापार्वती व्रत, मेला ज्वालामुखी (कश्मीर), अष्टाह्निकपर्व समाप्त (जैन) **चातुर्मास्यव्रतविचारः** - आषाढे तु सिते पक्षे एकादश्यामुपोषितः। चातुर्मास्यव्रतं कुर्याद्यत्किंचिदखिलो नरः॥ आषाढ शुक्लपक्ष के रविवार को हस्त में **पुलिकमूलबन्धनमन्त्रः**- शुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य ॥ एवं कृते सर्पभयं न जायते। चातुर्मास्यव्यतीते तु मुक्तिस्तस्य कराद्भवेदित्यनेन कार्तिकशुक्लद्वादश्यां तस्य करान्मुक्तिः॥

आषाढ़ शुक्ल अष्टमी गुरुवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 03/07/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	02	05	04	03	02	01	11	10	04
अंश	17	19	14	13	10	03	07	27	27
कला	07	12	44	00	58	54	30	34	34
विक.	34	49	09	12	29	27	44	35	35
गति	57	720	34	62	13	65	01	व03	व03
	10	57	50	08	38	49	03	10	10



आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 10/07/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	02	08	04	03	02	01	11	10	04
अंश	23	13	18	18	12	11	07	27	27
कला	48	44	50	46	33	39	35	12	12
विक.	08	07	08	53	41	52	19	19	19
गति	57	753	35	38	13	66	00	व03	व03
	11	00	20	52	32	54	20	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 श्रावण कृष्णपक्ष (दिनांक 11 जुलाई से 24 जुलाई 2025 ई. तक)

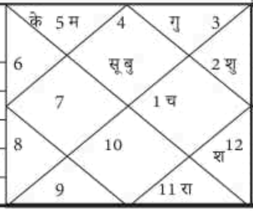
कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु, केतकी अहर्गण- 5210, अयनांश - 24/11/47

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	शुक्र	52|13	26:28	पू.षा.	00|51	5:55	वैधृति	38|20	बालव	22|9	5:35	19:17	34|16	26:30	मकर 12|05	27	11	हिण्डोले प्रारम्भ (ब्रज), श्रावण में शाक वर्जित, A
2	शनि	51|9	26: 3	उ.षा.	2|30	6:35	विष्कुम्भ	35|10	तैतिल	21|41	5:35	19:17	34|14	26:38	मकर	28	12	चातुर्मासद्वितीया, अशून्यशयन व्रत, B
3	रवि	49|15	25:18	श्रवण	3|11	6:52	प्रीति	31|17	वणिज	20|12	5:36	19:17	34|12	26:45	कुम्भ 18|51	29	13	भद्रा 13:40 से 25:18 तक, पञ्चक आरम्भ 18:51
4	सोम	46|36	24:15	धनिष्ठा	3| 3	6:50	आयुष्मान	26|49	बव	17|55	5:36	19:17	34|10	26:52	कुम्भ	30	14	श्रीगणेश संकष्टचतुर्थी व्रत, C
5	मंगल	43|8	22:52	शतभिषा	2| 7	6:28	सौभाग्य	21|41	कौलव	14|52	5:37	19:16	34| 8	26:59	मीन 23|58	31	15	नागपञ्चमी, मनसादेवी पूजन, भौमव्रत, दुर्गायात्रा, D
6	बुध	39|3	21:15	पू.भा. उ.भा.	00|28 58|51	05:48 29:10	शोभन	16| 1	गर	11|6	5:37	19:16	34| 6	27:5	मीन	1	16	भद्रा 21:15 से, सूर्य कर्क में 17:33 बजे, E
7	गुरु	34|14	19:20	रेवती	55|44	27:56	अतिगण्ड	9|46	विष्टि	6|39	5:38	19:16	34| 4	27:10	मेष 27|56	2	17	भद्रा 8:17 तक, पञ्चक समाप्त 27:56 बजे, F
8	शुक्र	28|52	17:11	अश्विनी	52| 7	26:29	सुकर्मा धृति	03|02 55|48	बालव	1|33	5:38	19:15	34| 2	27:15	मेष	3	18	केरपूजा (त्रिपुरा), ऐन्द्रीदेवी पूजन, G
9	शनि	22|52	14:48	भरणी	47|51	24:48	शूल	48|35	तैतिल	22|52	5:39	19:15	34| 0	27:20	मेष	4	19	भद्रा 25:31 से,
10	रवि	16|28	12:15	कृत्तिका	43|14	22:57	गण्ड	40|29	विष्टि	16|28	5:39	19:14	33|57	27:24	वृष 06|20	5	20	भद्रा 12:15 तक,
11	सोम	9|57	9:39	रोहिणी	38|37	21: 7	वृद्धि	32|27	बालव	9|57	5:40	19:14	33|55	27:27	वृष	6	21	श्रावणसोमवारव्रतम्, कामिका एकादशी व्रत (समस्त)
12 13	मंगल	03|30 57|26	07: 5 28:22	मृगशिरा	34| 9	19:20	ध्रुव	24|32	तैतिल	3|30	5:40	19:14	33|52	27:30	मिथुन 08|13	7	22	भद्रा 28:22 से, भौमव्रतम्, दुर्गायात्रा, H
14	बुध	51|22	26:14	आर्द्रा	30|17	17:48	व्याघात	17| 4	विष्टि	24|24	5:41	19:13	33|50	27:33	मिथुन	8	23	भद्रा 15:18 तक, मासशिवरात्रि, I
30	गुरु	46|37	24:21	पुनर्वसु	27|12	16:35	हर्षण	10|15	चतुष्पाद	19|0	5:42	19:13	33|47	27:35	कर्क 10|53	9	24	श्रावण हरियाली अमावस्या, देवसावर्णि मन्वादि, J

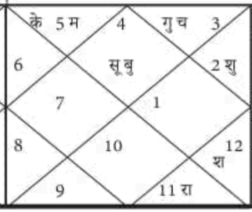
A मैथिल नववर्ष आरम्भ, श्रावण में पार्थिव शिवलिंग पूजन, विश्व जनसंख्या दिवस B पलंग में विष्णु पूजन C श्रावण सोमवार व्रत आरम्भ, चन्द्रोदय 21:55 D गौरी पूजन, हनुमद्दर्शन E सङ्क्रान्ति पुण्यकाल सम्पूर्ण दिन F शीतलासप्तमी, कालाष्टमी, G इन्द्रसावर्णि मन्वादि, H गौरीपूजनम्, हनुमद्दर्शनम्, भौमप्रदोष व्रत, सायन सूर्य सिंह में 19:28 I चन्द्रशेखर आजाद जयन्ती J चितऊ-अमावस्या (उडीसा) **सोमवासरव्रतम्**- सोमवारे व्रतं कार्य श्रावणे वै यथा विधिः। शक्तावुपोषण कार्यमथवा निशि भोजनम् ॥ **कर्कराशौ सूर्ये सति केशकर्तननिषेधः** - कुम्भे कर्कटके वापि कन्यायां कामुकें रवौ। रोमखण्डं गृहस्थस्य पितृन् प्राशयते यमः॥

श्रावण कृष्ण अष्टमी शुक्रवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 18/07/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	03	00	04	03	02	01	11	10	04
अंश	01	01	23	21	14	20	07	26	26
कला	26	08	35	26	21	40	34	40	40
विक.	05	24	44	06	18	23	30	53	53
गति	57	842	35	03	13	68	व00	व03	व03
	14	10	56	28	22	01	26	10	10



श्रावण कृष्ण अमावस्या गुरुवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 24/07/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	03	02	04	03	02	01	11	10	04
अंश	07	26	27	20	15	27	07	26	26
कला	09	55	12	04	40	18	29	17	17
विक.	51	24	55	53	51	58	38	48	48
गति	57	847	36	व25	13	68	व01	व03	व03
	16	55	21	40	10	40	03	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 श्रावण शुक्लपक्ष (दिनांक 25 जुलाई से 09 अगस्त 2025 ई. तक)

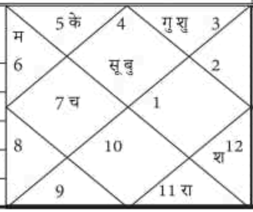
कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु, केतकी अहर्गण- 5224, अयनांश - 24/11/49

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	शुक्र	43|23	23: 3	पुष्य	25|26	15:53	वज्र सिद्धि	04|24 59|37	किस्तुघ्न	15|0	5:42	19:12	33|44	27:36	कर्क	10	25	दोलोत्सव आरम्भ, मेला-छिन्नमस्ता (चिन्तपूर्णी),
2	शनि	41|34	22:21	आश्लेषा	25| 1	15:43	व्यतिपात	54|47	बालव	12|28	5:43	19:12	33|42	27:37	सिंह 15|43	11	26	चन्द्रदर्शन, सिन्धारा व्रत, कारगिल विजय दिवस
3	रवि	41|25	22:17	मघा	26|10	16:11	वरीयान	52|31	तैतिल	11|30	5:43	19:11	33|39	27:38	सिंह	12	27	हरियाली तीज, गौरी पूजा, स्वर्णगौरी व्रत, A
4	सोम	43|6	22:58	पू.फा.	29| 4	17:21	परिघ	51|44	वणिज	12|15	5:44	19:10	33|36	27:37	कन्या 23|48	13	28	भद्रा 10:37 से 22:58 तक, श्रावण सोमवार B
5	मंगल	46|22	24:17	उ.फा.	33|32	19: 9	शिव	52|10	बव	14|44	5:44	19:10	33|33	27:37	कन्या	14	29	नागपञ्चमी, तक्षकपूजा, भित्तिनागपूजा, भौमव्रत, C
6	बुध	51|14	26:15	हस्त	39|33	21:35	सिद्ध	53|48	कौलव	18|48	5:45	19:09	33|30	27:35	कन्या	15	30	श्रीकल्कि जयन्ती, लुण्ठनषष्ठी, वर्णषष्ठी,
7	गुरु	57|5	28:36	चित्रा	46|37	24:25	साध्य	56|10	गर	24|9	5:46	19:09	33|27	27:33	तुला 11|00	16	31	भद्रा 28:36 से, सूर्यपूजा, तुलसीदास जयन्ती, D
8	शुक्र	60|00	-:-	स्वाति	54|27	27:33	शुभ	59| 3	विष्टि	30|22	5:46	19:08	33|24	27:31	तुला	17	1अग.	भद्रा 17:58 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, कौमारीदेवीपूजा, E
8	शनि	3|53	7:20	विशाखा	60|00	-:-	शुक्ल	60|00	बव	3|46	5:47	19:07	33|21	27:28	वृश्चिक 23|48	18	2	
9	रवि	9|47	9:42	विशाखा	1|57	6:34	शुक्ल	01|31	कौलव	9|47	5:47	19:07	33|18	27:24	वृश्चिक	19	3	वेदव्रतारम्भ, दधिव्रत,
10	सोम	14|57	11:47	अनुराधा	8|40	9:16	ब्रह्म	3|18	गर	14|57	5:48	19:06	33|15	27:20	वृश्चिक	20	4	भद्रा 24:33 से, श्रावणसोमवार व्रत,
11	मंगल	18|47	13:19	ज्येष्ठा	14| 9	11:28	ऐन्द्र	4| 6	विष्टि	18|47	5:48	19:05	33|11	27:15	धनु 11|28	21	5	भद्रा 13:19 तक, भौमव्रत, दुर्गायात्रा, गौरीपूजन,F
12	बुध	21|10	14:17	मूल	18|14	13: 7	वैधृति	3|47	बालव	21|10	5:49	19:04	33| 8	27:9	धनु	22	6	प्रदोषव्रत, दामोदरद्वादशी, बुद्धद्वादशी, G
13	गुरु	21|50	14:34	पू.षा.	20|41	14: 6	विष्कुम्भ प्रीति	02|11 59|24	तैतिल	21|50	5:50	19:04	33| 5	27:3	मकर 20|12	23	7	आखेटक त्रयोदशी (उडीसा)
14	शुक्र	21|1	14:15	उ.षा.	21|42	14:31	आयुष्मान	56|38	वणिज	21|1	5:50	19:03	33| 1	26:56	मकर	24	8	भद्रा 14:15 से 25:50 तक, वरलक्ष्मीव्रत, H
15	शनि	18|57	13:26	श्रवण	21|28	14:26	सौभाग्य	51|42	बव	18|57	5:51	19:02	32|58	26:49	कुम्भ 26|09	25	9	पञ्चक आरम्भ 23:09, रक्षाबन्धन, ऋषितर्पण, I

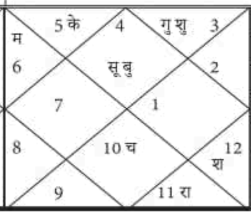
A मधुश्रवा तृतीया (मिथिला- गुजरात), ठकुराईनजयन्ती B व्रत, गणेश चतुर्थीव्रत, विनायक चतुर्थी व्रत, दुर्वागणपति व्रत, वरद चतुर्थी C दुर्गायात्रा, गौरीपूजन, हनुमद्दर्शन D शीतला सप्तमी (सिन्ध), शहीद उधमसिंह शहीदी दिवस E चिन्तपूर्णी व नैनादेवी पूजा (हिमाचल), मेला ज्वाला जी F हनुमद्दर्शन, पवित्रा एकादशी व्रत (समस्त) पुत्रदा एकादशी व्रत (समस्त), G श्री विष्णुपवित्रारोपण, H पूर्णिमा व्रत, सत्यनारायण व्रत, I दोलोत्सव समाप्ति, अमरनाथ यात्रा समाप्त, संस्कृत दिवस, बलभद्र पूजा (उड़ीसा), आवणि अविट्टम (द.भा.) हयग्रीवोत्पत्ति, श्रावणी-उपाकर्म, हिण्डोल समाप्ति। **रक्षासूत्रबन्धनमन्त्र** - येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल मा चल॥

श्रावण शुक्ल अष्टमी शुक्रवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 01/08/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	03	06	05	03	02	02	11	10	04
अंश	14	19	02	14	17	06	07	26	26
कला	48	12	06	44	24	44	17	02	02
विक.	47	29	22	35	22	33	44	21	21
गति	57	713	36	व45	12	69	व01	व03	व03
	23	26	54	49	49	31	49	10	10



श्रावण शुक्ल पूर्णिमा शनिवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 09/08/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	03	09	05	03	02	02	11	10	04
अंश	22	18	07	10	19	16	06	25	25
कला	28	34	04	10	05	04	59	36	36
विक.	34	42	06	45	58	16	50	54	54
गति	57	797	37	व17	12	70	व02	व03	व03
	30	31	25	55	27	15	32	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 भाद्रपद कृष्णपक्ष (दिनांक 10 अगस्त से 23 अगस्त 2025 ई. तक)

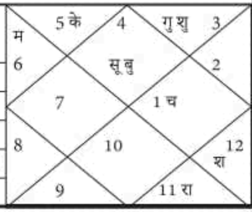
कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा/शरद ऋतु, केतकी अहर्गण- 5240, अयनांश - 24/11/52

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	रवि	15|45	12: 9	धनिष्ठा	20| 5	13:53	शोभन	45|54	कौलव	15|45	5:51	19:01	32|54	26:41	कुम्भ	26	10	पलंग पर विष्णु पूजन, अशून्यशयन व्रत, A
2	सोम	11|43	10:33	शतभिषा	17|53	13: 1	अतिगण्ड	39|34	गर	11|43	5:52	19:00	32|51	26:32	कुम्भ	27	11	भद्रा 21:36 से, विन्ध्याचलदेवी जयन्ती, B
3	मंगल	6|59	8:40	पू.भा.	15| 1	11:53	सुकर्मा	32|45	विष्टि	6|59	5:52	18:59	32|47	26:23	मीन 06|10	28	12	भद्रा 08:40 तक, कज्जलीतृतीया, बूढी तीज, C
4 5	बुध	01|50 56|20	06:37 28:28	उ.भा.	11|44	10:35	धृति	25|42	बालव	1|50	5:53	18:59	32|44	26:14	मीन	29	13	रक्षापञ्चमी (उड़ीसा), बीजाकुरा पञ्चमी,
6	गुरु	50|51	26:14	रेवती	8| 7	9: 8	शूल	18|24	गर	23|35	5:53	18:58	32|40	26:3	मेष 09|08	30	14	भद्रा 26:14 से, पञ्चक समाप्त 09:08, हलषष्ठी,D
7	शुक्र	44|54	23:52	अश्विनी	4|19	7:38	गण्ड	11| 0	विष्टि	17|52	5:54	18:57	32|36	25:53	मेष	31	15	भद्रा 13:03 तक, भारत का 79 वाँ स्वतन्त्रता दिवस, E
8	शनि	39|4	21:32	भरणी कृत्तिका	00|29 56|40	06:06 28:35	वृद्धि ध्रुव	03|37 56|22	बालव	11|59	5:55	18:56	32|33	25:41	वृष 11|43	1	16	श्रीकृष्णाष्टमी व्रत (वैष्णव), श्री महाकाली जयन्ती, F
9	रवि	33|30	19:19	रोहिणी	53| 6	27:10	व्याघात	49| 6	तैतिल	6|17	5:55	18:55	32|29	25:29	वृष	2	17	रोहिणीव्रत, नन्दोत्सव, गोकुलोत्सव, गुग्गानवमी, G
10	सोम	28|17	17:15	मृगशिरा	49|54	25:53	हर्षण	42|16	वणिज	0|54	5:56	18:54	32|25	25:17	मिथुन 14|31	3	18	भद्रा 6:17 से 17:15 तक,
11	मंगल	23|39	15:24	आर्द्रा	47|21	24:53	वज्र	35|59	बालव	23|39	5:56	18:53	32|22	25:4	मिथुन	4	19	अजा एकादशीव्रत (समस्त), H
12	बुध	19|43	13:50	पुनर्वसु	45|34	24:10	सिद्धि	30|17	तैतिल	19|43	5:57	18:52	32|18	24:50	कर्क 18|21	5	20	अघोरद्वादशी, गोवत्सद्वादशी, प्रदोष, I
13	गुरु	16|41	12:38	पुष्य	44|46	23:52	व्यतिपात	25|22	वणिज	16|41	5:57	18:51	32|14	24:36	कर्क	6	21	भद्रा 12:38 से 24:14 तक, मासशिवरात्रि, J
14	शुक्र	14|41	11:51	आश्लेषा	45| 2	23:59	वरीयान	21|18	शकुनि	14|41	5:58	18:50	32|10	24:22	सिंह 23|59	7	22	श्राद्धादि अमावस्या, सायन सूर्य कन्या में 26:38, K
30	शनि	13|55	11:32	मघा	46|35	24:37	परिघ	18|13	नाग	13|55	5:58	18:49	32| 6	24:7	सिंह	8	23	शनैश्चरी अमावस्या, कुशोत्पाटिनी (कुशग्रहण) L

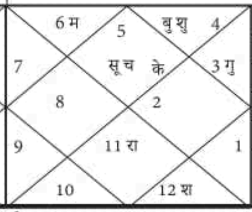
A लक्ष्मीविष्णु पूजा B भीमचण्डी देवी जयन्ती, कज्जलीनिमित्त जागरण C गोपूजा, विशालाक्षी यात्रा, तीजड (सिन्ध) श्रीगणेश सङ्कष्टहरचतुर्थी व्रत, बहुलाचतुर्थी, चन्द्रोदय 20:59 D ललहीछठ, श्रीचन्द्र षष्ठी, चम्पाषष्ठी, बलरामजयन्ती, लोलार्क षष्ठी E शीतलासप्तमी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत (स्मार्त), कालाष्टमी, पारसी नववर्ष (नवरोज) F गोकुलाष्टमी, दूर्वाष्टमी, ज्ञानेश्वर-जयन्ती, सूर्य सिंह में 25:57 बजे G कौमारीपूजन, सङ्क्रान्तिपुण्यकाल सूर्योदय से मध्याह्न तक। H जया एकादशीव्रत (समस्त) I कलियुगादि त्रयोदशी J अघोरचतुर्दशी, अघोरमन्त्रसाधना, डाकिनीचतुर्दशी K शरद्‌ऋतु प्रारम्भ मन्वादि, L अमावस्या, स्नानदान-अमावस्या, पिठोरी अमावस्या॥ **कुशोत्पाटनमन्त्रः**- कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुश मूले वसेद्ब्रह्मा कुशान्मे देह मेंदिनि। कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा। देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।।

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी शनिवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 16/08/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	03	00	05	03	02	02	11	10	04
अंश	29	26	11	11	20	24	06	25	25
कला	11	33	28	16	31	18	39	14	14
विक.	51	05	04	49	31	35	40	38	38
गति	57	854	37	31	12	70	व03	व03	व03
	38	11	53	05	02	50	08	10	10



भाद्रपद कृष्ण अमावस्या शनिवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 23/08/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	04	04	05	03	02	03	11	10	04
अंश	05	03	15	18	21	02	06	24	25
कला	56	06	55	01	53	36	15	52	52
विक.	07	07	12	02	50	45	49	22	22
गति	57	790	38	76	11	71	व03	व03	व03
	46	30	21	25	32	21	36	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 भाद्रपद शुक्लपक्ष (दिनांक 24 अगस्त से 07 सितम्बर 2025 ई. तक)

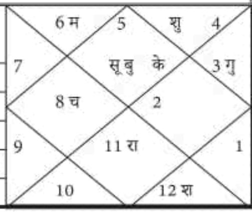
कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरदऋतु, केतकी अहर्गण- 5254, अयनांश -24/11/53

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	रवि	14|24	11:45	पू.फा.	49|24	25:45	शिव	16| 9	बव	14|24	5:59	18:48	32| 2	23:51	सिंह	9	24	चन्द्रदर्शन, श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब प्रकाश उत्सव
2	सोम	16|14	12:29	उ.फा.	53|34	27:25	सिद्ध	15| 8	कौलव	16|14	5:59	18:47	31|58	23:35	कन्या 08|10	10	25	कल्किजयन्ती,
3	मंगल	19|22	13:45	हस्त	58|57	29:35	साध्य	15| 8	गर	19|22	6: 0	18:46	31|55	23:18	कन्या	11	26	भद्रा 26:38 से, हरितालिका तृतीया व्रत, A
4	बुध	23|46	15:31	चित्रा	60|00	-:-	शुभ	16| 5	विष्टि	23|46	6: 0	18:45	31|51	23:1	तुला 19|05	12	27	भद्रा 15:31 तक, विनायकचतुर्थी व्रत, B
5	गुरु	29|13	17:42	चित्रा	6|27	8:36	शुक्ल	17|51	बालव	29|13	6: 1	18:44	31|47	22:44	तुला	13	28	ऋषिपञ्चमी, मेला पाट (जम्मू)
6	शुक्र	35|23	20:11	स्वाति	13|43	11:31	ब्रह्म	20|11	कौलव	2|18	6: 1	18:43	31|43	22:26	तुला	14	29	स्कन्दषष्ठी, सूर्यषष्ठी, देवषष्ठी, बुद्धजयन्ती, C
7	शनि	41|46	22:44	विशाखा	21|20	14:34	ऐन्द्र	22|43	गर	8|35	6: 2	18:41	31|39	22:8	वृश्चिक 07|48	15	30	भद्रा 22:44 से, ललितासप्तमी (बंगाल), D
8	रवि	47|41	25: 7	अनुराधा	28|40	17:30	वैधृति	24|59	विष्टि	14|43	6: 2	18:40	31|35	21:49	वृश्चिक	16	31	भद्रा 11:55 तक, नन्दाष्टमी, नन्दादेवीपूजा, E
9	सोम	52|36	27: 6	ज्येष्ठा	35|12	20: 8	विष्कुम्भ	26|34	बालव	20|9	6: 3	18:39	31|30	21:30	धनु 20|08	17	1सित.	अदुःख-नवमी, श्रीचन्द नवमी, महानन्दा नवमी, F
10	मंगल	55|50	28:23	मूल	40|15	22:10	प्रीति	26|58	तैतिल	24|13	6: 3	18:38	31|26	21:11	धनु	18	2	दशावतारदशमी व्रत, दुग्धव्रतारम्भ,
11	बुध	57|16	28:58	पू.षा.	43|40	23:32	आयुष्मान	26| 4	वणिज	26|33	6: 4	18:37	31|22	20:51	मकर 29|41	19	3	भद्रा 16:40 से 28:58 तक, पद्मा एकादशीव्रत G
12	गुरु	56|34	28:42	उ.षा.	45| 5	24: 7	सौभाग्य	23|36	बव	26|55	6: 4	18:36	31|18	20:31	मकर	20	4	शक्रद्वादशी, वामनजयन्ती, भुवनेश्वरीजयन्ती, H
13	शुक्र	54|5	27:43	श्रवण	44|45	23:59	शोभन	19|42	कौलव	25|20	6: 5	18:35	31|14	20:11	मकर	21	5	शिवपरिवर्तन उत्सव, प्रदोषव्रत, शिक्षक दिवस, I
14	शनि	50|0	26: 6	धनिष्ठा	42|50	23:13	अतिगण्ड	14|30	गर	22|3	6: 5	18:33	31|10	19:50	कुम्भ 11|36	22	6	भद्रा 26:06 से, पञ्चक आरम्भ 11:36, J
15	रवि	44|31	23:54	शतभिषा	39|29	21:53	सुकर्मा	8| 7	विष्टि	17|15	6: 6	18:32	31| 6	19:29	कुम्भ	23	7	भद्रा 13:00 तक, भाद्रपदपूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, K

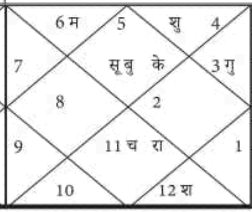
A सुवर्णगौरीतृतीया, गौरीतृतीया, कलङ्कचतुर्थी, वराहजयन्ती, मन्वादि, षोडशोमाव्रत, सामवेदीयों का उपाकर्म (निर्णयसिन्धु), चन्द्रदर्शन निषेध B सौभाग्यचतुर्थी (बंगाल), गणेशजन्मोत्सव, गणपतिस्थापना, वरद चतुर्थी, जैन संवत्सरी C बलदेवछत, ललिता षष्ठी, लोलार्क षष्ठी D सन्तानसप्तमी, आमुक्ताभरणसप्तमी, E श्रीराधाष्टमी, दूर्वाष्टमी, दुर्गाशयनाष्टमी, महालक्ष्मी व्रत आरम्भ, ज्येष्ठापूजन F केदारव्रत, मेला श्रीरामदेव (राजस्थान) G (समस्त), कर्मा एकादशीव्रत (झारखण्ड), पार्श्वपरिवर्तन, डोल ग्यारस (मध्यप्रदेश), दधिदान, जलझूलनी (राजस्थाने), श्रीरामदेवजयन्ती (राज.) H कल्कि द्वादशी, उमामहेश्वर व्रत, विष्णुपरिवर्तनोत्सव, वामनोत्पत्ति, दुग्धव्रत संकल्प I ओणम (केरल), मिलाद उल नवी (मुस्लिम), हजरत मोहम्मद जयन्ती J अनन्तचतुर्दशी व्रत, गणेश विसर्जन K सत्यनारायण व्रत, उमामाहेश्वर व्रत, पूर्णिमाश्राद्ध, प्रोष्ठपदी पूर्णिमा, नारायणगुरुजयन्ती, अगस्त्याय दान, ललितागौरी व्रत, पूर्णचन्द्रग्रहण।

भाद्रपद शुक्ल अष्टमी रविवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 31/08/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	04	07	05	04	02	03	11	10	04
अंश	13	10	21	00	23	12	05	24	24
कला	39	59	04	58	23	10	44	26	26
विक.	36	41	21	00	20	31	39	55	55
गति	58	712	38	109	10	71	व04	व03	व03
	00	07	51	28	53	56	06	10	10



भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा रविवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 07/09/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	04	10	05	04	02	03	11	10	04
अंश	20	10	25	14	24	20	05	24	24
कला	16	52	38	23	37	36	14	04	04
विक.	31	55	10	24	01	11	48	39	39
गति	58	831	39	116	10	74	व04	व03	व03
	11	16	17	39	14	23	23	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 आश्विन कृष्णपक्ष (दिनांक 08 सितम्बर से 21 सितम्बर 2025 ई. तक)

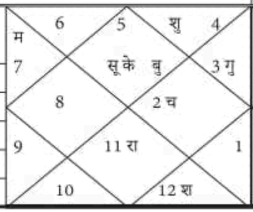
कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरदऋतु, केतकी अहर्गण- 5269, अयनांश -24/11/56

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	सोम	38|11	21:23	पू.भा.	35|14	20:12	धृति शूल	0|53 56|50	बालव	11|21	6: 6	18:31	31| 2	19:8	मीन 14|37	24	8	महालय, श्राद्ध आरम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध, A
2	मंगल	31|6	18:33	उ.भा.	30|11	18:11	गण्ड	45| 0	तैतिल	4|39	6: 7	18:30	30|58	18:47	मीन	25	9	भद्रा 29:06 से, द्वितीया श्राद्ध, अशून्यशयन व्रत, B
3	बुध	23|52	15:40	रेवती	24|56	16: 6	वृद्धि	36|11	विष्टि	23|52	6: 7	18:29	30|53	18:26	मेष 16|06	26	10	भद्रा 15:40 तक, पञ्चक समाप्त 16:06, C
4	गुरु	16|33	12:45	अश्विनी	19|35	13:58	ध्रुव	27|22	बालव	16|33	6: 8	18:28	30|49	18:4	मेष	27	11	चतुर्थी श्राद्ध, बहुलाचतुर्थी, भरणी श्राद्ध, पञ्चमी श्राद्ध,
5	शुक्र	9|32	9:57	भरणी	14|31	11:57	व्याघात	18|53	तैतिल	9|32	6: 8	18:26	30|45	17:42	वृष 17|30	28	12	षष्ठी श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी,
6 7	शनि	03|4 57|14	07:22 29:02	कृत्तिका	10| 2	10:10	हर्षण	10|56	वणिज	3|4	6: 9	18:25	30|41	17:20	वृष	29	13	भद्रा 07:22 से 18:12 तक,सप्तमी श्राद्ध, D
8	रवि	51|22	26:42	रोहिणी	6|10	8:37	वज्र सिद्धि	3|30 56|50	बालव	24|18	6: 9	18:24	30|37	16:58	मिथुन 20|02	30	14	अष्टमी श्राद्ध, कालाष्टमी, E
9	सोम	47|23	25: 7	मृगशिरा	3|15	7:28	व्यतिपात	50| 7	तैतिल	19|22	6:10	18:23	30|32	16:36	मिथुन	31	15	नवमी श्राद्ध, मातृनवमी, सौभाग्यवती श्राद्ध, F
10	मंगल	44|27	23:57	आर्द्रा	1|17	6:41	वरीयान	45| 6	वणिज	15|55	6:10	18:21	30|28	16:13	कर्क 24|26	1	16	भद्रा 12:32 से 23:57 तक, सूर्य कन्या में G
11	बुध	42|49	23:18	पुनर्वसु	00|29	6:21	परिघ	41| 8	बव	13|38	6:10	18:20	30|24	15:51	कर्क	2	17	एकादशी श्राद्ध, इन्द्रा-एकादशीव्रत (समस्त), H
12	गुरु	42|16	23: 6	पुष्य	0|47	6:30	शिव	38| 2	कौलव	12|33	6:11	18:19	30|20	15:29	कर्क	3	18	द्वादशी श्राद्ध, यतिमहालय, संन्यासी श्राद्ध,
13	शुक्र	42|52	23:20	आश्लेषा	2|12	7: 5	सिद्ध	35|49	गर	12|34	6:11	18:18	30|15	15:7	सिंह 07|05	4	19	भद्रा 23:20 से,त्रयोदशी श्राद्ध, प्रदोषव्रत, I
14	शनि	44|34	24: 2	मघा	4|44	8: 6	साध्य	34|27	विष्टि	13|43	6:12	18:17	30|11	14:44	सिंह	5	20	भद्रा 11:41 तक,चतुर्दशी श्राद्ध, शस्त्रहतमहालय, J
30	रवि	47|21	25: 9	पू.फा.	8|20	9:33	शुभ	33|55	चतुष्पाद	15|57	6:12	18:15	30| 7	14:22	कन्या 16|01	6	21	अमा श्राद्ध, पितृविसर्जन, सर्वपितृ-अमावस्या श्राद्ध, K

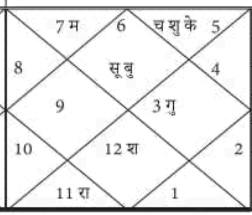
A पितृपक्षीय पार्वण तर्पण आरम्भ, अन्ताराष्ट्रिय साक्षरता दिवस B बृहत्तल्पद्वितीया C तृतीया श्राद्ध,श्रीगणेश संकष्ट हरचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20:06 D ओठगन (मिथिला), E श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त, जीवित्पुत्रिका व्रत, जीमूतवाहनव्रत, जितिया, हिन्दी दिवस F व्यतीपात श्राद्ध, G 25:55 बजे दशमी श्राद्ध, H सङ्क्रान्ति पुण्यकाल सूर्योदय से मध्याह्न तक। I गजच्छाया श्राद्ध, मघा श्राद्ध, J विषशस्त्रादि हत श्राद्ध, मासशिवरात्रि व्रत K महालय समाप्ती ॥ **जीवित्पुत्रिकाव्रतम्** - इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवित्पुत्रिका॥ शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यः स नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्साया॥

आश्विन कृष्ण अष्टमी रविवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 14/09/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	04	01	06	04	02	03	11	10	04
अंश	27	21	00	27	25	29	04	23	23
कला	14	51	15	46	45	05	43	42	42
विक.	53	45	07	31	49	05	14	24	24
गति	58	856	39	112	09	72	व04	व03	व03
	25	17	44	21	29	51	35	10	10



आश्विन कृष्ण अमावस्या रविवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 21/09/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	05	04	06	05	02	04	11	10	04
अंश	04	24	04	10	26	07	04	23	23
कला	04	54	55	24	49	36	10	20	42
विक.	45	56	11	11	11	59	51	08	24
गति	58	755	40	104	08	73	व04	व03	व03
	37	17	11	59	41	17	39	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 आश्विन शुक्लपक्ष (दिनांक 22 सितम्बर से 07 अक्टूबर 2025 ई. तक)

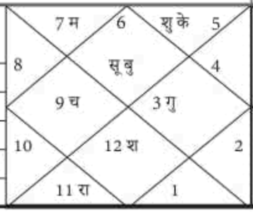
कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरदऋतु, केतकी अहर्गण- 5283, अयनांश - 24/11/57

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	सोम	51|6	26:40	उ.फा.	12|56	11:24	शुक्ल	34| 9	किस्तुघ्न	19|14	6:13	18:14	30| 3	14:0	कन्या	7	22	शारदीय नवरात्रारम्भ, कलश स्थापन, मातामह श्राद्ध,A
2	मंगल	55|43	28:31	हस्त	18|25	13:36	ब्रह्म	35| 2	बालव	23|25	6:13	18:13	29|58	13:38	तुला 26|52	8	23	चन्द्रदर्शन, प्रीतिद्वितीया, ब्रह्मचारिणी पूजन,
3	बुध	60|00	-:-	चित्रा	24|48	16: 9	ऐन्द्र	36|38	तैतिल	28|49	6:14	18:12	29|54	13:16	तुला	9	24	गौरीतृतीया, रेमन्त पूजा, चन्द्रघण्टा पूजन, B
3	गुरु	1|55	7: 0	स्वाति	31|52	18:59	वैधृति	38|44	गर	1|35	6:14	18:10	29|50	12:54	तुला	10	25	भद्रा 20:13 से, विनायक चतुर्थी व्रत,
4	शुक्र	7|57	9:26	विशाखा	39|24	22: 0	विष्कुम्भ	41|10	विष्टि	7|57	6:15	18:09	29|46	12:33	वृश्चिक 15|15	11	26	भद्रा 09:26 तक, कुष्माण्डादेवी पूजन, C
5	शनि	14|19	11:59	अनुराधा	47| 9	25: 7	प्रीति	43|45	बालव	14|19	6:15	18:08	29|41	12:11	वृश्चिक	12	27	स्कन्दमातृपूजन, ललिता पञ्चमी, विश्व पर्यटन दिवस
6	रवि	20|28	14:27	ज्येष्ठा	54|31	28: 4	आयुष्मान	45|58	तैतिल	20|28	6:16	18:07	29|37	11:50	धनु 28|04	13	28	बिल्वामन्त्रण, कात्यायनीपूजन, कालरात्रिपूजन - D
7	सोम	25|56	16:39	मूल	60|00	-:-	सौभाग्य	47|29	वणिज	25|56	6:16	18:06	29|33	11:29	धनु	14	29	भद्रा 16:39 से 29:28 तक, सरस्वती स्थापन, E
8	मंगल	30|3	18:18	मूल	00|05	6:19	शोभन	47|48	बव	30|3	6:17	18:04	29|29	11:8	धनु	15	30	महाष्टमीव्रत, दुर्गाष्टमीव्रत, महागौरीपूजन
9	बुध	32|33	19:19	पू.षा.	4|41	8:10	अतिगण्ड	46|45	बालव	1|18	6:17	18:03	29|24	10:48	मकर 14|26	16	1अक्टू	महानवमी, बलिहोमादि, त्रिशूलिनी पूजा, F
10	गुरु	32|54	19:28	उ.षा.	7|24	9:16	सुकर्मा	43|55	तैतिल	2|43	6:18	18:02	29|20	10:28	मकर	17	2	विजया दशमी, दशहरा, सीमोल्लङ्घन, G
11	शुक्र	31|14	18:48	श्रवण	8|13	9:36	धृति	39|29	वणिज	2|4	6:18	18:01	29|16	10:8	कुम्भ 21|23	18	3	भद्रा 7:8 से 18:48 तक, पञ्चक आरम्भ 21:23, I
12	शनि	27|37	17:22	धनिष्ठा	7| 6	9:10	शूल	33|30	बालव	27|37	6:19	18:00	29|12	9:49	कुम्भ	19	4	गोद्वादशी, पद्मनाभद्वादशी, शनिप्रदोष व्रत, J
13	रवि	22|11	15:12	शतभिषा पू.भा.	04|11 59|47	08:00 30:13	गण्ड	26| 2	तैतिल	22|11	6:19	17:59	29| 7	9:30	मीन 24|40	20	5	
14	सोम	15|20	12:28	उ.भा.	55|29	28:32	वृद्धि	17|28	वणिज	15|20	6:20	17:57	29| 3	9:11	मीन	21	6	भद्रा 12:28 से 22:53 तक, पूर्णिमा व्रत, K
15	मंगल	07|24	09:18	रेवती	48|32	25:46	ध्रुव व्याघात	08|02 58|09	बव	7|24	6:21	17:56	28|59	8:53	मेष 25|46	22	7	पञ्चक समाप्त 25:46, कार्तिक स्नान आरम्भ, L

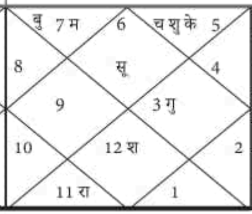
A महाराजा अग्रसेन जयन्ती, शैलपुत्री पूजन, सायन सूर्य तुला में 24:26, दक्षिण गोल प्रारम्भ, B सामाजिक न्याय दिवस C उपाङ्गललिता गौरीव्रत, D (निशीथ), सरस्वती आवाहन, सरदार भगतसिंह जयन्ती E महानिशापूजा, सन्धिपूजा, देवीत्रिरात्रव्रत आरम्भ, बिल्वादि नवपत्रिकाप्रवेशन प्रातः काल, कालरात्रि पूजन F नवरात्र समाप्त, अन्नपूर्णापरिक्रमा, सिद्धिदात्री पूजन, ओली (जैन) प्रारम्भ, G नीलकण्ठ दर्शन, दुर्गा विसर्जन, शमीपूजा, अपराजिता देवीपूजा, दशरथगौरीव्रत, शस्त्रादि पूजा, वाहन पूजा, नवरात्र पारणा, स्वारोचिष मन्वादि, बुद्धावतार जयन्ती, माधवाचार्य जयन्ती, महात्मा गाँधी जयन्ती, श्री लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती, अन्ताराष्ट्रिय अहिंसा दिवस, स्वच्छता दिवस I पापाङ्कुशा एकादशी व्रत (समस्त), भरत मिलाप (काशी), मध्वजयन्ती, J द्विदलत्यागव्रत, दुग्धदान, K शरद् पूर्णिमा, कौमुदीमहोत्सव, कोजागरी, रात्रौ अक्षक्रीडा, रास महोत्सव, मेला शाकम्भरी, सत्यनारायण व्रत,, वौराहचतुर्दशी, L वाल्मीकिजयन्ती, स्नानदान पूर्णिमा, आश्विनशरद्-पूर्णिमा, औली (जैन) समाप्त, नवान्नेष्टि (दक्षिणभारत), मीराबाई जयन्ती, दीपदान ॥

आश्विन शुक्ल अष्टमी मंगलवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 30/09/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	05	08	06	05	02	04	11	10	04
अंश	12	13	10	25	28	18	03	22	22
कला	54	18	59	25	01	39	29	55	55
विक.	06	50	38	36	36	16	18	30	30
गति	58	727	40	96	07	73	व04	व03	व03
	55	58	46	27	30	43	33	10	10



आश्विन शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 07/10/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	05	04	06	06	02	04	11	10	04
अंश	19	18	15	06	28	27	02	22	22
कला	47	06	46	18	50	17	58	29	29
विक.	41	01	55	42	08	17	06	14	14
गति	59	882	41	90	06	74	व04	व03	व03
	09	31	11	51	29	07	21	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 कार्तिक कृष्णपक्ष (दिनांक 07 अक्टूबर से 21 अक्टूबर 2025 ई. तक)

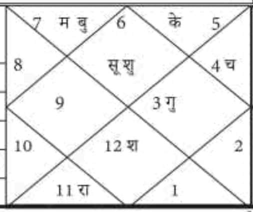
कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरदऋतु, केतकी अहर्गण- 5299, अयनांश - 24/12/00

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	मंगल	58|53	29:54	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	22	7	प्रतिपदा क्षय, माषादि दाल एवं बैंगन आदि का - A
2	बुध	50|28	26:32	अश्विनी	41|18	22:53	हर्षण	48|21	तैतिल	24|40	6:21	17:55	28|55	8:36	मेष	23	8	अशून्यशयन व्रत,
3	गुरु	41|14	22:53	भरणी	34|12	20: 3	वज्र	37|57	वणिज	15|53	6:22	17:54	28|50	8:18	वृष 25|24	24	9	भद्रा 12:42 से 22:53 तक, उमाव्रत- B
4	शुक्र	32|52	19:31	कृत्तिका	27|40	17:26	सिद्धि	28| 7	बव	7|5	6:22	17:53	28|46	8:2	वृष	25	10	दशरथचतुर्थी व्रत (बंगाल), करकचतुर्थी व्रत - C
5	शनि	25|26	16:34	रोहिणी	22| 4	15:13	व्यतिपात	19| 7	तैतिल	25|26	6:23	17:52	28|42	7:45	मिथुन 26|20	26	11	रोहिणी व्रत,
6	रवि	19|17	14: 6	मृगशिरा	17|41	13:28	वरीयान	11| 7	वणिज	19|17	6:23	17:51	28|38	7:30	मिथुन	27	12	भद्रा 14:06 से 25:10 तक, स्कन्दषष्ठी, D
7	सोम	14|36	12:14	आर्द्रा	14|44	12:18	परिघ शिव	04|17 58|42	बव	14|36	6:24	17:50	28|34	7:15	कर्क 29|53	28	13	अहोई अष्टमी (प्रदोषव्यापिनी), कालाष्टमी, E
8	मंगल	11|30	11: 1	पुनर्वसु	13|22	11:45	सिद्ध	53| 0	कौलव	11|30	6:25	17:49	28|30	7:0	कर्क	29	14	राधाष्टमी, राधाजयन्ती, राधाकुण्ड में स्नान - F
9	बुध	10|3	10:27	पुष्य	13|37	11:52	साध्य	50| 9	गर	10|3	6:25	17:47	28|25	6:46	कर्क	30	15	भद्रा 22:28 से,
10	गुरु	10|11	10:30	आश्लेषा	15|25	12:36	शुभ	48|27	विष्टि	10|11	6:26	17:46	28|21	6:33	सिंह 12|36	31	16	भद्रा 10:30 तक,
11	शुक्र	11|43	11: 8	मघा	18|33	13:52	शुक्ल	47|42	बालव	11|43	6:26	17:45	28|17	6:20	सिंह	1	17	रम्भा (रमा) एकादशी व्रत (समस्त), G
12	शनि	14|38	12:18	पू.फा.	23| 0	15:39	ब्रह्म	47|56	तैतिल	14|38	6:27	17:44	28|13	6:8	कन्या 22|11	2	18	शनिप्रदोष, धन्वन्तरि-जयन्ती, धनत्रयोदशी, H
13	रवि	18|26	13:50	उ.फा.	28|16	17:46	ऐन्द्र	48|40	वणिज	18|26	6:28	17:43	28| 9	5:57	कन्या	3	19	भद्रा 13:50 से 26:46 तक, नरकचतुर्दशी, I
14	सोम	23|8	15:43	हस्त	34|22	20:13	वैधृति	50| 0	शकुनि	23|8	6:28	17:42	28| 5	5:47	कन्या	4	20	दीपावली, लक्ष्मीपूजन, कुबेर-इन्द्र पूजन, J
30	मंगल	28|24	17:51	चित्रा	40|59	22:53	विष्कुम्भ	51|40	नाग	28|24	6:29	17:41	28| 1	5:37	तुला 9|33	5	21	यमतर्पण, गोत्रिरात्रव्रत समाप्त, कामेश्वरीजयन्ती,K

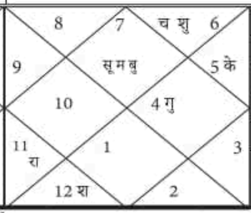
A त्यागव्रत, दीपदानम्, B (चन्द्रोदयव्यापिनी), (करवाचौथ), श्रीगणेश संकष्टचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20:13, D अशोक चन्दनषष्ठी, E कराष्टमी (महाराष्ट्र में चन्द्रोदयव्यापिनी), F (मथुरामण्डल में), भौमाष्टमी, G गोवत्स द्वादशी, सूर्य तुला में 13:54 बजे, सङ्क्रान्तिपुण्यकाल 09:54 से सूर्यास्त तक। H धनतेरस, यमतर्पण, यमदीपदान, यमपूजन, I यमदीपदान, यमपूजन, यमतर्पण, अभ्यङ्गस्नान, प्रेतचतुर्दशी, रात्रौ महाकालीपूजन, छोटी दीपावली, रूपचतुर्दशी, हनुमज्जयन्ती (उत्तरभारत में), मासशिवरात्रि, गोत्रिरात्रव्रत आरम्भ, J यमदीपदान, यमपूजन, माषभक्षण, यमतर्पण, कमलाजयन्ती (प्रदोषकाल में), अक्षक्रीडा, रात्रि अन्त में अलक्ष्मीनिस्सारण, पितृविसर्जन, उल्काभ्रमण, सायं में दीपदान, K केदारव्रत, शङ्कराचार्यनिर्वाण दिवस, महावीरजैन निर्वाण दिन, दयानन्दनिर्वाणदिन, कामेश्वरी जयन्ती ॥

कार्तिक कृष्ण अष्टमी मंगलवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 14/10/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	05	03	06	06	02	05	11	10	04
अंश	26	00	20	16	29	05	02	22	22
कला	42	16	37	32	31	57	28	06	06
विक.	59	16	07	51	09	36	51	38	38
गति	59	824	41	85	05	74	व04	व03	व03
	24	14	37	12	21	26	00	10	10



कार्तिक कृष्ण अमावस्या मंगलवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 21/10/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	06	05	06	06	03	05	11	10	04
अंश	03	28	25	26	00	14	02	21	21
कला	69	25	30	02	04	39	02	44	44
विक.	56	41	23	32	04	56	16	42	42
गति	59	723	42	78	04	74	व03	व03	व03
	37	26	02	07	10	42	36	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 कार्तिक शुक्लपक्ष (दिनांक 22 अक्टूबर से 05 नवम्बर 2025 ई. तक)

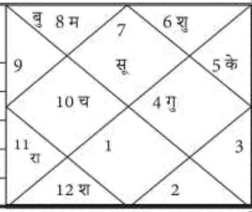
कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु, केतकी अहर्गण- 5313, अयनांश - 24/12/02

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	बुध	34|11	20:10	स्वाति	48| 5	25:44	प्रीति	53|41	किस्तुघ्न	1|18	6:30	17:40	27|57	5:27	तुला	6	22	अन्नकूट, गोवर्धनपूजा, गोक्रीडा, बलिपूजा, A
2	गुरु	40|24	22:40	विशाखा	55|34	28:44	आयुष्मान	55|58	बालव	7|18	6:30	17:39	27|53	5:19	वृश्चिक 21|59	7	23	भ्रातृद्वितीया, भैया दूज, यम पूजा, चित्रगुप्त पूजा,B
3	शुक्र	46|44	25:13	अनुराधा	60|00	-:-	सौभाग्य	58|17	तैतिल	13|34	6:31	17:39	27|49	5:11	वृश्चिक	8	24	त्रिलोचनगौरी व्रत,
4	शनि	53|15	27:50	अनुराधा	3|14	7:49	शोभन	60|00	वणिज	20|0	6:32	17:38	27|45	5:4	वृश्चिक	9	25	भद्रा 14:31 से 27:50 तक, विनायकचतुर्थी व्रत, C
5	रवि	59|15	30:14	ज्येष्ठा	10|35	10:46	शोभन	0|32	बव	26|15	6:32	17:37	27|41	4:58	धनु 10|46	10	26	लाभपंचमी, सौभाग्यपंचमी, ज्ञानपंचमी, D
6	सोम	60|00	-:-	मूल	17|25	13:31	अतिगण्ड	2|16	कौलव	31|25	6:33	17:36	27|37	4:53	धनु	11	27	प्रतिहारषष्ठी व्रत, छठपूजा, सूर्यषष्ठीव्रत, E
6	मंगल	3|36	8: 0	पू.षा.	23|15	15:52	सुकर्मा	3|16	तैतिल	03|36	6:34	17:35	27|33	4:48	मकर 22|19	12	28	प्रातःकाल सप्तमी में सूर्यायदान, सूर्यव्रत समाप्त, F
7	बुध	7|7	9:25	उ.षा.	27|46	17:41	धृति	3|16	वणिज	7|7	6:34	17:34	27|29	4:44	मकर	13	29	भद्रा 09:25 से 21:47 तक,
8	गुरु	8|56	10:10	श्रवण	30|33	18:49	शूल गण्ड	01|58 59|09	बव	8|56	6:35	17:33	27|25	4:41	मकर	14	30	दुर्गाष्टमी, मेला गोचारण (मथुरा), गोपाष्टमी, G
9	शुक्र	8|46	10: 6	धनिष्ठा	31|20	19: 8	वृद्धि	56|23	कौलव	8|46	6:36	17:33	27|21	4:39	कुम्भ 06|58	15	31	पञ्चक आरम्भ 06:58, अक्षयनवमी,
10	शनि	6|31	9:13	शतभिषा	30| 3	18:38	ध्रुव	50|18	गर	6|31	6:37	17:32	27|18	4:38	कुम्भ	16	1नव.	भद्रा 20:22 से, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत - I
11 12	रवि	02|14 56|10	07:31 29:05	पू.भा.	26|43	17:19	व्याघात	42|30	विष्टि	2|14	6:37	17:31	27|14	4:37	मीन 11|39	17	2	भद्रा 07:31 तक, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत - J
13	सोम	50|12	26:43	उ.भा.	21|39	15:18	हर्षण	33|22	कौलव	23|11	6:38	17:30	27|10	4:37	मीन	18	3	सोमप्रदोष,
14	मंगल	40|50	22:59	रेवती	15| 8	12:42	वज्र	23| 7	गर	15|31	6:39	17:30	27| 6	4:39	मेष 12|42	19	4	भद्रा 22:59 से, पञ्चक समाप्त 12:42, K
15	बुध	30|49	18:59	अश्विनी	7|40	9:44	सिद्धि	12|14	विष्टि	5|50	6:40	17:29	27| 3	4:41	मेष	20	5	भद्रा 8:59 तक, पूर्णिमाव्रत, कार्तिकपूर्णिमा, L

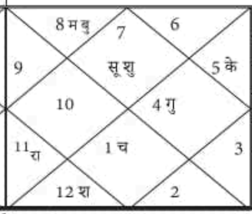
A यूतक्रीडा, आकाशदीप दान, अखण्डदीप आरम्भ, मंगलमालिका, नीराजन, विश्वकर्मा दिवस, प्रातः यमतर्पण, B यमुना स्नान, यमद्वितीया, भगिनीगृह में भोजन, लेखनी पूजन, चन्द्रदर्शन, सायन सूर्य वृश्चिक में 09/57, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, C दूर्वागणपति व्रत, नागचतुर्थी, D त्रिदिवसीय सूर्यषष्ठी व्रतारम्भ (नहाई खाई) E सायंकालिक अर्घ्यदान, स्कन्दषष्ठी (बिहार में) डालाषष्ठी, F प्रतिहारषष्ठी व्रत पारणा, G कार्तवीर्यात्पत्ति, ओली (जैन) प्रारम्भ, H कूष्माण्डनवमी, सतयुगादि, विष्णुत्रिरात्र व्रतारम्भ, जगद्धात्री पूजा, धात्रीवृक्ष के नीचे भोजन, अयोध्या मथुरा परिक्रमा, आमलकी नवमी, एकता दिवस, सरदार पटेल जयन्ती, I (स्मार्त), देव उठनी, भीष्मपञ्चक प्रारम्भ, श्री विष्णुपुत्ररात्र व्रत समाप्त, कालिदासजयन्ती, मन्वादि, कंसमेला (मथुरा), J (वैष्णव), देवप्रबोधनोत्सव, तुलसीविवाह, नारायणद्वादशी, चातुर्मास्य व्रत समाप्त, गरुड द्वादशी K वैकुण्ठ चतुर्दशी, पाषाण चतुर्दशी, विश्वेश्वर प्रतिष्ठाव्रत, काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, धात्रीपूजन, श्री महाविष्णु पूजा, L सत्यनारायण व्रत, मन्वादि, कार्तिक व्रतोद्यापन, गुरुनानक देव जयन्ती, त्रिपुरोत्सव, तुलसी उद्यापन, पुष्करमेला (राजस्थान), भीष्मपञ्चक समाप्त, देवदीपावली, निम्बार्कजयन्ती, वैखानस दीप (द.भा.), चातुर्मास्य व्रत समाप्त (संन्यासी), ओली (जैन) समाप्त, कार्तिकस्नान समाप्त ॥

कार्तिक शुक्ल अष्टमी गुरुवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 30/10/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	06	09	07	07	03	05	11	10	04
अंश	12	16	01	06	00	25	01	21	21
कला	38	54	51	32	33	53	33	16	16
विक.	28	44	54	30	31	58	09	05	05
गति	59	756	42	61	02	74	व02	व03	व03
	54	22	35	11	31	57	54	10	10



कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा बुधवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 05/11/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	06	00	07	07	03	06	11	10	04
अंश	18	11	06	11	00	03	01	20	20
कला	38	23	09	21	44	24	17	56	56
विक.	57	54	01	07	41	37	27	59	59
गति	60	906	42	36	01	75	व02	व03	व03
	07	44	58	30	22	09	24	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष (दिनांक 06 नवम्बर से 20 नवम्बर 2025 ई. तक)

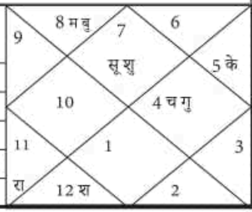
कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु, केतकी अहर्गण- 5328, अयनांश - 24/12/04

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	गुरु	20|47	14:59	भरणी कृत्तिका	00|7 52|06	06:42 26:44	व्यतिपात वरीयान	01| 9 50|11	कौलव	20|47	6:40	17:28	26|59	4:43	वृष 11|42	21	6	कार्तिक व्रत पारणा
2	शुक्र	11|4	11: 7	रोहिणी	44|21	24:26	परिघ	39|13	गर	11|4	6:41	17:28	26|56	4:47	वृष	22	7	भद्रा 21:20 से,
3 4	शनि	02|09 54|23	07:34 28:27	मृगशिरा	37|44	21:48	शिव	29|13	विष्टि	2|9	6:42	17:27	26|52	4:52	मिथुन 11|7	23	8	भद्रा 07:34 तक, सौभाग्यसुन्दरी व्रत, A
5	रवि	46|33	25:20	आर्द्रा	32|36	19:45	सिद्ध	20|25	कौलव	20|28	6:43	17:26	26|49	4:57	मिथुन	24	9	उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस,
6	सोम	42|9	23:35	पुनर्वसु	29|25	18:30	साध्य	13| 9	गर	14|21	6:43	17:26	26|45	5:3	कर्क 12|49	25	10	भद्रा 23:35 से,
7	मंगल	39|41	22:37	पुष्य	28| 6	17:59	शुभ	7|20	विष्टि	10|55	6:44	17:25	26|42	5:10	कर्क	26	11	भद्रा 11:06 तक,
8	बुध	39|16	22:27	आश्लेषा	28|47	18:16	शुक्ल	3| 7	बालव	9|28	6:45	17:25	26|39	5:18	सिंह 18|16	27	12	रुक्मिणी अष्टमी व्रत, कालभैरवाष्टमी, B
9	गुरु	40|55	23: 8	मघा	31|28	19:21	ब्रह्म ऐन्द्र	0|28 59|13	तैतिल	10|5	6:46	17:24	26|35	5:27	सिंह	28	13	
10	शुक्र	44|9	24:27	पू.फा.	35|44	21: 5	वैधृति	59|10	वणिज	12|32	6:47	17:24	26|32	5:36	कन्या 27|39	29	14	भद्रा 11:47 से 24:27 तक, बाल दिवस
11	शनि	48|50	26:20	उ.फा.	41|26	23:22	विष्कुम्भ	60|00	बव	16|30	6:47	17:23	26|29	5:47	कन्या	30	15	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)
12	रवि	54|22	28:33	हस्त	48| 0	26: 0	विष्कुम्भ	00|01	कौलव	21|36	6:48	17:23	26|26	5:58	कन्या	1	16	उत्पन्ना एकादशी व्रत (निम्बार्क), सूर्य वृश्चिके में C
13	सोम	60|00	-: -	चित्रा	55|13	28:54	प्रीति	1|29	गर	27|40	6:49	17:22	26|23	6:10|	तुला 15|27	2	17	सोमप्रदोषव्रत
13	मंगल	0|58	7:13	स्वाति	60|00	-:-	आयुष्मान	3|20	वणिज	0|58	6:50	17:22	26|20	6:23	तुला	3	18	भद्रा 07:13 से 20:28 तक, मासशिवरात्रि
14	बुध	7|13	9:44	स्वाति	2|53	8: 0	सौभाग्य	5|26	शकुनि	7|13	6:51	17:22	26|17	6:37	वृश्चिक 28|14	4	19	श्राद्धादि अमावस्या
30	गुरु	13|33	12:17	विशाखा	10|18	10:59	शोभन	7|34	नाग	13|33	6:51	17:21	26|14	6:51	वृश्चिक	5	20	स्नानदानादि-अमावस्या, कार्तिकपूजा (बंगाल), D

A श्रीगणेश सङ्कष्टचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 19:59, B भैरव जयन्ती, बुधाष्टमी, कालाष्टमी, कल्पादि, रुक्मिणी जयन्ती, C 13:42 बजे, सङ्क्रान्तिपुण्यकाल सूर्योदय से 13:42 तका, D प्रतिपत्प्रदोष॥ **नवान्नभक्षणम्** - वृश्चिके पूर्वभागे तु नवान्नं शस्यते बुधैः। अपरे क्रियमाणे तु धनुष्येव कृतं भवेत्॥ धनुषि यत्कृतं श्रद्धं मृगनेत्रासु रात्रिषु। पितरस्तत्र गृह्णन्ति नवान्नामृतकांक्षिणः॥ **कालभैरवपूजने विशेषः** - कृत्वा च विविधां पूजां महासम्भारविस्तरैः। नरो मार्गासिताष्टम्यां वार्षिकं विघ्नमुत्सृजेत्। तीर्थ कालोदके स्नात्वा कृत्वा तर्पणमत्त्वरः। विलोक्य कालराजानं निरयादुद्धरेत्पितॄन्। **रविवासरे त्याज्यवस्तूनि** - क्षौरं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशि भोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्॥

मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी बुधवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 12/11/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	06	03	07	07	03	06	11	10	04
अंश	25	23	11	12	00	12	01	20	20
कला	40	34	11	16	48	11	03	34	34
विक.	53	12	41	53	47	19	22	43	43
गति	60	803	43	व17	00	75	व01	व03	व03
	17	56	23	33	00	16	42	10	10





मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या गुरुवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 20/11/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	07	07	07	07	03	06	11	10	04
अंश	03	01	17	04	00	22	00	20	20
कला	44	17	01	31	41	14	53	09	09
विक.	47	44	09	04	29	13	14	16	16
गति	60	711	43	व80	व01	75	व00	व03	व03
	31	35	50	56	35	21	54	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष (दिनांक 21 नवम्बर से 04 दिसम्बर 2025 ई. तक)

कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु, केतकी अहर्गण- 5343, अयनांश - 24/12/06

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	शुक्र	19|42	14:45	अनुराधा	17|34	13:54	अतिगण्ड	9|34	बव	19|42	6:52	17:21	26|11	7:6	वृश्चिक	6	21	रुद्रव्रत, रम्भाव्रत, चन्द्रदर्शन
2	शनि	25|49	17:13	ज्येष्ठा	24|48	16:48	सुकर्मा	11|32	कौलव	25|49	6:53	17:21	26| 8	7:22	धनु 16|48	7	22	सायन सूर्य धनु में 07:38
3	रवि	31|22	19:27	मूल	31|30	19:30	धृति	13| 7	गर	31|22	6:54	17:20	26| 6	7:39	धनु	8	23	
4	सोम	36|27	21:30	पू.षा.	37|46	22: 1	शूल	14|20	वणिज	3|55	6:55	17:20	26| 3	7:56	मकर 28|33	9	24	भद्रा 8:28 से 21:30 तक, विनायकचतुर्थीव्रत, A
5	मंगल	40|33	23: 9	उ.षा.	43| 5	24:10	गण्ड	14|53	बव	8|30	6:56	17:20	26| 0	8:14	मकर	10	25	श्री राम विवाहोत्सव, विवाह पंचमी, नागपञ्चमी, B
6	बुध	43|27	24:19	श्रवण	47|17	25:51	वृद्धि	14|34	कौलव	12|0	6:56	17:20	25|58	8:33	मकर	11	26	स्कन्दषष्ठी, संहारषष्ठी, मल्लारषष्ठी, चम्पाषष्ठी व्रत-C
7	गुरु	44|54	24:55	धनिष्ठा	50| 5	26:59	ध्रुव	13|13	गर	14|11	6:57	17:20	25|56	8:52	कुम्भ 14|25	12	27	भद्रा 24:55 से, पञ्चक आरम्भ 14:45, D
8	शुक्र	44|19	24:42	शतभिषा	50|55	27:20	व्याघात	10|27	विष्टि	14|37	6:58	17:19	25|53	9:13	कुम्भ	13	28	भद्रा 12:48 तक, दुर्गाष्टमी,
9	शनि	41|55	23:45	पू.भा.	49|57	26:58	हर्षण	6|18	बालव	13|7	6:59	5:19	25|51	9:33	मीन 21|03	14	29	नन्दानवमी, कल्पादि, महानवमी व्रत
10	रवि	37|18	21:55	उ.भा.	46|50	25:44	वज्र सिद्धि	0|33 53|21	तैतिल	9|36	7: 0	17:19	25|49	9:55	मीन	15	30	
11	सोम	30|52	19:21	रेवती	41|55	23:46	व्यतिपात	46|12	वणिज	4|5	7: 0	17:19	25|47	10:17	मेष 23|46	16	1दि.	भद्रा 8:38 से 19:21 तक, पञ्चक समाप्त23:46,E
12	मंगल	22|56	16:12	अश्विनी	35|31	21:14	वरीयान	36|11	बालव	22|56	7: 1	17:19	25|45	10:39	मेष	17	2	धरणीव्रत, मत्स्यद्वादशी, अखण्डद्वादशी, F
13	बुध	13|47	12:33	भरणी	27|56	18:12	परिघ	25|15	तैतिल	13|47	7: 2	17:19	25|43	11:3	वृष 23|24	18	3	मासशिवरात्रि, अनङ्गत्रयोदशी
14 15	गुरु	04|06 54|17	08:41 28:45	कृत्तिका	19|53	15: 0	शिव	14| 0	वणिज	4|6	7: 3	17:19	25|41	11:26	वृष	19	4	भद्रा 08:41 से 18:43 तक, पूर्णिमाव्रत, I

A गुरु तेगबहादुर शहीदी दिवस, B बाबूबैजनाथजयन्ती, रामदास जयन्ती, स्वामी हरिदासजयन्ती, नाग पंचमी (दक्षिण), C (महाराष्ट्र में), सुब्रह्मण्यषष्ठी (दक्षिणभारत), गुह षष्ठी, D भानुसप्तमी, नन्दासप्तमी, मित्रसप्तमी, E मोक्षदा एकादशी व्रत (समस्त), गीताजयन्ती, मौनी-एकादशी (जैन), F भौमप्रदोषव्रत, I पिशाचमोचन श्राद्ध, दत्तात्रेयजयन्ती, शिवचतुर्दशी व्रत, पाषाणचतुर्दशी, सत्यनारायण व्रत, मार्गशीर्षपूर्णिमा, त्रिपुरभैरवजयन्ती, काशी पिशाच मोचन यात्रा दर्शन-तर्पणादि ॥ **अथ सौरव्रतम्-मार्गे** - मासि तथा माघे वैशाखापादयोरपि। शुक्लपक्षे व्रतं कुर्यात्सम्यग्देवस्य भास्वतः॥ **नवान्नफलभक्षणम्** - हरियुगलेऽदितियुगले पूषायुगले विरंचियुगले च। करपंचकोत्तरेषु च नवान्नफलमक्षणं शस्तम्॥

मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी शुक्रवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 28/11/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	07	10	07	06	03	07	11	10	04
अंश	11	09	22	26	00	02	00	19	19
कला	50	04	54	37	21	17	49	43	43
विक.	19	21	16	04	30	51	52	49	49
गति	60	772	44	व25	व03	75	व00	व03	व03
	43	35	18	41	10	25	03	10	10



मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 04/12/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	07	01	07	06	02	07	11	10	04
अंश	17	04	27	27	29	09	00	19	19
कला	55	56	21	49	58	50	51	24	24
विक.	21	59	23	56	30	53	49	44	44
गति	60	914	44	35	व04	75	00	व03	व03
	51	10	37	05	17	27	35	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 पौष कृष्णपक्ष (दिनांक 05 दिसम्बर से 20 दिसम्बर 2025 ई. तक)

कालयुक्त संवत्सर, दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु, केतकी अहर्गण- 5357, अयनांश - 24/12/08

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	शुक्र	44|31	24:52	रोहिणी	11|50	11:48	सिद्ध साध्य	2|46 52|01	बालव	19|24	7: 3	17:19	25|39	11:51	मिथुन 22|19	20	5	
2	शनि	35|29	21:16	मृगशिरा आर्द्र	04|25 57|59	08:50 30:15	शुभ	41|14	तैतिल	10|0	7: 4	17:19	25|38	12:15	मिथुन	21	6	
3	रवि	27|47	18:12	पुनर्वसु	51|25	27:39	शुक्ल	32| 0	वणिज	1|38	7: 5	17:20	25|36	12:40	कर्क 22|18	22	7	भद्रा 7:44 से 18:12 तक, श्रीगणेश - A
4	सोम	21|52	15:51	पुष्य	47|54	26:16	ब्रह्म	24|17	बालव	21|52	7: 6	17:20	25|35	13:6	कर्क	23	8	
5	मंगल	18|0	14:18	आश्लेषा	46|35	25:45	ऐन्द्रः	18|13	तैतिल	18|0	7: 6	17:20	25|34	13:32	सिंह 25|45	24	9	
6	बुध	16|15	13:37	मघा	47|27	26: 6	वैधृति	13|50	वणिज	16|15	7: 7	17:20	25|32	13:58	सिंह	25	10	भद्रा 13:37 से 25:42 तक, मानवाधिकार दिवस
7	गुरु	16|40	13:48	पू.फा.	50|25	27:18	विष्कुम्भ	11| 8	बव	16|40	7: 8	17:20	25|31	14:25	सिंह	26	11	व्यष्टकाश्राद्ध, कालाष्टमी
8	शुक्र	19|5	14:47	उ.फा.	55|13	29:13	प्रीति	9|57	कौलव	19|5	7: 8	17:21	25|30	14:52	कन्या 09|47	27	12	अष्टकाश्राद्ध, शिवशक्तिपूजनोत्सव,
9	शनि	23|19	16:29	हस्त	60|00	-:-	आयुष्मान	10|10	गर	23|19	7: 9	17:21	25|29	15:20	कन्या	28	13	भद्रा 29:35 से, अन्वष्टकाश्राद्ध
10	रवि	28|47	18:41	हस्त	2|48	8:17	सौभाग्य	11|20	विष्टि	28|47	7:10	17:21	25|28	15:48	तुला 21|42	29	14	भद्रा 18:41 तक,
11	सोम	35|10	21:15	चित्रा	9|52	11: 7	शोभन	13|15	बव	1|59	7:10	17:21	25|28	16:16	तुला	1	15	सफला एकादशी व्रत (समस्त), सूर्य धनु में - B
12	मंगल	41|57	23:58	स्वाति	17|28	14:10	अतिगण्ड	15|32	कौलव	8|34	7:11	17:22	25|27	16:44	तुला	2	16	सुरूपाद्वादशी, सङ्क्रान्तिपुण्यकाल सूर्योदय से - C
13	बुध	48|29	26:35	विशाखा	25| 2	17:12	सुकर्मा	17|44	गर	15|13	7:11	17:22	25|26	17:12	वृश्चिक 10|26	3	17	भद्रा 26:35 से, प्रदोष व्रत
14	गुरु	54|53	29: 9	अनुराधा	32|30	20:12	धृति	19|52	विष्टि	21|41	7:12	17:22	25|26	17:41	वृश्चिक	4	18	भद्रा 15:52 तक, मासशिवरात्रि
30	शुक्र	60|00	-:-	ज्येष्ठा	39|21	22:57	शूल	21|32	चतुष्पाद	27|27	7:12	17:23	25|26	18:10	धनु 22|57	5	19	स्नानदान - श्राद्ध अमावस्या, बकुला अमावस्या,
30	शनि	0|01	7:13	मूल	45|41	25:30	गण्ड	22|48	नाग	0|01	7:13	17:23	25|25	18:38	धनु	6	20	शनैश्चरी अमावस्या,

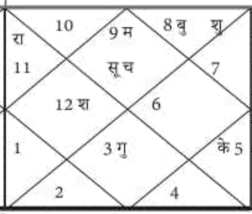
A सङ्कष्टहरचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 19:55, B 28:20 बजे, C मध्याह्न तक, विजय दिवस, D शनैश्चरी अमावस्या ॥ **दशतारकविचार** - पौषे मूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण वर्षति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम् ॥ **मेघगर्भपुष्टि विचार** - वाताभ्र गर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः। अकालसन्ध्या परिवेषणश्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः॥ **पौषामावस्या अर्द्धोदययोग** - अमार्कपातश्रवणैर्युक्ता चेत्पौषमाघयोः। अर्द्धोदयः स विज्ञेयः किञ्चिन्न्यूने महोदयः॥ किञ्चिन्न्यूने महोदय इति नक्षत्रयोगयोरन्यतरस्याभाव इत्यर्थः। अर्कवासरस्य प्राधान्यादिति रुद्रधरीयवर्षकृत्ये। अयमपि योगः दिवैव भवति, दिवैव योगः शस्तोऽयमित्युक्तत्वात्॥

पौष कृष्ण अष्टमी शुक्रवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 12/12/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	07	04	08	07	02	07	11	10	04
अंश	26	28	03	05	29	19	01	19	19
कला	03	20	20	50	18	55	00	59	59
विक.	03	39	31	48	02	08	28	17	17
गति	61	759	45	73	व05	75	01	व03	व03
	01	56	03	26	35	30	27	10	10



पौष कृष्ण अमावस्या शुक्रवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 20/12/2025



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	08	08	08	07	02	07	11	10	04
अंश	04	04	09	16	28	29	01	18	18
कला	11	11	22	43	27	59	15	33	33
विक.	35	26	47	09	47	27	54	50	50
गति	61	720	45	85	व06	75	02	व03	व03
	03	22	25	38	44	30	16	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 पौष शुक्ल पक्ष (दिनांक 21 दिसम्बर से 03 जनवरी 2026 ई. तक)

कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु, केतकी अहर्गण- 5373, अयनांश - 24/12/10

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	रवि	4|55	9:11	पू.षा.	51|22	27:46	वृद्धि	23|33	बव	4|55	7:13	17:24	25|25	19:7	धनु	7	21	चन्द्रदर्शन, सायन सूर्य मकर में 20:59, A
2	सोम	9|5	10:52	उ.षा.	56|17	29:45	ध्रुव	23|43	कौलव	9|5	7:14	17:24	25|25	19:36	मकर 10|46	8	22	
3	मंगल	12|30	12:15	श्रवण	60|00	-:-	व्याघात	23|19	गर	12|30	7:14	17:25	25|25	20:5	मकर	9	23	भद्रा 24:45 से, किसान दिवस
4	बुध	15|1	13:15	श्रवण	0|20	7:23	हर्षण	22|12	विष्टि	15|1	7:15	17:25	25|26	20:34	कुम्भ 19|51	10	24	भद्रा 13:15 तक, पञ्चक आरम्भः 19:51, B
5	गुरु	16|23	13:49	धनिष्ठा	2|41	8:20	वज्र	20|12	बालव	16|23	7:15	17:26	25|26	21:3	कुम्भ	11	25	तुलसीपूजन दिवस, अटलबिहारीजयन्ती, C
6	शुक्र	16|28	13:51	शतभिषा	4|28	9: 3	सिद्धि	17|10	तैतिल	16|28	7:16	17:26	25|26	21:32	मीन 27|10	12	26	अन्नरूपा षष्ठी, वीरबाल दिवस, जोरावर सिंह व - D
7	शनि	15|6	13:19	पू.भा.	4|53	9:13	व्यतिपात	13| 0	वणिज	15|6	7:16	17:27	25|27	22:1	मीन	13	27	भद्रा 13:19 से 24:43 तक, E
8	रवि	12|8	12: 8	उ.भा.	3|47	8:47	वरीयान	7|36	बव	12|8	7:16	17:28	25|27	22:30	मीन	14	28	दुर्गाष्टमी, महाभद्राष्टमी
9	सोम	7|34	10:18	रेवती अश्विनी	01| 7 57|02	07:44 30:05	परिघ शिव	0|55 53|07	कौलव	7|34	7:17	17:28	25|28	22:58	मेष 07|44	15	29	पञ्चकसमाप्तिः 07:44,
10 11	मंगल	01|32 54|19	07:54 29:00	भरणी	53| 0	28:29	सिद्ध	45|22	गर	1|32	7:17	17:29	25|29	23:27	मेष	16	30	भद्रा 18:27 से 29:00 तक, साम्बदशमी, F
12	बुध	47|11	26:10	कृत्तिका	46|21	25:50	साध्य	35|24	बव	20|45	7:17	17:30	25|30	23:55	वृष 09|49	17	31	पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव), कुर्मद्वादशी,
13	गुरु	38|6	22:32	रोहिणी	39|10	22:58	शुभ	25| 2	कौलव	12|39	7:18	17:30	25|31	24:23	वृष	18	1जन.	प्रदोषव्रत, ख्रीष्टनववर्ष
14	शुक्र	28|58	18:53	मृगशिरा	31|54	20: 4	शुक्ल	14|32	गर	3|32	7:18	17:31	25|32	24:50	मिथुन 9|31	19	2	भद्रा 18:53 से 29:11 तक, पूर्णिमाव्रत, G
15	शनि	20|29	15:30	आर्द्रा	25|15	17:24	ब्रह्म ऐन्द्र	04|28 54|58	बव	20|29	7:18	17:32	25|33	25:18	मिथुन	20	3	स्नान-दान-श्राद्धपूर्णिमा, पौषी पूर्णिमा, तूलपरीक्षा,H

A उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ, B विनायकचतुर्थीव्रत, गणेश चतुर्थी, C मदनमोहनमालवीय जयन्ती, दीनदयाल जयन्ती, क्रिसमस डे (ईसाई), D फतेह सिंह शहीदी दिवस, जोड़मेला (पंजाब), शहीद ऊधमसिंह जयन्ती, E गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (प्राचीन मत) F सूर्यपूजा, पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त), रेवतमन्वादि, G सत्यनारायण व्रत, H दशाश्वमेध गंगा स्नान, शाकम्भरीजयन्ती, माघस्नानारम्भ, हजरत अली जयन्ती ॥ **पूर्णिमातः माघस्नानारम्भे मन्त्रः** - दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशिने। **माघे विष्णुपूजा-** पौष्यां तु समतीतायां यावद्भवति पौर्णिमा। माघमासस्य तावधि पूजा विष्णोर्विधीयते ॥ **माघे अर्घ्यदानमन्त्रः** - सवित्रे प्रसवित्रे च परं धाम जले मम। त्वत्तेजसा परिभ्रष्ट पार्ष यातु सहस्रधा।

पौष शुक्ल अष्टमी रविवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 28/12/2025

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	08	11	08	07	02	08	11	10	04
अंश	12	15	15	28	27	10	01	18	18
कला	20	48	28	29	29	03	37	08	08
विक.	40	39	01	53	57	44	50	24	24
गति	61	812	45	89	व07	75	03	व03	व03
	08	23	47	50	35	31	04	10	10



वैशाख शुक्ल पूर्णिमा शनिवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 03/01/2026



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	08	02	08	08	02	08	11	10	04
अंश	18	13	20	07	26	17	01	17	17
कला	27	40	03	36	43	36	58	49	49
विक.	37	43	44	36	10	51	21	29	29
गति	61	900	46	91	व07	75	03	व03	व03
	08	52	02	58	58	29	38	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 माघ कृष्णपक्ष (दिनांक 04 जनवरी से 18 जनवरी 2026 ई. तक)

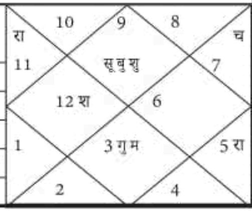
कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु, केतकी अहर्गण- 5387, अयनांश - 24/12/12

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	रवि	12|50	12:26	पुनर्वसु	19|26	15: 5	वैधृति	45|22	कौलव	12|50	7:18	17:32	25|35	25:45	कर्क 09|40	21	4	माघ में मूली भक्षण निषेध
2	सोम	6|31	9:55	पुष्य	15| 1	13:19	विष्कुम्भ	37|51	गर	6|31	7:18	17:33	25|36	26:12	कर्क	22	5	भद्रा 20:59 से, गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती - A
3 4	मंगल	01|51 59|01	08:03 30:55	आश्लेषा	12|17	12:14	प्रीति	31|54	विष्टि	1|51	7:19	17:34	25|38	26:38	सिंह 12|14	23	6	भद्रा 08:03 तक, सङ्कष्टहरचतुर्थी व्रत, B
5	बुध	58|13	30:36	मघा	11|21	11:51	आयुष्मान	27|27	कौलव	28|37	7:19	17:35	25|39	27:4	सिंह	24	7	
6	गुरु	59|24	7:04	पू.फा.	12|29	12:18	सौभाग्य	24|43	गर	28|48	7:19	17:35	25|41	27:30	कन्या 18|44	25	8	भद्रा 31:04 से.
7	शुक्र	60|00	-:-	उ.फा.	15|30	13:31	शोभन	23|27	विष्टि	30|59	7:19	17:36	25|43	27:55	कन्या	26	9	स्नान-दान-श्राद्धपूर्णिमा, पौषी पूर्णिमा, तूलपरीक्षा,C
7	शनि	2| 35	8:21	हस्त	20|25	15:29	अतिगण्ड	23|39	बव	2| 35	7:19	17:37	25|45	28:19	तुला 28|45	27	10	कालाष्टमी, अष्टक श्राद्ध,
8	रवि	7| 21	10:16	चित्रा	26|45	18: 1	सुकर्मा	24|55	कौलव	7| 21	7:19	17:38	25|47	28:43	तुला	28	11	अन्वष्टका श्राद्ध,
9	सोम	13|21	12:39	स्वाति	34| 7	20:58	धृति	26|59	गर	13|21	7:19	17:38	25|49	29:7	तुला	29	12	भद्रा 25:58 से, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, D
10	मंगल	19|56	15:17	विशाखा	41|55	24: 5	शूल	29|21	विष्टि	19|56	7:19	17:39	25|51	29:30	वृश्चिक 17|18	30	13	भद्रा 15:17 तक, लोहिडी (पंजाब)
11	बुध	26|34	17:57	अनुराधा	49|37	27:10	गण्ड	31|40	बालव	26|34	7:19	17:40	25|53	29:53	वृश्चिक	1	14	षट्तिला एकादशी व्रत (समस्त), सूर्य मकर में - E
12	गुरु	32|48	20:26	ज्येष्ठा	56|49	30: 2	वृद्धि	33|36	कौलव	32|48	7:19	17:41	25|55	30:14	वृश्चिक	2	15	षट्तिला द्वादशी,
13	शुक्र	38|8	22:34	मूल	60|00	-:-	ध्रुव	34|52	गर	5|28	7:18	17:42	25|58	30:36	धनु 30|02	3	16	भद्रा 22:34 से, प्रदोषव्रत, मेरुत्रयोदशी (जैन)
14	शनि	42|31	24:19	मूल	2|20	8:15	व्याघात	35|23	विष्टि	10|19	7:18	17:43	26| 0	30:56	धनु	4	17	भद्रा 11:26 तक, मासशिवरात्रि,
30	रवि	45|42	25:35	पू.षा.	7|22	10:15	हर्षण	35| 0	चतुष्पाद	14|6	7:18	17:43	26| 3	31:17	मकर 16|39	5	18	मौनी-अमावस्या, माघी अमावस्या, द्वापर युगादि,F

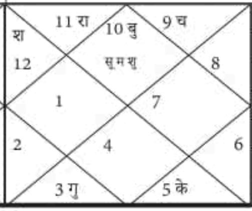
A (नवीन मत), B चन्द्रोदय 20:55, संकट चौथ (गढवाल), गणेश चतुर्थी व्रत, गणेशोत्पत्ति, चन्द्रार्घ्यदान, C दशाश्वमेध गंगा स्नान, शाकम्भरीजयन्ती, माघस्नानारम्भ, D युव दिवस E 15:05 बजे, सङ्क्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न से सूर्यास्त तका खिचडी संक्रान्ति, पोंगल (द.भा.), भोगी बिहु (असम), उत्तरेणी कौथिक (उत्तराखण्ड), बागेश्वर मेला F त्रिवेणी गंगा स्नान, थई अमावस्या॥ **माघकृष्णगणेशपूजनम्** - खर्व स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्। दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥ **अर्थोदययोगविशेषः** - अमार्कपातश्रवणैर्युक्ता चेत् पौषमाघयोः। अर्थादयः स विज्ञेयः कोटिसूर्यग्रहैः समः॥

माघ कृष्ण अष्टमी रविवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 11/01/2026

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	08	06	02	08	02	08	11	10	04
अंश	26	01	26	20	25	27	02	17	17
कला	36	14	13	06	38	40	30	23	23
विक.	51	51	30	35	38	47	40	52	52
गति	61	729	46	95	व08	75	04	व03	व03
	08	14	20	11	07	28	21	10	10



माघ कृष्ण अमावस्या रविवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 18/01/2026



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	9	8	9	9	2	9	11	10	4
अंश	03	25	01	01	24	06	03	17	17
कला	44	09	38	26	42	28	03	01	01
विक.	37	22	53	12	26	56	32	47	47
गति	61	737	46	98	व07	75	04	व03	व03
	05	30	34	37	55	27	55	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 माघ शुक्लपक्ष (दिनांक 19 जनवरी से 01 फरवरी 2026 ई. तक)

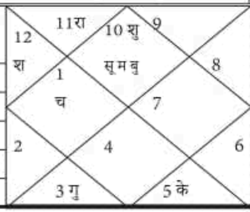
कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु, केतकी अहर्गण- 5402, अयनांश - 24/12/14

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	सोम	47|57	26:29	उ.षा.	11|27	11:53	वज्र	33|55	किस्तुघ्न	16|49	7:18	17:44	26| 5	31:36	मकर	6	19	शिशिर गुप्त नवरात्रारम्भ, घटस्थापन,
2	मंगल	49|16	27: 1	श्रवण	14|40	13:10	सिद्धि	32| 8	बालव	18|37	7:18	17:45	26| 8	31:55	कुम्भ 25|36	7	20	पञ्चक आरम्भ 25:36, चन्द्रदर्शन, सायन सूर्य - A
3	बुध	49|30	27: 6	धनिष्ठा	16|51	14: 2	व्यतिपात	29|31	तैतिल	19|23	7:17	17:46	26|11	32:13	कुम्भ	8	21	गौरीतृतीयाव्रत, गुडलवणदान, सोपपदम्
4	गुरु	48|50	26:49	शतभिषा	18|10	14:33	वरीयान	26|13	वणिज	19|10	7:17	17:47	26|14	32:30	कुम्भ	9	22	भद्रा 14:57 से 26:49 तक, तिलचतुर्थी, B
5	शुक्र	47|5	26: 7	पू.भा.	18|28	14:40	परिघ	22| 5	बव	17|58	7:17	17:48	26|16	32:47	मीन 08|38	10	23	वसन्तपञ्चमी, सरस्वतीपूजन, मदनपञ्चमी, C
6	शनि	44|27	25: 4	उ.भा.	17|52	14:26	शिव	17|14	कौलव	15|46	7:17	17:49	26|19	33:3	मीन	11	24	स्कन्दषष्ठी, शीतलाषष्ठी,
7	रवि	40|37	23:31	रेवती	16|11	13:45	सिद्ध	11|31	गर	12|32	7:16	17:49	26|22	33:18	मेष 13|45	12	25	भद्रा 23:31 से, पञ्चक समाप्त 13:45, D
8	सोम	35|48	21:35	अश्विनी	13|31	12:40	साध्य शुभ	05|01 57|48	विष्टि	8|12	7:16	17:50	26|26	33:32	मेष	13	26	भद्रा 10:33 तक, भीमाष्टमी, गणतन्त्र दिवस, E
9	मंगल	30|5	19:18	भरणी	9|56	11:14	शुक्ल	50|38	बालव	2|56	7:15	17:51	26|29	33:46	वृष 16|48	14	27	महानन्दानवमी, गुप्तनवरात्र समाप्त, F
10	बुध	23|38	16:42	कृत्तिका	5|34	9:29	ब्रह्म	42| 1	गर	23|38	7:15	17:52	26|32	33:58	वृष	15	28	भद्रा 27:20 से,
11	गुरु	16|47	13:58	रोहिणी मृगशिरा	00|43 55|36	07:32 29:29	ऐन्द्र	33|11	विष्टि	16|47	7:15	17:53	26|35	34:11	मिथुन 18|30	16	29	भद्रा 13:58 तक, जया एकादशी व्रत (समस्त), G
12	शुक्र	9|45	11: 8	आर्द्रा	50|26	27:25	वैधृति	24|17	बालव	9|45	7:14	17:54	26|38	34:22	मिथुन	17	30	तिलद्वादशी, भीम द्वादशी, आमलकी द्वादशी, H
13 14	शनि	02|56 54|17	08:24 28:57	पुनर्वसु	45|29	25:25	विष्कुम्भ	15|42	तैतिल	2|56	7:14	17:55	26|42	34:32	कर्क 19|55	18	31	भद्रा 28:57 से, मरुमहोत्सव आरम्भ (जैसलमेर), I
15	रवि	50|18	27:20	पुष्य	41|19	23:45	प्रीति	7|38	विष्टि	22|17	7:13	17:55	26|45	34:42	कर्क	19	1फर.	भद्रा 16:08 तक, महामाघीपूर्णिमा, पूर्णिमाव्रत, J

A कुम्भ में 07:41, B कुन्दचतुर्थी, विनायकचतुर्थी, गौरी चतुर्थी, C वागीश्वरी जयन्ती, लेखनीपूजन (बंगाल), तक्षक पूजा, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती, D रथसप्तमी, सूर्य जयन्ती, आरोग्यसप्तमी, अभोज्यार्कव्रत, पुत्रसप्तमी, अचलासप्तमी, मन्वादि, भानुसप्तमी, E भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, F नन्दिनीदेवी पूजन G भैमी एकादशी, भक्तपुण्डरीकोत्सव (पण्डरीपुर महाराष्ट्र), भीष्मद्वादशी, बीष्मतर्पण, सोपपदद्वादशी, H प्रदोषव्रत, कल्पादि, I मेला कैलासाश्रम हृषीकेश, J सत्यनारायण व्रत, गुरुरविदासजयन्ती, श्रीललिताजयन्ती, माघ स्नान समाप्त, कम्बलदान, मरुमहोत्सव समाप्त (जैसलमेर), थाईपूसम् (तमिलनाडु) ॥

माघ शुक्ल अष्टमी सोमवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 26/01/2026

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	9	00	09	09	02	9	11	10	4
अंश	11	10	07	14	23	16	03	16	16
कला	52	12	52	55	41	32	45	36	36
विक.	55	19	32	51	13	02	32	11	11
गति	61	832	46	103	व07	75	05	व03	व03
	01	54	49	15	23	21	29	10	10



माघ शुक्ल पूर्णिमा रविवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 01/02/2026



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	9	3	9	9	2	9	11	10	4
अंश	17	06	12	25	22	24	04	16	16
कला	58	43	33	25	59	03	19	17	17
विक.	21	19	50	43	07	58	54	07	07
गति	60	866	46	106	व06	75	05	व03	व03
	54	11	56	01	44	19	53	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 फाल्गुन कृष्णपक्ष (दिनांक 02 फरवरी से 17 फरवरी 2026 ई. तक)

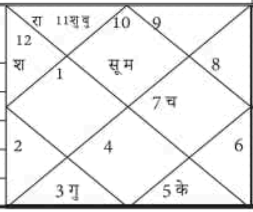
कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु, केतकी अहर्गण- 5416, अयनांश - 24/12/16

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	सोम	45|47	25:31	आश्लेषा	38|20	22:33	आयुष्मान सौभाग्य	00|21 54|03	बालव	18|2	7:13	17:56	26|49	34:51	सिंह 22|33	20	2	
2	मंगल	42|46	24:19	मघा	36|45	21:54	शोभन	47|38	तैतिल	14|16	7:12	17:57	26|52	34:59	सिंह	21	3	
3	बुध	41|20	23:43	पू.फा.	36|41	21:52	अतिगण्ड	43|40	वणिज	12|3	7:11	17:58	26|56	35:6	कन्या 28|12	22	4	भद्रा 12:01 से 23:43 तक,
4	गुरु	41|50	23:55	उ.फा.	38|29	22:34	सुकर्मा	41|14	बव	11|35	7:11	17:59	26|59	35:12	कन्या	23	5	श्रीगणेश सङ्कष्टहरचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21:35
5	शुक्र	44|4	24:48	हस्त	41|56	23:57	धृति	40| 7	कौलव	12|57	7:10	18:00	27| 3	35:18	कन्या	24	6	
6	शनि	48|0	26:22	चित्रा	47| 2	25:58	शूल	40|18	गर	16|2	7: 9	18:00	27| 7	35:23	तुला 12|57	25	7	भद्रा 26:22 से,
7	रवि	53|32	28:34	स्वाति	53|40	28:37	गण्ड	41|41	विष्टि	20|46	7: 9	18:01	27|10	35:27	तुला	26	8	भद्रा 15:28, व्यष्टकाश्राद्ध, भानु सप्तमी
8	सोम	60|00	-:-	विशाखा	60|00	-:-	वृद्धि	43|48	बालव	27|10	7: 8	18:02	27|14	35:30	वृश्चिक 25|15	27	9	अष्टकाश्राद्ध, कालाष्टमी
8	मंगल	0|49	7:27	विशाखा	1|57	7:54	ध्रुव	46|19	कौलव	0|49	7: 7	18:03	27|18	35:32	वृश्चिक	28	10	अन्वष्टकाश्राद्ध,सीताष्टमी, जानकी जयन्ती,हलाष्टमी,
9	बुध	7|17	10: 2	अनुराधा	9|30	10:55	व्याघात	48|42	गर	7|17	7: 7	18:04	27|22	35:33	वृश्चिक	29	11	भद्रा 23:15 से,
10	गुरु	13|28	12:29	ज्येष्ठा	16|46	13:48	हर्षण	50|33	विष्टि	13|28	7: 6	18:04	27|26	35:34	धनु 13|48	1	12	भद्रा 12:29 तक, सूर्य कुम्भ में 28:04 बजे
11	शुक्र	18|47	14:36	मूल	23|13	16:22	वज्र	51|33	बालव	18|47	7: 5	18:05	27|30	35:34	धनु	2	13	विजया-एकादशीव्रत (समस्त),सङ्क्रान्ति पुण्यकालA
12	शनि	22|48	16:11	पू.षा.	28|25	18:26	सिद्धि	51|21	तैतिल	22|48	7: 4	18:06	27|34	35:33	मकर 24|50	3	14	शनिप्रदोष, महाद्वादशी, तिलद्वादशी
13	रवि	25|32	17:17	उ.षा.	32|25	20: 2	व्यतिपात	50|11	वणिज	25|32	7: 3	18:07	27|38	35:31	मकर	4	15	भद्रा 17:17 से 29:30 तक, श्री महाशिवरात्रि, B
14	सोम	26|42	17:44	श्रवण	34|52	21: 0	वरीयान	47|41	शकुनि	26|42	7: 3	18:07	27|41	35:29	मकर	5	16	महाशिवरात्रि व्रत पारणा,
30	मंगल	26|37	17:41	धनिष्ठा	36| 9	21:30	परिघ	44|18	नाग	26|37	7: 2	18:08	27|46	35:26	कुम्भ 9|15	6	17	पञ्चक आरम्भ 09:15, फाल्गुनी-अमावस्या,

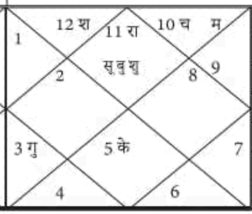
A सूर्योदय से मध्याह्न तक। B मेला शिवरात्रि, आरटन्ती चतुर्दशी, श्रीवैद्यनाथ जयन्ती, अर्धरात्रि में बिल्व से शिवार्चन, C युगादि अमावस्या, ब्रह्मपूजा ॥ **शिवरात्रि-** माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः॥ शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता। मम भक्त्यस्तु यो देवि शिवरात्रिमुपोषकः। गणत्वमक्षयं दिव्यं लभते शिवशासनम् ॥ सर्वान्भुक्त्वा महाभोगान् ततो मोक्षमवाप्नुयात्॥ **शिवरात्रिनिर्णयः** - तत्कालव्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रिव्रते तिथिः। अध रात्रादधश्चोर्ध्व युक्ता यत्र चतुर्दशी ॥ **शिवरात्रिपूजने विशेषः** - तद्दिने प्रथमप्रहरे दुग्धेन 'ऊं ह्रीं ईशानाय नमः' इति मन्त्रेण, द्वितीयप्रहरे दधिद्वारा 'ऊं ह्रीं अघोराय नमः' इति मन्त्रेण, तृतीयप्रहरे घृतेन' ऊ ह्रौं वामदेवाय नमः' इति मन्त्रेण तथा च चतुर्थप्रहरे मधुद्वारा 'ऊं ह्रौं सद्योजाताय नमः' इति मन्त्रेण पूजनमभिषेकं च कुर्यात्। अर्धरात्रौ विल्वार्चनं कार्यम्॥

फाल्गुन कृष्ण अष्टमी सोमवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 09/02/2026

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	9	06	09	10	02	10	11	10	4
अंश	26	21	18	09	22	04	05	15	15
कला	04	04	50	29	10	05	09	51	51
विक.	59	10	03	34	03	45	01	42	42
गति	60	720	47	103	व05	75	06	व03	व03
	47	58	07	34	38	13	20	10	10



फाल्गुन कृष्ण अमावस्या मंगलवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 17/02/2026



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	10	9	9	10	02	10	11	10	4
अंश	04	28	25	23	21	14	06	15	15
कला	10	52	07	54	30	06	01	26	26
विक.	00	55	13	28	52	29	26	16	16
गति	60	775	47	80	व04	75	06	व03	व03
	35	03	12	33	18	02	42	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 फाल्गुन शुक्ल पक्ष (दिनांक 18 फरवरी से 03 मार्च 2026 ई. तक)

कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर/वसन्त ऋतु, केतकी अहर्गण-5432, अयनांश - 24/12/18

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	बुध	25|12	17:6	शतभिषा	36| 7	21:28	शिव	39|51	बव	25|12	7:1	18:09	27|50	35:22	कुम्भ	7	18	चन्द्रदर्शन, सायन सूर्य मीन में 21:46, वसन्तऋतु A
2	गुरु	22|51	16:8	पू.भा.	35|13	21:6	सिद्ध	34|46	कौलव	22|51	7:0	18:10	27|54	35:17	मीन 15|11	8	19	फूलेरा दुज, रामकृष्ण परमहंस जयन्ती, B
3	शुक्र	19|29	14:47	उ.भा.	33|21	20:20	साध्य	28|54	गर	19|29	6:59	18:10	27|58	35:11	मीन	9	20	भद्रा 25:57 से,
4	शनि	15|24	13:8	रेवती	30|47	19:17	शुभ	22|29	विष्टि	15|24	6:58	18:11	28| 2	35:5	मेष 19|17	10	21	भद्रा 13:08 तक, पञ्चक समाप्त 19:17, C
5	रवि	10|49	11:17	अश्विनी	27|46	18:4	शुक्ल	15|43	बालव	10|49	6:57	18:12	28| 6	34:58	मेष	11	22	
6	सोम	5|44	9:14	भरणी	24|18	16:40	ब्रह्म	8|35	तैतिल	5|44	6:56	18:12	28|10	34:51	वृष 22|18	12	23	गोरूपिणी षष्ठीव्रत (बंगाल),
7 8	मंगल	00|27 54|57	07:6 30:06	कृत्तिका	20|40	15:11	ऐन्द्र वैधृति	01|18 53|52	वणिज	0|27	6:55	18:13	28|14	34:42	वृष	13	24	भद्रा 07:06 से 18:36 तक, कामदासप्तमी, D
9	बुध	49|24	26:40	रोहिणी	16|51	13:39	विष्कुम्भ	46|22	बालव	22|10	6:54	18:14	28|18	34:34	मिथुन 24|55	14	25	
10	गुरु	44|3	24:31	मृगशिरा	13|13	12:11	प्रीति	39| 3	तैतिल	16|44	6:53	18:15	28|23	34:24	मिथुन	15	26	फल्गुदशमी (ओडिशा), महर्षि दयानन्द जयन्ती
11	शुक्र	38|56	22:27	आर्द्रा	9|47	10:47	आयुष्मान	31|56	वणिज	11|30	6:52	18:15	28|27	34:14	कर्क 27|51	16	27	भद्रा 11:29 से 22:27 तक, आमलकी एकादशी-E
12	शनि	34|22	20:36	पुनर्वसु	6|44	9:33	सौभाग्य	25|15	बव	6|39	6:51	18:16	28|31	34:3	कर्क	17	28	गोविन्दद्वादशी, नृसिंहद्वादशी
13	रवि	30|32	19:3	पुष्य	4|19	8:34	शोभन	19| 8	कौलव	2|27	6:50	18:17	28|35	33:52	कर्क	18	1मार्च	रवि प्रदोषव्रत, माहेश्वरव्रत,
14	सोम	27|32	17:50	आश्लेषा	2|38	7:53	अतिगण्ड	13|40	वणिज	27|32	6:49	18:17	28|39	33:40	सिंह 07|53	19	2	भद्रा 17:50 से 29:26 तक, पूर्णिमाव्रत, F
15	मंगल	25|36	17:3	मघा	1|54	7:34	सुकर्मा	9| 1	बव	25|36	6:48	18:18	28|44	33:27	सिंह	20	3	काशी में होली, फाल्गुन स्नान-दानादि पूर्णिमा, G

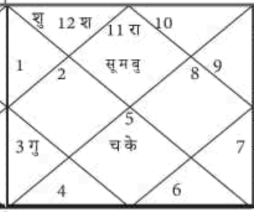
A आरम्भ, B शिवाजी जयन्ती (महा.), रमजान, C गणेश चतुर्थी, विनायकचतुर्थी, पुत्रगणपति व्रत, तिलचतुर्थी, D अन्नपूर्णा-अष्टमी, सीताष्टमी, दुर्गाष्टमी, ओली (जैन) प्रारम्भ, होलाष्टक आरम्भ, E व्रत (समस्त), रङ्गभरी एकादशी व्रत, चन्द्रशेखर आजाद शहीदी दिवस, F सत्यनारायण व्रत, होलाष्टक समाप्त, होलिका दहन भद्रापुच्छ अथवा भद्रा के अन्त में। G श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती, मन्वादि, औली (जैन) समाप्त, ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण ॥ **होलिका पूजन** - निशागमे प्रपूज्येत होलिका सर्वदा बुधैः। न दिवा पूजयेड्डुण्डां पूजिता दुःखदा भवेत्। **होलिकाप्रदीपनमन्त्रः** - दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः ॥ **होलाष्टकनिषेधः** - विपाशेरावतीतीरे शुतद्रूश्च त्रिपुष्करे। विवाहादिशुभे नेष्टं होलिका प्राग्दिनाष्टकम्॥ **होलिकाभस्मधारणमन्त्रः**- वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहि नो भीतेभूषिता भूतिया भव॥

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी मंगलवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 24/02/2026

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	10	1	10	10	2	10	11	10	04
अंश	11	05	00	28	21	22	06	15	15
कला	13	07	37	02	05	51	59	04	04
विक.	04	04	45	43	51	04	29	02	02
गति	60	850	47	27	व03	74	06	व03	व03
	24	06	16	20	01	54	58	10	10



फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार औदयिक स्पष्टग्रह दि. 03/03/2026



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	10	04	10	10	02	11	11	10	04
अंश	18	12	06	25	20	01	07	14	14
कला	14	54	08	39	50	34	39	41	41
विक.	47	13	30	19	08	32	12	47	47
गति	60	811	47	व39	व01	74	07	व03	व03
	12	20	17	05	40	46	12	10	10

विक्रम संवत् 2082, शाके 1947 चैत्र कृष्णपक्ष (दिनांक 04 मार्च से 19 मार्च 2026 ई. तक)

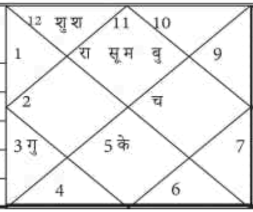
कालयुक्त संवत्सर, उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्तऋतु, केतकी अहर्गण- 5446, अयनांश - 24/12/20

तिथि	वार	घटी प.	घंटा मि.	नक्षत्र	घटी पल.	घंटा मि.	योग	घटी प.	करण	घटी प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनमान	स्टै अ.	चन्द्रचार	प्रवि.	दिनांक	व्रत,पर्व,उत्सवादि विवरण
1	बुध	24|49	16:43	पू.फा.	2|15	7:41	धृति	5|15	कौलव	24|49	6:47	18:18	28|48	33:14	कन्या 13|50	21	4	वसन्तोत्सव, रङ्गोत्सव, होलिकाभस्मधारण, A
2	गुरु	25|22	16:55	उ.फा.	3|49	8:18	शूल	2|29	गर	25|22	6:46	18:19	28|52	33:0	कन्या	22	5	भद्रा 29:18 से,
3	शुक्र	27|19	17:41	हस्त	6|44	9:27	गण्ड	0|47	विष्टि	27|19	6:45	18:20	28|57	32:46	तुला 22|17	23	6	भद्रा 17:41 तक, श्रीगणेश सङ्कष्टहरचतुर्थी,
4	शनि	30|41	19: 0	चित्रा	11| 0	11: 8	वृद्धि	0|10	बालव	30|41	6:44	18:20	29| 1	32:32	तुला	24	7	
5	रवि	35|31	20:55	स्वाति	16|40	13:23	ध्रुव	0|40	कौलव	3|6	6:43	18:21	29| 5	32:17	तुला	25	8	रङ्गपञ्चमी, मेला-नौचन्दीप्रारम्भ (मेरठ), C
6	सोम	41|21	23:14	विशाखा	23|23	16: 3	व्याघात	2| 3	गर	8|26	6:42	18:22	29| 9	32:1	वृश्चिक 09|23	26	9	भद्रा 23:14 से, एकनाथषष्ठी (महाराष्ट्र), D
7	मंगल	47|55	25:51	अनुराधा	30|53	19: 2	हर्षण	4| 6	विष्टि	14|38	6:40	18:22	29|14	31:46	वृश्चिक	27	10	भद्रा 12:32 तक, शीतलासप्तमी, व्यष्टकाश्राद्ध, E
8	बुध	54|28	28:27	ज्येष्ठा	38|31	22: 4	वज्र	6|22	बालव	21|12	6:39	18:23	29|18	31:29	धनु 22|14	28	11	शीतलाष्टमी (बासोडा), अष्टकाश्राद्ध, कालाष्टमी
9	गुरु	59|57	30:36	मूल	45|49	24:58	सिद्धि	8|31	तैतिल	27|12	6:38	18:23	29|22	31:13	धनु	29	12	अन्वष्टकाश्राद्ध
10	शुक्र	60|00	-:-	पू.षा.	52| 2	27:26	व्यतिपात	10| 0	वणिज	32|04	6:37	18:24	29|27	30:56	धनु	30	13	भद्रा 19:34 से,
10	शनि	04|12	8:16	उ.षा.	56|45	29:18	वरीयान	10|29	विष्टि	4|12	6:36	18:24	29|31	30:39	मकर 09|54	1	14	भद्रा 08:17 तक, सूर्य मीन में 24:54 बजे
11	रवि	6|59	9:22	श्रवण	58|26	29:57	परिघ	9|47	बालव	6|59	6:35	18:25	29|35	30:21	मकर	2	15	पापमोचिनी एकादशी व्रत (समस्त), सङ्क्रान्ति F
12	सोम	7|57	9:44	धनिष्ठा	59|31	30:22	शिव	7|41	तैतिल	7|57	6:34	18:26	29|40	30:4	कुम्भ 18|09	3	16	पञ्चक आरम्भ 18:09, सोम प्रदोषव्रत,
13	मंगल	7|11	9:25	शतभिषा	58|59	30:07	सिद्ध साध्य	4|14 59|31	वणिज	7|11	6:32	18:26	29|44	29:46	कुम्भ	4	17	भद्रा 09:25 से 20:55 तक, मासशिवसूत्रि, G
14	बुध	4|46	8:26	पू.भा.	58|23	29:53	शुभ	54|50	शकुनि	4|46	6:31	18:27	29|48	29:28	मीन 23|56	5	18	श्राद्धादि अमावस्या, मेला पेहवा (हरियाणा)
30 1	गुरु	0|59 50|59	6:54 26:53	उ.भा.	55| 7	28:33	शुक्ल	47|49	नाग	0|59	6:30	18:27	29|53	29:09	मीन	6	19	चैती अमावस्या, स्नान-दान-अमावस्या, वर्षान्त, H

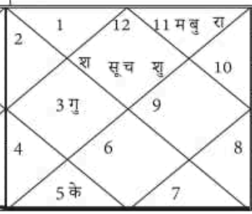
A धूलिवन्दन, धुलैण्डी, आम्रकुसुमप्राशन, कुलदेवता को सिन्दूर अर्पण, होलामोहल्ला-श्रीआनन्दपुरसाहिब, B कल्पादि, चन्द्रोदय 21:14, C झण्डामेला प्रारम्भ (देहरादुन), अन्ताराष्ट्रिय महिला दिवस, D स्कन्दषष्ठी (बंगाल), E काशी में बुढवा मंगल पर्व, मेला-नौचन्दी समाप्त (मेरठ), झण्डामेला समाप्त (देहरादुन) F पुण्यकाल सूर्योदय से मध्याह्न तक, विश्व उपभोक्ता संरक्षण दिवस, विश्व दिव्याङ्ग दिवस G वारुणीयोग H मन्वादि, पूर्णवत्सरी-अमावस्या, वि.सं.2082 समाप्त, नववर्ष आरम्भ संवत् 2083, शक -1948, । **चैत्रकृष्ण प्रतिपदिने कर्त्तव्यम्** - प्रवृत्ते मधुमासे तु प्रतिपद्युदिते रवी। कृत्वा चावश्यककार्याणि सन्तर्प्य पितृदेवताः। वन्दयेत् होलिकाभूमिं सर्वदुः खोपशान्तये। यतस्तत्र श्वपचं स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्यान्नरोत्तमः। न तस्य दुरितं किचिन्नाधयों व्याधयो नृप॥ **आम्रकुसुमप्राशनमन्त्रः** - चूतमग्र्यं वमन्तस्य माकन्दकुसुमं तव। सचन्दनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थसिद्धये ॥

चैत्र कृष्ण अष्टमी   बुधवार   औदयिक स्पष्टग्रह   दि. 11/03/2026

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	10	07	10	10	02	11	11	10	04
अंश	26	22	12	18	20	11	08	14	14
कला	14	23	26	02	43	31	37	16	16
विक.	53	08	25	19	54	09	30	22	22
गति	59	711	47	व58	व0	74	07	व03	व03
	56	38	15	00	05	31	21	10	10



चैत्र कृष्ण अमावस्या   गुरुवार   औदयिक स्पष्टग्रह   दि. 19/03/2026



ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	11	11	10	10	02	11	11	10	04
अंश	04	04	18	14	20	21	09	13	13
कला	12	00	43	24	50	25	36	50	50
विक.	57	12	53	07	12	58	48	57	57
गति	59	827	47	व13	01	74	07	व03	व03
	40	03	10	19	27	18	27	10	10

औदयिक स्पष्ट ग्रह अप्रैल - 2025

दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
1	11	17	20	24	0	23	37	25	2	29	28	17	11	4	29	46	1	21	40	52	11	3	10	4	11	0	11	12	11	2	30	11
2	11	18	19	33	1	8	24	6	2	29	38	1	11	3	57	41	1	21	50	13	11	2	43	1	11	0	18	23	11	2	27	1
3	11	19	18	40	1	22	50	41	3	0	8	5	11	3	30	52	1	21	59	42	11	2	17	47	11	0	25	31	11	2	23	50
4	11	20	17	46	2	6	51	52	3	0	28	30	11	3	9	23	1	22	9	18	11	1	55	3	11	0	32	39	11	2	20	39
5	11	21	16	49	2	20	28	32	3	0	49	16	11	2	53	26	1	22	18	59	11	1	37	28	11	0	39	45	11	2	17	29
6	11	22	15	51	3	3	40	28	3	1	10	22	11	2	43	2	1	22	28	48	11	1	16	31	11	0	46	48	11	2	14	18
7	11	23	14	51	3	16	31	0	3	1	31	47	11	2	37	59	1	22	38	42	11	1	0	50	11	0	53	51	11	2	11	8
8	11	24	13	48	3	29	2	27	3	1	53	30	11	2	38	11	1	22	48	43	11	0	47	42	11	1	0	52	11	2	7	57
9	11	25	12	44	4	11	20	12	3	2	15	35	11	2	43	44	1	22	58	50	11	0	36	56	11	1	7	53	11	2	4	46
10	11	26	11	36	4	23	27	8	3	2	37	53	11	2	54	17	1	23	9	4	11	0	28	36	11	1	14	50	11	2	1	36
11	11	27	10	28	5	5	26	15	3	3	0	31	11	3	29	46	1	23	19	24	11	0	22	51	11	1	21	46	11	1	58	25
12	11	28	9	17	5	17	20	58	3	3	23	26	11	3	54	56	1	23	29	49	11	0	19	37	11	1	28	38	11	1	55	14
13	11	29	8	6	5	29	12	12	3	3	46	38	11	3	23	43	1	23	40	22	11	0	18	43	11	1	35	31	11	1	52	4
14	0	0	6	50	6	11	2	29	3	4	10	8	11	4	57	47	1	23	50	58	11	0	20	13	11	1	42	20	11	1	48	53
15	0	1	5	35	6	22	52	50	3	4	33	52	11	4	34	3	1	24	1	41	11	0	24	1	11	1	49	7	11	1	45	42
16	0	2	4	15	7	4	45	3	3	4	57	53	11	5	15	17	1	24	12	30	11	0	30	8	11	1	55	52	11	1	42	32
17	0	3	2	55	7	16	42	16	3	5	22	3	11	6	0	25	1	24	23	23	11	0	38	34	11	2	2	35	11	1	39	21
18	0	4	1	32	7	28	46	6	3	5	46	40	11	7	48	8	1	24	34	23	11	0	48	59	11	2	9	16	11	1	36	11
19	0	5	0	9	8	11	1	40	3	6	11	26	11	7	39	24	1	24	45	27	11	1	1	45	11	2	15	54	11	1	33	00
20	0	5	58	42	8	23	31	10	3	6	36	25	11	8	34	57	1	24	56	36	11	1	16	27	11	2	22	30	11	1	29	49
21	0	6	57	15	9	6	19	22	3	7	1	41	11	9	32	44	1	25	7	49	11	1	33	6	11	2	29	3	11	1	26	39
22	0	7	55	43	9	19	29	21	3	7	27	10	11	10	33	30	1	25	19	9	11	1	51	44	11	2	35	34	11	1	23	28
23	0	8	54	13	10	3	3	10	3	7	52	53	11	11	36	13	1	25	30	33	11	2	12	16	11	2	42	2	11	1	20	17
24	0	9	52	38	10	17	2	56	3	8	18	57	11	12	42	40	1	25	42	2	11	2	34	29	11	2	48	28	11	1	17	7
25	0	10	51	4	11	1	27	51	3	8	44	56	11	13	51	50	1	25	53	36	11	2	58	31	11	2	54	50	11	1	13	56
26	0	11	49	27	11	16	15	42	3	9	11	18	11	14	2	32	1	26	5	14	11	3	24	15	11	3	1	12	11	1	10	45
27	0	12	47	46	0	1	20	13	3	9	37	52	11	16	16	39	1	26	16	56	11	3	51	26	11	3	7	28	11	1	7	35
28	0	13	46	8	0	16	34	31	3	10	4	38	11	17	32	13	1	26	28	44	11	4	20	19	11	3	13	43	11	1	4	24
29	0	14	44	24	1	1	47	10	3	10	31	35	11	18	50	3	1	26	40	35	11	4	50	28	11	3	19	54	11	1	1	18
30	0	15	42	40	1	16	47	57	3	10	58	46	11	19	10	11	1	26	52	30	11	5	22	20	11	3	26	2	11	0	58	3

औदयिक स्पष्ट ग्रह मई - 2025

दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
1	0	16	40	52	2	1	28	59	3	11	26	7	11	21	10	28	1	27	4	30	11	5	55	28	11	3	32	7	11	0	54	52
2	0	17	39	5	2	15	43	20	3	11	53	40	11	22	32	57	1	27	16	32	11	6	29	52	11	3	38	8	11	0	51	41
3	0	18	37	14	2	29	29	3	3	12	21	24	11	23	23	37	1	27	28	40	11	7	5	33	11	3	40	7	11	0	48	31
4	0	19	35	25	3	12	45	14	3	12	49	20	11	25	24	20	1	27	40	50	11	7	42	31	11	3	50	3	11	0	45	20
5	0	20	33	31	3	25	36	22	3	13	17	24	11	26	53	11	1	27	53	5	11	8	20	34	11	3	55	54	11	0	42	9
6	0	21	31	36	4	8	5	31	3	13	45	39	11	28	24	8	1	28	5	24	11	8	59	48	11	4	1	42	11	0	38	59
7	0	22	29	39	4	20	17	38	3	14	14	7	0	0	32	17	1	28	17	45	11	9	40	3	11	4	7	27	11	0	35	48
8	0	23	27	43	5	2	17	50	3	14	42	43	0	1	32	21	1	28	30	10	11	10	21	25	11	4	13	8	11	0	32	37
9	0	24	25	42	5	14	10	19	3	15	11	29	0	3	09	36	1	28	42	41	11	11	3	42	11	4	18	47	11	0	29	27
10	0	25	23	42	5	26	0	6	3	15	40	25	0	4	48	58	1	28	55	13	11	11	47	1	11	4	24	22	11	0	26	16
11	0	26	21	38	6	7	48	59	3	16	9	30	0	6	30	22	1	29	7	43	11	12	31	11	11	4	29	52	11	0	23	5
12	0	27	19	35	6	19	39	52	3	16	38	45	0	8	13	53	1	29	20	27	11	13	16	16	11	4	45	20	11	0	19	55
13	0	28	17	30	7	1	34	44	3	17	8	9	0	9	59	28	1	29	33	8	11	14	2	15	11	4	40	43	11	0	16	44
14	0	29	15	23	7	13	34	8	3	17	37	43	0	11	47	5	1	29	45	52	11	14	48	58	11	4	46	2	11	0	13	33
15	1	0	13	15	7	25	39	51	3	18	7	23	0	13	36	43	1	29	58	0	11	15	36	32	11	4	51	17	11	0	10	23
16	1	1	11	3	8	7	53	17	3	18	37	15	0	15	28	19	2	0	11	0	11	16	24	47	11	4	56	28	11	0	7	12
17	1	2	8	52	8	20	26	43	3	19	7	13	0	17	21	54	2	0	24	0	11	17	13	48	11	5	1	36	11	0	4	1
18	1	3	6	39	9	2	52	3	3	19	37	22	0	19	17	24	2	0	37	0	11	18	3	32	11	5	6	38	11	0	0	50
19	1	4	4	26	9	15	42	33	3	20	7	37	0	21	14	48	2	0	50	17	11	18	53	56	11	5	11	34	10	29	57	40
20	1	5	2	10	9	28	50	16	3	20	38	1	0	23	13	55	2	1	3	17	11	19	44	57	11	5	16	32	10	29	54	29
21	1	5	59	53	10	12	17	34	3	21	8	35	0	25	14	52	2	1	16	21	11	20	36	38	11	5	21	23	10	29	51	18
22	1	6	57	33	10	26	6	33	3	21	39	12	0	27	17	27	2	1	29	27	11	21	28	52	11	5	26	8	10	29	48	8
23	1	7	55	15	11	10	17	45	3	22	10	0	0	29	21	42	2	1	42	34	11	22	21	45	11	5	30	50	10	29	44	57
24	1	8	52	54	11	24	51	18	3	22	40	56	1	1	27	26	2	1	55	44	11	23	15	8	11	5	35	27	10	29	41	46
25	1	9	50	32	0	9	43	17	3	23	11	59	1	3	34	38	2	2	8	56	11	24	9	5	11	5	40	0	10	29	38	35
26	1	10	48	9	0	24	47	40	3	23	43	9	1	5	43	3	2	2	22	9	11	25	3	34	11	5	44	28	10	29	35	25
27	1	11	45	46	1	9	55	38	3	24	14	26	1	7	52	39	2	2	35	26	11	25	58	34	11	5	48	52	10	29	32	14
28	1	12	43	20	1	24	56	2	3	24	45	51	1	10	03	11	2	2	48	44	11	26	54	00	11	5	53	12	10	29	29	3
29	1	13	40	55	2	9	40	24	3	25	17	22	1	12	14	27	2	3	2	3	11	27	49	57	11	5	57	26	10	29	25	53
30	1	14	38	25	2	24	0	5	3	25	49	0	1	14	26	14	2	3	15	25	11	28	46	18	11	6	1	35	10	29	22	42
31	1	15	35	58	3	7	51	55	3	26	20	46	1	16	38	23	2	3	28	48	11	29	43	9	11	6	5	42	10	29	19	31

औदयिक स्पष्ट ग्रह जून - 2025

दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
1	1	16	33	28	3	21	14	19	3	26	52	38	1	18	50	31	2	3	42	13	0	0	40	24	11	6	9	41	10	29	16	20
2	1	17	30	57	4	4	9	42	3	27	24	37	1	21	02	23	2	3	55	39	0	1	38	2	11	6	13	36	10	29	13	10
3	1	18	28	27	4	16	41	41	3	27	56	42	1	23	13	46	2	4	9	8	0	2	26	7	11	6	17	26	10	29	9	59
4	1	19	25	54	4	28	54	24	3	28	28	54	1	25	24	19	2	4	22	36	0	3	34	33	11	6	21	11	10	29	6	48
5	1	20	23	21	5	10	54	15	3	29	1	13	1	27	33	50	2	4	36	7	0	4	33	22	11	6	24	52	10	29	3	37
6	1	21	20	46	5	22	45	51	3	29	33	36	1	29	42	2	2	4	49	38	0	5	32	31	11	6	28	27	10	29	0	27
7	1	22	18	11	6	4	44	7	4	0	6	7	2	1	48	40	2	5	3	11	0	6	32	3	11	6	31	56	10	28	57	16
8	1	23	15	34	6	16	24	18	4	0	38	44	2	3	53	37	2	5	16	45	0	7	31	54	11	6	35	22	10	28	54	5
9	1	24	12	58	6	28	17	55	4	1	11	27	2	5	56	39	2	5	30	20	0	8	32	5	11	6	38	41	10	28	50	54
10	1	25	10	20	7	10	18	55	4	1	44	17	2	7	57	35	2	5	43	56	0	9	32	35	11	6	41	55	10	28	47	44
11	1	26	7	43	7	22	28	8	4	2	17	11	2	9	56	26	2	5	57	33	0	10	33	25	11	6	45	4	10	28	44	33
12	1	27	5	3	8	4	46	50	4	2	50	12	2	11	53	2	2	6	11	10	0	11	34	32	11	6	48	8	10	28	41	22
13	1	28	2	23	8	17	14	56	4	3	23	18	2	13	47	16	2	6	24	49	0	12	35	56	11	6	51	6	10	28	38	11
14	1	28	59	42	8	29	53	41	4	3	56	31	2	15	39	9	2	6	38	27	0	13	37	36	11	6	53	59	10	28	35	0
15	1	29	57	2	9	12	43	19	4	4	29	48	2	17	28	38	2	6	52	7	0	14	39	35	11	6	56	46	10	28	31	50
16	2	0	54	21	9	25	44	53	4	5	3	12	2	19	15	38	2	7	5	48	0	15	41	49	11	6	59	27	10	28	28	39
17	2	1	51	39	10	8	59	51	4	5	36	41	2	21	0	10	2	7	19	29	0	16	44	19	11	7	2	4	10	28	25	28
18	2	2	48	58	10	22	29	3	4	6	10	46	2	22	42	11	2	7	33	9	0	17	47	5	11	7	4	34	10	28	22	17
19	2	3	46	13	11	6	14	32	4	6	43	55	2	24	21	38	2	7	46	51	0	18	50	3	11	7	7	0	10	28	19	6
20	2	4	43	30	11	20	16	39	4	7	17	40	2	25	58	33	2	8	0	32	0	19	53	17	11	7	9	19	10	28	15	56
21	2	5	40	45	0	4	36	18	4	7	51	31	2	27	32	53	2	8	14	14	0	20	56	44	11	7	11	34	10	28	12	45
22	2	6	38	2	0	19	10	46	4	8	25	26	2	29	4	40	2	8	27	58	0	22	0	27	11	7	13	41	10	28	9	34
23	2	7	35	16	1	3	55	18	4	8	59	26	3	0	33	50	2	8	41	39	0	23	4	21	11	7	15	43	10	28	6	23
24	2	8	32	33	1	18	44	19	4	9	33	33	3	2	0	27	2	8	55	22	0	24	8	30	11	7	17	40	10	28	3	12
25	2	9	29	47	2	3	28	35	4	10	7	43	3	3	24	25	2	9	9	3	0	25	12	49	11	7	19	31	10	28	0	2
26	2	10	27	0	2	18	0	22	4	10	42	0	3	4	45	47	2	9	22	45	0	26	17	21	11	7	21	16	10	27	56	51
27	2	11	24	14	3	2	12	48	4	11	16	21	3	6	4	32	2	9	36	27	0	27	22	6	11	7	22	55	10	27	53	40
28	2	12	21	28	3	16	1	25	4	11	50	46	3	7	20	38	2	9	50	9	0	28	27	1	11	7	24	28	10	27	50	29
29	2	13	18	42	3	29	24	7	4	12	25	17	3	8	34	5	2	10	3	50	0	29	32	9	11	7	25	55	10	27	47	18
30	2	14	15	55	4	12	20	50	4	12	59	53	3	9	44	59	2	10	17	30	1	0	37	28	11	7	27	17	10	27	44	7

औदयिक स्पष्ट ग्रह जुलाई - 2025

दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
1	2	15	13	8	4	24	55	35	4	13	34	34	3	10	52	46	2	10	31	10	1	1	42	57	11	7	28	32	10	27	40	57
2	2	16	10	21	5	7	11	8	4	14	9	18	3	11	57	56	2	10	44	50	1	2	48	37	11	7	29	41	10	27	37	46
3	2	17	7	34	5	19	12	49	4	14	44	9	3	13	0	12	2	10	58	29	1	3	54	27	11	7	30	44	10	27	34	35
4	2	18	4	48	6	1	5	36	4	15	19	3	3	13	59	32	2	11	12	8	1	5	0	28	11	7	31	42	10	27	31	26
5	2	19	2	0	6	12	55	46	4	15	54	3	3	14	55	46	2	11	25	46	1	6	6	37	11	7	32	33	10	27	28	13
6	2	19	59	14	6	24	47	19	4	16	29	7	3	15	48	52	2	11	39	23	1	7	12	59	11	7	33	18	10	27	25	3
7	2	20	56	28	7	6	44	48	4	17	4	15	3	16	38	41	2	11	52	59	1	8	19	28	11	7	33	57	10	27	21	52
8	2	21	53	40	7	18	52	39	4	17	39	28	3	17	25	1	2	12	6	34	1	9	26	7	11	7	34	30	10	27	18	41
9	2	22	50	56	8	1	11	23	4	18	14	47	3	18	7	51	2	12	20	9	1	10	32	56	11	7	34	59	10	27	15	30
10	2	23	48	8	8	13	44	7	4	18	50	8	3	18	46	53	2	12	33	41	1	11	39	52	11	7	35	19	10	27	12	19
11	2	24	45	22	8	26	29	9	4	19	25	35	3	19	22	4	2	12	47	13	1	12	46	58	11	7	35	34	10	27	9	8
12	2	25	42	35	9	9	27	32	4	20	1	6	3	19	53	8	2	13	0	42	1	13	54	10	11	7	35	43	10	27	5	58
13	2	26	39	51	9	22	37	54	4	20	36	41	3	20	20	3	2	13	14	13	1	15	1	34	11	7	35	46	10	27	2	47
14	2	27	36	3	10	5	59	3	4	21	12	21	3	20	42	32	2	13	27	41	1	16	9	3	11	7	35	43	10	26	59	36
15	2	28	34	19	10	19	31	20	4	21	48	5	3	21	0	33	2	13	41	7	1	17	16	41	11	7	35	33	10	26	56	25
16	2	29	31	33	11	3	13	31	4	22	23	54	3	21	13	51	2	13	54	33	1	18	24	27	11	7	35	19	10	26	53	14
17	3	0	28	59	11	17	6	15	4	22	59	47	3	21	22	28	2	14	7	56	1	19	32	20	11	7	34	56	10	26	50	3
18	3	1	26	5	0	1	8	24	4	23	35	44	3	21	26	6	2	14	21	18	1	20	40	23	11	7	34	30	10	26	40	53
19	3	2	23	22	0	15	20	22	4	24	11	45	3	21	24	46	2	14	34	39	1	21	48	31	11	7	33	56	10	26	53	42
20	3	3	20	38	0	29	40	20	4	24	47	50	3	21	18	30	2	14	47	56	1	22	56	46	11	7	33	16	10	26	40	31
21	3	4	17	55	1	14	4	3	4	25	24	1	3	21	7	24	2	15	1	14	1	24	5	9	11	7	32	30	10	26	37	20
22	3	5	15	13	1	28	28	9	4	26	0	14	3	20	51	12	2	15	14	28	1	25	13	39	11	7	31	39	10	26	34	9
23	3	6	12	33	2	12	46	50	4	26	36	33	3	20	30	25	2	15	27	41	1	26	22	16	11	7	30	41	10	26	30	58
24	3	7	9	51	2	26	55	24	4	27	12	55	3	20	4	53	2	15	40	51	1	27	30	58	11	7	29	38	10	26	27	48
25	3	8	7	10	3	10	47	32	4	27	49	21	3	19	35	2	2	15	53	59	1	28	39	48	11	7	28	30	10	26	24	37
26	3	9	4	32	3	24	21	4	4	28	25	53	3	19	1	19	2	16	7	6	1	29	48	45	11	7	27	14	10	26	21	26
27	3	10	1	51	4	7	34	24	4	29	2	27	3	18	23	56	2	16	20	10	2	0	57	48	11	7	25	54	10	26	28	15
28	3	10	59	13	4	20	26	26	4	29	39	6	3	17	43	30	2	16	33	11	2	2	6	56	11	7	24	27	10	26	15	4
29	3	11	56	34	5	2	59	31	5	0	15	49	3	17	0	39	2	16	46	10	2	3	16	10	11	7	22	56	10	26	11	53
30	3	12	53	59	5	15	15	18	5	0	52	36	3	16	16	5	2	17	59	8	2	4	25	33	11	7	21	16	10	26	8	42
31	3	13	51	22	5	27	18	30	5	1	29	27	3	15	30	25	2	17	12	2	2	5	35	00	11	7	19	34	10	26	5	31

औदयिक स्पष्ट ग्रह अगस्त - 2025

दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
1	3	14	48	47	6	9	12	29	5	2	6	22	3	14	44	35	2	17	24	52	2	6	44	33	11	7	17	44	10	26	2	21
2	3	15	46	12	6	21	3	53	5	2	43	21	3	13	59	21	2	17	37	41	2	7	54	11	11	7	15	47	10	26	59	10
3	3	16	43	38	7	2	56	41	5	3	20	24	3	13	15	41	2	17	50	26	2	9	3	56	11	7	13	47	10	25	55	59
4	3	17	41	3	7	14	56	5	5	3	57	31	3	12	34	19	2	18	3	10	2	10	13	45	11	7	11	40	10	25	52	48
5	3	18	38	33	7	27	7	28	5	4	34	42	3	11	56	12	2	18	15	49	2	11	23	41	11	7	9	29	10	25	49	37
6	3	19	36	2	8	9	33	10	5	5	11	58	3	11	22	11	2	18	28	26	2	12	33	41	11	7	7	13	10	25	46	26
7	3	20	33	32	8	22	16	35	5	5	49	16	3	10	52	59	2	18	41	0	2	13	43	47	11	7	4	50	10	25	43	16
8	3	21	33	2	9	5	17	27	5	6	26	39	3	10	28	50	2	18	53	31	2	14	53	59	11	7	2	23	10	25	40	5
9	3	22	28	34	9	18	34	42	5	7	4	6	3	10	10	45	2	19	5	58	2	16	4	16	11	6	59	50	10	25	36	54
10	3	23	26	8	10	2	7	42	5	7	41	37	3	9	59	7	2	19	18	22	2	17	14	37	11	6	57	12	10	25	33	43
11	3	24	23	41	10	15	53	36	5	8	19	11	3	9	54	13	2	19	30	44	2	18	25	5	11	6	54	29	10	25	30	32
12	3	25	21	19	10	29	50	27	5	8	56	50	3	9	56	21	2	19	43	1	2	19	35	38	11	6	51	40	10	25	27	21
13	3	26	18	54	11	13	54	48	5	9	34	35	3	10	5	38	2	19	55	13	2	20	46	13	11	6	48	47	10	25	24	10
14	3	27	16	33	11	28	4	59	5	10	12	19	3	10	22	10	2	20	7	23	2	21	56	56	11	6	45	51	10	25	21	00
15	3	28	14	10	0	12	18	35	5	10	50	9	3	10	45	53	2	20	19	28	2	23	7	42	11	6	42	48	10	25	17	49
16	3	29	11	51	0	26	33	5	5	11	28	4	3	11	16	49	2	20	31	31	2	24	18	35	11	6	39	40	10	25	14	38
17	4	0	9	31	1	10	45	41	5	12	6	3	3	11	54	48	2	20	43	30	2	25	29	29	11	6	36	28	10	25	11	27
18	4	1	7	16	1	24	54	24	5	12	44	4	3	12	39	44	2	20	55	23	2	26	40	33	11	6	33	12	10	25	8	16
19	4	2	4	58	2	8	55	59	5	13	22	9	3	13	31	22	2	21	7	12	2	27	51	36	11	6	29	53	10	25	5	5
20	4	3	2	44	2	22	48	14	5	14	0	19	3	14	29	35	2	21	18	59	2	29	2	48	11	6	26	27	10	25	1	55
21	4	4	0	30	3	6	28	26	5	14	38	32	3	15	34	6	2	21	30	40	3	0	14	2	11	6	22	59	10	24	58	44
22	4	4	58	19	3	19	55	1	5	15	16	51	3	16	44	42	2	21	42	18	3	1	25	22	11	6	19	25	10	24	55	33
23	4	5	56	7	4	3	6	7	5	15	55	12	3	18	1	2	2	21	53	50	3	2	36	45	11	6	15	49	10	24	52	22
24	4	6	53	58	4	16	1	44	5	16	33	37	3	19	22	52	2	22	5	18	3	3	48	12	11	6	12	8	10	24	49	11
25	4	7	51	49	4	28	41	52	5	17	12	5	3	20	49	51	2	22	16	41	3	4	59	45	11	6	8	22	10	24	46	0
26	4	8	49	44	5	11	7	41	5	17	50	39	3	22	21	37	2	22	28	0	3	6	11	22	11	6	4	33	10	24	42	50
27	4	9	47	38	5	23	20	25	5	18	29	15	3	23	57	48	2	22	39	14	3	7	23	4	11	6	0	40	10	24	38	39
28	4	10	45	36	6	5	22	21	5	19	7	56	3	25	37	59	2	22	50	23	3	8	34	50	11	5	56	46	10	24	36	28
29	4	11	43	33	6	17	16	37	5	19	46	39	3	27	21	41	2	23	1	27	3	9	46	38	11	5	52	47	10	24	33	17
30	4	12	41	34	6	19	7	20	5	20	25	28	3	29	8	32	2	23	12	25	3	10	58	33	11	5	48	45	10	24	30	6
31	4	13	39	36	7	10	59	41	5	21	4	21	4	0	58	0	2	23	23	20	3	12	10	31	11	5	44	39	10	24	26	55

औदयिक स्पष्ट ग्रह सितम्बर - 2025

दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
1	4	14	37	38	7	22	58	24	5	21	43	16	4	2	49	40	2	23	34	7	3	13	22	32	11	5	40	30	10	24	23	45
2	4	15	35	43	8	5	9	29	5	22	22	15	4	4	43	6	2	23	44	51	3	14	34	39	11	5	36	19	10	24	20	34
3	4	16	33	50	8	17	36	19	5	23	1	18	4	6	37	54	2	23	55	29	3	15	46	50	11	5	32	6	10	24	17	23
4	4	17	31	58	9	0	23	23	5	23	40	26	4	8	33	39	2	24	5	59	3	16	59	6	11	5	27	50	10	24	14	12
5	4	18	30	7	9	13	31	45	5	24	19	37	4	10	30	00	2	24	16	25	3	18	11	24	11	5	23	31	10	24	11	1
6	4	19	28	19	9	27	1	41	5	24	58	52	4	12	26	42	2	24	26	46	3	19	23	46	11	5	19	12	10	24	7	50
7	4	20	26	31	10	10	52	55	5	25	38	10	4	14	23	24	2	24	37	1	3	20	36	11	11	5	14	48	10	24	4	39
8	4	21	24	47	10	25	1	38	5	26	17	33	4	16	19	56	2	24	47	9	3	21	28	42	11	5	10	22	10	24	1	29
9	4	22	23	3	11	9	25	24	5	26	56	59	4	18	16	4	2	24	57	13	3	23	1	16	11	5	5	55	10	23	58	18
10	4	23	21	22	11	23	57	32	5	27	36	29	4	20	11	44	2	25	7	9	3	24	13	54	11	5	1	25	10	23	55	7
11	4	24	19	41	0	8	23	57	5	28	16	3	4	22	6	38	2	25	16	58	3	25	26	37	11	4	56	55	10	23	51	56
12	4	25	18	4	0	23	8	19	5	28	55	40	4	24	0	49	2	25	26	43	3	26	39	22	11	4	52	23	10	23	48	45
13	4	26	16	27	1	7	35	3	5	29	35	22	4	25	54	7	2	25	36	20	3	27	52	11	11	4	47	49	10	23	45	34
14	4	27	14	53	1	21	51	45	6	0	15	7	4	27	46	31	2	25	45	49	3	29	5	5	11	4	43	14	10	23	42	24
15	4	28	13	19	2	5	54	18	6	0	54	55	4	29	37	54	2	25	55	14	4	0	18	1	11	4	38	39	10	23	39	13
16	4	29	11	50	2	19	42	7	6	1	34	49	5	1	28	16	2	26	4	30	4	1	31	3	11	4	34	2	10	23	36	2
17	5	0	10	22	3	3	13	25	6	2	14	47	5	3	17	38	2	26	13	41	4	2	44	6	11	4	29	25	10	23	32	51
18	5	1	8	55	3	16	29	29	6	2	54	47	5	5	5	52	2	26	22	44	4	3	57	14	11	4	24	47	10	23	29	40
19	5	2	7	30	3	29	31	10	6	3	34	51	5	6	53	2	2	26	31	40	4	5	10	25	11	4	20	8	10	23	26	30
20	5	3	6	7	4	12	19	16	6	4	14	58	5	8	39	9	2	26	40	29	4	6	23	40	11	4	15	30	10	23	23	19
21	5	4	4	45	4	24	54	56	6	4	55	11	5	10	24	11	2	26	49	11	4	7	36	59	11	4	10	51	10	23	20	8
22	5	5	3	26	5	7	19	27	6	5	35	26	5	12	8	12	2	26	57	45	4	8	50	19	11	4	6	11	10	23	16	57
23	5	6	2	10	5	19	37	24	6	6	15	46	5	13	51	9	2	27	6	11	4	10	3	47	11	4	1	32	10	23	13	46
24	5	7	0	53	6	1	40	9	6	6	56	8	5	15	33	11	2	27	14	29	4	11	17	13	11	3	56	53	10	23	10	35
25	5	7	59	42	6	13	28	35	6	7	36	36	5	17	14	12	2	27	22	42	4	12	30	46	11	3	52	16	10	23	7	25
26	5	8	58	30	6	25	31	49	6	8	17	6	5	18	54	15	2	27	30	44	4	13	44	20	11	3	47	40	10	23	4	17
27	5	9	57	21	7	7	21	58	6	8	57	41	5	20	33	24	2	27	38	38	4	14	57	59	11	3	43	2	10	23	1	3
28	5	10	56	13	7	19	13	34	6	9	38	19	5	22	11	42	2	27	46	26	4	16	11	41	11	3	38	27	10	22	57	52
29	5	11	55	10	8	1	10	41	6	10	19	1	5	23	49	6	2	27	54	5	4	17	25	27	11	3	33	51	10	22	54	41
30	5	12	54	6	8	13	18	50	6	10	59	38	5	25	25	36	2	28	1	36	4	18	39	16	11	3	29	18	10	22	51	30

औदयिक स्पष्ट ग्रह अक्टूबर - 2025

दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
1	5	13	53	5	8	25	41	57	6	11	40	37	5	27	1	20	2	28	8	58	4	19	53	5	11	3	24	45	10	22	48	19
2	5	14	52	5	9	8	25	39	6	12	21	30	5	28	36	13	2	28	16	12	4	21	7	1	11	3	20	14	10	22	45	9
3	5	15	51	8	9	21	32	17	6	13	2	28	6	0	10	15	2	28	23	18	4	22	20	58	11	3	15	45	10	22	41	58
4	5	16	50	14	10	5	3	46	6	13	43	29	6	1	43	32	2	28	30	13	4	23	34	58	11	3	11	18	10	22	38	47
5	5	17	49	22	10	19	1	32	6	14	27	34	6	3	16	5	2	28	37	1	4	24	49	3	11	3	6	53	10	22	35	36
6	5	18	48	31	11	3	23	15	6	15	5	42	6	4	47	48	2	28	43	38	4	26	3	7	11	3	2	28	10	22	32	25
7	5	19	47	41	11	18	6	1	6	15	46	55	6	6	18	42	2	28	50	8	4	27	17	17	11	2	58	6	10	22	29	14
8	5	20	46	57	0	3	2	44	6	16	28	11	6	7	48	53	2	28	56	28	4	28	31	28	11	2	53	47	10	22	26	4
9	5	21	46	11	0	18	5	28	6	17	9	31	6	9	18	16	2	29	2	38	4	29	45	42	11	2	49	31	10	22	22	53
10	5	22	45	30	1	3	5	12	6	17	50	55	6	10	46	51	2	29	8	40	5	1	0	2	11	2	45	17	10	22	19	42
11	5	23	44	47	1	17	53	23	6	18	32	22	6	12	14	33	2	29	14	32	5	2	14	20	11	2	41	6	10	22	16	31
12	5	24	44	10	2	2	23	38	6	19	13	53	6	13	41	31	2	29	20	14	5	3	28	44	11	2	36	58	10	22	13	20
13	5	25	43	33	2	16	31	39	6	19	55	28	6	15	7	37	2	29	25	47	5	4	43	8	11	2	32	52	10	22	10	9
14	5	26	42	59	3	0	16	16	6	20	37	7	6	16	32	51	2	29	31	9	5	5	57	36	11	2	28	51	10	22	6	58
15	5	27	42	27	3	13	34	59	6	21	18	50	6	17	57	10	2	29	36	22	5	7	12	6	11	2	24	53	10	22	3	48
16	5	28	41	57	3	26	39	18	6	22	0	36	6	19	20	35	2	29	41	24	5	8	26	38	11	2	20	57	10	22	0	37
17	5	29	41	29	4	9	23	44	6	22	42	26	6	20	43	5	2	29	46	17	5	9	41	14	11	2	17	6	10	21	57	26
18	6	0	41	4	4	21	52	56	6	23	24	20	6	22	4	35	2	29	50	16	5	10	55	52	11	2	13	17	10	21	54	15
19	6	1	40	39	5	4	11	54	6	24	6	17	6	23	25	00	2	29	55	30	5	12	10	31	11	2	9	34	10	21	51	4
20	6	2	40	18	5	16	21	55	6	24	48	19	6	24	44	23	2	29	59	53	5	13	25	12	11	2	5	52	10	21	47	53
21	6	3	39	56	5	28	25	41	6	25	30	23	6	26	2	32	3	0	4	4	5	14	39	56	11	2	2	16	10	21	44	42
22	6	4	39	39	6	10	24	17	6	26	12	31	6	27	19	28	3	0	8	3	5	15	54	43	11	1	58	45	10	21	41	32
23	6	5	39	23	6	22	18	41	6	26	54	44	6	28	35	2	3	0	11	53	5	17	9	30	11	1	55	16	10	21	38	21
24	6	6	39	10	7	4	11	2	6	27	37	1	6	29	49	7	3	0	15	31	5	18	24	22	11	1	51	53	10	21	35	10
25	6	7	38	58	7	16	1	35	6	28	19	20	7	1	1	33	3	0	18	59	5	19	39	12	11	1	48	34	10	21	31	59
26	6	8	38	48	7	27	54	20	6	29	1	43	7	2	12	10	3	0	22	17	5	20	54	6	11	1	45	19	10	21	28	48
27	6	9	38	40	8	9	51	50	6	29	44	11	7	3	20	50	3	0	25	21	5	22	9	1	11	1	42	9	10	21	25	37
28	6	10	38	33	8	21	58	32	7	0	26	42	7	4	27	16	3	0	28	16	5	23	23	59	11	1	39	4	10	21	22	26
29	6	11	38	32	9	4	17	54	7	1	9	17	7	5	31	18	3	0	31	0	5	24	38	59	11	1	36	4	10	21	19	16
30	6	12	38	28	9	16	54	44	7	1	51	54	7	6	32	30	3	0	33	31	5	25	53	58	11	1	33	9	10	21	16	5
31	6	13	38	30	9	29	53	32	7	2	34	37	7	7	30	41	3	0	35	52	5	27	9	2	11	1	30	17	10	21	12	54

औदयिक स्पष्ट ग्रह नवम्बर - 2025

दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
1	6	14	38	30	10	13	17	35	7	3	17	22	7	8	25	23	3	0	38	0	5	28	24	6	11	1	27	33	10	21	9	43
2	6	15	38	36	10	27	9	42	7	4	0	11	7	9	16	17	3	0	39	59	5	29	39	12	11	1	24	54	10	21	6	32
3	6	16	38	39	11	11	29	48	7	4	43	4	7	10	2	50	3	0	41	43	6	0	54	18	11	1	22	20	10	21	3	21
4	6	17	38	48	11	26	16	30	7	5	26	1	7	10	44	39	3	0	43	19	6	2	9	25	11	1	19	51	10	21	0	10
5	6	18	38	57	0	11	23	54	7	6	9	1	7	11	21	7	3	0	44	41	6	3	24	37	11	1	17	27	10	20	56	59
6	6	19	39	8	0	26	42	1	7	6	52	4	7	11	51	42	3	0	45	51	6	4	39	46	11	1	15	9	10	20	53	49
7	6	20	39	20	1	12	1	0	7	7	35	11	7	12	15	45	3	0	46	51	6	5	54	58	11	1	12	57	10	20	50	38
8	6	21	39	36	1	27	9	3	7	8	18	23	7	12	32	44	3	0	47	37	6	7	10	12	11	1	10	50	10	20	47	27
9	6	22	39	52	2	11	57	26	7	9	1	37	7	12	41	55	3	0	48	13	6	8	25	26	11	1	8	50	10	20	44	16
10	6	23	40	12	2	26	18	0	7	9	44	55	7	12	42	43	3	0	48	36	6	9	40	44	11	1	6	53	10	20	41	5
11	6	24	40	33	3	10	10	10	7	10	28	17	7	12	34	34	3	0	48	46	6	10	56	0	11	1	5	5	10	20	37	54
12	6	25	40	53	3	23	34	12	7	11	11	41	7	12	16	53	3	0	48	47	6	12	11	19	11	1	3	22	10	20	34	43
13	6	26	41	18	4	6	31	59	7	11	55	11	7	11	49	27	3	0	48	33	6	13	26	37	11	1	1	44	10	20	31	32
14	6	27	41	43	4	19	9	1	7	12	38	43	7	11	11	53	3	0	48	9	6	14	41	58	11	1	0	13	10	20	28	22
15	6	28	42	9	5	1	29	3	7	13	22	19	7	10	24	31	3	0	47	33	6	15	57	18	11	0	58	48	10	20	25	11
16	6	29	42	38	5	13	37	27	7	14	5	58	7	9	27	46	3	0	46	44	6	17	12	39	11	0	57	29	10	20	21	60
17	7	0	43	8	5	25	37	33	7	14	49	40	7	8	22	27	3	0	45	43	6	18	28	2	11	0	56	16	10	20	18	49
18	7	1	43	40	6	7	35	5	7	15	33	26	7	7	9	56	3	0	44	32	6	19	43	25	11	0	55	9	10	20	15	38
19	7	2	44	14	6	19	35	35	7	16	17	16	7	5	52	6	3	0	43	5	6	20	58	49	11	0	54	8	10	20	12	27
20	7	3	44	47	7	1	17	44	7	17	1	9	7	4	31	4	3	0	41	29	6	22	14	13	11	0	53	14	10	20	9	16
21	7	4	45	25	7	13	11	6	7	17	45	6	7	3	9	24	3	0	39	41	6	23	29	39	11	0	52	27	10	20	6	5
22	7	5	46	2	7	25	5	2	7	18	28	5	7	1	49	52	3	0	37	39	6	24	45	6	11	0	51	45	10	20	2	54
23	7	6	46	43	8	7	3	8	7	19	13	10	7	0	35	2	3	0	35	27	6	26	0	32	11	0	51	10	10	19	59	44
24	7	7	47	22	8	19	5	32	7	19	57	16	6	29	27	11	3	0	33	3	6	27	15	58	11	0	50	42	10	19	56	33
25	7	8	48	4	9	1	15	51	7	20	41	25	6	28	28	12	3	0	30	27	6	28	31	26	11	0	50	19	10	19	53	22
26	7	9	48	47	9	13	36	37	7	21	25	39	6	27	39	40	3	0	27	40	6	29	46	54	11	0	50	4	10	19	50	11
27	7	10	49	33	9	26	10	55	7	22	9	55	6	27	2	31	3	0	24	41	7	1	2	24	11	0	49	55	10	19	47	0
28	7	11	50	19	10	9	4	21	7	22	54	16	6	26	37	4	3	0	21	30	7	2	17	51	11	0	49	52	10	19	43	49
29	7	12	51	6	10	22	19	0	7	23	38	38	6	26	23	21	3	0	18	8	7	3	33	22	11	0	49	55	10	19	40	38
30	7	13	51	56	11	5	59	55	7	24	23	6	6	26	21	00	3	0	14	35	7	4	48	51	11	0	50	4	10	19	37	26

औदयिक स्पष्ट ग्रह दिसम्बर - 2025

दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
1	7	14	52	44	11	20	8	7	7	25	7	34	6	26	29	15	3	0	10	51	7	6	4	22	11	0	50	20	10	19	34	17
2	7	15	53	37	0	4	42	50	7	25	52	8	6	26	47	27	3	0	6	54	7	7	19	52	11	0	50	44	10	19	31	6
3	7	16	54	38	0	19	41	55	7	26	36	44	6	27	14	38	3	0	2	48	7	8	35	23	11	0	51	13	10	19	27	55
4	7	17	55	21	1	4	56	59	7	27	21	23	6	27	49	56	2	29	58	30	7	9	50	53	11	0	51	49	10	19	24	44
5	7	18	56	15	1	20	18	15	7	28	6	6	6	28	32	28	2	29	54	2	7	11	6	23	11	0	52	31	10	19	21	33
6	7	19	57	12	2	5	32	34	7	28	50	52	6	29	21	24	2	29	49	24	7	12	21	57	11	0	53	20	10	19	18	22
7	7	20	58	6	2	20	30	24	7	29	35	40	7	0	15	54	2	29	44	36	7	13	37	26	11	0	54	15	10	19	15	11
8	7	21	59	4	3	5	2	58	8	0	20	32	7	1	15	22	2	29	39	35	7	14	52	59	11	0	55	18	10	19	12	0
9	7	23	0	2	3	19	5	26	8	1	5	27	7	2	19	5	2	29	34	27	7	16	8	30	11	0	56	26	10	19	8	50
10	7	24	1	2	4	2	37	25	8	1	50	25	7	3	26	34	2	29	29	8	7	17	24	2	11	0	57	40	10	19	5	39
11	7	25	2	0	4	15	41	3	8	2	35	26	7	4	37	14	2	29	23	41	7	18	39	35	11	0	59	1	10	19	2	28
12	7	26	3	3	4	28	20	39	8	3	20	31	7	5	50	48	2	29	18	2	7	19	55	8	11	1	0	28	10	19	59	17
13	7	27	4	3	5	10	40	8	8	4	5	36	7	7	6	43	2	29	12	16	7	21	10	39	11	1	2	1	10	18	56	6
14	7	28	5	6	5	22	46	2	8	4	50	37	7	8	24	45	2	29	6	19	7	22	26	11	11	1	3	42	10	18	52	55
15	7	29	6	9	6	4	42	5	8	5	35	60	7	9	44	35	2	29	0	14	7	23	41	45	11	1	5	28	10	18	49	44
16	8	0	7	14	6	16	32	55	8	6	21	16	7	11	5	59	2	28	54	0	7	24	57	18	11	1	7	21	10	18	46	34
17	8	1	8	19	6	28	23	30	8	7	6	35	7	12	28	42	2	28	47	39	7	26	12	49	11	1	9	21	10	18	43	23
18	8	2	9	24	7	10	14	47	8	7	51	55	7	13	52	36	2	28	41	10	7	27	28	22	11	1	11	25	10	18	40	12
19	8	3	10	30	7	22	10	39	8	8	37	20	7	15	17	27	2	28	34	32	7	28	43	55	11	1	13	37	10	18	37	1
20	8	4	11	35	8	4	11	26	8	9	22	47	7	16	43	9	2	28	27	47	7	29	59	27	11	1	15	54	10	18	33	50
21	8	5	12	43	8	16	18	12	8	10	8	18	7	18	9	37	2	28	20	56	8	1	14	58	11	1	18	17	10	18	30	39
22	8	6	13	59	8	28	32	2	8	10	53	49	7	19	36	46	2	28	13	58	8	2	30	31	11	1	20	47	10	18	27	29
23	8	7	14	57	9	10	53	14	8	11	39	26	7	21	4	28	2	28	6	53	8	3	46	5	11	1	23	24	10	18	24	18
24	8	8	16	5	9	23	23	41	8	12	25	2	7	22	32	42	2	27	59	41	8	5	1	36	11	1	26	5	10	18	21	7
25	8	9	17	13	10	6	5	59	8	13	10	44	7	24	1	23	2	27	52	44	8	6	17	9	11	1	28	52	10	18	17	56
26	8	10	18	21	10	19	2	7	8	13	56	26	7	25	30	28	2	27	45	1	8	7	32	39	11	1	31	44	10	18	14	45
27	8	11	19	30	11	2	15	23	8	14	42	13	7	27	0	1	2	27	37	32	8	8	48	12	11	1	34	45	10	18	11	34
28	8	12	20	40	11	15	48	39	8	15	28	1	7	28	29	53	2	27	29	57	8	10	3	44	11	1	37	50	10	18	8	24
29	8	13	21	49	11	29	44	15	8	16	53	52	8	0	0	9	2	27	22	19	8	11	19	15	11	1	41	1	10	18	5	13
30	8	14	22	59	0	14	2	32	8	16	59	46	8	1	30	45	2	27	14	38	8	12	34	47	11	1	44	18	10	18	2	2
31	8	15	24	8	0	28	41	33	8	17	45	41	8	3	1	40	2	27	6	51	8	13	50	16	11	1	47	40	10	17	58	51

औदयिक स्पष्ट ग्रह जनवरी - 2026																																
दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
1	8	16	25	17	1	13	36	14	8	18	31	40	8	4	32	56	2	26	59	1	8	15	5	49	11	1	51	8	10	17	55	40
2	8	17	26	28	1	28	39	47	8	19	17	41	8	6	4	35	2	26	51	8	8	16	21	21	11	1	57	43	10	17	52	30
3	8	18	27	37	2	13	40	43	8	20	3	44	8	7	36	36	2	26	43	10	8	17	36	51	11	1	58	21	10	17	49	29
4	8	19	28	48	2	28	31	16	8	20	49	49	8	9	8	58	2	26	35	12	8	18	52	21	11	2	2	6	10	17	46	8
5	8	20	29	57	3	13	1	51	8	21	35	57	8	10	41	44	2	26	27	11	8	20	7	52	11	2	5	55	10	17	42	57
6	8	21	31	6	3	27	6	42	8	22	22	7	8	12	14	52	2	26	19	8	8	21	23	22	11	2	9	51	10	17	39	56
7	8	22	32	16	4	10	44	50	8	23	8	19	8	13	48	23	2	26	11	4	8	22	38	52	11	2	13	51	10	17	36	36
8	8	23	33	25	4	23	55	16	8	23	54	34	8	15	22	16	2	26	2	58	8	23	54	21	11	2	17	57	10	17	33	25
9	8	24	34	34	5	6	41	39	8	24	40	51	8	16	56	38	2	25	54	51	8	25	9	50	11	2	22	8	10	17	30	14
10	8	25	35	43	5	19	6	11	8	25	27	10	8	18	31	22	2	25	46	46	8	26	25	18	11	2	26	25	10	17	27	3
11	8	26	36	51	6	1	14	51	8	26	13	30	8	20	6	35	2	25	38	38	8	27	40	47	11	2	30	40	10	17	23	52
12	8	27	37	58	6	13	11	53	8	26	59	53	8	21	42	10	2	25	30	32	8	28	56	13	11	2	35	13	10	17	20	42
13	8	28	39	6	6	25	2	59	8	27	46	18	8	23	18	16	2	25	22	27	9	0	11	43	11	2	39	44	10	17	17	31
14	8	29	40	13	7	6	52	47	8	28	32	45	8	24	54	51	2	25	14	24	9	1	27	10	11	2	44	20	10	17	14	20
15	9	0	41	21	7	18	45	17	8	29	19	15	8	26	31	55	2	25	6	22	9	2	42	38	11	2	49	1	10	17	11	9
16	9	1	42	26	8	0	44	18	9	0	5	45	8	28	9	28	2	24	58	20	9	3	58	3	11	2	53	47	10	17	7	59
17	9	2	43	32	8	12	51	34	9	0	52	18	8	29	47	34	2	24	50	21	9	5	13	29	11	2	58	36	10	17	4	48
18	9	3	44	37	8	25	9	22	9	1	38	53	9	1	26	12	2	24	42	26	9	6	28	56	11	3	3	32	10	17	1	47
19	9	4	45	43	9	7	37	9	9	2	25	29	9	3	5	24	2	24	34	32	9	7	44	21	11	3	8	31	10	16	58	26
20	9	5	46	46	9	20	14	47	9	3	12	7	9	4	45	7	2	24	26	43	9	8	59	45	11	3	13	36	10	16	55	16
21	9	6	47	50	10	3	3	53	9	3	58	47	9	6	25	30	2	24	18	56	9	10	15	10	11	3	18	45	10	16	52	5
22	9	7	48	51	10	16	3	48	9	4	45	28	9	8	6	23	2	24	11	15	9	11	30	33	11	3	23	58	10	16	48	54
23	9	8	49	53	10	29	16	6	9	5	32	12	9	9	47	52	2	24	3	38	9	12	45	56	11	3	29	16	10	16	45	43
24	9	9	50	56	11	12	40	22	9	6	18	58	9	11	29	56	2	23	56	3	9	14	1	20	11	3	34	37	10	16	42	33
25	9	10	51	55	11	26	19	8	9	7	5	43	9	13	12	36	2	23	48	37	9	15	16	42	11	3	40	3	10	16	39	22
26	9	11	52	55	0	10	12	19	9	7	52	32	9	14	55	51	2	23	41	13	9	16	32	2	11	3	45	32	10	16	36	11
27	9	12	53	52	0	24	19	39	9	8	39	21	9	16	39	37	2	23	33	57	9	17	47	23	11	3	51	6	10	16	33	0
28	9	13	54	51	1	8	40	0	9	9	26	12	9	18	23	57	2	23	26	46	9	19	2	45	11	3	56	43	10	16	29	50
29	9	14	55	46	1	23	9	27	9	10	13	5	9	20	8	46	2	23	19	42	9	20	18	3	11	4	2	25	10	16	26	39
30	9	15	56	43	2	7	44	22	9	10	59	58	9	21	54	4	2	23	12	44	9	21	33	23	11	4	8	10	10	16	23	28
31	9	16	57	38	2	22	17	41	9	11	46	54	9	23	39	43	2	23	5	51	9	22	48	40	11	4	14	0	10	16	20	18

औदयिक स्पष्ट ग्रह फरवरी - 2026

दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
1	9	17	58	21	3	6	43	19	9	12	33	50	9	25	25	43	2	22	59	7	9	24	3	58	11	4	19	54	10	16	17	7
2	9	18	59	22	3	20	55	11	9	13	20	47	9	27	11	51	2	22	52	30	9	25	19	13	11	4	25	50	10	16	13	56
3	9	20	0	15	4	4	48	45	9	14	7	46	9	28	58	9	2	22	46	2	9	26	34	30	11	4	31	50	10	16	10	46
4	9	21	1	4	4	18	22	2	9	14	54	46	10	0	44	26	2	22	39	40	9	27	49	44	11	4	37	54	10	16	7	35
5	9	22	1	54	5	1	32	22	9	15	41	47	10	2	30	37	2	22	33	28	9	29	4	57	11	5	43	59	10	16	4	24
6	9	23	2	41	5	14	21	33	9	16	28	49	10	4	16	20	2	22	27	24	10	0	20	11	11	5	50	11	10	16	1	14
7	9	24	3	29	5	26	51	22	9	17	15	54	10	6	1	35	2	22	21	26	10	1	35	25	11	5	56	23	10	15	58	3
8	9	25	4	13	6	9	3	55	9	18	2	57	10	7	46	4	2	22	15	41	10	2	50	33	11	5	2	41	10	15	54	52
9	9	26	4	59	6	21	4	10	9	18	50	3	10	9	29	34	2	22	10	3	10	4	5	45	11	5	9	1	10	15	51	42
10	9	27	5	41	7	2	56	43	9	19	37	8	10	11	11	44	2	22	4	34	10	5	20	55	11	5	15	23	10	15	48	31
11	9	28	6	21	7	14	47	16	9	20	24	15	10	12	52	13	2	21	59	17	10	6	36	1	11	5	21	52	10	15	45	20
12	9	29	7	3	7	26	40	31	9	21	11	24	10	14	30	44	2	21	54	6	10	7	51	10	11	5	28	20	10	15	42	9
13	10	0	7	39	8	8	41	1	9	21	58	31	10	16	6	40	2	21	49	6	10	9	6	16	11	5	34	52	10	15	38	59
14	10	1	8	18	8	20	53	6	9	22	45	42	10	17	39	39	2	21	44	18	10	10	21	21	11	5	41	26	10	15	35	48
15	10	2	8	53	9	3	17	37	9	23	32	51	10	19	9	1	2	21	39	37	10	11	36	24	11	5	48	3	10	15	32	37
16	10	3	9	28	9	15	57	57	9	24	20	2	10	20	34	15	2	21	35	10	10	12	51	29	11	5	54	44	10	15	29	27
17	10	4	10	0	9	28	52	55	9	25	7	13	10	23	54	38	2	21	30	52	10	14	6	29	11	6	1	26	10	15	26	16
18	10	5	10	32	10	12	3	46	9	25	54	25	10	24	9	29	2	21	26	44	10	15	21	31	11	6	8	10	10	15	23	5
19	10	6	11	1	10	25	27	46	9	26	41	38	10	25	18	3	2	21	22	47	10	16	36	27	11	6	14	58	10	15	19	55
20	10	7	11	29	11	9	5	22	9	27	28	51	10	26	19	38	2	21	19	3	10	17	51	27	11	6	21	47	10	15	16	44
21	10	8	11	54	11	22	54	27	9	28	16	3	10	26	13	31	2	21	15	27	10	19	6	23	11	6	28	39	10	15	13	33
22	10	9	12	20	0	6	52	7	9	29	3	17	10	27	59	4	2	21	12	4	10	20	21	18	11	6	35	35	10	15	10	23
23	10	10	12	42	0	20	57	27	9	29	50	31	10	28	35	35	2	21	8	53	10	21	36	12	11	6	42	31	10	15	7	12
24	10	11	13	4	1	5	7	4	10	0	37	45	10	28	2	43	2	21	5	51	10	22	51	4	11	6	59	29	10	15	4	2
25	10	12	13	25	1	19	20	11	10	1	25	00	10	28	20	1	2	21	3	1	10	24	5	57	11	6	56	29	10	15	0	51
26	10	13	13	43	2	3	52	1	10	2	12	15	10	28	27	17	2	21	0	24	10	25	20	45	11	7	3	32	10	14	57	40
27	10	14	13	58	2	17	41	23	10	2	59	29	10	28	24	27	2	20	57	57	10	26	35	34	11	7	10	37	10	14	54	30
28	10	15	14	13	3	1	45	2	10	3	46	39	10	27	11	48	2	20	55	42	10	27	50	20	11	7	17	43	10	14	51	19

औदयिक स्पष्ट ग्रह मार्च - 2025

दिनांक	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क..	वि.	रा.	अ.	क.	वि.
30	4	14	37	38	7	22	58	24	5	21	43	16	4	2	49	40	2	23	34	7	3	13	22	32	11	5	40	30	10	24	23	45
31	4	15	35	43	8	5	9	29	5	22	22	15	4	4	43	6	2	23	44	51	3	14	34	39	11	5	36	19	10	24	20	34
औदयिक स्पष्ट ग्रह मार्च - 2026																																
1	10	16	14	28	3	15	39	51	10	4	34	0	10	27	49	38	2	20	53	40	10	29	5	7	11	7	24	50	10	14	48	8
2	10	17	14	38	3	29	23	41	10	5	21	15	10	26	18	30	2	20	51	48	11	0	19	49	11	7	32	0	10	14	44	58
3	10	18	14	47	4	12	54	13	10	6	8	30	10	25	39	19	2	20	50	8	11	1	34	32	11	7	39	12	10	14	41	47
4	10	19	14	53	4	26	10	7	10	6	55	45	10	25	52	56	2	20	48	39	11	2	49	13	11	7	46	25	10	14	38	36
5	10	20	14	0	5	9	10	10	10	7	43	0	10	24	0	46	2	20	47	24	11	4	3	52	11	7	53	39	10	14	35	27
6	10	21	15	4	5	21	54	7	10	8	30	15	10	23	3	54	2	20	46	20	11	5	18	28	11	8	0	54	10	14	32	15
7	10	22	15	6	6	4	22	36	10	9	17	30	10	22	4	1	2	20	45	0	11	6	33	6	11	8	8	10	10	14	29	5
8	10	23	15	5	6	16	35	56	10	10	4	44	10	21	2	28	2	20	44	46	11	7	47	38	11	8	15	29	10	14	25	54
9	10	24	15	4	6	28	38	9	10	10	51	58	10	20	0	44	2	20	44	19	11	9	2	12	11	8	22	48	10	14	22	43
10	10	25	14	0	7	10	32	5	10	11	39	12	10	19	0	15	2	20	43	59	11	10	16	41	11	8	30	9	10	14	19	33
11	10	26	14	53	7	22	23	8	10	12	26	25	10	18	2	19	2	20	43	54	11	11	31	9	11	8	37	30	10	14	16	22
12	10	27	14	45	8	4	15	30	10	13	13	37	10	17	8	8	2	20	44	2	11	12	45	38	11	8	44	50	10	14	13	11
13	10	28	14	37	8	16	15	19	10	14	0	51	10	16	18	26	2	20	44	19	11	14	2	3	11	8	52	15	10	14	10	1
14	10	29	14	24	8	28	27	10	10	14	48	2	10	15	34	2	2	20	44	49	11	15	14	27	11	8	59	28	10	14	6	50
15	11	0	14	12	9	10	54	7	10	15	35	14	10	15	55	33	2	20	45	32	11	16	28	49	11	9	7	4	10	14	3	40
16	11	1	13	55	9	23	40	13	10	16	22	24	10	14	23	6	2	20	46	24	11	17	43	7	11	9	14	29	10	14	0	29
17	11	2	13	38	10	6	46	27	10	17	9	35	10	14	57	2	2	20	47	28	11	18	57	26	11	9	21	55	10	13	57	18
18	11	3	13	19	10	20	13	46	10	17	56	45	10	14	37	24	2	20	48	45	11	20	11	43	11	9	19	21	10	13	54	8
19	11	4	12	57	11	4	0	12	10	18	43	53	10	14	24	7	2	20	50	12	11	21	25	58	11	9	36	48	10	13	50	57

भारतीय ज्योतिष की प्राचीनता पर विदेशी विद्वानों के अभिमत - 1. अलबरूनी ने लिखा है कि 'ज्योतिषशास्त्र में हिन्दू लोग संसार की सभी जातियों से बढ़कर हैं। मैंने अनेक भाषाओं के अंकों के नाम सीखे हैं, पर किसी जाति में भी हजार से आगे की संख्या के लिए मुझे कोई नाम नहीं मिला। हिन्दुओं में अठारह अकों तक की संख्या के लिए नाम हैं, जिनमें अन्तिम संख्या का नाम परार्द्ध बताया गया है।' (अलबरूनीज इण्डिया, जिल्द 1, पृ. 175-177) 2. प्रो. मैक्समूलर ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि 'भारतवासी आकाश-मण्डल और नक्षत्र-मण्डल आदि के बारे में अन्य देशों के ऋणी नहीं हैं। मूल आविष्कर्ता वे ही इन वस्तुओं के हैं।' (इण्डिया ह्वाट कैन इट टीच अस, पृ. 360-366) 3. फ्रान्सीसी पर्यटक फ्राक्वीस वर्नियर भी भारतीय ज्योतिष ज्ञान की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं कि 'भारतीय अपनी गणना द्वारा चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण की बिलकुल ठीक भविष्यवाणी करते हैं। इनका ज्योतिषज्ञान प्राचीन और मौलिक है।' (ट्रावेल्स इन दी मुगल इम्पायर, पृ. 329) 4. प्रो. कोलब्रुक और बेवर ने लिखा है कि 'भारत को ही सर्वप्रथम चान्द्रनक्षत्रों का ज्ञान था। चीन और अरब के ज्योतिष का विकास भारत से ही हुआ है। उनका क्रान्तिमण्डल हिन्दुओं का ही है। निस्सन्देह उन्हीं से अरबवालों ने इसे लिया था।' (Letters on India, P. 109-111)

अक्षांश, रेखांश, स्टैंडर्ड अन्तरादि सारणी

नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं.क.	स्टैं. अ.मि.	नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं.क.	स्टैं. अ.मि.
अयोध्या	26|48	82|14	-1	कराची (पाकिस्तान)	24|51	67|04	-32
अम्बाला	30|21	76|52	-23	कन्नौज	27|03	79|58	-10
अमृतसर	31|37	74|55	-31	करनाल	29|42	77|02	-22
अहमदपुर	29|17	71|35	-44	कलकत्ता	22|34	88|24	+24
अलमोड़ा	29|37	79|40	-11	कपूरथला	31|23	75|25	-28
अखनूर	32|54	74|35	-32	कल्याण (महाराष्ट्र)	19|17	73|11	-37
अलीगढ	27|54	78|06	-18	कोयम्बटूर	11|00	77|00	-22
अमेठी	26|07	81|47	-3	कालका	30|50	76|56	-22
अगरतला	23|49	91|17	+35	काशी-वाराणसी	25|20	83|00	+2
अहमदनगर	19|05	74|48	-31	काठमांडु, नेपाल	27|42	85|12	+11
अहमदाबाद	23|02	72|38	-39	कानपुर	26|28	80|24	-8
आबू	24|40	72|45	-39	कांचीपुरम्, तमि.	12|51	79|53	-11
आगरा	27|10	78|05	-18	कांगडा	32|09	76|18	-25
आजमगढ	26|03	83|13	+3	किश्तवाड़ा, जम्मू	33|12	75|48	-27
इटावा	26|47	79|02	-14	कुरुक्षेत्र	29|58	76|48	-23
इन्दौर	22|45	75|50	-27	कन्याकुमारी	08|06	77|34	-20
इम्फाल	24|54	93|54	+46	कोल्हापुर	16|42	74|16	-33
उदयपुर (राज)	24|37	73|42	-35	कोटा (राज.)	25|10	75|52	-27
उज्जैन	23|09	75|43	-27	कोच्चीन	09|58	76|17	-25
उन्नाव	26|48	80|43	-7	खम्भात	22|19	72|36	-40
उधमपुर (पंजाब)	32|56	74|43	-31	गुड़गांव	28|27	77|04	-22
औरंगाबाद, (महाराष्ट्र)	19|53	75|23	-28	गुलबर्गा	17|22	76|47	-23
औरंगाबाद (बिहार)	24|45	84|25	+8	गुन्दूर	16|20	80|27	-8
कटक	20|28	85|54	14	गयाजी	24|49	85|01	+10

नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं.क.	स्टैं. अ.मि.	नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं.क.	स्टैं. अ.मि.
ग्वालियर	26|14	78|10	-17	जालन्धर	31|19	75|18	-29
गाजीपुर	25|34	83|35	+4	जूनागढ (गुज.)	21|31	70|36	-48
गिलगिल	35|54	74|22	-33	जैसलमेर	26|55	70|57	-46
गोरखपुर	26|45	83|27	+4	जौनपुर	25|42	82|44	+1
गोंडा	27|28	82|01	-2	जोधपुर	26|19	73|04	-38
गोवा	15|30	73|57	-34	झांसी	25|37	78|37	-16
गोहाटी	26|11	91|45	+37	झालरापाटन	24|32	76|12	-25
गोकर्ण	14|33	74|18	-33	ट्रावनकोर	09|00	77|00	-22
चम्बा	32|34	76|10	-25	टुण्डलाजं	27|13	78|13	-17
चंडीगढ	30|40	76|52	-22	टाटानगर	29|09	80|10	-9
चिकमंगलूर	13|20	75|46	-27	टोंक (राज.)	26|11	75|50	-27
चित्तौड़गढ	24|54	74|42	-31	डलहौजी	32|30	75|54	-27
चित्रकूट	25|15	80|28	-8	डिबरूगढ़	27|29	94|56	+50
चेरापूंजी	25|17	91|47	-37	ढाका (बांग्ला.)	23|43	90|26	+32
छपरा	24|47	84|31	+9	तिरुपति	13|39	79|25	-12
छतरपुर	24|54	79|38	-11	दरभंगा	26|10	85|57	+14
जलगांव	21|01	75|39	-29	दाहोद (गुज.)	22|50	74|15	-33
जगन्नाथपुरी	19|46	85|48	+13	दार्जिलिंग	27|06	88|18	+23
जमशेदपुर	22|50	86|10	+15	द्वारकाधाम	22|12	69|01	-54
जलपाईगुडी	26|32	88|46	+25	दिल्ली	28|38	77|12	-21
जबलपुर	23|10	80|01	-10	देहरादून	30|20	78|04	-18
जयपुर	26|56	75|52	-27	दौलताबाद	19|57	75|12	-29
जम्मू	32|44	74|54	-30	धर्मशाला	32|16	76|23	-24
जसवन्तनगर	26|51	78|55	-14	धारवाड़	15|26	75|00	-30
जामनगर	22|27	70|07	-50	धार (म.प्र)	22|36	75|12	-29

नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं.क.	स्टैं. अ.मि.	नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं.क.	स्टैं. अ.मि.
धूलिया	20|58	74|42	-31	फैजाबाद	26|47	82|12	-1
नसीराबाद	26|08	74|46	-31	फतेहपुर (उ.प्र.)	25|55	80|52	-6
नड़ियाद, गुज.	22|41	72|55	-38	फतेहपुर (राज.)	27|52	75|02	-30
नासिक	20|02	73|50	-35	फिरोजपुर	30|56	74|40	-31
नागपुर	21|09	79|09	-13	बड़ौदा (गुज.)	22|16	73|12	-37
नाथद्वारा	24|56	73|52	-35	बद्रीनाथ	30|44	79|32	-12
नीमच	24|27	74|52	-31	बरेली	28|22	79|27	-12
पौड़ी	30|09	78|47	-15	बेलगांव	15|54	74|36	-32
पंचकूला	30|42	76|52	-22	बेलूर-कर्नाटक	13|08	75|51	-27
पटियाला	30|20	76|25	-24	बांदा (उ.प्र.)	25|28	80|20	-9
पुरी	19|48	85|52	+13	बांसवाड़ा	23|30	74|24	-32
पटियाला	30|22	76|25	-24	बिलासपुर (म.प्र.	22|05	82|13	-1
पटना (बिहा.)	25|37	85|13	+11	बिलासपुर (हि.प्र	31|19	76|50	-23
पठानकोट	32|15	75|42	-27	बीजापुर	16|50	75|47	-27
प्रयागराज	25|24	81|54	-3	बीकानेर	28|01	73|22	-37
पालीतादा्ा	21|30	71|40	-43	बूंदी(राज.)	25|27	75|41	-27
पानीपत	29|23	77|01	-21	बुलन्दशहर	28|24	77|54	-18
पांडीचेरी	11|56	79|53	-10	बंगलौर	12|58	77|38	-19
पीलीभीत	28|40	79|50	-11	भिवानीहरि	28|48	76|08	-36
पुरुलिया, बिहा.	23|20	86|25	+16	भिवण्डी	19|15	73|05	-38
पूना	18|19	73|55	-34	भुसावल	21|02	75|47	-27
पोरबन्दर	21|37	69|49	-51	भरतपुर	27|15	77|30	-20
फरीदकोट	30|40	74|57	-30	भटिण्डा	30|11	75|00	-30
फरीदाबाद	28|26	77|19	-21	भड़ोच	21|41	73|00	-38
फर्रुखाबाद	27|24	79|37	-12	भावनगर	21|46	72|11	-41

नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं.क.	स्टैं. अ.मि.	नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं.क.	स्टैं. अ.मि.
भागलपुर	25|13	86|59	+18	रायचूर	16|15	77|20	-21
भुवनेश्वर	20|28	85|54	+14	राजकोट	22|18	70|59	-46
भूटान	27|30	90|00	+30	रायगढ	21|58	83|26	-4
महेन्द्रगढ़हरि.	28|17	76|09	-25	रायबरेली	26|15	81|16	-5
भोपाल	23|16	77|36	-20	रामेश्वरम्	09|17	79|22	-13
मदुराई	09|55	78|07	-18	रायपुर (छ.ग.)	21|15	81|41	-3
मेहसाणा	23|42	72|37	-40	रांची	23|40	85|34	12
मणीपुरस्टेट	24|44	93|58	+46	रायपुर (उ.प्र.)	28|48	75|05	-14
मण्डी (हि.प्र.)	31|40	76|58	-22	रीवा	24|32	81|19	-5
मद्रास	13|04	80|17	-9	रेवाड़ी-जंक्शन	28|12	76|40	-23
मथुरा	27|28	77|41	-19	रोहतक	28|54	76|38	-23
मालेगांव	20|31	74|30	-32	रंगून(बर्मा)	16|50	96|13	+55
मिर्जापुर	25|06	82|37	+0	लद्दाख	33|00	78|48	-15
मुरादाबाद	28|50	78|49	-15	लखनऊ	26|55	80|59	-6
मुंगेर-बिहार	25|23	86|30	+16	ललितपुर	24|22	78|28	-16
मुर्शिदाबाद	24|10	88|19	+23	लातूर	18|24	76|34	-24
मुजफ्फरनगर	29|30	77|44	-19	लुधियाना	30|55	75|54	-26
मुजफ्फरपुर	26|12	85|27	+12	लाहौर (पाकि.)	31|37	74|26	-2
मुम्बई	18|57	72|50	-39	वर्धा	20|45	78|39	-15
मेरठ	29|00	77|45	-19	विजयवाड़ा	16|31	80|39	-7
मैसूर-कर्नाटक	12|18	75|42	-23	विशाखापटनम्	17|42	83|20	+3
मैनपुरी	27|13	79|04	-14	शिमला	31|06	77|13	-21
मोतीहारी	26|40	84|57	+10	शिकोहाबाद	27|06	78|38	-15
रत्नागिरि	17|00	73|20	-37	शिलांग-मेघाल.	25|34	91|45	+38
रतलाम	23|21	75|07	-30	श्रीगंगानगर	29|50	73|50	-35

नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं.क.	स्टैं. अ.मि.
श्रीनगरकश्मीर	34|06	74|51	-31
श्रीनगरगढवाल	30|14	78|42	-15
श्रीमाधोपुर	27|25	75|25	-29
सतारा (महा.)	17|42	74|02	-34
सम्बलपुर	21|28	84|00	+6
सहारनपुर	29|59	77|23	-20
स्यालकोट	32|31	74|36	-2
सागर (म.प्र.)	23|50	78|45	-15
सिरसा	29|32	75|04	-30
सिरोही	24|35	73|02	-38
सिकन्दराबाद	17|27	78|33	-16
सीतामढी	26|35	85|27	+12
सीतापुर	27|32	80|24	-8
सुल्तानपुर	26|16	82|07	-2
सूरत-गुजरात	21|11	72|52	-39
सेलम-तमिल	11|39	78|15	-17
सोमनाथ	21|01	70|26	-48
सोलापुर	17|40	75|48	-27
सोनीपत	28|59	77|01	-22
सोजत,मारवाड	25|56	73|42	-35
सोनपुर,उड़ीसा	20|51	83|55	+6
सोलन, हि.प्र.	30|57	77|09	-22
संथालपरगना	24|30	87|00	+18
संगमनेर	19|35	74|46	-31
हरिद्वार	29|56	78|13	-17

नगर	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं.क.	स्टैं. अ.मि.
हांसी	29|06	76|00	-26
हथुना	26|12	84|05	+6
हाजीपुर	25|35	83|11	+3
हाथरस	27|38	78|06	-18
हरदोई	27|23	80|10	-9
हजारीबाग	23|59	85|25	+12
हिसार	29|10	75|46	-27
हिंगोली	19|43	77|11	-21
हैदराबाद	17|18	78|30	-16
होशियारपुर	31|32	75|57	-26
हौशंगाबाद	22|46	77|45	-19
होडल (हरि.)	27|53	77|22	-21
त्रिचूर	10|32	76|14	-25
त्रिवेन्द्रम्	08|30	76|54	-22

अथ ज्योतिषमाहात्म्यम्

वेदाङ्गमाद्यं वेदानां क्रियाणां च प्रसाधनम्। ज्योतिर्ज्ञानं द्विजेन्द्राणमतो वेद्यं विदुर्बुधाः॥
ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्। ज्योतिर्ज्ञानं च यो वेत्ति स याति परमां गतिम् ॥
चन्द्रनक्षत्रताराणां ग्रहाणां भास्करस्य च। ज्योतिषामपि यज्योतिज्योतिषामपि पावनम् ॥
तद्भावभावितं युक्तं तं देवा ब्राह्मणं विदुः। तस्मात्पूर्वमधीयीत ज्योतिर्ज्ञानं द्विजोत्तमः ॥
धर्मसूत्रं ततः पश्चाद्यज्ञकर्मविधिक्रियाः। यज्ञाश्चायुष्यहोमाश्च चूडोपनयनानि च॥
न ज्योतिषं विना तासां प्रवृत्तिरुपलभ्यते। आप्यायनं च वेदानां यज्ञाः प्रोक्ताः क्रियाश्रयाः॥
यज्ञार्थमपि च प्रोक्ताः स्वयं वेदाः स्वयंभुवा। न च ते सम्प्रवर्तन्ते कालज्ञानात्कथंचन् ॥
यज्ञक्रिया अहोरात्रं क्रियाश्चान्या जगद्धिताः। तस्मात्पुण्यं वेदैर्यज्ञचक्षुः सनातनम् ॥
स्वर्ग्यमव्ययमव्यग्रैर्ब्राह्मणैः शंसितव्रतैः। ततः कालप्रसिद्ध्यर्थं राशयः पूर्वमीरिताः ॥
अहोरात्रविभागाश्च तिथीनां च क्रियाविधिः। सोमसूर्यविलग्नानामृक्षाणां चापि निश्चयः॥
आदानयोगभोगाश्च विसर्गाश्चार्कसोमयोः। दिनर्तुपक्षमासानां चन्द्रार्काणां विनिश्चयः॥
कर्मोपभोगमानानां लेख्यः प्रश्नविधिस्तथा। एवमाद्याः समस्ताश्च क्रियाज्योतिषसंश्रिताः ॥
तस्माद्विजैरध्ययनीयमेतत्पुण्यं रहस्यं परमं च तत्वम्। यो ज्योतिषं वेत्ति नरः स सम्यग्धर्मार्थकामान् लभते यशश्च ॥

क्रान्ति सारिणी

दिनांक	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्टूबर	नवंबर	दिसंबर
1	-23:01:35	-17:09:37	-7:39:37	04: 33:58	15:06:12	22:04:21	23:06:43	18:00:16	8:15:30	-3:12:36	-14:26:59	-21:49:00
2	-22:56:30	-16:52:27	-7:16:47	04: 57:06	15:24:13	22:12:16	23:02:27	17:45:00	7:53:40	-3:35:51	-14:46:05	-21:58:07
3	-22:50:57	-16:34:58	-6:53:50	05: 20:07	15:41:59	22:19:49	22:57:47	17:29:26	7:31:42	-3:59:4	-15:04:56	-22:06:48
4	-22:44:57	-16:17:13	-6:30:47	05: 43:04	15:59:30	22:26:58	22:52:43	17:13:36	7:09:37	-4:22:14	-15:23:33	-22:15:3
5	-22:38:30	-15:59:11	-6:07:39	06:05:54	16:16:44	22:33:44	22:47:15	16:57:28	6:47:25	-4:45:22	-15:41:54	-22:22:53
6	-22:31:36	-15:40:52	-5:44:25	06: 28:39	16:33:42	22:40:06	22:41:23	16:041:4	6:25:6	-5:8:25	-16:00:00	-22:30:17
7	-22:24:16	-15:22:17	-5:21:07	06: 51:16	16:50:23	22:46:04	22:35:07	16:24:24	6:02:42	-5:31:24	-16:17:50	-22:37:14
8	-22:16:29	-15:03:27	-4:57:45	07: 13:47	17:06:49	22:51:38	22:28:29	16:07:29	5:40:11	-5:54:20	-16:35:24	-22:43:45
9	-22:08:15	-14:44:20	-4:34:19	07: 36:10	17:22:56	22:56:48	22:21:26	15:50:18	5:17:35	-6:17:10	-16:52:40	-22:49:49
10	-21:59:36	-14:25:00	-4:10:49	07: 58:25	17:38:46	23:01:34	22:14:01	15:32:51	4:54:52	-6:39:57	-17:09:40	-22:55:26
11	-21:50:31	-14:05:25	-3:47:17	08: 20:32	17:54:18	23:05:55	22:06:13	15:15:10	4:32:06	-7:02:37	-17:26:22	-23:00:35
12	-21:41:00	-13:45:35	-3:23:41	08: 42:31	18:09:33	23:09:52	21:58:02	14:57:13	4:09:14	-7:25:12	-17:42:46	-23:05:18
13	-21:31:04	-13:25:33	-3:00:03	09:04:22	18:24:29	23:13:25	21:49:28	14:39:03	3:46:19	-7:47:40	-17:58:52	-23:09:33
14	-21:20:44	-13:05:17	-2:36:23	09: 26:02	18:39:07	23:16:32	21:40:32	14:20:39	3:23:18	-8:10:03	-18:14:39	-23:013:21
15	-21:09:58	-12:44:48	-2:12:41	09:47:35	18:53:26	23:19:16	21:31:14	14:02:01	3:0:15	-8:32:18	-18:30:06	-23:016:40
16	-20:58:48	-12:24:07	-1:48:59	10:08:56	19:07:25	23:21:34	21:21:34	13:43:10	2:37:07	-8:54:26	-18:45:14	-23:19:32
17	-20:47:14	-12:03:14	-1:25:15	10:30:08	19:21:05	23:23:28	21:11:32	13:24:05	2:13:57	-9:16:27	-19:00:03	-23:21:56
18	-20:35:17	-11:42:10	-1:01:30	10:51:10	19:34:25	23:24:57	21:01:08	13:04:48	1:50:44	-9:38:20	-19:14:31	-23:23:52
19	-20:22:56	-11:20:54	-0:36:14	11:12:01	19:47:25	23:26:02	20:50:24	12:45:19	1:27:29	-10:00:04	-19:28:38	-23:25:20
20	-20:10:12	-10:59:28	-0:13:59	11:32:40	20:00:05	23:26:41	20:39:18	12:25:37	1:04:12	-10:21:40	-19:42:24	-23:26:19
21	-19:57:05	-10:37:52	0:09:43	11:53:09	20:12:25	23:26:56	20:27:51	12:05:44	0:40:53	-10:43:05	-19:55:49	-23:26:51
22	-19:43:36	-10:16:05	0:33:27	12:13:25	20:24:23	23:26:46	20:16:04	11:45:38	0:17:33	-11:04:22	-20:08:51	-23:26:54
23	-19:29:45	-9:54:09	0:57:07	12:33:30	20:36:02	23:26:11	20:03:56	11:25:23	-0:04:12	-11:25:29	-20:21:33	-23:26:29
24	-19:15:32	-9:32:04	1:20:47	12:53:21	20:47:18	23:25:11	19:51:28	11:04:56	-0:28:50	-11:46:26	-20:33:50	-23:25:35
25	-19:00:58	-9:09:50	1:44:24	13:13:01	20:58:13	23:23:46	19:38:41	10:44:19	-0:51:27	-12:07:12	-20:45:46	-23:24:13
26	-18:46:03	-8:47:28	2:13:43	13:32:28	21:08:47	23:21:57	19:25:34	10:23:31	-1:15:55	-12:27:46	-20:57:18	-23:22:24
27	-18:30:48	-8:24:59	2:37:14	13:51:40	21:18:59	23:19:43	19:12:07	10:02:34	-1:39:17	-12:48:10	-21:08:27	-23:20:05
28	-18:15:12	-8:02:22	3:00:42	14:10:40	21:28:48	23:17:05	18:58:22	9:41:26	-2:02:39	-13:08:21	-21:19:12	-23:17:19
29	-17:59:17	-:-	3:24:08	14:29:25	21:38:15	23:14:02	18:44:18	9:20:11	-2:26:00	-13:28:21	-21:29:33	-23:14:05
30	-17:43:02	-:-	3:47:29	14:47:56	21:47:19	23:10:35	18:29:55	8:58:45	-2:49:19	-13:48:06	-21:39:29	-23:10:23
31	-17:26:29	-:-	4:10:46		21:56:02	-:-	18:15:14	8:37:11	-:-	-14:07:40	-:-	-23:06:13

(+) उत्तर क्रांति (-) दक्षिण क्रांति

चरसारिणी - 1

कां. / अ.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.
1	00:04	00:08	00:13	00 :17	00:21	00:25	00:29	00:34	00:38	00:42	00:47	00:51	00:55	01 :00	01:04	01:09	01 :13	01:18	01 :22	01 :27	01:32	01:37	01:42	01:47
2	00:08	00:17	00:25	00:34	00:42	00:50	00:59	01:08	01:16	01:25	01 :33	01:42	01:51	02:00	02:09	02:18	02:27	02:37	02:45	02:55	03:04	03:14	03:24	03:34
3	00:13	00:25	00:38	00:50	01 :03	01 :16	01:28	01:41	01:54	02:07	02:20	02:33	02:46	03:00	03:13	03:27	03:40	03:55	04:08	04:22	04:37	04:51	05:06	05:21
4	00:17	00:34	00:50	01 :07	01 :24	01 :41	01:58	02:12	02:29	02:48	03:05	03:24	03:42	04:00	04:18	04:36	04:54	05:12	05:31	05:50	06:09	06:29	06:48	07:08
5	00:21	00:42	01 :03	01 :24	01:45	02:07	02:28	02:50	03:10	03:32	03:54	04:16	04:38	05:00	05:23	05 :45	06:07	06:31	06:54	07:19	07:42	08:06	08:31	08:56
6	00:25	00:50	01 :16	01 :41	02:06	02:32	02:57	03:23	03:49	04:15	04:42	05:07	05:34	06:01	06:47	06:54	07:22	07:50	08:18	08:46	09:15	09:44	10:14	11:44
7	00:29	00:59	01 :28	01 :58	02:29	02:57	03:27	03:57	04:27	04:58	05:28	05:59	06:30	07:02	07:32	08:04	08:36	09:09	09:42	10:15	10:45	11:22	11:57	12:32
8	00:34	01 :07	01:4 1	02 :15	02:49	03:23	03:56	04:31	05:06	05:41	06:16	06:51	07:26	08:03	08:38	09:14	09:51	10:28	11:06	11:44	12:22	13:01	13:41	14:21
9	00:38	01 :16	01 :54	02:33	03:1 1	03:49	04:27	05:06	05:42	06:24	07:04	07:43	08:23	09:04	09:44	10:25	11:06	11 48	12:30	13:13	13:56	14:41	15:25	16:11
10	00:42	01 :25	02 :07	02:50	03:32	04:15	04:58	05:41	06:24	07:08	07:51	08:36	09:20	10:05	10:50	11:36	12:23	13:08	13:55	14:43	15:31	16:20	17:10	18:01
11	00:47	01 :34	02:20	03:07	03:54	04:40	05:28	06:16	07:03	07:51	08:40	09:29	10:17	11:07	11:56	12:47	13:38	14:29	15:27	16:14	17:07	18:01	18:56	19:52
12	00:51	01 :42	02:33	03:24	04:16	05:09	05:59	06:50	07:43	08:36	09:28	10:21	11:15	12:09	13:03	13:59	14:54	15:20	16:47	174: 5	18:43	19:42	20:42	21:43
13	00:55	01 :51	02:46	03 :42	04:38	05:34	06:30	07:20	08:30	09:20	10:17	11 :15	12:13	13:12	14:11	15:11	16:11	17:12	18:14	19:17	20:20	21:25	22:23	23:36
14	01:00	02:00	03:00	04:00	05:00	06:01	07:02	08:03	09:04	10:05	11:07	12:09	13:12	14:15	15:19	16:24	17:29	18:34	19:42	20:50	21:58	23:08	24:18	25:30
15	01:04	02:09	03:13	04:17	05 :21	06:27	07:31	08:38	09:44	10:50	11:57	13:04	14:10	15:19	16:27	17:38	18:48	19:59	21 :10	22:24	23:35	24:52	26:07	27:24
16	01:09	02:18	03 :27	04:36	05:44	06:54	08:04	09:14	10:25	11:06	12:47	13:59	15:00	16:24	17:36	18:52	20:07	21:23	22:40	23:57	25:17	26:37	27:58	29:20
17	01:13	02:27	03:40	04:54	06 :08	07:22	08:36	09:51	11:06	12:20	13:38	14:54	16:11	17:29	18:48	20:07	21:27	22:48	24:10	25:33	26:58	28:23	29:50	31:18
18	01:18	02:36	03 :51	05:12	06:31	07:50	09:09	10:28	11:48	13:08	14:29	15:50	17:22	18:34	19:59	21:23	22:48	24:14	25:43	27:10	28:41	30:10	31:43	33:16
19	01:23	02:45	04:08	05:31	06:54	08:18	09:37	11:06	12:30	13:55	15:21	16:47	18:14	19:42	21:11	22:40	24:10	25:42	27:14	28:48	30:23	31:59	33:37	35:16
20	01:27	02:55	04:22	05:50	07:16	08:46	10:15	11:44	13:13	14:43	16:14	17:45	19:27	20:50	22:23	23:57	25:33	27:10	28:41	30:27	32:08	33:49	35:33	37:18

चरसारिणी - 2

का. / अ.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.	मि.सै.
21	01:32	03:04	04:36	06:09	07:42	09:15	10:48	12:22	13:57	15:31	17:07	18:45	20:20	21:59	23:37	25:17	26:58	28:14	30:23	32:08	33:54	35:41	37:3 1	39:22
22	01:37	03:14	04:51	06:29	08:06	09:44	11:22	13:01	13:40	16:20	17:59	19:42	21:25	23:08	24:52	26:37	28:23	30:11	31:59	33:49	35:42	37:35	39:30	41 :27
23	01:42	03:24	05:0	06 :48	08:32	10:14	11:57	13:41	15:25	17:10	18:56	20:42	22:30	00:18	26:06	27:56	29:50	31:44	33:30	35:33	37:31	39:30	41:4 1	43:34
24	01:47	03:34	05:51	07:08	08:56	10 :44	12:32	14:21	16:11	18:01	19:52	21:43	23:36	01:30	27:24	29:20	31:18	33:16	35:16	37:18	39:22	41:47	43:34	45:54
25	01:52	03:44	05:36	07:28	09:21	11:14	13:08	14:59	16:57	18:52	20:48	22:45	00:43	02:42	28:43	30:44	32:47	34:52	36:57	39:05	41:15	43:26	45:40	47:56
26	01:57	03:54	05:52	07:49	09:37	11:45	13:44	15:45	17:43	19:44	21 :46	23:45	01:52	03:56	30:02	32:09	34:18	36:28	38:40	40:54	43:13	45:28	47:48	50:10
27	02:02	04:05	06:07	08:10	10:13	12:07	14:21	16:26	18:31	20:37	22:44	00:52	03:02	05:12	31:23	33:36	35:51	37:06	40:25	42:45	45:07	47:32	49:58	52:27
28	02:08	04:12	06:23	08:13	10:40	12:49	14:58	17:08	19:19	21:31	23:44	01:57	04:12	06:28	32:46	35:05	37:25	39:48	42:12	44:38	47:06	49:38	52:1 I	54:47
29	02:13	04:26	06:40	08:53	11:07	13:22	15:37	17:52	20:09	22:26	00:44	03:04	05:25	31:48	34:10	36:35	39:02	41:27	44:01	46:33	49:08	51:46	54:27	57:09
30	02:19	04:37	06:56	09 :15	11:35	13:55	16:16	18:37	20:59	23:22	01:46	04:12	06:38	09:06	35:36	38:07	40:40	43:15	45:52	48:31	51:13	53:57	56:45	59:35
31	02:24	04:59	07:13	09:37	12:02	14:29	16:55	19:23	21:50	24:21	26:50	29:21	31:54	34:27	37:04	39:4 1	42:21	45:02	47:46	50:28	53:20	56:12	59:06	62:04
32	02:30	05:00	07:30	10:01	12:32	15:04	17:36	20:07	22:43	25:17	27:54	30:32	33:10	35:47	38:33	41:16	44:03	46:52	49:42	52:35	55:30	58:30	61:31	64:37
33	02:36	05:12	07:46	10:25	13:02	15:39	18:16	20:57	23:37	26:18	28:59	31:44	34:29	37:16	40:05	42:56	45:48	48:44	51:40	54:41	57:44	60:51	63:57	67:13
34	02:42	05:54	08:05	10:49	13:32	16:16	19:01	21:45	24:32	27:19	30:06	32:58	35:49	38:44	41:39	44:36	47:36	50:37	53:43	56:5 1	60:01	63:15	66:33	69:54
35	02:48	05:36	08:25	11:14	14:01	16:53	19:44	22:35	01:24	04:22	07:17	10:14	13:13	16:13	43:15	46:19	49:27	52:36	55:44	59:04	62:22	65:44	69:10	72:40
40	03:21	06:43	10:05	13:27	16:47	20:14	23:38	03:04	06:33	10:02	13:33	17:06	20:47	00:18	51:58	55:41	59:28	63:17	67:10	72:06	75:10	79:16	83:28	87:45
45	04:00	08:00	12:01	14:02	20:05	00:04	04:10	32:19	36:27	40:37	44:47	49:05	53:24	57:45	62:10	66:40	71:13	75:51	80:34	85:30	90:18	95:19	100:28	104:45
50	04:46	09:32	14:19	19:07	23:56	28:47	33:39	38:34	43:31	48:31	53:35	58:42	63:53	59:09	74:29	79:56	85:28	91:04	96:54	102:50	108:54	115:08	121:33	128:11
55	05:43	11:26	17:10	22:56	28:43	34:31	40:24	46:18	32:18	58:20	64:28	70:01	76:59	83:36	90:00	96:42	103:33	110:35	117:49	125:17	132:59	140:58	149:16	157:56
28:39	02:11	04:22	06:34	08:45	10:58	13:10	15:23	17:37	19:51	22:07	00:23	02:41	04:59	07:19	33:40	36:03	38:28	40:54	43:22	45:53	48:25	51:01	53:38	56:19

बेलान्तर सारिणी												
दिनांक	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्टूबर	नवंबर	दिसंबर
1	03:11	13:30	12:40	03:48	03:48	-02:00	03:43	06:19	00:18	-11:36	-17:26	-11:05
2	03:38	13:39	12:28	03:30	03:30	-02:09	03:53	06:16	-01:59	-11:16	-17:25	-11:27
3	04:06	13:47	12:15	03:11	03:11	-02:19	04:04	06:12	-01:39	-12:56	-17:25	-11:51
4	04:33	13:54	12:02	02:53	02:53	-02:28	04:14	06:08	-01:19	-12:37	-17:27	-10:14
5	05:00	14:00	11:49	02:35	02:35	-02:38	04:25	06:03	-02:59	-12:18	-17:29	-10:39
6	05:26	14:06	11:34	02:18	02:18	-02:49	04:34	05:53	-02:38	-13:59	-17:31	-09:03
7	05:52	14:11	11:20	02:00	02:00	-02:59	04:44	05:51	-02:17	-13:41	-17:35	-09:28
8	06:18	14:15	11:05	01:43	01:43	-01:10	04:53	05:44	-03:56	-13:24	-17:40	-09:54
9	06:43	14:18	10:49	01:27	01:27	-01:21	05:02	05:37	-03:35	-13:06	-17:45	-08:20
10	07:07	14:20	10:34	01:10	01:10	-01:33	05:10	05:29	-03:14	-14:50	-17:51	-08:46
11	07:31	14:21	10:17	00:54	00:54	-01:44	05:18	05:20	-04:52	-14:33	-17:58	-07:13
12	07:55	14:22	10:01	00:38	00:38	-01:56	05:26	05:11	-04:30	-14:18	-16:06	-07:40
13	08:18	14:22	09:44	00:23	00:23	00:08	05:33	05:02	-04:08	-14:03	-16:15	-06:08
14	08:41	14:21	09:27	00:08	00:08	00:20	05:40	04:51	-05:46	-15:48	-16:24	-06:36
15	09:02	14:19	09:09	00:53	00:53	00:32	05:47	04:41	-05:24	-15:34	-16:35	-05:04
16	09:24	14:17	08:52	-01:39	-01:39	00:44	05:53	04:29	-05:01	-15:21	-16:46	-05:32
17	09:44	14:14	08:34	-01:25	-01:25	00:56	05:58	04:17	-06:39	-15:08	-16:58	-04:00
18	10:05	14:10	08:16	-01:12	-01:12	01:08	06:03	04:05	-06:17	-16:56	-15:11	-04:29
19	10:24	14:05	07:57	-02:59	-02:59	01:20	06:08	03:52	-07:55	-16:45	-15:25	-04:58
20	10:43	13:59	07:39	-02:46	-02:46	01:33	06:12	03:38	-07:32	-16:35	-15:39	-03:26
21	11:01	13:53	07:20	-02:34	-02:34	01:45	06:15	03:24	-07:10	-16:25	-15:54	-03:55
22	11:18	13:46	07:01	-02:23	-02:23	01:57	06:18	03:10	-08:48	-16:15	-14:10	-02:24
23	11:35	13:39	06:42	-02:12	-02:12	02:09	06:21	02:55	-08:26	-16:07	-14:27	-02:53
24	11:51	13:30	06:23	-02:01	-02:01	02:21	06:23	02:39	-08:04	-17:59	-14:44	-01:22
25	12:06	13:22	06:04	-03:51	-03:51	02:33	06:24	02:23	-09:42	-17:52	-13:02	-01:51
26	12:20	13:12	05:41	-03:42	-03:42	02:45	06:25	02:06	-09:21	-17:46	-13:21	00:20
27	12:34	13:02	05:22	-03:33	-03:33	02:57	06:26	01:49	-10:59	-17:41	-13:40	00:49
28	12:46	12:51	05:03	-03:24	-03:24	03:09	06:25	01:32	-10:38	-17:36	-12:01	01:18
29	12:59		04:44	-03:16	-03:16	03:20	06:25	01:14	-10:17	-17:32	-12:21	01:46
30	13:10		04:25	-03:09	-03:09	03:31	06:23	00:56	-11:56	-17:29	-12:43	02:15
31	13:20		04:07		04:07		06:21	00:37		-17:27		02:43

(+) उत्तर क्रांति (-) दक्षिण क्रांति

अप्रैल मास की दैनिक लग्न सारिणी

दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	6:51:47	08:28:08	10:23:07	12:35:55	15:00:00	17:17:42	19:32:54	21:52:11	0:13:26	2:15:23	4:04:02	5:28:07
2	6:47:51	08:24:12	10:19:11	12:31:59	14:56:03	17:13:45	19:28:58	21:48:14	0:09:29	2:11:27	4:00:06	5:24:10
3	6:43:54	08:20:15	10:15:14	12:28:02	14:52:07	17:09:49	19:25:01	21:44:17	0:05:32	2:07:30	3:56:09	5:20:14
4	6:39:57	08:16:18	10:11:17	12:24:05	14:48:10	17:05:52	19:21:04	21:40:20	0:01:36	2:03:33	3:52:12	5:16:17
5	6:36:00	08:12:21	10:07:20	12:20:08	14:44:13	17:01:55	19:17:07	21:36:24	23:57:39	1:59:37	3:48:16	5:12:20
6	6:32:04	08:08:25	10:03:24	12:16:12	14:40:16	16:57:58	19:13:11	21:32:27	23:53:42	1:55:40	3:44:19	5:08:24
7	6:28:07	08:04:28	09:59:27	12:12:15	14:36:20	16:54:02	19:09:14	21:28:30	23:49:46	1:51:43	3:40:22	5:04:27
8	6:24:10	08:00:31	09:55:30	12:08:18	14:32:23	16:50:05	19:05:17	21:24:34	23:45:49	1:47:47	3:36:26	5:00:30
9	6:20:14	07:56:35	09:51:34	12:04:22	14:28:26	16:46:08	19:01:21	21:20:37	23:41:52	1:43:50	3:32:29	4:56:33
10	6:16:17	07:52:38	09:47:37	12:00:25	14:24:30	16:42:12	18:57:24	21:16:40	23:37:56	1:39:53	3:28:32	4:52:37
11	6:12:20	07:48:41	09:43:40	11:56:28	14:20:33	16:38:15	18:53:27	21:12:43	23:33:59	1:35:56	3:24:35	4:48:40
12	6:08:23	07:44:44	09:39:43	11:52:31	14:16:36	16:34:18	18:49:30	21:08:47	23:30:02	1:32:00	3:20:39	4:44:43
13	6:04:27	07:40:48	09:35:47	11:48:35	14:12:39	16:30:21	18:45:34	21:04:50	23:26:05	1:28:03	3:16:42	4:40:47
14	6:00:30	07:36:51	09:31:50	11:44:38	14:08:43	16:26:25	18:41:37	21:00:53	23:22:09	1:24:06	3:12:45	4:36:50
15	5:56:33	07:32:54	09:27:53	11:40:41	14:04:46	16:22:28	18:37:40	20:56:57	23:18:12	1:20:10	3:08:49	4:32:53
16	5:52:37	07:28:58	09:23:57	11:36:45	14:00:49	16:18:31	18:33:44	20:53:00	23:14:15	1:16:13	3:04:52	4:28:56
17	5:48:40	07:25:01	09:20:00	11:32:48	13:56:53	16:14:35	18:29:47	20:49:03	23:10:19	1:12:16	3:00:55	4:25:00
18	5:44:43	07:21:04	09:16:03	11:28:51	13:52:56	16:10:38	18:25:50	20:45:07	23:06:22	1:08:19	2:56:58	4:21:03
19	5:40:46	07:17:07	09:12:06	11:24:54	13:48:59	16:06:41	18:21:54	20:41:10	23:02:25	1:04:23	2:53:02	4:17:06
20	5:36:50	07:13:11	09:08:10	11:20:58	13:45:02	16:02:45	18:17:57	20:37:13	22:58:28	1:00:26	2:49:05	4:13:10
21	5:32:53	07:09:14	09:04:13	11:17:01	13:41:06	15:58:48	18:14:00	20:33:16	22:54:32	0:56:29	2:45:08	4:09:13
22	5:28:56	07:05:17	09:00:16	11:13:04	13:37:09	15:54:51	18:10:03	20:29:20	22:50:35	0:52:33	2:41:12	4:05:16
23	5:25:00	07:01:21	08:56:20	11:09:08	13:33:12	15:50:54	18:06:07	20:25:23	22:46:38	0:48:36	2:37:15	4:01:19
24	5:21:03	06:57:24	08:52:23	11:05:11	13:29:16	15:46:58	18:02:10	20:21:26	22:42:42	0:44:39	2:33:18	3:57:23
25	5:17:06	06:53:27	08:48:26	11:01:14	13:25:19	15:43:01	17:58:13	20:17:30	22:38:45	0:40:42	2:29:21	3:53:26
26	5:13:09	06:49:30	08:44:29	10:57:18	13:21:22	15:39:04	17:54:17	20:13:33	22:34:48	0:36:46	2:25:25	3:49:29
27	5:09:13	06:45:34	08:40:33	10:53:21	13:17:26	15:35:08	17:50:20	20:09:36	22:30:51	0:32:49	2:21:28	3:45:33
28	5:05:16	06:41:37	08:36:36	10:49:24	13:13:29	15:31:11	17:46:23	20:05:39	22:26:55	0:28:52	2:17:31	3:41:36
29	5:01:19	06:37:40	08:32:39	10:45:27	13:09:32	15:27:14	17:42:26	20:01:43	22:22:58	0:24:56	2:13:35	3:37:39
30	4:57:23	06:33:44	08:28:43	10:41:31	13:05:35	15:23:17	17:38:30	19:57:46	22:19:01	0:20:59	2:09:38	3:33:42

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

मई मास की दैनिक लग्न सारिणी

दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	4:53:26	06:29:47	08:24:46	10:37:34	13:01:39	15:19:21	17:34:33	19:53:49	22:15:05	0:17:02	2:05:41	3:29:46
2	4:49:29	06:25:50	08:20:49	10:33:37	12:57:42	15:15:24	17:30:36	19:49:53	22:11:08	0:13:05	2:01:44	3:25:49
3	4:45:33	06:21:54	08:16:53	10:29:41	12:53:45	15:11:27	17:26:40	19:45:56	22:07:11	0:09:09	1:57:48	3:21:52
4	4:41:36	06:17:57	08:12:56	10:25:44	12:49:49	15:07:31	17:22:43	19:41:59	22:03:14	0:05:12	1:53:51	3:17:56
5	4:37:39	06:14:00	08:08:59	10:21:47	12:45:52	15:03:34	17:18:46	19:38:02	21:59:18	0:01:15	1:49:54	3:13:59
6	4:33:42	06:10:03	08:05:02	10:17:50	12:41:55	14:59:37	17:14:49	19:34:06	21:55:21	23:57:19	1:45:58	3:10:02
7	4:29:46	06:06:07	08:01:06	10:13:54	12:37:58	14:55:40	17:10:53	19:30:09	21:51:24	23:53:22	1:42:01	3:06:06
8	4:25:49	06:02:10	07:57:09	10:09:57	12:34:02	14:51:44	17:06:56	19:26:12	21:47:28	23:49:25	1:38:04	3:02:09
9	4:21:52	05:58:13	07:53:12	10:06:00	12:30:05	14:47:47	17:02:59	19:22:16	21:43:31	23:45:29	1:34:08	2:58:12
10	4:17:56	05:54:17	07:49:16	10:02:04	12:26:08	14:43:50	16:59:03	19:18:19	21:39:34	23:41:32	1:30:11	2:54:15
11	4:13:59	05:50:20	07:45:19	09:58:07	12:22:12	14:39:54	16:55:06	19:14:22	21:35:37	23:37:35	1:26:14	2:50:19
12	4:10:02	05:46:23	07:41:22	09:54:10	12:18:15	14:35:57	16:51:09	19:10:25	21:31:41	23:33:38	1:22:17	2:46:22
13	4:06:05	05:42:26	07:37:25	09:50:13	12:14:18	14:32:00	16:47:12	19:06:29	21:27:44	23:29:42	1:18:21	2:42:25
14	4:02:09	05:38:30	07:33:29	09:46:17	12:10:21	14:28:03	16:43:16	19:02:32	21:23:47	23:25:45	1:14:24	2:38:29
15	3:58:12	05:34:33	07:29:32	09:42:20	12:06:25	14:24:07	16:39:19	18:58:35	21:19:51	23:21:48	1:10:27	2:34:32
16	3:54:15	05:30:36	07:25:35	09:38:23	12:02:28	14:20:10	16:35:22	18:54:39	21:15:54	23:17:52	1:06:31	2:30:35
17	3:50:19	05:26:40	07:21:39	09:34:27	11:58:31	14:16:13	16:31:26	18:50:42	21:11:57	23:13:55	1:02:34	2:26:38
18	3:46:22	05:22:43	07:17:42	09:30:30	11:54:35	14:12:17	16:27:29	18:46:45	21:08:01	23:09:58	0:58:37	2:22:42
19	3:42:25	05:18:46	07:13:45	09:26:33	11:50:38	14:08:20	16:23:32	18:42:49	21:04:04	23:06:01	0:54:40	2:18:45
20	3:38:28	05:14:49	07:09:48	09:22:36	11:46:41	14:04:23	16:19:36	18:38:52	21:00:07	23:02:05	0:50:44	2:14:48
21	3:34:32	05:10:53	07:05:52	09:18:40	11:42:44	14:00:26	16:15:39	18:34:55	20:56:10	22:58:08	0:46:47	2:10:52
22	3:30:35	05:06:56	07:01:55	09:14:43	11:38:48	13:56:30	16:11:42	18:30:58	20:52:14	22:54:11	0:42:50	2:06:55
23	3:26:38	05:02:59	06:57:58	09:10:46	11:34:51	13:52:33	16:07:45	18:27:02	20:48:17	22:50:15	0:38:54	2:02:58
24	3:22:42	04:59:03	06:54:02	09:06:50	11:30:54	13:48:36	16:03:49	18:23:05	20:44:20	22:46:18	0:34:57	1:59:01
25	3:18:45	04:55:06	06:50:05	09:02:53	11:26:58	13:44:40	15:59:52	18:19:08	20:40:24	22:42:21	0:31:00	1:55:05
26	3:14:48	04:51:09	06:46:08	08:58:56	11:23:01	13:40:43	15:55:55	18:15:12	20:36:27	22:38:24	0:27:03	1:51:08
27	3:10:51	04:47:12	06:42:11	08:54:59	11:19:04	13:36:46	15:51:59	18:11:15	20:32:30	22:34:28	0:23:07	1:47:11
28	3:06:55	04:43:16	06:38:15	08:51:03	11:15:08	13:32:50	15:48:02	18:07:18	20:28:33	22:30:31	0:19:10	1:43:15
29	3:02:58	04:39:19	06:34:18	08:47:06	11:11:11	13:28:53	15:44:05	18:03:21	20:24:37	22:26:34	0:15:13	1:39:18
30	2:59:01	04:35:22	06:30:21	08:43:09	11:07:14	13:24:56	15:40:08	17:59:25	20:20:40	22:22:38	0:11:17	1:35:21
31	2:55:05	04:31:26	06:26:25	08:39:13	11:03:17	13:20:59	15:36:12	17:55:28	20:16:43	22:18:41	0:07:20	1:31:24

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

जून मास की दैनिक लग्न सारिणी												
दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	2:51:08	04:27:29	06:22:28	08:35:16	10:59:21	13:17:03	15:32:15	17:51:31	20:12:47	22:14:44	0:03:23	1:27:28
2	2:47:11	04:23:32	06:18:31	08:31:19	10:55:24	13:13:06	15:28:18	17:47:35	20:08:50	22:10:47	23:59:26	1:23:31
3	2:43:15	04:19:36	06:14:35	08:27:23	10:51:27	13:09:09	15:24:22	17:43:38	20:04:53	22:06:51	23:55:30	1:19:34
4	2:39:18	04:15:39	06:10:38	08:23:26	10:47:31	13:05:13	15:20:25	17:39:41	20:00:56	22:02:54	23:51:33	1:15:38
5	2:35:21	04:11:42	06:06:41	08:19:29	10:43:34	13:01:16	15:16:28	17:35:44	19:57:00	21:58:57	23:47:36	1:11:41
6	2:31:24	04:07:45	06:02:44	08:15:32	10:39:37	12:57:19	15:12:31	17:31:48	19:53:03	21:55:01	23:43:40	1:07:44
7	2:27:28	04:03:49	05:58:48	08:11:36	10:35:40	12:53:22	15:08:35	17:27:51	19:49:06	21:51:04	23:39:43	1:03:48
8	2:23:31	03:59:52	05:54:51	08:07:39	10:31:44	12:49:26	15:04:38	17:23:54	19:45:10	21:47:07	23:35:46	0:59:51
9	2:19:34	03:55:55	05:50:54	08:03:42	10:27:47	12:45:29	15:00:41	17:19:58	19:41:13	21:43:10	23:31:50	0:55:54
10	2:15:38	03:51:59	05:46:58	07:59:46	10:23:50	12:41:32	14:56:45	17:16:01	19:37:16	21:39:14	23:27:53	0:51:57
11	2:11:41	03:48:02	05:43:01	07:55:49	10:19:54	12:37:36	14:52:48	17:12:04	19:33:19	21:35:17	23:23:56	0:48:01
12	2:07:44	03:44:05	05:39:04	07:51:52	10:15:57	12:33:39	14:48:51	17:08:07	19:29:23	21:31:20	23:19:59	0:44:04
13	2:03:47	03:40:08	05:35:07	07:47:55	10:12:00	12:29:42	14:44:54	17:04:11	19:25:26	21:27:24	23:16:03	0:40:07
14	1:59:51	03:36:12	05:31:11	07:43:59	10:08:03	12:25:45	14:40:58	17:00:14	19:21:29	21:23:27	23:12:06	0:36:11
15	1:55:54	03:32:15	05:27:14	07:40:02	10:04:07	12:21:49	14:37:01	16:56:17	19:17:33	21:19:30	23:08:09	0:32:14
16	1:51:57	03:28:18	05:23:17	07:36:05	10:00:10	12:17:52	14:33:04	16:52:21	19:13:36	21:15:34	23:04:13	0:28:17
17	1:48:01	03:24:22	05:19:21	07:32:09	9:56:13	12:13:55	14:29:08	16:48:24	19:09:39	21:11:37	23:00:16	0:24:20
18	1:44:04	03:20:25	05:15:24	07:28:12	9:52:17	12:09:59	14:25:11	16:44:27	19:05:43	21:07:40	22:56:19	0:20:24
19	1:40:07	03:16:28	05:11:27	07:24:15	9:48:20	12:06:02	14:21:14	16:40:31	19:01:46	21:03:43	22:52:22	0:16:27
20	1:36:10	03:12:31	05:07:30	07:20:18	9:44:23	12:02:05	14:17:17	16:36:34	18:57:49	20:59:47	22:48:26	0:12:30
21	1:32:14	03:08:35	05:03:34	07:16:22	9:40:26	11:58:08	14:13:21	16:32:37	18:53:52	20:55:50	22:44:29	0:08:34
22	1:28:17	03:04:38	04:59:37	07:12:25	9:36:30	11:54:12	14:09:24	16:28:40	18:49:56	20:51:53	22:40:32	0:04:37
23	1:24:20	03:00:41	04:55:40	07:08:28	9:32:33	11:50:15	14:05:27	16:24:44	18:45:59	20:47:57	22:36:36	0:00:40
24	1:20:24	02:56:45	04:51:44	07:04:32	9:28:36	11:46:18	14:01:31	16:20:47	18:42:02	20:44:00	22:32:39	23:56:43
25	1:16:27	02:52:48	04:47:47	07:00:35	9:24:40	11:42:22	13:57:34	16:16:50	18:38:06	20:40:03	22:28:42	23:52:47
26	1:12:30	02:48:51	04:43:50	06:56:38	9:20:43	11:38:25	13:53:37	16:12:54	18:34:09	20:36:06	22:24:45	23:48:50
27	1:08:33	02:44:54	04:39:53	06:52:41	9:16:46	11:34:28	13:49:41	16:08:57	18:30:12	20:32:10	22:20:49	23:44:53
28	1:04:37	02:40:58	04:35:57	06:48:45	9:12:49	11:30:32	13:45:44	16:05:00	18:26:15	20:28:13	22:16:52	23:40:57
29	1:00:40	02:37:01	04:32:00	06:44:48	9:08:53	11:26:35	13:41:47	16:01:03	18:22:19	20:24:16	22:12:55	23:37:00
30	0:56:43	02:33:04	04:28:03	06:40:51	9:04:56	11:22:38	13:37:50	15:57:07	18:18:22	20:20:20	22:08:59	23:33:03

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

जुलाई मास की दैनिक लग्न सारिणी

दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	0:52:47	02:29:08	04:24:07	06:36:55	9:00:59	11:18:41	13:33:54	15:53:10	18:14:25	20:16:23	22:05:02	23:29:06
2	0:48:50	02:25:11	04:20:10	06:32:58	8:57:03	11:14:45	13:29:57	15:49:13	18:10:29	20:12:26	22:01:05	23:25:10
3	0:44:53	02:21:14	04:16:13	06:29:01	8:53:06	11:10:48	13:26:00	15:45:17	18:06:32	20:08:29	21:57:08	23:21:13
4	0:40:56	02:17:18	04:12:17	06:25:05	8:49:09	11:06:51	13:22:04	15:41:20	18:02:35	20:04:33	21:53:12	23:17:16
5	0:37:00	02:13:21	04:08:20	06:21:08	8:45:13	11:02:55	13:18:07	15:37:23	17:58:38	20:00:36	21:49:15	23:13:20
6	0:33:03	02:09:24	04:04:23	06:17:11	8:41:16	10:58:58	13:14:10	15:33:26	17:54:42	19:56:39	21:45:18	23:09:23
7	0:29:06	02:05:27	04:00:26	06:13:14	8:37:19	10:55:01	13:10:13	15:29:30	17:50:45	19:52:43	21:41:22	23:05:26
8	0:25:10	02:01:31	03:56:30	06:09:18	8:33:22	10:51:04	13:06:17	15:25:33	17:46:48	19:48:46	21:37:25	23:01:30
9	0:21:13	01:57:34	03:52:33	06:05:21	8:29:26	10:47:08	13:02:20	15:21:36	17:42:52	19:44:49	21:33:28	22:57:33
10	0:17:16	01:53:37	03:48:36	06:01:24	8:25:29	10:43:11	12:58:23	15:17:40	17:38:55	19:40:52	21:29:31	22:53:36
11	0:13:20	01:49:41	03:44:40	05:57:28	8:21:32	10:39:14	12:54:27	15:13:43	17:34:58	19:36:56	21:25:35	22:49:39
12	0:09:23	01:45:44	03:40:43	05:53:31	8:17:36	10:35:18	12:50:30	15:09:46	17:31:01	19:32:59	21:21:38	22:45:43
13	0:05:26	01:41:47	03:36:46	05:49:34	8:13:39	10:31:21	12:46:33	15:05:49	17:27:05	19:29:02	21:17:41	22:41:46
14	0:01:29	01:37:50	03:32:49	05:45:37	8:09:42	10:27:24	12:42:36	15:01:53	17:23:08	19:25:06	21:13:45	22:37:49
15	23:57:33	01:33:54	03:28:53	05:41:41	8:05:45	10:23:27	12:38:40	14:57:56	17:19:11	19:21:09	21:09:48	22:33:53
16	23:53:36	01:29:57	03:24:56	05:37:44	8:01:49	10:19:31	12:34:43	14:53:59	17:15:15	19:17:12	21:05:51	22:29:56
17	23:49:39	01:26:00	03:20:59	05:33:47	7:57:52	10:15:34	12:30:46	14:50:03	17:11:18	19:13:16	21:01:55	22:25:59
18	23:45:43	01:22:04	03:17:03	05:29:51	7:53:55	10:11:37	12:26:50	14:46:06	17:07:21	19:09:19	20:57:58	22:22:02
19	23:41:46	01:18:07	03:13:06	05:25:54	7:49:59	10:07:41	12:22:53	14:42:09	17:03:25	19:05:22	20:54:01	22:18:06
20	23:37:49	01:14:10	03:09:09	05:21:57	7:46:02	10:03:44	12:18:56	14:38:12	16:59:28	19:01:25	20:50:04	22:14:09
21	23:33:52	01:10:13	03:05:12	05:18:00	7:42:05	9:59:47	12:14:59	14:34:16	16:55:31	18:57:29	20:46:08	22:10:12
22	23:29:56	01:06:17	03:01:16	05:14:04	7:38:08	9:55:50	12:11:03	14:30:19	16:51:34	18:53:32	20:42:11	22:06:16
23	23:25:59	01:02:20	02:57:19	05:10:07	7:34:12	9:51:54	12:07:06	14:26:22	16:47:38	18:49:35	20:38:14	22:02:19
24	23:22:02	00:58:23	02:53:22	05:06:10	7:30:15	9:47:57	12:03:09	14:22:26	16:43:41	18:45:39	20:34:18	21:58:22
25	23:18:06	00:54:27	02:49:26	05:02:14	7:26:18	9:44:00	11:59:13	14:18:29	16:39:44	18:41:42	20:30:21	21:54:25
26	23:14:09	00:50:30	02:45:29	04:58:17	7:22:22	9:40:04	11:55:16	14:14:32	16:35:48	18:37:45	20:26:24	21:50:29
27	23:10:12	00:46:33	02:41:32	04:54:20	7:18:25	9:36:07	11:51:19	14:10:36	16:31:51	18:33:48	20:22:27	21:46:32
28	23:06:15	00:42:36	02:37:35	04:50:23	7:14:28	9:32:10	11:47:23	14:06:39	16:27:54	18:29:52	20:18:31	21:42:35
29	23:02:19	00:38:40	02:33:39	04:46:27	7:10:31	9:28:13	11:43:26	14:02:42	16:23:57	18:25:55	20:14:34	21:38:39
30	22:58:22	00:34:43	02:29:42	04:42:30	7:06:35	9:24:17	11:39:29	13:58:45	16:20:01	18:21:58	20:10:37	21:34:42
31	22:54:25	00:30:46	02:25:45	04:38:33	7:02:38	9:20:20	11:35:32	13:54:49	16:16:04	18:18:02	20:06:41	21:30:45

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

अगस्त मास की दैनिक लग्न सारिणी

दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	22:50:29	00:26:50	02:21:49	04:34:37	6:58:41	9:16:23	11:31:36	13:50:52	16:12:07	18:14:05	20:02:44	21:26:48
2	22:46:32	00:22:53	02:17:52	04:30:40	6:54:45	9:12:27	11:27:39	13:46:55	16:08:11	18:10:08	19:58:47	21:22:52
3	22:42:35	00:18:56	02:13:55	04:26:43	6:50:48	9:08:30	11:23:42	13:42:59	16:04:14	18:06:11	19:54:50	21:18:55
4	22:38:38	00:14:59	02:09:59	04:22:47	6:46:51	9:04:33	11:19:46	13:39:02	16:00:17	18:02:15	19:50:54	21:14:58
5	22:34:42	00:11:03	02:06:02	04:18:50	6:42:55	9:00:37	11:15:49	13:35:05	15:56:20	17:58:18	19:46:57	21:11:02
6	22:30:45	00:07:06	02:02:05	04:14:53	6:38:58	8:56:40	11:11:52	13:31:08	15:52:24	17:54:21	19:43:00	21:07:05
7	22:26:48	00:03:09	01:58:08	04:10:56	6:35:01	8:52:43	11:07:55	13:27:12	15:48:27	17:50:25	19:39:04	21:03:08
8	22:22:52	23:59:13	01:54:12	04:07:00	6:31:04	8:48:46	11:03:59	13:23:15	15:44:30	17:46:28	19:35:07	20:59:11
9	22:18:55	23:55:16	01:50:15	04:03:03	6:27:08	8:44:50	11:00:02	13:19:18	15:40:34	17:42:31	19:31:10	20:55:15
10	22:14:58	23:51:19	01:46:18	03:59:06	6:23:11	8:40:53	10:56:05	13:15:22	15:36:37	17:38:34	19:27:13	20:51:18
11	22:11:02	23:47:23	01:42:22	03:55:10	6:19:14	8:36:56	10:52:09	13:11:25	15:32:40	17:34:38	19:23:17	20:47:21
12	22:07:05	23:43:26	01:38:25	03:51:13	6:15:18	8:33:00	10:48:12	13:07:28	15:28:43	17:30:41	19:19:20	20:43:25
13	22:03:08	23:39:29	01:34:28	03:47:16	6:11:21	8:29:03	10:44:15	13:03:31	15:24:47	17:26:44	19:15:23	20:39:28
14	21:59:11	23:35:32	01:30:31	03:43:19	6:07:24	8:25:06	10:40:18	12:59:35	15:20:50	17:22:48	19:11:27	20:35:31
15	21:55:15	23:31:36	01:26:35	03:39:23	6:03:27	8:21:09	10:36:22	12:55:38	15:16:53	17:18:51	19:07:30	20:31:35
16	21:51:18	23:27:39	01:22:38	03:35:26	5:59:31	8:17:13	10:32:25	12:51:41	15:12:57	17:14:54	19:03:33	20:27:38
17	21:47:21	23:23:42	01:18:41	03:31:29	5:55:34	8:13:16	10:28:28	12:47:45	15:09:00	17:10:58	18:59:37	20:23:41
18	21:43:25	23:19:46	01:14:45	03:27:33	5:51:37	8:09:19	10:24:32	12:43:48	15:05:03	17:07:01	18:55:40	20:19:44
19	21:39:28	23:15:49	01:10:48	03:23:36	5:47:41	8:05:23	10:20:35	12:39:51	15:01:06	17:03:04	18:51:43	20:15:48
20	21:35:31	23:11:52	01:06:51	03:19:39	5:43:44	8:01:26	10:16:38	12:35:54	14:57:10	16:59:07	18:47:46	20:11:51
21	21:31:34	23:07:55	01:02:54	03:15:42	5:39:47	7:57:29	10:12:41	12:31:58	14:53:13	16:55:11	18:43:50	20:07:54
22	21:27:38	23:03:59	00:58:58	03:11:46	5:35:50	7:53:32	10:08:45	12:28:01	14:49:16	16:51:14	18:39:53	20:03:58
23	21:23:41	23:00:02	00:55:01	03:07:49	5:31:54	7:49:36	10:04:48	12:24:04	14:45:20	16:47:17	18:35:56	20:00:01
24	21:19:44	22:56:05	00:51:04	03:03:52	5:27:57	7:45:39	10:00:51	12:20:08	14:41:23	16:43:21	18:32:00	19:56:04
25	21:15:48	22:52:09	00:47:08	02:59:56	5:24:00	7:41:42	9:56:55	12:16:11	14:37:26	16:39:24	18:28:03	19:52:07
26	21:11:51	22:48:12	00:43:11	02:55:59	5:20:04	7:37:46	9:52:58	12:12:14	14:33:30	16:35:27	18:24:06	19:48:11
27	21:07:54	22:44:15	00:39:14	02:52:02	5:16:07	7:33:49	9:49:01	12:08:18	14:29:33	16:31:30	18:20:09	19:44:14
28	21:03:57	22:40:18	00:35:17	02:48:05	5:12:10	7:29:52	9:45:04	12:04:21	14:25:36	16:27:34	18:16:13	19:40:17
29	21:00:01	22:36:22	00:31:21	02:44:09	5:08:13	7:25:55	9:41:08	12:00:24	14:21:39	16:23:37	18:12:16	19:36:21
30	20:56:04	22:32:25	00:27:24	02:40:12	5:04:17	7:21:59	9:37:11	11:56:27	14:17:43	16:19:40	18:08:19	19:32:24
31	20:52:07	22:28:28	00:23:27	02:36:15	5:00:20	7:18:02	9:33:14	11:52:31	14:13:46	16:15:44	18:04:23	19:28:27

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

सितम्बर मास की दैनिक लग्न सारिणी												
दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	20:48:11	22:24:32	00:19:31	02:32:19	4:56:23	7:14:05	9:29:18	11:48:34	14:09:49	16:11:47	18:00:26	19:24:30
2	20:44:14	22:20:35	00:15:34	02:28:22	4:52:27	7:10:09	9:25:21	11:44:37	14:05:53	16:07:50	17:56:29	19:20:34
3	20:40:17	22:16:38	00:11:37	02:24:25	4:48:30	7:06:12	9:21:24	11:40:41	14:01:56	16:03:53	17:52:32	19:16:37
4	20:36:20	22:12:41	00:07:40	02:20:29	4:44:33	7:02:15	9:17:28	11:36:44	13:57:59	15:59:57	17:48:36	19:12:40
5	20:32:24	22:08:45	00:03:44	02:16:32	4:40:37	6:58:19	9:13:31	11:32:47	13:54:02	15:56:00	17:44:39	19:08:44
6	20:28:27	22:04:48	23:59:47	02:12:35	4:36:40	6:54:22	9:09:34	11:28:50	13:50:06	15:52:03	17:40:42	19:04:47
7	20:24:30	22:00:51	23:55:50	02:08:38	4:32:43	6:50:25	9:05:37	11:24:54	13:46:09	15:48:07	17:36:46	19:00:50
8	20:20:34	21:56:55	23:51:54	02:04:42	4:28:46	6:46:28	9:01:41	11:20:57	13:42:12	15:44:10	17:32:49	18:56:53
9	20:16:37	21:52:58	23:47:57	02:00:45	4:24:50	6:42:32	8:57:44	11:17:00	13:38:16	15:40:13	17:28:52	18:52:57
10	20:12:40	21:49:01	23:44:00	01:56:48	4:20:53	6:38:35	8:53:47	11:13:04	13:34:19	15:36:16	17:24:55	18:49:00
11	20:08:44	21:45:05	23:40:04	01:52:52	4:16:56	6:34:38	8:49:51	11:09:07	13:30:22	15:32:20	17:20:59	18:45:03
12	20:04:47	21:41:08	23:36:07	01:48:55	4:13:00	6:30:42	8:45:54	11:05:10	13:26:25	15:28:23	17:17:02	18:41:07
13	20:00:50	21:37:11	23:32:10	01:44:58	4:09:03	6:26:45	8:41:57	11:01:13	13:22:29	15:24:26	17:13:05	18:37:10
14	19:56:53	21:33:14	23:28:13	01:41:01	4:05:06	6:22:48	8:38:00	10:57:17	13:18:32	15:20:30	17:09:09	18:33:13
15	19:52:57	21:29:18	23:24:17	01:37:05	4:01:09	6:18:51	8:34:04	10:53:20	13:14:35	15:16:33	17:05:12	18:29:17
16	19:49:00	21:25:21	23:20:20	01:33:08	3:57:13	6:14:55	8:30:07	10:49:23	13:10:39	15:12:36	17:01:15	18:25:20
17	19:45:03	21:21:24	23:16:23	01:29:11	3:53:16	6:10:58	8:26:10	10:45:27	13:06:42	15:08:39	16:57:19	18:21:23
18	19:41:07	21:17:28	23:12:27	01:25:15	3:49:19	6:07:01	8:22:14	10:41:30	13:02:45	15:04:43	16:53:22	18:17:26
19	19:37:10	21:13:31	23:08:30	01:21:18	3:45:23	6:03:05	8:18:17	10:37:33	12:58:48	15:00:46	16:49:25	18:13:30
20	19:33:13	21:09:34	23:04:33	01:17:21	3:41:26	5:59:08	8:14:20	10:33:36	12:54:52	14:56:49	16:45:28	18:09:33
21	19:29:16	21:05:37	23:00:36	01:13:24	3:37:29	5:55:11	8:10:23	10:29:40	12:50:55	14:52:53	16:41:32	18:05:36
22	19:25:20	21:01:41	22:56:40	01:09:28	3:33:32	5:51:14	8:06:27	10:25:43	12:46:58	14:48:56	16:37:35	18:01:40
23	19:21:23	20:57:44	22:52:43	01:05:31	3:29:36	5:47:18	8:02:30	10:21:46	12:43:02	14:44:59	16:33:38	17:57:43
24	19:17:26	20:53:47	22:48:46	01:01:34	3:25:39	5:43:21	7:58:33	10:17:50	12:39:05	14:41:03	16:29:42	17:53:46
25	19:13:30	20:49:51	22:44:50	00:57:38	3:21:42	5:39:24	7:54:37	10:13:53	12:35:08	14:37:06	16:25:45	17:49:49
26	19:09:33	20:45:54	22:40:53	00:53:41	3:17:46	5:35:28	7:50:40	10:09:56	12:31:12	14:33:09	16:21:48	17:45:53
27	19:05:36	20:41:57	22:36:56	00:49:44	3:13:49	5:31:31	7:46:43	10:05:59	12:27:15	14:29:12	16:17:51	17:41:56
28	19:01:39	20:38:00	22:32:59	00:45:47	3:09:52	5:27:34	7:42:46	10:02:03	12:23:18	14:25:16	16:13:55	17:37:59
29	18:57:43	20:34:04	22:29:03	00:41:51	3:05:55	5:23:37	7:38:50	9:58:06	12:19:21	14:21:19	16:09:58	17:34:03
30	18:53:46	20:30:07	22:25:06	00:37:54	3:01:59	5:19:41	7:34:53	9:54:09	12:15:25	14:17:22	16:06:01	17:30:06

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

अक्टूबर मास की दैनिक लग्न सारिणी

दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	18:49:49	20:26:10	22:21:09	00:33:57	2:58:02	5:15:44	7:30:56	9:50:13	12:11:28	14:13:26	16:02:05	17:26:09
2	18:45:53	20:22:14	22:17:13	00:30:01	2:54:05	5:11:47	7:27:00	9:46:16	12:07:31	14:09:29	15:58:08	17:22:12
3	18:41:56	20:18:17	22:13:16	00:26:04	2:50:09	5:07:51	7:23:03	9:42:19	12:03:35	14:05:32	15:54:11	17:18:16
4	18:37:59	20:14:20	22:09:19	00:22:07	2:46:12	5:03:54	7:19:06	9:38:23	11:59:38	14:01:35	15:50:14	17:14:19
5	18:34:02	20:10:23	22:05:22	00:18:10	2:42:15	4:59:57	7:15:10	9:34:26	11:55:41	13:57:39	15:46:18	17:10:22
6	18:30:06	20:06:27	22:01:26	00:14:14	2:38:19	4:56:01	7:11:13	9:30:29	11:51:44	13:53:42	15:42:21	17:06:26
7	18:26:09	20:02:30	21:57:29	00:10:17	2:34:22	4:52:04	7:07:16	9:26:32	11:47:48	13:49:45	15:38:24	17:02:29
8	18:22:12	19:58:33	21:53:32	00:06:20	2:30:25	4:48:07	7:03:19	9:22:36	11:43:51	13:45:49	15:34:28	16:58:32
9	18:18:16	19:54:37	21:49:36	00:02:24	2:26:28	4:44:10	6:59:23	9:18:39	11:39:54	13:41:52	15:30:31	16:54:35
10	18:14:19	19:50:40	21:45:39	23:58:27	2:22:32	4:40:14	6:55:26	9:14:42	11:35:58	13:37:55	15:26:34	16:50:39
11	18:10:22	19:46:43	21:41:42	23:54:30	2:18:35	4:36:17	6:51:29	9:10:46	11:32:01	13:33:58	15:22:37	16:46:42
12	18:06:25	19:42:47	21:37:46	23:50:34	2:14:38	4:32:20	6:47:33	9:06:49	11:28:04	13:30:02	15:18:41	16:42:45
13	18:02:29	19:38:50	21:33:49	23:46:37	2:10:42	4:28:24	6:43:36	9:02:52	11:24:07	13:26:05	15:14:44	16:38:49
14	17:58:32	19:34:53	21:29:52	23:42:40	2:06:45	4:24:27	6:39:39	8:58:55	11:20:11	13:22:08	15:10:47	16:34:52
15	17:54:35	19:30:56	21:25:55	23:38:43	2:02:48	4:20:30	6:35:42	8:54:59	11:16:14	13:18:12	15:06:51	16:30:55
16	17:50:39	19:27:00	21:21:59	23:34:47	1:58:51	4:16:33	6:31:46	8:51:02	11:12:17	13:14:15	15:02:54	16:26:59
17	17:46:42	19:23:03	21:18:02	23:30:50	1:54:55	4:12:37	6:27:49	8:47:05	11:08:21	13:10:18	14:58:57	16:23:02
18	17:42:45	19:19:06	21:14:05	23:26:53	1:50:58	4:08:40	6:23:52	8:43:09	11:04:24	13:06:21	14:55:00	16:19:05
19	17:38:49	19:15:10	21:10:09	23:22:57	1:47:01	4:04:43	6:19:56	8:39:12	11:00:27	13:02:25	14:51:04	16:15:08
20	17:34:52	19:11:13	21:06:12	23:19:00	1:43:05	4:00:47	6:15:59	8:35:15	10:56:30	12:58:28	14:47:07	16:11:12
21	17:30:55	19:07:16	21:02:15	23:15:03	1:39:08	3:56:50	6:12:02	8:31:18	10:52:34	12:54:31	14:43:10	16:07:15
22	17:26:58	19:03:19	20:58:18	23:11:06	1:35:11	3:52:53	6:08:05	8:27:22	10:48:37	12:50:35	14:39:14	16:03:18
23	17:23:02	18:59:23	20:54:22	23:07:10	1:31:14	3:48:56	6:04:09	8:23:25	10:44:40	12:46:38	14:35:17	15:59:22
24	17:19:05	18:55:26	20:50:25	23:03:13	1:27:18	3:45:00	6:00:12	8:19:28	10:40:44	12:42:41	14:31:20	15:55:25
25	17:15:08	18:51:29	20:46:28	22:59:16	1:23:21	3:41:03	5:56:15	8:15:32	10:36:47	12:38:45	14:27:24	15:51:28
26	17:11:12	18:47:33	20:42:32	22:55:20	1:19:24	3:37:06	5:52:19	8:11:35	10:32:50	12:34:48	14:23:27	15:47:31
27	17:07:15	18:43:36	20:38:35	22:51:23	1:15:28	3:33:10	5:48:22	8:07:38	10:28:53	12:30:51	14:19:30	15:43:35
28	17:03:18	18:39:39	20:34:38	22:47:26	1:11:31	3:29:13	5:44:25	8:03:41	10:24:57	12:26:54	14:15:33	15:39:38
29	16:59:21	18:35:42	20:30:41	22:43:29	1:07:34	3:25:16	5:40:28	7:59:45	10:21:00	12:22:58	14:11:37	15:35:41
30	16:55:25	18:31:46	20:26:45	22:39:33	1:03:37	3:21:19	5:36:32	7:55:48	10:17:03	12:19:01	14:07:40	15:31:45
31	16:51:28	18:27:49	20:22:48	22:35:36	0:59:41	3:17:23	5:32:35	7:51:51	10:13:07	12:15:04	14:03:43	15:27:48

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

नवम्बर मास की दैनिक लग्न सारिणी

दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	16:47:31	18:23:52	20:18:51	22:31:39	0:55:44	3:13:26	5:28:38	7:47:55	10:09:10	12:11:08	13:59:47	15:23:51
2	16:43:35	18:19:56	20:14:55	22:27:43	0:51:47	3:09:29	5:24:42	7:43:58	10:05:13	12:07:11	13:55:50	15:19:54
3	16:39:38	18:15:59	20:10:58	22:23:46	0:47:51	3:05:33	5:20:45	7:40:01	10:01:17	12:03:14	13:51:53	15:15:58
4	16:35:41	18:12:02	20:07:01	22:19:49	0:43:54	3:01:36	5:16:48	7:36:05	9:57:20	11:59:17	13:47:56	15:12:01
5	16:31:44	18:08:05	20:03:04	22:15:52	0:39:57	2:57:39	5:12:52	7:32:08	9:53:23	11:55:21	13:44:00	15:08:04
6	16:27:48	18:04:09	19:59:08	22:11:56	0:36:00	2:53:43	5:08:55	7:28:11	9:49:26	11:51:24	13:40:03	15:04:08
7	16:23:51	18:00:12	19:55:11	22:07:59	0:32:04	2:49:46	5:04:58	7:24:14	9:45:30	11:47:27	13:36:06	15:00:11
8	16:19:54	17:56:15	19:51:14	22:04:02	0:28:07	2:45:49	5:01:01	7:20:18	9:41:33	11:43:31	13:32:10	14:56:14
9	16:15:58	17:52:19	19:47:18	22:00:06	0:24:10	2:41:52	4:57:05	7:16:21	9:37:36	11:39:34	13:28:13	14:52:17
10	16:12:01	17:48:22	19:43:21	21:56:09	0:20:14	2:37:56	4:53:08	7:12:24	9:33:40	11:35:37	13:24:16	14:48:21
11	16:08:04	17:44:25	19:39:24	21:52:12	0:16:17	2:33:59	4:49:11	7:08:28	9:29:43	11:31:40	13:20:19	14:44:24
12	16:04:07	17:40:28	19:35:28	21:48:16	0:12:20	2:30:02	4:45:15	7:04:31	9:25:46	11:27:44	13:16:23	14:40:27
13	16:00:11	17:36:32	19:31:31	21:44:19	0:08:24	2:26:06	4:41:18	7:00:34	9:21:49	11:23:47	13:12:26	14:36:31
14	15:56:14	17:32:35	19:27:34	21:40:22	0:04:27	2:22:09	4:37:21	6:56:37	9:17:53	11:19:50	13:08:29	14:32:34
15	15:52:17	17:28:38	19:23:37	21:36:25	0:00:30	2:18:12	4:33:24	6:52:41	9:13:56	11:15:54	13:04:33	14:28:37
16	15:48:21	17:24:42	19:19:41	21:32:29	23:56:33	2:14:15	4:29:28	6:48:44	9:09:59	11:11:57	13:00:36	14:24:40
17	15:44:24	17:20:45	19:15:44	21:28:32	23:52:37	2:10:19	4:25:31	6:44:47	9:06:03	11:08:00	12:56:39	14:20:44
18	15:40:27	17:16:48	19:11:47	21:24:35	23:48:40	2:06:22	4:21:34	6:40:51	9:02:06	11:04:03	12:52:42	14:16:47
19	15:36:31	17:12:52	19:07:51	21:20:39	23:44:43	2:02:25	4:17:38	6:36:54	8:58:09	11:00:07	12:48:46	14:12:50
20	15:32:34	17:08:55	19:03:54	21:16:42	23:40:47	1:58:29	4:13:41	6:32:57	8:54:12	10:56:10	12:44:49	14:08:54
21	15:28:37	17:04:58	18:59:57	21:12:45	23:36:50	1:54:32	4:09:44	6:29:00	8:50:16	10:52:13	12:40:52	14:04:57
22	15:24:40	17:01:01	18:56:00	21:08:48	23:32:53	1:50:35	4:05:47	6:25:04	8:46:19	10:48:17	12:36:56	14:01:00
23	15:20:44	16:57:05	18:52:04	21:04:52	23:28:56	1:46:38	4:01:51	6:21:07	8:42:22	10:44:20	12:32:59	13:57:04
24	15:16:47	16:53:08	18:48:07	21:00:55	23:25:00	1:42:42	3:57:54	6:17:10	8:38:26	10:40:23	12:29:02	13:53:07
25	15:12:50	16:49:11	18:44:10	20:56:58	23:21:03	1:38:45	3:53:57	6:13:14	8:34:29	10:36:26	12:25:06	13:49:10
26	15:08:54	16:45:15	18:40:14	20:53:02	23:17:06	1:34:48	3:50:01	6:09:17	8:30:32	10:32:30	12:21:09	13:45:13
27	15:04:57	16:41:18	18:36:17	20:49:05	23:13:10	1:30:52	3:46:04	6:05:20	8:26:35	10:28:33	12:17:12	13:41:17
28	15:01:00	16:37:21	18:32:20	20:45:08	23:09:13	1:26:55	3:42:07	6:01:23	8:22:39	10:24:36	12:13:15	13:37:20
29	14:57:03	16:33:24	18:28:23	20:41:11	23:05:16	1:22:58	3:38:10	5:57:27	8:18:42	10:20:40	12:09:19	13:33:23
30	14:53:07	16:29:28	18:24:27	20:37:15	23:01:19	1:19:01	3:34:14	5:53:30	8:14:45	10:16:43	12:05:22	13:29:27

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

दिसम्बर मास की दैनिक लग्न सारिणी

दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	14:49:10	16:25:31	18:20:30	20:33:18	22:57:23	1:15:05	3:30:17	5:49:33	8:10:49	10:12:46	12:01:25	13:25:30
2	14:45:13	16:21:34	18:16:33	20:29:21	22:53:26	1:11:08	3:26:20	5:45:37	8:06:52	10:08:50	11:57:29	13:21:33
3	14:41:17	16:17:38	18:12:37	20:25:25	22:49:29	1:07:11	3:22:24	5:41:40	8:02:55	10:04:53	11:53:32	13:17:36
4	14:37:20	16:13:41	18:08:40	20:21:28	22:45:33	1:03:15	3:18:27	5:37:43	7:58:59	10:00:56	11:49:35	13:13:40
5	14:33:23	16:09:44	18:04:43	20:17:31	22:41:36	0:59:18	3:14:30	5:33:47	7:55:02	9:56:59	11:45:38	13:09:43
6	14:29:26	16:05:47	18:00:46	20:13:34	22:37:39	0:55:21	3:10:34	5:29:50	7:51:05	9:53:03	11:41:42	13:05:46
7	14:25:30	16:01:51	17:56:50	20:09:38	22:33:42	0:51:24	3:06:37	5:25:53	7:47:08	9:49:06	11:37:45	13:01:50
8	14:21:33	15:57:54	17:52:53	20:05:41	22:29:46	0:47:28	3:02:40	5:21:56	7:43:12	9:45:09	11:33:48	12:57:53
9	14:17:36	15:53:57	17:48:56	20:01:44	22:25:49	0:43:31	2:58:43	5:18:00	7:39:15	9:41:13	11:29:52	12:53:56
10	14:13:40	15:50:01	17:45:00	19:57:48	22:21:52	0:39:34	2:54:47	5:14:03	7:35:18	9:37:16	11:25:55	12:49:59
11	14:09:43	15:46:04	17:41:03	19:53:51	22:17:56	0:35:38	2:50:50	5:10:06	7:31:22	9:33:19	11:21:58	12:46:03
12	14:05:46	15:42:07	17:37:06	19:49:54	22:13:59	0:31:41	2:46:53	5:06:10	7:27:25	9:29:22	11:18:01	12:42:06
13	14:01:49	15:38:10	17:33:09	19:45:58	22:10:02	0:27:44	2:42:57	5:02:13	7:23:28	9:25:26	11:14:05	12:38:09
14	13:57:53	15:34:14	17:29:13	19:42:01	22:06:06	0:23:48	2:39:00	4:58:16	7:19:31	9:21:29	11:10:08	12:34:13
15	13:53:56	15:30:17	17:25:16	19:38:04	22:02:09	0:19:51	2:35:03	4:54:19	7:15:35	9:17:32	11:06:11	12:30:16
16	13:49:59	15:26:20	17:21:19	19:34:07	21:58:12	0:15:54	2:31:06	4:50:23	7:11:38	9:13:36	11:02:15	12:26:19
17	13:46:03	15:22:24	17:17:23	19:30:11	21:54:15	0:11:57	2:27:10	4:46:26	7:07:41	9:09:39	10:58:18	12:22:22
18	13:42:06	15:18:27	17:13:26	19:26:14	21:50:19	0:08:01	2:23:13	4:42:29	7:03:45	9:05:42	10:54:21	12:18:26
19	13:38:09	15:14:30	17:09:29	19:22:17	21:46:22	0:04:04	2:19:16	4:38:33	6:59:48	9:01:45	10:50:24	12:14:29
20	13:34:13	15:10:34	17:05:33	19:18:21	21:42:25	0:00:07	2:15:20	4:34:36	6:55:51	8:57:49	10:46:28	12:10:32
21	13:30:16	15:06:37	17:01:36	19:14:24	21:38:29	23:56:11	2:11:23	4:30:39	6:51:54	8:53:52	10:42:31	12:06:36
22	13:26:19	15:02:40	16:57:39	19:10:27	21:34:32	23:52:14	2:07:26	4:26:42	6:47:58	8:49:55	10:38:34	12:02:39
23	13:22:22	14:58:43	16:53:42	19:06:30	21:30:35	23:48:17	2:03:29	4:22:46	6:44:01	8:45:59	10:34:38	11:58:42
24	13:18:26	14:54:47	16:49:46	19:02:34	21:26:38	23:44:20	1:59:33	4:18:49	6:40:04	8:42:02	10:30:41	11:54:46
25	13:14:29	14:50:50	16:45:49	18:58:37	21:22:42	23:40:24	1:55:36	4:14:52	6:36:08	8:38:05	10:26:44	11:50:49
26	13:10:32	14:46:53	16:41:52	18:54:40	21:18:45	23:36:27	1:51:39	4:10:56	6:32:11	8:34:08	10:22:47	11:46:52
27	13:06:36	14:42:57	16:37:56	18:50:44	21:14:48	23:32:30	1:47:43	4:06:59	6:28:14	8:30:12	10:18:51	11:42:55
28	13:02:39	14:39:00	16:33:59	18:46:47	21:10:52	23:28:34	1:43:46	4:03:02	6:24:17	8:26:15	10:14:54	11:38:59
29	12:58:42	14:35:03	16:30:02	18:42:50	21:06:55	23:24:37	1:39:49	3:59:05	6:20:21	8:22:18	10:10:57	11:35:02
30	12:54:45	14:31:06	16:26:05	18:38:53	21:02:58	23:20:40	1:35:52	3:55:09	6:16:24	8:18:22	10:07:01	11:31:05
31	12:50:49	14:27:10	16:22:09	18:34:57	20:59:01	23:16:43	1:31:56	3:51:12	6:12:27	8:14:25	10:03:04	11:27:09

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

जनवरी मास की दैनिक लग्न सारिणी

दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	12:46:52	14:23:13	16:18:12	18:31:00	20:55:05	23:12:47	1:27:59	3:47:15	6:08:31	8:10:28	9:59:07	11:23:12
2	12:42:55	14:19:16	16:14:15	18:27:03	20:51:08	23:08:50	1:24:02	3:43:19	6:04:34	8:06:32	9:55:11	11:19:15
3	12:38:59	14:15:20	16:10:19	18:23:07	20:47:11	23:04:53	1:20:06	3:39:22	6:00:37	8:02:35	9:51:14	11:15:18
4	12:35:02	14:11:23	16:06:22	18:19:10	20:43:15	23:00:57	1:16:09	3:35:25	5:56:41	7:58:38	9:47:17	11:11:22
5	12:31:05	14:07:26	16:02:25	18:15:13	20:39:18	22:57:00	1:12:12	3:31:29	5:52:44	7:54:41	9:43:20	11:07:25
6	12:27:08	14:03:29	15:58:28	18:11:16	20:35:21	22:53:03	1:08:15	3:27:32	5:48:47	7:50:45	9:39:24	11:03:28
7	12:23:12	13:59:33	15:54:32	18:07:20	20:31:24	22:49:06	1:04:19	3:23:35	5:44:50	7:46:48	9:35:27	10:59:32
8	12:19:15	13:55:36	15:50:35	18:03:23	20:27:28	22:45:10	1:00:22	3:19:38	5:40:54	7:42:51	9:31:30	10:55:35
9	12:15:18	13:51:39	15:46:38	17:59:26	20:23:31	22:41:13	0:56:25	3:15:42	5:36:57	7:38:55	9:27:34	10:51:38
10	12:11:22	13:47:43	15:42:42	17:55:30	20:19:34	22:37:16	0:52:29	3:11:45	5:33:00	7:34:58	9:23:37	10:47:41
11	12:07:25	13:43:46	15:38:45	17:51:33	20:15:38	22:33:20	0:48:32	3:07:48	5:29:04	7:31:01	9:19:40	10:43:45
12	12:03:28	13:39:49	15:34:48	17:47:36	20:11:41	22:29:23	0:44:35	3:03:52	5:25:07	7:27:04	9:15:43	10:39:48
13	11:59:31	13:35:52	15:30:51	17:43:39	20:07:44	22:25:26	0:40:39	2:59:55	5:21:10	7:23:08	9:11:47	10:35:51
14	11:55:35	13:31:56	15:26:55	17:39:43	20:03:48	22:21:30	0:36:42	2:55:58	5:17:13	7:19:11	9:07:50	10:31:55
15	11:51:38	13:27:59	15:22:58	17:35:46	19:59:51	22:17:33	0:32:45	2:52:01	5:13:17	7:15:14	9:03:53	10:27:58
16	11:47:41	13:24:02	15:19:01	17:31:49	19:55:54	22:13:36	0:28:48	2:48:05	5:09:20	7:11:18	8:59:57	10:24:01
17	11:43:45	13:20:06	15:15:05	17:27:53	19:51:57	22:09:39	0:24:52	2:44:08	5:05:23	7:07:21	8:56:00	10:20:04
18	11:39:48	13:16:09	15:11:08	17:23:56	19:48:01	22:05:43	0:20:55	2:40:11	5:01:27	7:03:24	8:52:03	10:16:08
19	11:35:51	13:12:12	15:07:11	17:19:59	19:44:04	22:01:46	0:16:58	2:36:15	4:57:30	6:59:27	8:48:06	10:12:11
20	11:31:54	13:08:16	15:03:15	17:16:03	19:40:07	21:57:49	0:13:02	2:32:18	4:53:33	6:55:31	8:44:10	10:08:14
21	11:27:58	13:04:19	14:59:18	17:12:06	19:36:11	21:53:53	0:09:05	2:28:21	4:49:36	6:51:34	8:40:13	10:04:18
22	11:24:01	13:00:22	14:55:21	17:08:09	19:32:14	21:49:56	0:05:08	2:24:24	4:45:40	6:47:37	8:36:16	10:00:21
23	11:20:04	12:56:25	14:51:24	17:04:12	19:28:17	21:45:59	0:01:11	2:20:28	4:41:43	6:43:41	8:32:20	9:56:24
24	11:16:08	12:52:29	14:47:28	17:00:16	19:24:20	21:42:02	23:57:15	2:16:31	4:37:46	6:39:44	8:28:23	9:52:27
25	11:12:11	12:48:32	14:43:31	16:56:19	19:20:24	21:38:06	23:53:18	2:12:34	4:33:50	6:35:47	8:24:26	9:48:31
26	11:08:14	12:44:35	14:39:34	16:52:22	19:16:27	21:34:09	23:49:21	2:08:38	4:29:53	6:31:50	8:20:29	9:44:34
27	11:04:18	12:40:39	14:35:38	16:48:26	19:12:30	21:30:12	23:45:25	2:04:41	4:25:56	6:27:54	8:16:33	9:40:37
28	11:00:21	12:36:42	14:31:41	16:44:29	19:08:34	21:26:16	23:41:28	2:00:44	4:21:59	6:23:57	8:12:36	9:36:41
29	10:56:24	12:32:45	14:27:44	16:40:32	19:04:37	21:22:19	23:37:31	1:56:47	4:18:03	6:20:00	8:08:39	9:32:44
30	10:52:27	12:28:48	14:23:47	16:36:35	19:00:40	21:18:22	23:33:34	1:52:51	4:14:06	6:16:04	8:04:43	9:28:47
31	10:48:31	12:24:52	14:19:51	16:32:39	18:56:43	21:14:25	23:29:38	1:48:54	4:10:09	6:12:07	8:00:46	9:24:51

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

फरवरी मास की दैनिक लग्न सारिणी

दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	10:44:34	12:20:55	14:15:54	16:28:42	18:52:47	21:10:29	23:25:41	1:44:57	4:06:13	6:08:10	7:56:49	9:20:54
2	10:40:37	12:16:58	14:11:57	16:24:45	18:48:50	21:06:32	23:21:44	1:41:01	4:02:16	6:04:14	7:52:53	9:16:57
3	10:36:41	12:13:02	14:08:01	16:20:49	18:44:53	21:02:35	23:17:48	1:37:04	3:58:19	6:00:17	7:48:56	9:13:00
4	10:32:44	12:09:05	14:04:04	16:16:52	18:40:57	20:58:39	23:13:51	1:33:07	3:54:23	5:56:20	7:44:59	9:09:04
5	10:28:47	12:05:08	14:00:07	16:12:55	18:37:00	20:54:42	23:09:54	1:29:10	3:50:26	5:52:23	7:41:02	9:05:07
6	10:24:50	12:01:11	13:56:10	16:08:58	18:33:03	20:50:45	23:05:57	1:25:14	3:46:29	5:48:27	7:37:06	9:01:10
7	10:20:54	11:57:15	13:52:14	16:05:02	18:29:06	20:46:48	23:02:01	1:21:17	3:42:32	5:44:30	7:33:09	8:57:14
8	10:16:57	11:53:18	13:48:17	16:01:05	18:25:10	20:42:52	22:58:04	1:17:20	3:38:36	5:40:33	7:29:12	8:53:17
9	10:13:00	11:49:21	13:44:20	15:57:08	18:21:13	20:38:55	22:54:07	1:13:24	3:34:39	5:36:37	7:25:16	8:49:20
10	10:09:04	11:45:25	13:40:24	15:53:12	18:17:16	20:34:58	22:50:11	1:09:27	3:30:42	5:32:40	7:21:19	8:45:23
11	10:05:07	11:41:28	13:36:27	15:49:15	18:13:20	20:31:02	22:46:14	1:05:30	3:26:46	5:28:43	7:17:22	8:41:27
12	10:01:10	11:37:31	13:32:30	15:45:18	18:09:23	20:27:05	22:42:17	1:01:34	3:22:49	5:24:46	7:13:25	8:37:30
13	9:57:13	11:33:34	13:28:33	15:41:21	18:05:26	20:23:08	22:38:21	0:57:37	3:18:52	5:20:50	7:09:29	8:33:33
14	9:53:17	11:29:38	13:24:37	15:37:25	18:01:29	20:19:12	22:34:24	0:53:40	3:14:55	5:16:53	7:05:32	8:29:37
15	9:49:20	11:25:41	13:20:40	15:33:28	17:57:33	20:15:15	22:30:27	0:49:43	3:10:59	5:12:56	7:01:35	8:25:40
16	9:45:23	11:21:44	13:16:43	15:29:31	17:53:36	20:11:18	22:26:30	0:45:47	3:07:02	5:09:00	6:57:39	8:21:43
17	9:41:27	11:17:48	13:12:47	15:25:35	17:49:39	20:07:21	22:22:34	0:41:50	3:03:05	5:05:03	6:53:42	8:17:46
18	9:37:30	11:13:51	13:08:50	15:21:38	17:45:43	20:03:25	22:18:37	0:37:53	2:59:09	5:01:06	6:49:45	8:13:50
19	9:33:33	11:09:54	13:04:53	15:17:41	17:41:46	19:59:28	22:14:40	0:33:57	2:55:12	4:57:09	6:45:48	8:09:53
20	9:29:36	11:05:57	13:00:57	15:13:45	17:37:49	19:55:31	22:10:44	0:30:00	2:51:15	4:53:13	6:41:52	8:05:56
21	9:25:40	11:02:01	12:57:00	15:09:48	17:33:53	19:51:35	22:06:47	0:26:03	2:47:18	4:49:16	6:37:55	8:02:00
22	9:21:43	10:58:04	12:53:03	15:05:51	17:29:56	19:47:38	22:02:50	0:22:06	2:43:22	4:45:19	6:33:58	7:58:03
23	9:17:46	10:54:07	12:49:06	15:01:54	17:25:59	19:43:41	21:58:53	0:18:10	2:39:25	4:41:23	6:30:02	7:54:06
24	9:13:50	10:50:11	12:45:10	14:57:58	17:22:02	19:39:44	21:54:57	0:14:13	2:35:28	4:37:26	6:26:05	7:50:09
25	9:09:53	10:46:14	12:41:13	14:54:01	17:18:06	19:35:48	21:51:00	0:10:16	2:31:32	4:33:29	6:22:08	7:46:13
26	9:05:56	10:42:17	12:37:16	14:50:04	17:14:09	19:31:51	21:47:03	0:06:20	2:27:35	4:29:32	6:18:11	7:42:16
27	9:02:00	10:38:21	12:33:20	14:46:08	17:10:12	19:27:54	21:43:07	0:02:23	2:23:38	4:25:36	6:14:15	7:38:19
28	8:58:03	10:34:24	12:29:23	14:42:11	17:06:16	19:23:58	21:39:10	23:58:26	2:19:41	4:21:39	6:10:18	7:34:23

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

मार्च मास की दैनिक लग्न सारिणी

दिनांक	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1	8:54:06	10:30:27	12:25:26	14:38:14	17:02:19	19:20:01	21:35:13	23:54:29	2:15:45	4:17:42	6:06:21	7:30:26
2	8:50:09	10:26:30	12:21:29	14:34:17	16:58:22	19:16:04	21:31:16	23:50:33	2:11:48	4:13:46	6:02:25	7:26:29
3	8:46:13	10:22:34	12:17:33	14:30:21	16:54:25	19:12:07	21:27:20	23:46:36	2:07:51	4:09:49	5:58:28	7:22:33
4	8:42:16	10:18:37	12:13:36	14:26:24	16:50:29	19:08:11	21:23:23	23:42:39	2:03:55	4:05:52	5:54:31	7:18:36
5	8:38:19	10:14:40	12:09:39	14:22:27	16:46:32	19:04:14	21:19:26	23:38:43	1:59:58	4:01:56	5:50:35	7:14:39
6	8:34:23	10:10:44	12:05:43	14:18:31	16:42:35	19:00:17	21:15:30	23:34:46	1:56:01	3:57:59	5:46:38	7:10:42
7	8:30:26	10:06:47	12:01:46	14:14:34	16:38:39	18:56:21	21:11:33	23:30:49	1:52:04	3:54:02	5:42:41	7:06:46
8	8:26:29	10:02:50	11:57:49	14:10:37	16:34:42	18:52:24	21:07:36	23:26:52	1:48:08	3:50:05	5:38:44	7:02:49
9	8:22:32	09:58:53	11:53:52	14:06:40	16:30:45	18:48:27	21:03:39	23:22:56	1:44:11	3:46:09	5:34:48	6:58:52
10	8:18:36	09:54:57	11:49:56	14:02:44	16:26:48	18:44:30	20:59:43	23:18:59	1:40:14	3:42:12	5:30:51	6:54:56
11	8:14:39	09:51:00	11:45:59	13:58:47	16:22:52	18:40:34	20:55:46	23:15:02	1:36:18	3:38:15	5:26:54	6:50:59
12	8:10:42	09:47:03	11:42:02	13:54:50	16:18:55	18:36:37	20:51:49	23:11:06	1:32:21	3:34:19	5:22:58	6:47:02
13	8:06:46	09:43:07	11:38:06	13:50:54	16:14:58	18:32:40	20:47:53	23:07:09	1:28:24	3:30:22	5:19:01	6:43:05
14	8:02:49	09:39:10	11:34:09	13:46:57	16:11:02	18:28:44	20:43:56	23:03:12	1:24:28	3:26:25	5:15:04	6:39:09
15	7:58:52	09:35:13	11:30:12	13:43:00	16:07:05	18:24:47	20:39:59	22:59:16	1:20:31	3:22:28	5:11:07	6:35:12
16	7:54:55	09:31:16	11:26:15	13:39:03	16:03:08	18:20:50	20:36:03	22:55:19	1:16:34	3:18:32	5:07:11	6:31:15
17	7:50:59	09:27:20	11:22:19	13:35:07	15:59:11	18:16:53	20:32:06	22:51:22	1:12:37	3:14:35	5:03:14	6:27:19
18	7:47:02	09:23:23	11:18:22	13:31:10	15:55:15	18:12:57	20:28:09	22:47:25	1:08:41	3:10:38	4:59:17	6:23:22
19	7:43:05	09:19:26	11:14:25	13:27:13	15:51:18	18:09:00	20:24:12	22:43:29	1:04:44	3:06:42	4:55:21	6:19:25
20	07:39:09	09:15:30	11:10:29	13:23:17	15:47:21	18:05:03	20:20:16	22:39:32	01:00:47	03:02:45	04:51:24	06:15:28
21	07:35:12	09:11:33	11:06:32	13:19:20	15:43:25	18:01:07	20:16:19	22:35:35	00:56:51	02:58:48	04:47:27	06:11:32
22	07:31:15	09:07:36	11:02:35	13:15:23	15:39:28	17:57:10	20:12:22	22:31:39	00:52:54	02:54:51	04:43:30	06:07:35
23	07:27:18	09:03:39	10:58:38	13:11:27	15:35:31	17:53:13	20:08:26	22:27:42	00:48:57	02:50:55	04:39:34	06:03:38
24	07:23:22	08:59:43	10:54:42	13:07:30	15:31:35	17:49:17	20:04:29	22:23:45	00:45:00	02:46:58	04:35:37	05:59:42
25	07:19:25	08:55:46	10:50:45	13:03:33	15:27:38	17:45:20	20:00:32	22:19:48	00:41:04	02:43:01	04:31:40	05:55:45
26	07:15:28	08:51:49	10:46:48	12:59:36	15:23:41	17:41:23	19:56:35	22:15:52	00:37:07	02:39:05	04:27:44	05:51:48
27	07:11:32	08:47:53	10:42:52	12:55:40	15:19:44	17:37:26	19:52:39	22:11:55	00:33:10	02:35:08	04:23:47	05:47:51
28	07:07:35	08:43:56	10:38:55	12:51:43	15:15:48	17:33:30	19:48:42	22:07:58	00:29:14	02:31:11	04:19:50	05:43:55
29	07:03:38	08:39:59	10:34:58	12:47:46	15:11:51	17:29:33	19:44:45	22:04:02	00:25:17	02:27:14	04:15:53	05:39:58
30	06:59:42	08:36:03	10:31:02	12:43:50	15:07:54	17:25:36	19:40:49	22:00:05	00:21:20	02:23:18	04:11:57	05:36:01
31	06:55:45	08:32:06	10:27:05	12:39:53	15:03:58	17:21:40	19:36:52	21:56:08	00:17:23	02:19:21	04:08:00	05:32:05

नोट :- प्रत्येक लग्न का प्रारम्भिक समय घण्टा:मिनट:सैकेण्ड में दिया गया है।

लग्न सारिणी - दिल्ली, अक्षांश 28/39/00, पलभा 06/33/22 अयनांश 24/03/00, गाजियाबाद, गुड़गाँव, रोहतक, मेरठ आदि

राशि अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
0	02:50:45	06:50:57	11:40:21	17:15:33	23:05:09	28 :51:21	34:36:21	40:26:09	46:11:33	51:20:21	55:37:57	59:17:45
1	02:57:51	06:59:11	11:50:21	17:27:01	23:16:51	29 :02:51	34:47:51	40:37 :51	46:23:01	51:30:21	55:46:11	59:24:51
2	03:04:57	07:07:25	12:00:21	17:38:29	23:28:33	29 :14:21	34 :59:21	40:49 :33	46:34:29	51:40:21	55:54:25	59:31:57
3	03:12:03	07:15:39	12:10:21	17:49:57	23:40:15	29:25:51	35:10:51	41:0 1:15	46:45:57	51:50:21	56:02:39	59:39:03
4	03:19:09	07:23:53	12:20:21	18:01:25	23:51:57	29:37:21	35:22:2 1	41:12:57	46:57:25	52:00:21	56:10:53	59:46:09
5	03:26:15	07:32:07	12:30:21	18:12:53	24 :03:39	29 :48:51	35:33:51	41:24 :39	47:08:53	52:10:21	56:19:07	59:53:15
6	03:33:21	07:40:21	12:40:21	18:24:21	24 :15:21	30:00:21	35 :45:2 1	41:36:21	47:20:21	52:20:21	56:27:21	00:00:21
7	03:41:35	07:50:21	12:51:49	18:36:03	24:26:51	30:11:51	35:57:03	41:47:49	47:30:21	52:28:35	56:34:27	00:07:27
8	03:49:49	08:00:21	13:03:17	18:47:45	24 :38:21	30:23:21	36:08:45	41:59 :17	47:40:21	52:36:49	56:41:33	00:14:33
9	03:58:03	08:10:21	13:14:45	18:59:27	24 :49:5 1	30:34:51	36:20:27	42:10:45	47:50:21	52:45:03	56:48:39	00:21:39
10	04:06:17	08:20:21	13:26:13	19 :11:09	25 :01:21	30:46:21	36:32:09	42:22 :13	48:00:21	52:53:17	56:55 :45	00:28:45
11	04:14:31	08:30:21	13:37:41	19:22:51	25 :12:51	30:57:51	36:43:5 1	42:33:41	48:10:21	53:01:31	57:02:51	00:35:51
12	04:22:45	08:40:21	13:49:09	19:34:33	25 :24: 21	31:09:21	36:55:33	42:45:09	48:20:21	53:09:45	57:09:57	00:42:57
13	04:30:59	08:50:21	14:00:37	19:46: 15	25:35:51	31:20:51	37:07:15	42:56:37	48:30:21	53:17:59	57:17:03	00:50:03
14	04:39:13	09:00:21	14:12:05	19:57:57	25 :47:21	31:32:21	37:18:57	43:08:05	48:40:21	53:26:13	57:24:09	00:57:09
15	04:47:27	09:10:21	14:23:33	20:09:39	25 :58:51	31:43:51	37:30:39	43:19 :33	48:50:21	53:34:27	57:31:15	01:04:15
16	04:55:41	09:20:21	14:35:01	20:21:21	26:10:21	31:55:21	37:42:21	43:31:01	49 :00:2 1	53:42:41	57:38:21	01:11:21
17	05:03:55	09:30:21	14:46:29	20:33:03	26:21:51	32:06:51	37:54:03	43:42:29	49 :10:21	53:50:55	57:45:27	01:18:27
18	05:12:09	09:40:21	14:57:57	20:44:45	26:33:21	32:18:21	38:05:45	43:53:57	49:20:21	53:59:09	57:52:33	01:25:33
19	05:20:23	09:50:21	15:09 :25	20:56:27	26:44:5 1	32:29:51	38:17:27	44:05:25	49:30:21	54:07:23	57:59:39	01:32:39
20	05:28:37	10:00:21	15:20:53	2 1:08:09	26:56:21	32:41:21	38:29:09	44:16:53	49 :40:21	54:15:37	58:06:45	01:39:45
21	05:36:51	10:10:21	15:32:21	2 1:19:51	27 :07:51	32:52:51	38:40:51	44:28:21	49 :50:21	54:23:51	58:13 :51	01:46:51
22	05:45:05	10:20:21	15:43:49	21:31:33	27 :19:21	33:04:21	38:52:33	44:39:49	50:00:21	54:32:05	58:20:57	01:53:57
23	05:53: 19	10:30:21	15:55 :17	21:43:15	27 :30:51	33:15:51	39:04:15	44:5 1:17	50:10:21	54:40:19	58:28:03	02:01:03
24	06:01:33	10:40:21	16:06:45	2 1:54:57	27 :42:2 1	33:27:21	39:15:57	45:02:45	50:20:2 1	54:48:33	58:35:09	02:08:09
25	06:09:47	10:50:21	16:18 :13	22:06:39	27:53:51	33:38:51	39:27:39	45:14:13	50:30:21	54:56:47	58:42:15	02:15:15
26	06:18:01	11:00:21	16:29 :41	22:18:21	28:05:21	33:50:21	39:39:21	45:25:41	50:40:21	55:05:01	58:49:21	02:22:21
27	06:26:15	11:10:21	16:41:09	22:30:03	28:16:51	34:01:51	39:51:03	45:37:09	50:50:21	55:13:15	58:56:27	02:29:27
28	06:34:29	11:20:21	16:52 :37	22:41:45	28:28:21	34:13:21	40:02:45	45:48 :37	5 1:00:2 1	55:2 1:29	59:03 :33	02 :36:33
29	06:42:43	11:30:21	17:04:05	22:53:27	28:39:51	34:24:51	40:14:27	46:00:05	51:10:21	55:29:43	59:10:39	02:43:39

दशमलग्नसारिणी (सभी देशों के लिए
अयनांश- 24/06/00, निरक्षोदयमान 279, 299, 322, 322, 299, 279

राशि / अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
0	03:44:08	08 :39 :08	13 :56 :32	19:18:32	24 :22 :08	29 :05 :08	33:44:08	38:39 :08	43 :56:32	49 :18:32	54:22:08	59:05:08
1	03 :53:26	08 :49 :06	14 :07:16	19:29:16	24 :32:06	29:14:26	33 :53:26	38:49:06	44:07:16	49:29 :16	54:32:06	59 :14:26
2	04:02:44	08 :59:04	14:18:00	19:40 :00	24 :42 :04	29:23 :44	34:02:44	38:59:04	44:18 :00	49:40 :00	54:42:04	59 :23:44
3	04:12:02	09:09:02	14:28:44	19:50:44	24 :52:02	29:33 :02	34:12:02	39:09:02	44:28 :44	49:50 :44	54:52:02	59 :33:02
4	04:21:20	09:19:00	14:39 :28	20:01 :28	25 :02:00	29 :42 :20	34:2 1:20	39:19:00	44:39:28	50 :01 :28	55:02:00	59:42 :20
5	04:30:38	09:28 :58	14:50:12	20:12 :12	25 :11 :58	29 :51 :38	34:30:38	39:28:58	44:50:12	50:12:12	55 :1 1:58	59 :51 :38
6	04:39:56	09:38 :56	15 :00:56	20:22 :56	25 :2 1 :56	30 :00 :56	34:39:56	39:38:56	45 :00 :56	50 :22 :56	55:2 1:56	00:00:56
7	04:49: 14	09:48 :54	15 :1 1 :40	20:33 :40	25 :31 :54	30:10:14	34:49:14	39:48:54	45:11 :40	50:33 :40	55 :3 1:54	00 :10 :14
8	04:58:32	09:58 :52	15:22:24	20:44:24	25 :41 :52	30:19 :32	34:58:32	39:58:52	45 :22 :24	50:44:24	55:4 1:52	00 :19 :32
9	05:07:50	10:08 :50	15 :33:08	20:55 :08	25 :51 :50	30:28 :50	35:07:50	40:08 :50	45 :33 :08	50 :55 :08	55 :51:50	00:28 :50
10	05:17:08	10:18:48	15 :43 :52	21:05:52	26 :01:48	30:38 :08	35 :17:08	40:18:48	45 :43 :52	5 1 :05:52	56:0 1:48	00 :38:08
11	05:26:26	10:28:46	15:54:36	21 :16:36	26:11:46	30 :47 :26	35:26:26	40:28:46	45 :54:36	51 :16 :36	56:11:46	00:47:26
12	05:35:44	10:38:44	16 :05 :20	21:27 :20	26 :2 1:44	30:56:44	35:35:44	40:38:44	46 :05 :20	5 1 :27 :20	56:2 1:44	00 :56:44
13	05:45 :02	10:48:42	16 :16:04	21:38 :04	26 :31:42	31 :06 :02	35:45:02	40:48:42	46:16:04	51 :38 :04	56:3 1:42	01 :06 :02
14	05:54:20	10:58:40	16 :26:48	21:48:48	26 :41:40	31 :15 :20	35 :54:20	40:58:40	46:26:48	51 :48:48	56:4 1:40	01 :15:20
15	06:03:38	11 :08 :38	16:37:32	2 1:59:32	26 :51 :38	31 :24:38	36:03:38	4 1:08:38	46:37:32	5 1 :59 :32	56:51:38	01 :24 :38
16	06:12 :56	11 :18 :36	16 :48:16	22:10:16	27 :0 1:36	31 :33:56	36 :12:56	4 1 :18:36	46:48 :16	52 :10 :16	57:01:36	01 :33 :56
17	06:22:14	11 :28:34	16:59:00	22:2 1 :00	27 :11:34	31 :43:14	36:22:14	4 1:28:34	46:59:00	52:21 :00	57 :1 1:34	01:43 :14
18	06:31:32	11 :38:32	17 :09:44	22:31 :44	27:21:32	31 :52 :32	36:31:32	4 1:38 :32	47:09:44	52 :31 :44	57:21:32	01 :52 :32
19	06:40:50	11 :48 :30	17 :20:28	22:42 :28	27 :31:30	32 :0 1 :50	36:40:50	4 1:48:30	47:20:28	52 :42 :28	57:31:30	02:01:50
20	06:50:08	11 :58 :28	17:31 :12	22:53:12	27 :41:28	32:1 1 :08	36:50:08	4 1:58:28	47:31 :12	52 :53 :12	57:4 1:28	02 :1 1:08
21	06:59:26	12:08 :26	17 :41 :56	23 :03 :56	27 :51:26	32 :20:26	36 :59:26	42:08 :26	47:41 :56	53 :03 :56	57 :51:26	02 :20 :26
22	07:08:44	12:18 :24	17:52:40	23 :14 :40	28:0 1:24	32:29:44	37 :08:44	42 :18:24	47:52 :40	53:14:40	58:0 1:24	02 :29 :44
23	07:18:02	12:28 :22	18:03:24	23:25 :24	28 :11:22	32 :39 :02	37 :18:02	42:28 :22	48:03 :24	53 :25 :24	58 :1 1:22	02 :39 :02
24	07:27:20	12 :38 :20	18:14:08	23:36:08	28:2 1:20	32 :48 :20	37:27 :20	42:38 :20	48:14:08	53 :36 :08	58:21:20	02:48:20
25	07:36:38	12:48 :18	18:24:52	23:46:52	28:31 :18	32 :57 :38	37:36:38	42:48:18	48:24 :52	53 :46 :52	58 :3 1 :18	02 :57 :38
26	07:45 :56	12:58 :16	18:35 :36	23:57:36	28 :41 :16	33 :06 :56	37:45:56	42:58 :16	48:35 :36	53 :57 :36	58:4 1:16	03 :06 :56
27	07:55:14	13 :08 :14	18:46:20	00:08 :20	28:51 :14	33:16:14	37:55:14	43:08:14	48:46:20	54:08:20	58 :51 :14	03 :16:14
28	08:04:32	13 :18 :12	18:57:04	00:19:04	29 :0 1 :12	33 :25 :32	38:04:32	43:18:12	48:57 :04	54 :19 :04	59:01:12	03 :25 :32
29	08:13:50	13 :28 :10	19 :07:48	00:29:48	29 :11 :10	33 :34:50	38 :13:50	43:28 :10	49:07 :48	54 :29 :48	59:1 1:10	03 :34 :50

विक्रम संवत् 2082 (ई. सन् 2025-26) के मुहूर्त्त हेतु काल विवरण

विवाहादि मांगलिक कार्यों के लिए सौर-चैत्र मास, सौर-पौष मास, अधिमास, श्राद्ध-पक्ष, भीष्मपञ्चक, होलिकाष्टक एवं गुरु- शुक्र के अस्तकाल वर्जित कहे गये हैं। उपनयन संस्कार चैत्रमास में तथा पुरातन गृहप्रवेश गुरु-शुक्र के अस्तकाल में भी किये जा सकते हैं।

मीन राशि गत सूर्य (सौर चैत्र मास)-

संवत् 2081 चैत्र कृष्ण 01 शुक्रवार दिनांक 14 मार्च 2025 से प्रारम्भ होकर संवत् 2082 वैशाख कृष्ण 01, रविवार दिनांक 13 अप्रैल 2025 तक तथा संवत् 2082 चैत्र कृष्ण 11, शनिवार दिनांक 14 मार्च 2026 से वर्षान्त तक सूर्य मीन राशि में रहेगा।

गुरु-अस्तोदय –

संवत् 2082 दिनांक 14 जून 2025 से 08 जुलाई 2025 तक गुरु अस्त रहेगा। उदय से 3 दिन पश्चात् बाल्यत्व दोष एवं अस्त से 3 दिन पहले वृद्धत्व दोष रहेगा।

श्रीहरि-देवशयनकाल –

संवत् 2082 आषाढ़ शुक्ल 11, रविवार दिनांक 06 जुलाई 2025 से कार्तिक शुक्ल 11, रविवार दिनांक 02 नवम्बर 2025 तक।

भीष्मपञ्चक –

संवत् 2082 कार्तिक शुक्ल 11, रविवार से कार्तिक शुक्ल 15, बुधवार दिनांक 05 नवम्बर 2025 तक।

शुक्र अस्तोदय –

दिनांक 14 दिसम्बर 2025 से 31 जनवरी 2026 तक शुक्र अस्त रहेगा। उदय से 3 दिन पश्चात् बाल्यत्व दोष एवं अस्त से 3 दिन पहले वृद्धत्व दोष रहेगा।

महालय (श्राद्धपक्ष)-

संवत् 2082 आश्विन कृष्ण प्रतिपदा, सोमवार दिनांक 8 सितम्बर 2025 से आश्विन कृष्ण अमावस्या, रविवार दिनांक21 सितम्बर 2025 तक रहेगा।

धनुराशिगत सूर्य –

संवत् 2082 पौष कृष्ण 11, सोमवार दिनांक15 दिसम्बर 2025 से माघ कृष्ण 11, बुधवार दिनांक 14 जनवरी 2026 तक सूर्य धनु राशि में रहेगा।

होलाष्टक –

संवत् 2082 फाल्गुन शुक्ल 8, मंगलवार, 24 फरवरी 2026 से फाल्गुन शुक्ल15, मंगलवार, 03 मार्च 2026 तक रहेगा।

चन्द्रबलविचारः-

पापान्तः पापयुग्द्यू ने पापाच्चन्द्रः शुभोऽप्यसत्।
शुभांशे वाधिमित्रांशे गुरुदृष्टोऽशुभोऽपि सत्॥

(मु.चि.गो.प्र. श्लोक 7)

भूमिशयनविचारः

प्रद्योतनात्पंचनगांकसूर्यनवेन्दुषड्विंशमितेषु भेषु।
शेते मही नैव गृहं विधेयं तडागवापीखननं न शस्तम्॥

(वास्तुरत्नाकर 9/42)

विवाह मुहूर्त-2025-26

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	सू.रा.	गु.रा.	च.रा.	रेखाएं	लग्नादि विवरण
14-04-2025	वैशाख	कृ.प.	1	चन्द्र	स्वाति	मेष	वृष	तुला	6	2,3(च.पू.),8(गु.पू.)स्वाति24:12तक ,9(24/12)
16-04-2025	वैशाख	कृ.प.	3	बुध	अनुराधा	मेष	वृष	वृश्चि	7	9(म.पू.),11
18-04-2025	वैशाख	कृ.प.	5	शुक्र	मूल	मेष	वृष	धनु	7	2(च.पू.),5,8(गु.पू.),11
19-04-2025	वैशाख	कृ.प.	6	शनि	मूल	मेष	वृष	धनु	6	2(च.पू.),3(च.पू.)
20-04-2025	वैशाख	कृ.प.	7	रवि	उ.षा.	मेष	वृष	धनु/म	5	5,8(गु.पू.),9,11
21-04-2025	वैशाख	कृ.प.	8	चन्द्र	श्रवण	मेष	वृष	मकर	6	5,9,11
25-04-2025	वैशाख	कृ.प.	12	शुक्र	उ.भा.	मेष	वृष	मीन	6	2(8:53से)3,5,8,11
30-04-2025	वैशाख	शुक्ल	3	बुध	रोहिणि	मेष	वृष	वृष	8	2(च.गु.पू.),3(च.गु.पू.)
30-04-2025	वैशाख	शुक्ल	3	बुध	मृगशिरा	मेष	वृष	वृ/मि	8	2(च.गु.पू.),3(च.गु.पू)
01-05-2025	वैशाख	शुक्ल	4	गुरु	मृगशिरा	मेष	वृष	मिथुन	9	5(14:21तक) रिक्ता तिथि दोष 11:20 तक
05-05-2025	वैशाख	शुक्ल	8	चन्द्र	मघा	मेष	वृष	सिंह	8	8(गु.पू.), 11(च.पू.),(11:12से14:50तक क्रान्ति साम्य)
07-05-2025	वैशाख	शुक्ल	10	बुध	उ.फा.	मेष	वृष	सिं/क	7	8(गु.पू.)
08-05-2025	वैशाख	शुक्ल	11	गुरु	उ.फा.	मेष	वृष	कन्या	8	5(श.पू,शु.पू.),8(गु.पू.)
15-05-2025	ज्येष्ठ	कृ.प.	3	गुरु	मूल	वृष	मिथुन	धनु	8	1(श.पू.)(28:03के बाद),11(च.पू.)
17-05-2025	ज्येष्ठ	कृ.प.	5	शनि	उ.षा.	वृष	मिथुन	धनु/म	6	11,1(श.पू.)
18-05-2025	ज्येष्ठ	कृ.प.	5	रवि	उ.षा.	वृष	मिथुन	मकर	7	2(सू.पू),3(चं.पू.),
19-05-2025	ज्येष्ठ	कृ.प.	6	चन्द्र	श्रवण	वृष	मिथुन	मकर	5	3,(चं.पू.) (10:19से15:24तक क्रान्तिसाम्य दोष)
24-05-2025	ज्येष्ठ	कृ.प.	12	शनि	अश्विनी	वृष	मिथुन	मेष	9	11(के.पू.),1(श.पू.चं..पू.)
28-05-2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	2	बुध	मृग	वृष	मिथुन	वृष/मि	9	3(चं.पू.)
01-06-2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	6	रवि	मघा	वृष	मिथुन	सिंह	6	9(गु पू.बु.पू.),1(श.पू.)
02-06-2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	7	चन्द्र	मघा	वृष	मिथुन	सिंह	7	2(सू.पू.),3
04-06-2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	9	बुध	उ.फा.	वृष	मिथुन	सिं/क	7	3,1(श.पू.) रिक्ता तिथि दोष 23:39तक
07-06-2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	12	शनि	स्वाति	वृष	मिथुन	तुला	7	4,
08-06-2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	13	रवि	स्वाति	वृष	मिथुन	तुला	9	3,4
02-11-2025	कार्तिक	शुक्ल	11	रवि	उ.भा.	तुला	कर्क	मीन	8	3(बु.पू.),4
03-11-2025	कार्तिक	शुक्ल	13	चन्द्र	उ.भा.	तुला	कर्क	मीन	8	7(सू.पू.चं.पू.),9(मं.पू.गु.पू.)
07-11-2025	मार्गशीर्ष	कृ.प.	2	शुक्र	रोहिणी	वृश्चिक	कर्क	वृष	7	9(च.पू.गु.पू.),3(बु.पू.चं.पू.)7(सू.पू.चं.पू.),
08-11-2025	मार्गशीर्ष	कृ.प.	3	शनि	मृगशिरा	वृश्चिक	कर्क	वृ/मि	9	9(च.पू.गु.पू.),3(च.पू.बु.पू.)
12-11-2025	मार्गशीर्ष	कृ.प.	8	बुध	मघा	वृश्चिक	कर्क	सिंह	9	3(बु.पू.),4

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	सू.रा.	गु.रा.	च.रा.	रेखाएं	लग्नादि विवरण
13-11-2025	मार्गशीर्ष	कृ.प.	9	गुरु	मघा	वृश्चिक	कर्क	सिंह	9	7, रिक्ता तिथि दोष 23:08तक
22-11-2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	2	शनि	मूल	वृश्चिक	कर्क	धनु	7	4(च.पू.),7
23-11-2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	3	रवि	मूल	वृश्चिक	कर्क	धनु	8	9(च.पू.गु.पू.), 12(श.पू.बु.पू.)
24-11-2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	4	चन्द्र	उ.षा.	वृश्चिक	कर्क	ध/म	6	4(च.पू.),7 रिक्ता तिथि दोष 21:30तक
27-11-2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	7	गुरु	धनिष्ठा	वृश्चिक	कर्क	म/कु	8	9 (गु.पू.),3
29-11-2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	9	शनि	उ.भा.	वृश्चिक	कर्क	मीन	8	7(चं.पू.) रिक्ता तिथि दोष 23:45तक
30-11-2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	10	रवि	उ.भा.	वृश्चिक	कर्क	मीन	8	9(गु.पू.),12(श.पू.च.पू.बु.पू.),3,4
04-12-2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	15	गुरु	रोहिणी	वृश्चिक	मिथुन	वृष	8	3(चं.पू.शु.पू.),4,7(च.पू.)
04-02-2026	फाल्गुन	कृ.प.	3	बुध	उ.फा.	कुम्भ	मिथुन	सिं/क	8	7(च.पू.)
05-02-2026	फाल्गुन	कृ.प.	4	गुरु	उ.फा.	कुम्भ	मिथुन	कन्या	8	2, रिक्ता तिथि दोष 23:55तक
20-02-2026	फाल्गुन	शुक्ल	3	शुक्र	रेवती	कुम्भ	मिथुन	मीन	9	7(च.पू.),8(गु.पू.)
21-02-2026	फाल्गुन	शुक्ल	4	शनि	रेवती	कुम्भ	मिथुन	मीन	8	12(श.पू.),1(च.पू.श.पू.)2,3 रिक्ता तिथि दोष 13:08तक
25-02-2026	फाल्गुन	शुक्ल	9	बुध	रोहिणी	कुम्भ	मिथुन	वृष	8	7(च.पू.),8(गु.पू.चंपू),2(चं.पू)
26-02-2026	फाल्गुन	शुक्ल	10	गुरु	मृगशिरा	कुम्भ	मिथुन	मिथुन	9	7

त्रिगर्त प्रदेशों के लिए विवाह मुहूर्त-2025-26

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	सू.रा.	गु.रा.	च.रा.	रेखाएं	लग्नादि विवरण
11-07-2025	श्रवण	कृ.प.	1	शुक्र	उ.षा.	कर्क	मिथुन	धनु/म	6	1(श.पू.),2,12(श.पू.शु.पू.)
12-07-2025	श्रवण	कृ.प.	2	शनि	उ.षा.	कर्क	मिथुन	मकर	6	4,8(शु.पू.गु.पू.)12(श.पू.शु.पू.)1(श.पू.)2
13-07-2025	श्रवण	कृ.प.	3	रवि	श्रवण	कर्क	मिथुन	मकर	8	7(शु.पू.),1(श.पू.),2,4,
20-07-2025	श्रवण	कृ.प.	10	रवि	रोहिणी	कर्क	मिथुन	वृष	8	1(श.पू.),2,3
21-07-2025	श्रवण	कृ.प.	11	चन्द्र	रोहिणी	कर्क	मिथुन	वृष	7	8(शु.पू.गु.पू.च.पू.),7(शु.पू.)
28-07-2025	श्रवण	शुक्ल	4	चन्द्र	उ.फा.	कर्क	मिथुन	सिं/क	7	2,3 रिक्ता तिथि दोष 22:58तक
31-07-2025	श्रवण	शुक्ल	7	गुरु	स्वाति	कर्क	मिथुन	तुला	8	2(च.पू.),3
01-08-2025	श्रवण	शुक्ल	8	शुक्र	स्वाति	कर्क	मिथुन	तुला	7	2(च.पू.),3,7,
03-08-2025	श्रवण	शुक्ल	9	रवि	अनुराधा	कर्क	मिथुन	वृश्चिक	7	3(चंपू.),7 रिक्ता तिथि दोष 09:42तक
04-08-2025	श्रवण	शुक्ल	10	सोम	अनुराधा	कर्क	मुथुन	वृश्चिक	8	4
06-08-2025	श्रवण	शुक्ल	12	बुध	मूल	कर्क	मिथुन	धनु	8	1(श.पू.),2(चं.पू.),7,8(शु.पू.गु.पू)

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	सू.रा.	गु.रा.	च.रा.	रेखाएं	लग्नादि विवरण
07-08-2025	श्रवण	शुक्ल	13	गुरु	उ.षा.	कर्क	मिथुन	धनु/म	9	8(शु.पू.गु.पू.),1(श.पू.),2(च.पू.)
08-08-2025	श्रवण	शुक्ल	14	शुक्र	उ.षा.	कर्क	मिथुन	मकर	9	4(च.पू.),7 रिक्ता तिथि दोष 14:15तक
09-08-2025	श्रवण	शुक्ल	15	शनि	श्रवण	कर्क	मिथुन	मकर	6	7,8(शु.पू.गु.पू.-14:23तक)
10-08-2025	श्रवण	कृ.प.	1	रवि	धनिष्ठा	कर्क	मिथुन	कुम्भ	8	7,8(शु.पू.गु.पू.-13:52तक)
17-08-2025	भाद्रपद	कृ.प.	9	रवि	रोहिणी	सिंह	मिथुन	वृष	8	7(च.पू.),1(श.पू.),2(च.पू.),3 रिक्ता तिथि दोष 19:19तक
18-08-2025	भाद्रपद	कृ.प.	10	चन्द्र	मृगशिरा	सिंह	मिथुन	वृ/मि	8	1(श.पू.),2(च.पू.)
24-08-2025	भाद्रपद	शुक्ल	1	रवि	उ.फा.	सिंह	मिथुन	सिंह	8	3(2:06 से),4
25-08-2025	भाद्रपद	शुक्ल	2	चन्द्र	उ.फा.	सिंह	मिथुन	कन्या	7	7,8(गु.पू.),2,3,4 -27:50तक)
28-08-2025	भाद्रपद	शुक्ल	5	गुरु	स्वाति	सिंह	मिथुन	तुला	8	7(च.पू.),8(गु.पू.),3,4
29-08-2025	भाद्रपद	शुक्ल	6	शुक्र	स्वाति	सिंह	मिथुन	तुला	9	7(च.पू.)
30-08-2025	भाद्रपद	शुक्ल	7	शनि	अनुराधा	सिंह	मिथुन	तुला	8	1(च.पू.)
01-09-2025	भाद्रपद	शुक्ल	9	चन्द्र	मूल	सिंह	मिथुन	धनु	7	1,2(च.पू.), 4(च.पू.) रिक्ता तिथि दोष 27:06तक
03-09-2025	भाद्रपद	शुक्ल	11	बुध	उ.षा.	सिंह	मिथुन	धनु/म	7	2(चंपू.),3
04-09-2025	भाद्रपद	शुक्ल	12	गुरु	उ.षा.	सिंह	मिथुन	मकर	7	2-(23:43),3(च.पू.)
05-09-2025	भाद्रपद	शुक्ल	13	शुक्र	श्रवण	सिंह	मिथुन	मकर	7	7(चं.पू.),8(गु.पू.)
22-09-2025	आश्विन	शुक्ल	1	चन्द्र	उ.फा.	कन्या	मिथुन	कन्या	7	8(गु.पू.)
26-09-2025	आश्विन	शुक्ल	4	शुक्र	अनुराधा	कन्या	मिथुन	कन्या	9	3(च.पू.),4(चं.पू.) रिक्ता तिथि दोष 09:26तक
29-09-2025	आश्विन	शुक्ल	7	चन्द्र	मूल	कन्या	मिथुन	धनु	7	2(चं.पू.),8(गु.पू.)
01-10-2025	आश्विन	शुक्ल	9	बुध	उ.षा.	कन्या	मिथुन	धनु/म	8	8(गु.पू.),2,4(च.पू.) रिक्ता तिथि दोष 19:19तक
02-10-2025	आश्विन	शुक्ल	10	गुरु	श्रवण	कन्या	मिथुन	मकर	7	8(गु.पू.),2,3(च.पू.)
08-10-2025	कार्तिक	कृ.प.	2	बुध	अश्वनी	तुला	मिथुन	मेष	9	8(गु.पू.च.पू.),10(मं.पू.),2,3-(22:44तक)
11-10-2025	कार्तिक	कृ.प.	5	शनि	रोहिणी	तुला	मिथुन	वृष	9	10 (मं.पू.-15:19तक)
12-10-2025	कार्तिक	कृ.प.	6	रवि	मृगशिरा	तुला	मिथुन	मिथुन	7	8(च.पू.गु.पू.), 4(च.पू.)
22-10-2025	कार्तिक	शुक्ल	1	बुध	स्वाति	तुला	कर्क	तुला	9	9(गु.पू.),3,4(शु.पू.)
24-10-2025	कार्तिक	शुक्ल	3	शुक्र	अनुराधा	तुला	कर्क	वृश्चिक	9	7,9(गु.पू,चं.पू)),3(च.पू.),4(शु.पू.)
26-10-2025	कार्तिक	शुक्ल	5	रवि	मूल	तुला	कर्क	धनु	6	9(गु.पू.-10:47से), 4(च.पू.शु.पू.)
27-10-2025	कार्तिक	शुक्ल	6	चन्द्र	मूल	तुला	कर्क	धनु	7	9(गु.पू.-11:30)
30-10-2025	कार्तिक	शुक्ल	8	गुरु	धनिष्ठा	तुला	कर्क	मकर	8	3(बु.पू,च.पू.),10(गु.पू.)
31-10-2025	कार्तिक	शुक्ल	9	शुक्र	धनिष्ठा	तुला	कर्क	कुम्भ	8	9(मं.पू.गु.पू.) रिक्ता तिथि दोष 10:06तक

डॉ० देशबन्धु,
डॉ० नवीन पाण्डेय

द्विरागमन मुहूर्त सम्वत् 2082

दिनांक	मास	पक्ष तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
14.04.2025	वैशाख	कृष्ण 01/02	सोमवार	स्वाती	वज्र योग परिहार
21.04.2025	वैशाख	कृष्ण 08	सोमवार	उ.षा.	
24.04.2025	वैशाख	कृष्ण 11	गुरुवार	शतभिषा	10:53 तक
25.04.2025	वैशाख	कृष्ण 12	शुक्रवार	उ.भा.	08:56 से
30.04.2025	वैशाख	शुक्ल 03	बुध	रोहिणी	14:08 तक
08.05.2025	वैशाख	शुक्ल 11	गुरुवार	उ.फा.	12:31 से
28.05.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल 02	बुध	मृगशिरा	
21.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल 01	शुक्रवार	अनुराधा	13:54 तक
26.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल 06	बुध	श्रवण	
27.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल 07	गुरुवार	धनिष्ठा	अभिजीत मुहुर्त
05.12.2025	पौष	कृष्ण 01	शुक्रवार	रोहि. / मृग.	अभिजीत मुहुर्त
12.12.2025	पौष	कृष्ण 08	शुक्रवार	उ.फा.	अभिजीत मुहुर्त, 14:47 तक
13.02.2026	फाल्गुन	कृष्ण 11	शुक्रवार	मूल	16:22 तक (वज्र योग परिहार)
20.02.2026	फाल्गुन	शुक्ल 03	शुक्रवार	उ.भा.	14:47 तक
04.03.2026	चैत्र	कृष्ण 01	बुध	उ.फा.	07:41 से
05.03.2026	चैत्र	कृष्ण 02	गुरुवार	उ.फा.	

डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा

प्रसूतिका स्नान मुहूर्त

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
30.03.25	चैत्र	शुक्ल	01	रवि	रेवती	-
10.04.25	चैत्र	शुक्ल	13	गुरु	उ.फा.	उ.फा. 12.26 से
20.04.25	वैशाख	कृष्ण	07	रवि	उ.षाढ	उ.षाढ. 11.56 से
25.05.25	ज्येष्ठ	कृष्ण	13	रवि	अश्विनी	अश्वनी 11.19 तक
05.06.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	10	गुरु	हस्त	-
29.07.25	श्रावण	शुक्ल	05	मंगल	उ.फा	-
26.08.25	भाद्रपद	शुक्ल	03	मंगल	हस्त	-
28.08.25	भाद्रपद	शुक्ल	05	गुरु	स्वाति	स्वाति 08.36 से
23.09.25	आश्विन	शुक्ल	02	मंगल	हस्त	-
02.10.25	आश्विन	शुक्ल	10	गुरु	उ.षाढ	उ.षाढ 9.16 तक
19.10.25	कार्तिक	शुक्ल	13	रवि	उ.फा.	भद्रा 13.50
25.11.25	मार्गशीर्ष	शुक्ल	05	मंगल	उ.षाढ	-
30.11.25	मार्गशीर्ष	शुक्ल	10	रवि	उ.भा.	-
01.01.26	पौष	शुक्ल	13	गुरु	रोहिणी	-
25.01.26	माघ	शुक्ल	07	रवि	रेवती /अश्विनी	-
22.02.26	फाल्गुन	शुक्ल	05	रवि	अश्विनी	पंचमी 11.17 तक
26.02.26	फाल्गुन	शुक्ल	10	गुरु	मृगशिरा	मृगशिरा 12.11 तक
08.03.26	चैत्र	कृष्ण	05	रवि	स्वाति	-

डॉ. दीपक वशिष्ठ

नामकरण मुहूर्त

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
02.04.25	चैत्र	शुक्ल	05	बुध	रोहिणी	रोहिणी 08.49 से
03.04.25	चैत्र	शुक्ल	06	गुरु	रोहिणी/मृगशिरा	-
10.04.25	चैत्र	शुक्ल	13	गुरु	उत्तराफाल्गुनी	उ.फा. 12.26 से
24.04.25	वैशाख	कृष्ण	11	गुरु	शतभिषा	शतभिषा 10.53 तक
25.04.25	वैशाख	कृष्ण	12	शुक्र	उत्तराभाद्रपद	उ.भा. 08.56 से
30.04.25	वैशाख	शुक्ल	03	बुध	रोहिणी	-
23.05.25	ज्येष्ठ	कृष्ण	11	शुक्र	उत्तराभाद्रपद	-
28.05.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	02	बुध	मृगशिरा	-
05.06.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	10	गुरु	हस्त	व्यतिपात 08.52 से
11.07.25	श्रावण	कृष्ण	01	शुक्र	उत्तराषाढ	उत्तराषाढ 05.55 से
21.07.25	श्रावण	कृष्ण	11	सोम	रोहिणी	-
25.07.25	श्रावण	शुक्ल	01	शुक्र	पुष्य	वज्र योग 07.28 तक
30.07.25	श्रावण	शुक्ल	06	बुध	हस्त	-
31.07.25	श्रावण	शुक्ल	07	गुरु	चित्रा	-
04.08.25	श्रावण	शुक्ल	10	सोम	अनुराधा	अनुराधा 09.16 तक
20.08.25	भाद्रपद	कृष्ण	12	बुध	पुनर्वसु	-
25.08.25	भाद्रपद	शुक्ल	02	सोम	उत्तराफाल्गुनी	-
28.08.25	भाद्रपद	शुक्ल	05	गुरु	चित्रा/स्वाति	-
29.08.25	भाद्रपद	शुक्ल	06	शुक्र	स्वाति	स्वाति 11.31 तक
04.09.25	भाद्रपद	शुक्ल	12	गुरु	उत्तराषाढ	-
05.09.25	भाद्रपद	शुक्ल	13	शुक्र	श्रवण	-
22.09.25	आश्विन	शुक्ल	01	सोम	उ.फाल्गुनी/हस्त	-

24.09.25	आश्विन	शुक्ल	03	बुध	चित्रा	-
02.10.25	आश्विन	शुक्ल	10	गुरु	उत्तराषाढ/श्रवण	-
08.10.25	कार्तिक	कृष्ण	02	बुध	अश्विनी	-
22.10.25	कार्तिक	शुक्ल	01	बुध	स्वाति	-
24.10.25	कार्तिक	शुक्ल	03	शुक्र	अनुराधा	-
03.11.25	कार्तिक	शुक्ल	13	सोम	उत्तराभाद्रपद	-
07.11.25	मार्गशीर्ष	कृष्ण	02	शुक्र	रोहिणी	-
10.11.25	मार्गशीर्ष	कृष्ण	06	सोम	पुनर्वसु	-
17.11.25	मार्गशीर्ष	कृष्ण	13	सोम	चित्रा	-
26.11.25	मार्गशीर्ष	शुक्ल	06	बुध	श्रवण	-
27.11.25	मार्गशीर्ष	शुक्ल	07	गुरु	धनिष्ठा	-
05.12.25	पौष	कृष्ण	01	शुक्र	रोहिणी/मृगशिरा	-
06.02.26	फाल्गुन	कृष्ण	05	शुक्र	हस्त	-
18.02.26	फाल्गुन	शुक्ल	01	बुध	शतभिषा	-
20.02.26	फाल्गुन	शुक्ल	03	शुक्र	उत्तराभाद्रपद	-
16.03.26	चैत्र	कृष्ण	12	सोम	धनिष्ठा	-

डॉ. दीपक वशिष्ठ

अन्नप्राशन मुहूर्त

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
02.04.25	चैत्र	शुक्ल	05	बुध	रोहिणी	रोहिणी 08.49 से
10.04.25	चैत्र	शुक्ल	13	गुरु	उ.फा.	उ.फाल्गुनी 12.26 से
30.04.25	वैशाख	शुक्ल	03	बुध	रोहिणी	-
28.05.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	02	बुध	मृगशिरा	-
05.06.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	10	गुरु	हस्त	सिद्धि योग 09.14 तक
02.07.25	आषाढ	शुक्ल	07	बुध	उ.फा	भद्रा 11.52 से
31.07.25	श्रावण	शुक्ल	07	गुरु	चित्रा	-
04.08.25	श्रावण	शुक्ल	10	सोम	अनुराधा	अनुराधा 09.16 तक
25.08.25	भाद्रपद	शुक्ल	02	सोम	उ.फा	-
28.08.25	भाद्रपद	शुक्ल	05	गुरु	चित्रा/स्वाति	-
05.09.25	भाद्रपद	शुक्ल	13	शुक्र	श्रवण	-
24.09.25	आश्विन	शुक्ल	03	बुध	चित्रा	-
02.10.25	आश्विन	शुक्ल	10	गुरु	उ.फा./श्रवण	-

08.10.25	कार्तिक	कृष्ण	02	बुध	अश्विनी	-
24.10.25	कार्तिक	शुक्ल	03	शुक्र	अनुराधा	-
03.11.25	कार्तिक	शुक्ल	13	सोम	उ.भा.	-
17.11.25	मार्गशीर्ष	कृष्ण	13	सोम	चित्रा	-
27 .11.25	मार्गशीर्ष	शुक्ल	07	गुरु	धनिष्ठा	-
22.12.25	पौष	शुक्ल	02	सोम	उत्तराषाढ	-
01.01.26	पौष	शुक्ल	13	गुरु	रोहिणी	-
28.01.26	माघ	शुक्ल	10	बुध	रोहिणी	रोहिणी 09.29 से
06.02.26	फाल्गुन	कृष्ण	05	शुक्र	हस्त	-
20.02.26	फाल्गुन	शुक्ल	03	शुक्र	उ.भाद्रपद	-
26.02.26	फाल्गुन	शुक्ल	10	गुरु	मृगशिरा	मृगशिरा 12.11 तक

डॉ. दीपक वशिष्ठ

कर्णवेध मुहूर्त

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
28.05.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	02	बुध	मृगशिरा	-
05.06.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	10	गुरु	हस्त	-
06.06.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	11	शुक्र	चित्रा	भद्रा 15.25 से
16.06.25	आषाढ	कृष्ण	05	सोम	धनिष्ठा	-
27.06.25	आषाढ	शुक्ल	02	शुक्र	पुनर्वसु/पुष्य	-
03.07.25	आषाढ	शुक्ल	08	गुरु	हस्त	-
05.11.25	कार्तिक	शुक्ल	15	बुध	अश्विनी	भद्रा 08.59 तक
17.11.25	मार्गशीर्ष	कृष्ण	13	सोम	चित्रा	-
21.11.25	मार्गशीर्ष	शुक्ल	01	शुक्र	अनुराधा	-
26.11.25	मार्गशीर्ष	शुक्ल	06	बुध	श्रवण	-
27.11.25	मार्गशीर्ष	शुक्ल	07	गुरु	धनिष्ठा	-
21.01.26	माघ	शुक्ल	03	बुध	धनिष्ठा	-
26.01.26	माघ	शुक्ल	08	सोम	अश्विनी	भद्रा 10.33 तक
06.02.26	फाल्गुन	कृष्ण	05	शुक्र	हस्त	-

डॉ. दीपक वशिष्ठ

मुण्डन मुहुर्त

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
31.05.2025	चैत्र	शुक्ल	2\3	सोम	अश्विनी	अश्विनी- 13:44 तक,
15.05.2025	वैशाख	कृष्ण	3	गुरु	ज्येष्ठा	भद्रा 15:19 से 28 :19तक, ज्येष्ठा – 14:10 तक,
28.05.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	2	बुध	मृगशिरा	
05.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	10	गुरु	हस्त	
06.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	11	शुक्र	हस्त \चित्रा	भद्रा 15:25 से 28 : 45 तक, हस्त-6:36 तक,
06.02.2026	फाल्गुन	कृष्ण	5	शुक्र	हस्त	
12.02.2026	फाल्गुन	कृष्ण	10 \11	गुरु	ज्येष्ठा	भद्रा 12:29 तक, ज्येष्ठा-13:48 तक,

डॉ.प्रवेश व्यास

अक्षरारम्भ मुहुर्त

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
31.03.2025	चैत्र	शुक्ल	2\3	सोम	अश्विनी	अश्विनी-13:44 तक,
16.04.2025	वैशाख	कृष्ण	3	बुध	अनुराधा	भद्रा-13:16 तक,
02.05.2025	वैशाख	शुक्ल	5	शुक्र	आर्द्रा/पुनर्वसु	-
09.05.2025	वैशाख	शुक्ल	12	शुक्र	हस्त -	
14.05.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	2	बुध	अनुराधा	अनुराधा- 11:46 तक,
19.05.2025	ज्येष्ठ	कृष्ण	6	सोम	श्रवण	भद्रा- 6:16 से 18:05 तक, श्रवण- 19:46 तक,
29.05.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	3	गुरु	आर्द्रा	
05.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	10	गुरु	हस्त	
06. 06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	11	शुक्र	हस्त/चित्रा	भद्रा- 15:25 से 28:45 तक,
05.01.2026	माघ	कृष्ण	2	सोम	पुष्य	भद्रा- 20:59 से, पुष्य- 13:19 तक,
14.01.2026	माघ	कृष्ण	11	बुध	अनुराधा	-
30.01.2026	माघ	शुक्ल	12	शुक्र	आर्द्रा	-
06.02.2026	फाल्गुन	कृष्ण	5	शुक्र	हस्त	-
06.03.2026	चैत्र	शुक्ल	3	शुक्र	हस्त/चित्रा	-

डॉ.प्रवेश व्यास

विद्यारम्भ मुहुर्त

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
03.04.2025	चैत्र	शुक्ल	6	गुरु	रोहिणी/मृगशिरा	मृगशिरा- 7:02 से,
23.042025	चैत्र	कृष्ण	10	बुध	धनिष्ठा	भद्रा- 5:45 से 16:59 तक,
24.04.2025	चैत्र	कृष्ण	11	गुरु	शतभिषा	-
25.04.2025	चैत्र	कृष्ण	12	शुक्र	पू० भा०	पू० भा०-8:56 तक,
02.05.2025	वैशाख	शुक्ल	5	शुक्र	आर्द्रा/पुनर्वसु	-
07.05.2025	वैशाख	शुक्ल	10	बुध	पू०फा०	भद्रा- 23:26 से,
22.05.2025	ज्येष्ठ	कृष्ण	10	गुरु	पू०भा०	भद्रा-14: 15 से 25:44 तक, पू०भा०- 18:3 तक,
29.05.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	3	गुरु	आर्द्रा	-
01.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	6	रवि	आश्लेषा	-
05.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	10	गुरु	हस्त	-
06.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	11	शुक्र	हस्त/चित्रा	भद्रा- 15:25 से 28:45 तक,
08.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	12	रवि	स्वाति	स्वाती- 12:44 तक,
13.06.2025	आषाढ	कृष्ण	2	शुक्र	पू०षा ०	भद्रा-27:40 से,
27.06.2025	आषाढ	शुक्ल	2	शुक्र	पुनर्वसु/पुष्य	-
13.07.2025	श्रावण	कृष्ण	3	रवि	श्रवण/धनिष्ठा	भद्रा- 13:40 से 25:18 तक,
30.07.2025	श्रावण	शुक्ल	6	बुध	हस्त/चित्रा	-
06.08.2025	श्रावण	शुक्ल	12	बुध	मूल/पू०षा ०	-
20.08.2025	भाद्रपद	कृष्ण	12	बुध	पुनर्वसु	-
28.08.2025	भाद्रपद	शुक्ल	5	गुरु	चित्रा/स्वाति	-
29.08.2025	भाद्रपद	शुक्ल	6	शुक्र	स्वाति	स्वाति- 11:31 तक,
03.09.2025	भाद्रपद	शुक्ल	11	बुध	पू०षा०	भद्रा-16:40 से 28:58तक,
17.09.2025	अश्विन	कृष्ण	11	बुध	पुनर्वसु/पुष्य	-
27.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	6	सोम	मूल / पू०षा०	-
02.11.2025	कार्तिक	शुक्ल	11/12	रवि	पू०भा०	भद्रा- 7:31तक, पू०भा०- 17:19 तक,
14.12.2025	पौष	कृष्ण	10	रवि	हस्त	भद्रा-18:41 तक, हस्त- 8:17 तक,
25.12.2025	पौष	शुक्ल	5	गुरु	धनिष्ठा/शतभिषा	-
26.12.2025	पौष	शुक्ल	6	शुक्र	शतभिषा/पू०भा०	-
08.01.2026	माघ	कृष्ण	6	गुरु	पू०फा०	भद्रा-31:04 से, पू०फा०- 12:18 तक,
21.01.2026	माघ	शुक्ल	3	बुध	धनिष्ठा/शतभिषा	-

23.01.2026	माघ शुक्ल	5	शुक्र	पू० भा०	पू० भा०- 14:40 तक,
29.01.2026	माघ शुक्ल	11	गुरु	रोहिणी/मृगशिरा	भद्रा-13:58 तक, मृगशिरा- 07:32 से 29:29 तक,
04.02.2026	फाल्गुन कृष्ण	3	बुध	पू०फा०	भद्रा-12:01 से 23:43 तक, पू०फा०- 21:52 तक,
15.03.2026	चैत्र कृष्ण	11	रवि	श्रवण	-

डॉ.प्रवेश व्यास

उपनयन मुहूर्त

दिनांक	मास पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
07.04.2025	चैत्र शुक्ल	10	सोम	आश्लेषा	-
14.05.2025	ज्येष्ठ कृष्ण	2	बुध	अनुराधा	अनुराधा-11:46तक,
28.05.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	2	बुध	मृगशिरा	-
29.05.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	3	गुरु	आर्द्रा/पुनर्वसु	-
05.06.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	10	गुरु	हस्त	-
06.06.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	11	शुक्र	हस्त/चित्रा	भद्रा 15:25 से 28:45 तक
06.02.2026	फाल्गुन कृष्ण	5	शुक्र	हस्त	-
19.02.2026	फाल्गुन शुक्ल	2	गुरु	पू० भा०	-
20.02.2026	फाल्गुन शुक्ल	3	शुक्र	उ०भा०	भद्रा 25:57 से
05.03.2026	चैत्र कृष्ण	2	गुरु	उ०फा०/हस्त	भद्रा 29:18 से
06.03.2026	चैत्र कृष्ण	3	शुक्र	हस्त/चित्रा	भद्रा 17:41 तक
08.03.2026	चैत्र कृष्ण	5	रवि	स्वाति	स्वाति-13:23 तक,

डॉ.प्रवेश व्यास

विपणि प्रारम्भ मुहूर्त

दिनांक	मास पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
30.04.2025	चैत्र शुक्ल	01	रविवार	रेवती	
31.04.2025	चैत्र शुक्ल	02/03	सोमवार	अश्विनी	13: 44 तक,
02.04.2025	चैत्र शुक्ल	05/06	बुधवार	रोहिणी	08:49 से
03.04.2025	चैत्र शुक्ल	06	गुरुवार	रोहि/मृग	
10.04.2025	चैत्र शुक्ल	13	गुरुवार	उ.फा.	12:26 से
20.04.2025	वैशाख कृष्ण	07	रविवार	उ.षा.	11:56 से
21.04.2025	वैशाख कृष्ण	08	सोमवार	उ.षा.	12:46 तक
25.04.2025	वैशाख कृष्ण	12	शुक्रवार	उ.भा.	08:56 से
30.04.2025	वैशाख शुक्ल	03	बुधवार	रोहिणी	14:08 तक
01.05.2025	वैशाख शुक्ल	05	गुरुवार	मृगशिरा	11:20 से 14:12 तक
03.05.2025	वैशाख शुक्ल	06	शनिवार	पुष्य	12:25 से
08.05.2025	वैशाख शुक्ल	12	गुरुवार	उ.फा.	12:31 से
09.05.2025	वैशाख शुक्ल	12	शुक्रवार	हस्त	
10.05.2025	वैशाख शुक्ल	13	शनिवार	चित्रा	17:32 तक
14.05.2025	ज्येष्ठ कृष्ण	02	बुधवार	अनुराधा	
18.05.2025	ज्येष्ठ कृष्ण	05,06	रविवार	उ.षा.	19:08 तक
23.05.2025	ज्येष्ठ कृष्ण	11	शुक्रवार	उ.भा.	16:16 तक
24.05.2025	ज्येष्ठ कृष्ण	12	शनिवार	रेवती	
25.05.2025	ज्येष्ठ कृष्ण	13	रविवार	अश्विनी	11:19 तक
28.05.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	02	बुधवार	मृगशिरा	
31.05.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	05	शनिवार	पुष्य	
06.06.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	11	शुक्रवार	ह.,चित्रा	15:25 तक
07.06.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	12	शनिवार	चित्रा	09:43 तक
19.06.2025	आषाढ़ कृष्ण	08	गुरुवार	उ.भा	12:04 तक
20.06.2025	आषाढ़ कृष्ण	10	शुक्रवार	रेवती	09:57 तक
21.06.2025	आषाढ़ कृष्ण	11	शनिवार	अश्विनी	07:23 से
02.07.2025	आषाढ़ शुक्ल	07	बुधवार	उ.फा.	11:52 तक
03.07.2025	आषाढ़ शुक्ल	08	गुरुवार	हस्त	14:00 तक
07.07.2025	आषाढ़ शुक्ल	12	सोमवार	अनुराधा	
11.07.2025	श्रवण कृष्ण	01	शुक्रवार	उ.षा.	05:55 से
16.07.2025	श्रवण कृष्ण	06	बुधवार	उ.भा.	
17.07.2025	श्रावण कृष्ण	07	गुरुवार	रेवती	08:17 से
21.07.2025	श्रावण कृष्ण	11	सोमवार	रोहिणी	
25.07.2025	श्रावण शुक्ल	01	शुक्रवार	पुष्य	15:53 तक
30.07.2025	श्रावण शुक्ल	06	बुधवार	हस्त	
04.08.2025	श्रावण शुक्ल	10	सोमवार	अनुराधा	09:16 तक
13.08.2025	भाद्रपद कृष्ण	05	बुधवार	उ.भा.	06:37 से
14.08.2025	भाद्रपद कृष्ण	06	गुरुवार	रेवती	
21.08.2025	भाद्रपद कृष्ण	13	गुरुवार	पुष्य	12:38 तक
25.08.2025	भाद्रपद शुक्ल	02	सोमवार	उ.फा.	
04.09.2025	भाद्रपद शुक्ल	12	गुरुवार	उ.षा.	
22.09.2025	आश्विन शुक्ल	01	सोमवार	उ.फा.	

27.09.2025	आश्विन	शुक्ल	05	शनिवार	अनुराधा	
02.10.2025	आश्विन	शुक्ल	10	गुरुवार	उ.षा.	09:16 तक
12.10.2025	कार्तिक	कृष्ण	06	रविवार	मृगशिरा	13:28 तक
15.10.2025	कार्तिक	कृष्ण	10	बुधवार	पुष्य	10:27 से 11:52 तक
19.10.2025	कार्तिक	कृष्ण	13	रविवार	उ.फा.	अभिजीत , 13:50 तक
24.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	03	शुक्रवार	अनु.	
29.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	07	बुधवार	उ.षा.	09:25 तक
03.11.2025	कार्तिक	शुक्ल	13	सोमवार	उ.भा.	15:18 तक
07.11.2025	मार्गशीर्ष	कृष्ण	02	शुक्रवार	रोहिणी	
15.11.2025	मार्गशीर्ष	कृष्ण	11	शनिवार	उ.फा.	अभिजीत
16.11.2025	मार्गशीर्ष	कृष्ण	12	रविवार	हस्त	अभिजीत,
21.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	01	शुक्रवार	अनुराधा	13:54 तक
30.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	10	रविवार	उ.भा.	
05.12.2025	पौष	कृष्ण	01	शुक्रवार	रोह/ मृग	
06.12.2025	पौष	कृष्ण	02	शनिवार	मृगशिरा	08:50 तक
12.12.2025	पौष	कृष्ण	08	शुक्रवार	उ.फा.	14:47 तक
07.02.2026	फाल्गुन	कृष्ण	06	शनिवार	चित्रा	
11.02.2026	फाल्गुन	कृष्ण	10	बुधवार	अनु.	10:02 से 10:55 तक
20.02.2026	फाल्गुन	शुक्ल	03	शुक्रवार	उ.भा.	14:47 तक
04.03.2026	चैत्र	कृष्ण	01	बुधवार	उ.फा.	07:41 से
05.03.2026	चैत्र	कृष्ण	02	गुरुवार	उ.फा.	8:18 तक

डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
30.04.25	वैशाख	शुक्ल	03	बुध	रोहिणी	-
08.05.25	वैशाख	शुक्ल	11	गुरु	उ.फा.	भद्रा 12.31 तक
10.05.25	वैशाख	शुक्ल	13	शनि	चित्रा	त्रयोदशी 17.32 तक
28.05.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	02	बुध	मृगशिरा	-
31.05.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	05	शनि	पुष्य	शनिवार (मध्यम)
05.06.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	10	गुरु	हस्त	-
06.06.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	11	शुक्र	हस्त/चित्रा	भद्रा 15.32 से तथा व्यतिपात 10.15 तक
07.06.25	ज्येष्ठ	शुक्ल	12	शनि	चित्रा/स्वाति	-

24.01.26	माघ	शुक्ल	06	शनि	उ.भा.	शनिवार (मध्यम)
25 .01. 26	माघ	शुक्ल	07	रवि	रेवती	रविवार (मध्यम)
28.01.26	माघ	शुक्ल	10	बुध	रोहिणी	रोहिणी 9.29 से
29.01.26	माघ	शुक्ल	11	गुरु	मृगशिरा	भद्रा 13.58 तक
20.02.26	फाल्गुन	शुक्ल	03	शुक्र	उ.भा.	तृतीया 14.47 तक
22.02.26	फाल्गुन	शुक्ल	05	रवि	अश्विनी	-

डॉ. दीपक वशिष्ठ

हलप्रवहण (हल जोतने का) मुहूर्त

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
31.03.2025	चैत्र	शुक्ल	02/03	सोम	अश्विनी	
09.04. 2025	चैत्र	शुक्ल	12	बुध	मघा	
15.04. 2025	वैशाख	कृष्ण	02	मंगल	विशाखा	भद्रा 24 04 से
24.04.2025	वैशाख	कृष्ण	11	गुरु	शतभिषा	
30.04.2025	वैशाख	शुक्ल	03	बुध	रोहिणी	भद्रा 24 44 से
08.05.2025	वैशाख	शुक्ल	11	गुरु	उ.फा	भद्रा 12 31 तक
12.05.2025	वैशाख	शुक्ल	15	सोम	स्वाति	भद्रा 9 17 तक
23.05.2025	ज्येष्ठ	कृष्ण	01	मंगल	विशाखा	
23.05.2025	ज्येष्ठ	कृष्ण	11	शुक्र	उ.भा.	
28.05.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	02	बुध	मृगशिरा	
05.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	10	गुरु	हस्त	
09.06.2025	आषाढ़	कृष्ण	13	सोम	विशाखा	
12.06.2025	आषाढ़	कृष्ण	01	गुरु	मूल	
30.06.2025	आषाढ़	शुक्ल	05	सोम	मघा	पंचमी 09 21 तक
02.07.2025	आषाढ़	शुक्ल	07	बुध	उ.फा.	भद्रा 11 52 से
07.07.2025	आषाढ़	शुक्ल	12	सोम	अनु.	
15.07.2025	श्रावण	कृष्ण	07	मंगल	शतभिषा	
17.07.2025	श्रावण	कृष्ण	07	गुरु	रेवती	भद्रा 8 17 तक
21.07.2025	श्रावण	कृष्ण	11	सोम	रोहिणी	
22.07.2025	श्रावण	कृष्ण	12/13	मंगल	मृगशिरा	
25.07.2025	श्रावण	शुक्ल	01	शुक्र	पुष्य	
29.07.2025	श्रावण	शुक्ल	05	मंगल	उ.फा.	
31.07.2025	श्रावण	शुक्ल	07	गुरु	चित्रा	
04.08.2025	श्रावण	शुक्ल	10	सोम	अनुराधा	भद्रा 24 22 से

13.08.2025	भाद्रपद	कृष्ण	05	बुध	उ.भा.	पंचमी 6 37 से
18.082025	भाद्रपद	कृष्ण	10	सोम	मृग.	भद्रा 6 17 से 17 15 तक
20.08.2025	भाद्रपद	कृष्ण	12	बुध	पुनर्वसु	
25.08.2025	भाद्रपद	शुक्ल	02	सोम	उ.फा	
26.08.2025	भाद्रपद	शुक्ल	03	मंगल	हस्त	
28.08.2025	भाद्रपद	शुक्ल	05	गुरु	चित्रा/स्वा.	
02.09.2025	भाद्रपद	शुक्ल	10	मंगल	मूल	
04.09.2025	भाद्रपद	शुक्ल	12	गुरु	उ.षा.	
05.09.2025	भाद्रपद	शुक्ल	13	शुक्र	श्रवण	
22.09.2025	आश्विन	शुक्ल	01	सोम	उ.फा.	
23.09.2025	आश्विन	शुक्ल	02	मंगल	हस्त	
24.09.2025	आश्विन	शुक्ल	03	बुध	चित्रा	
29.09.2025	आश्विन	शुक्ल	07	सोम	मूल	भद्रा 16 39 से
02.10.2025	आश्विन	शुक्ल	10	गुरु	उ.षा.	
03.10.2025	आश्विन	शुक्ल	11	सोम	श्रवण	भद्रा 07 08 से 18 48 तक
08.10.2025	कार्तिक	कृष्ण	02	बुध	अश्विनी	
17.10.2025	कार्तिक	कृष्ण	11	शुक्र	मघा	
22.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	01	बुध	स्वाति	
23.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	02	गुरु	विशाखा	
24.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	03	शुक्र	अनुराधा	
29.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	07	बुध	उ.षा.	भद्रा 09 25 से 21 47 तक
03.11.2025	कार्तिक	शुक्ल	13	सोम	उ.भा.	
11.11.2025	मार्गशीर्ष	कृष्ण	07	मंगल	पुष्य	भद्रा 11 06 तक
17.11.2025	मार्गशीर्ष	कृष्ण	13	सोम	चित्रा	
21.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	01	शुक्र	अनुराधा	अतिगण्ड 10 29 तक
25.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	05	मंगल	उ.षा.	
27.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	07	गुरु	धनिष्ठा	
02.12.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	12	मंगल	अश्विनी	
05.12.2025	पौष	कृष्ण	01	शुक्र	रोहिणी/मृग	
15.12.2025	पौष	कृष्ण	11	सोम	चित्रा	
17.12.2025	पौष	कृष्ण	13	बुध	विशाखा	
22.12.2025	पौष	शुक्ल	02	सोम	उ.षा.	
01.01.2026	पौष	शुक्ल	13	गुरु	रोहिणी	
07.01.2026	माघ	कृष्ण	05	बुध	मघा	
16.01.2026	माघ	कृष्ण	13	शुक्र	मूल	
20.01.2026	माघ	शुक्ल	02	मंगल	श्रवण	
29.01.2026	माघ	शुक्ल	11	गुरु	रोहिणी/मृग	भद्रा 13 58 तक
03.02.2026	फाल्गुन	कृष्ण	02	मंगल	मघा	
06.02.2026	फाल्गुन	कृष्ण	05	शुक्र	हस्त	
18.02.2026	फाल्गुन	शुक्ल	01	बुध	शतभिषा	
20.02.2026	फाल्गुन	शुक्ल	03	शुक्र	उ.भा	
16.03.2026	चैत्र	कृष्ण	12	सोम	धनिष्ठा	
17.03.2026	चैत्र	कृष्ण	13	मंगल	शतभिषा	भद्रा 9 25 से 20 55 तक

डॉ. अव्यक्त रैणा

बीजवपन (बीज बोने का) मुहूर्त

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार
30.03.2025	चैत्र	शुक्ल	01	रवि	रेवती	
31.03.2025	चैत्र	शुक्ल	02/03	सोम	अश्विनी	
09.04.2025	चैत्र	शुक्ल	12	बुध	मघा	
13.04.2025	वैशाख	कृष्ण	01	रवि	चित्रा	
25.04.2025	वैशाख	कृष्ण	12	शुक्र	उ. भा.	उ. भा. 07 46 से
30.04.2025	वैशाख	शुक्ल	03	बुध	रोहिणी	भद्रा 24 44 से
04.05.2025	वैशाख	शुक्ल	07	रवि	पुष्य	भद्रा 07 19 से 19 34 तक
08.05.2025	वैशाख	शुक्ल	11	गुरु	उ.फा	भद्रा 12 31 तक
10.05.2025	वैशाख	शुक्ल	13	शनि	चित्रा	
12.05.2025	वैशाख	शुक्ल	15	सोम	स्वाति	भद्रा 9 17 तक
23.05.2025	ज्येष्ठ	कृष्ण	11	शुक्र	उ.भा.	
24.05.2025	ज्येष्ठ	कृष्ण	12	शनि	रेवती	
25.05.2025	ज्येष्ठ	कृष्ण	13	रवि	अश्विनी	भद्रा 16 03 से 26 10 तक
28.05.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	02	बुध	मृगशिरा	
31.05.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	05	शनि	पुष्य	
05.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	10	गुरु	हस्त	
12.06.2025	आषाढ़	कृष्ण	01	गुरु	मूल	
14.06.2025	आषाढ़	कृष्ण	03	शनि	उ.षा.	भद्रा 15 55 तक
28.06.2025	आषाढ़	शुक्ल	03	शनि	पुष्य	भद्रा 21 31 से
30.06.2025	आषाढ़	शुक्ल	05	सोम	मघा	पंचमी 09 21 तक

02.07.2025	आषाढ़	शुक्ल	07	बुध	उ.फा.	भद्रा 11 52 से
05.07.2025	आषाढ़	शुक्ल	10	शनि	स्वाति	
07.07.2025	आषाढ़	शुक्ल	12	सोम	अनु.	
17.07.2025	श्रावण	कृष्ण	07	गुरु	रेवती	भद्रा 8 17 तक
21.07.2025	श्रावण	कृष्ण	11	सोम	रोहिणी	
25.07.2025	श्रावण	शुक्ल	01	शुक्र	पुष्य	
27.07.2025	श्रावण	शुक्ल	03	रवि	मघा	
31.07.2025	श्रावण	शुक्ल	07	गुरु	चिला	
04.08.2025	श्रावण	शुक्ल	10	सोम	अनुराधा	भद्रा 24 22 से
10.08.2025	भाद्रपद	कृष्ण	01	रवि	धनिष्ठा	
13.08.2025	भाद्रपद	कृष्ण	05	बुध	उ.भा.	पंचमी 6 37 से
18.08.2025	भाद्रपद	कृष्ण	10	सोम	मृग.	भद्रा 6 17 से 17 15 तक
25.08.2025	भाद्रपद	शुक्ल	02	सोम	उ.फा	
28.08.2025	भाद्रपद	शुक्ल	05	गुरु	चिला/स्वा.	
04.09.2025	भाद्रपद	शुक्ल	12	गुरु	उ.षा.	
22.09.2025	आश्विन	शुक्ल	01	सोम	उ.फा.	
24.09.2025	आश्विन	शुक्ल	03	बुध	चिला	
27.09.2025	आश्विन	शुक्ल	05	शनि	अनुराधा	
29.09.2025	आश्विन	शुक्ल	07	सोम	मूल	भद्रा 16 39 से
02.10.2025	आश्विन	शुक्ल	10	गुरु	उ.षा.	
08.10.2025	कार्तिक	कृष्ण	02	बुध	अश्विनी	
17.10.2025	कार्तिक	कृष्ण	11	शुक्र	मघा	
19.10.2025	कार्तिक	कृष्ण	13	रवि	उ.फा.	भद्रा 13 50 से
22.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	01	बुध	स्वाति	
24.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	03	शुक्र	अनुराधा	
29.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	07	बुध	उ.षा.	भद्रा 09 25 से 21 47 तक
03.11.2025	कार्तिक	शुक्ल	13	सोम	उ.भा.	
16.11.2025	मार्गशीर्ष	कृष्ण	12	रवि	हस्त	
17.11.2025	मार्गशीर्ष	कृष्ण	13	सोम	चिला	
21.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	01	शुक्र	अनुराधा	अतिगण्ड 10 29 तक
23.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	03	रवि	मूल	
27.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	07	गुरु	धनिष्ठा	
30.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	10	रवि	उ.भा.	
05.12.2025	पौष	कृष्ण	01	शुक्र	रोहिणी/मृग	
15.12.2025	पौष	कृष्ण	11	सोम	चिला	
22.12.2025	पौष	शुक्ल	02	सोम	उ.षा.	
01.12.2026	पौष	शुक्ल	13	गुरु	रोहिणी	
07.01.2026	माघ	कृष्ण	05	बुध	मघा	
16.01.2026	माघ	कृष्ण	13	शुक्र	मूल	
16.01.2026	माघ	शुक्ल	07	रवि	रेवती	
29.01.2026	माघ	शुक्ल	11	गुरु	रोहिणी/मृग	भद्रा 13 58 तक
01.02.2026	माघ	शुक्ल	15	रवि	पुष्य	भद्रा 16 08 तक
06.02.2026	फाल्गुन	कृष्ण	05	शुक्र	हस्त	
20.02.2026	फाल्गुन	शुक्ल	03	शुक्र	उ.भा	
22.02.2026	फाल्गुन	शुक्ल	05	रवि	अश्विनी	
01.03.2026	फाल्गुन	शुक्ल	13	रवि	पुष्य	
08.03.2026	चैत्र	कृष्ण	02	रवि	स्वाति	
16.03.2026	चैत्र	कृष्ण	12	सोम	धनिष्ठा	

डॉ. अव्यक्त रैणा

गृहारम्भ मुहूर्त

दिनांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार	चक्रशुद्धि
16.04.2025	वैशाख	कृष्ण	03	बुध	अनुराधा	13:16 तक भद्रा परिहार	अशुद्ध
19.04.2025	वैशाख	कृष्ण	06	शनि	मूल	10:25 तक	अशुद्ध
21.04.2025	वैशाख	कृष्ण	08	सोम	उ.षा/श्रवण		अशुद्ध
24.04.2025	वैशाख	कृष्ण	11	गुरु	शतभिषा	10:53 तक	अशुद्ध
30.04.2025	वैशाख	शुक्ल	03	बुध	रोहिणी	14:08 तक	अशुद्ध
08.05.2025	वैशाख	शुक्ल	12	गुरु	उ.फा.	12:31 से	शुद्ध
10.05.2025	वैशाख	शुक्ल	13	शनि	चिला	17:32 तक	शुद्ध
14.05.2025	ज्येष्ठ	कृष्ण	02	बुध	अनुराधा	06:31 से	शुद्ध
15.05.2025	ज्येष्ठ	कृष्ण	03	गुरु	ज्येष्ठा	15:19 तक	शुद्ध
23.05.2025	ज्येष्ठ	कृष्ण	11	शुक्र	उ.भा.		अशुद्ध
24.05.2025	ज्येष्ठ	कृष्ण	12	शनि	रेवती		अशुद्ध
28.05.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	02	बुध	मृगशिरा		अशुद्ध
31.05.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	05	शनि	पुष्य		अशुद्ध
05.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	10	गुरु	हस्त		शुद्ध
07.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	12	शनि	चिला/स्वा.		शुद्ध

11.06.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	15	बुध	ज्येष्ठा	(गुरु अस्त)	शुद्ध
12.06.2025	आषाढ़	कृष्ण	02	गुरु	मूल	14:32 तक (गुरु अस्त)	शुद्ध
18.07.2025	श्रावण	कृष्ण	08	शुक्र	अश्विनी	17:11 तक	अशुद्ध
21.07.2025	श्रावण	कृष्ण	11	सोम	रोहिणी		अशुद्ध
30.07.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	06	बुध	हस्त		अशुद्ध
31.07.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	07	गुरु	चित्रा		अशुद्ध
01.08.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	08	शुक्र	स्वाती		शुद्ध
04.08.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	10/11	सोम	अनु/ज्ये.		शुद्ध
06.08.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	12	बुध	मूल	17:07 तक	शुद्ध
09.08.2025	ज्येष्ठ	शुक्ल	15	शनि	श्रवण		शुद्ध
13.08.2025	भाद्रपद	कृष्ण	05	बुध	उ.भा.	06:37 से	अशुद्ध
20.08.2025	भाद्रपद	कृष्ण	12	बुध	पुनर्वसु		अशुद्ध
25.08.2025	भाद्रपद	शुक्ल	02	सोम	उ.फा.		अशुद्ध
28.08.2025	भाद्रपद	शुक्ल	05	गुरु	चित्रा,स्वा		अशुद्ध
29.08.2025	भाद्रपद	शुक्ल	06	शुक्र	स्वाती	11:31 तक	अशुद्ध
04.09.2025	भाद्रपद	शुक्ल	12	गुरु	उ.षा		अशुद्ध
05.09.2025	भाद्रपद	शुक्ल	13	शुक्र	श्रवण		शुद्ध
24.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	03	शुक्र	अनुराधा		अशुद्ध
27.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	06	सोम	मूल	अतिगण्ड योग परिहार	अशुद्ध
29.10.2025	कार्तिक	शुक्ल	07	बुध	उ.षा.	09:25 तक	अशुद्ध
01.11.2025	कार्तिक	शुक्ल	10/11	शनि	शतभिषा		शुद्ध
03.11.2025	कार्तिक	शुक्ल	13	सोम	उ.भा.		शुद्ध
05.11.2025	कार्तिक	शुक्ल	15	बुध	अश्विनी	09:44 तक	शुद्ध
10.11.2025	मार्गशीर्ष	कृष्ण	06	सोम	पुनर्वसु		अशुद्ध
17.11.2025	मार्गशीर्ष	कृष्ण	13	सोम	चित्रा		अशुद्ध
21.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	02	शुक्र	ज्येष्ठा		अशुद्ध
22.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	02	शनि	ज्येष्ठा	16:48 तक	अशुद्ध
26.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	06	बुध	श्रवण		अशुद्ध
27.11.2025	मार्गशीर्ष	शुक्ल	07	गुरु	धनिष्ठा		शुद्ध
06.12.2025	पौष	कृष्ण	02	शनि	मृगशिरा	08:50 तक	शुद्ध
06.02.2025	फाल्गुन	कृष्ण	05	शुक्र	हस्त		शुद्ध
12.02.2025	फाल्गुन	कृष्ण	11	गुरु	ज्येष्ठा,मूल	12:29 से	अशुद्ध
20.02.2026	फाल्गुन	शुक्ल	03	शुक्र	उ.भा.	14:47 तक	अशुद्ध
26.02.2026	फाल्गुन	शुक्ल	10	गुरु	मृगशिरा	12:11 तक	शुद्ध
28.02.2026	फाल्गुन	शुक्ल	12	शनि	पुन.,पुष्य		शुद्ध

डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा

नूतन - गृहप्रवेश मुहूर्त

दिनांक	मास पक्ष	तिथि वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार	चक्रशुद्धि
14.04.2025	वैशाख कृष्ण	01/02 सोम	स्वाती	वज्र योग परिहार	अशुद्ध
19.04.2025	वैशाख कृष्ण	06 शनि	मूल	10:25 तक	अशुद्ध
21.04.2025	वैशाख कृष्ण	08 सोम	श्रवण	17:12 तक	शुद्ध
23.04.2025	वैशाख कृष्ण	11 बुध	शतभिषा	16:59 से	शुद्ध
24.04.2025	वैशाख कृष्ण	11 गुरु	शतभिषा	10:53 तक,	शुद्ध
30.04.2025	वैशाख शुक्ल	03 बुध	रोहिणी	14:08 तक,	अशुद्ध
01.05.2025	वैशाख शुक्ल	05 गुरु	मृगशिरा	11:20 से 14:12 तक	अशुद्ध
03..05.2025	वैशाख शुक्ल	07 शनि	पुष्य	12:25 से, शूल योग परिहार	शुद्ध
08.05.2025	वैशाख शुक्ल	12 गुरु	उ.फाल्गुनी	12:31 से	शुद्ध
14.05.2025	ज्येष्ठ कृष्ण	02 बुध	अनुराधा	06:31 से 11:46	अशुद्ध
19.05.2025	ज्येष्ठ कृष्ण	07 सोम	श्रव/धनि	18:05 से	अशुद्ध
23.05.2025	ज्येष्ठ कृष्ण	11 शुक्र	उ.भा.		शुद्ध
28.05.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	02 बुध	मृगशिरा		अशुद्ध
31.05.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	05 शनि	पुष्य	20:43 तक, अभिजीत मुहूर्त	अशुद्ध
07.06.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	12 शनि	चित्रा/स्वाती		शुद्ध
11.07.2025	ज्येष्ठ शुक्ल	01 शुक्र	उ.षा.	05:55 से, वैधृति योग परिहार	अशुद्ध
12.07.2025	श्रावण कृष्ण	02 शनि	श्रवण	06:35 तक, विष्कुम्भ योग परिहार	अशुद्ध
22.10.2025	कार्तिक शुक्ल	01 बुध	स्वाती		अशुद्ध
24.10.2025	कार्तिक शुक्ल	03 शुक्र	अनुराधा	अभिजीत मुहूर्त	अशुद्ध
27.10.2025	कार्तिक शुक्ल	06 सोम	मूल	13:31 तक, अतिगण्ड योग परिहार	अशुद्ध
29.10.2025	कार्तिक शुक्ल	07 बुध	उ.षाढा	09:25 तक	शुद्ध
31.10.2025	कार्तिक शुक्ल	10 शुक्र	धनिष्ठा	10:06 से ,	शुद्ध
01.11.2025	कार्तिक शुक्ल	10/11शनि	शतभिषा	18:38 तक	शुद्ध
03.11.2025	कार्तिक शुक्ल	13 सोम	उ.भाद्रपद	अभिजीत मुहूर्त,	शुद्ध
05.11.2025	कार्तिक शुक्ल	15 बुध	अश्विनी	08:59 से 09:44 तक	अशुद्ध
07.11.2025	मार्गशीर्ष कृष्ण	02 शुक्र	रोहिणी	अभिजीत, परिघ योग परिहार	अशुद्ध
08..11.2025	मार्गशीर्ष कृष्ण	03 शनि	मृगशिरा	07:34 तक	अशुद्ध
10.11.2025	मार्गशीर्ष कृष्ण	06/07 सोम	पुष्य	18:30 से	अशुद्ध
21.11.2025	मार्गशीर्ष शुक्ल	01 शुक्र	अनुराधा	13:54 तक	अशुद्ध
26.11.2025	मार्गशीर्ष शुक्ल	06 बुध	श्रवण		शुद्ध
27..11.2025	मार्गशीर्ष शुक्ल	07 गुरु	धनिष्ठा	लग्न 10, मुहूर्त 12:09 तक	शुद्ध
04.12.2025	मार्गशीर्ष शुक्ल	15 गुरु	रोहिणी	18:43 के बाद,	अशुद्ध
05.12.2025	पौष कृष्ण	01 शुक्र	रोहि/मृग.		अशुद्ध

6.12.2025	पौष कृष्ण	02 शनि	मृगशिरा	08:50 तक		अशुद्ध
21.02.2026	फाल्गुन शुक्ल	05 शनि	रेवती	13:08 से		अशुद्ध

डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा

पुरातन - गृहप्रवेश मुहूर्त

दिनांक	मास पक्ष	तिथि वार	नक्षत्र	भद्रादि विचार	चक्रशुद्धि
12.06.2025	आषाढ़ कृष्ण	01 गुरु	मूल	22:06 तक	अशुद्ध
16.06.205	आषाढ़ कृष्ण	05 सोम	धनिष्ठा		अशुद्ध
19.06.2025	आषाढ़ कृष्ण	08 गुरु	उ.भा.	12:04 तक	शुद्ध
20.06.2025	आषाढ़ कृष्ण	10 शुक्र	रेवती	09:57 से	शुद्ध
21.06.2025	आषाढ़ कृष्ण	10/11 शनि	अश्विनी	07:23 से	शुद्ध
26.06.2025	आषाढ़ शुक्ल	01 गुरु	पुनर्वसु	08:47 से	अशुद्ध
02.07.2025	आषाढ़ शुक्ल	07 बुध	उ.फा.	11:02 तक केतु युति परिहार	शुद्ध
04.07.2025	आषाढ़ शुक्ल	10 शुक्र	चि./स्वा	16:29 से	शुद्ध
05.07.2025	आषाढ शुक्ल	10/11 शनि	स्वा.	19:53 तक	शुद्ध
07.07.2025	आषाढ़ शुक्ल	12 सोम	अनुराधा		शुद्ध
11.07.2025	श्रावण कृष्ण	01 शुक्र	उ.षा.	05 : 55 से	अशुद्ध
16.07.2025	श्रावण कृष्ण	06 बुध	उ.भा.	5 : 48 से	अशुद्ध
18.07.2025	श्रावण कृष्ण	08 शुक्र	अश्विनी	17:11 तक	शुद्ध
21.07.2025	श्रावण कृष्ण	11 सोम	रोहिणी	लग्न 8,9 अभिजीत	शुद्ध
31.07.2025	श्रावण शुक्ल	07 गुरु	चित्रा		शुद्ध
01.08.2025	श्रावण शुक्ल	08 शुक्र	स्वाती	17:58 से 27:33 तक	शुद्ध
04.08.2025	श्रावण शुक्ल	10 सोम	अनुराधा	09:16 तक	शुद्ध
07.08.2025	श्रावण शुक्ल	13 गुरु	उ.षा.	14:06 से 14:34 तक,	शुद्ध
09.08.2025	श्रावण शुक्ल	15 शनि	श्रवण		अशुद्ध
11.08.2025	भाद्रपद कृष्ण	02 सोम	शतभिषा	13:01 तक, अतिगण्ड योग परिहार	अशुद्ध
12.12.2025	पौष कृष्ण	08 शुक्र	उ.फा.	14:47 तक	शुद्ध
28.01.2026	माघ शुक्ल	10 बुध	रोहिणी	09:29 से	शुद्ध
29.01.2026	माघ शुक्ल	11 गुरु	रोहि/मृग	13:58 से	शुद्ध
31.01.2026	माघ शुक्ल	13 शनि	पुनर्वसु	08:24 तक	शुद्ध

डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा

- श्रीनवग्रहस्तोत्रम्-

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽसर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगल प्रणमाम्यहम् ॥

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

गोधूलि प्रशंसा

ऋषि मुनियों ने गोधूलि वेला सभी प्रकार के विवाहादि मंगल कार्यों में शुभ कही गयी है। गोधूलि वेला में पञ्चांग शुद्धि एवं लग्न शुद्धि विचार नहीं करना चाहिए। यथा-

नास्यामृक्षं न तिथि-करणं नैव लग्नस्य चिंता,
नो वा वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्तस्य चर्चा।
नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्रदोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता ॥

(मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लोक सं 100)

विशेष - प्रशस्त गोधूलि लग्न का आवश्यक होने पर मुहूर्त्ताभाव में उपयोग करना चाहिये। अन्यथा शुद्धि देखते हुये विवाह करना प्रशस्त होता है। नारद के मतानुसार कुछ विशिष्ट स्थानों पर गोधूलि का उपयोग करना चाहिये। यथा -

प्राच्यानां च कलिंगानां मुख्यं गोधूलिकं स्मृतं।
गान्धर्वादिविवाहेषु वैश्योद्वाहे च योजयेत् ॥

गोधूलि लक्षणं -

हेमन्तऋतु अर्थात् मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन मासों में जब सूर्य बिम्ब निस्तेज गोलक के समान हो जाता है उस समय गोधूलि लग्न होती है। ग्रीष्मऋतु अर्थात् चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मासों में सूर्य बिम्ब का आधा भाग अस्त होने पर तथा वर्षाऋतु अर्थात् श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक मासों में सम्पूर्ण बिम्ब के अस्त होने पर गोधूलि लग्न होती है। इस प्रकार ऋतु भेद से तीन प्रकार की गोधूलि लग्न कही गयी है। इसका सभी प्रकार के शुभ कार्यों में उपयोग करना शुभकारक होता है। यथा -

पिण्डीभूते दिनकृति हेमन्तौं स्यादर्घास्ते तपसमये गोधूलिः।
सम्पूर्णास्ते जलधरमालाकाले त्रेधा योज्या सकलशुभे कार्यादौ ॥

(मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लोक सं 101)

गोधूलि में त्याज्य -

गुरुवार के दिन सूर्यास्त के बाद एवं शनिवार के दिन सूर्यास्त से पूर्व गोधूलि वेला शुभ कही गयी है। गोधूलि काल में विवाह लग्न से अष्टम, षष्ठ और लग्न में यदि चन्द्रमा हो तो कन्या के लिये कष्टप्रद होता है। लग्न सप्तं और अष्टं भाव में मंगल हो तो वर के लिये कष्टप्रद होता है। एकादश, द्वितीय एवं तृतीय भाव में स्थित चन्द्रमा सुख कारक होता है। यथा-

अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्क लग्नान्मृत्यौ रिपुभवने लग्नेचेन्दौ।
कन्यानाशस्तनुमदमृत्युस्थे भौमे वोढुर्लाभे धनसहजे चन्द्रे सौख्यम् ॥

(मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लोक सं 102)

विविध मुहूर्तों का विचार

गर्भाधान मुहूर्त

यह षोडश संस्कारों में प्रथम संस्कार हैं, क्योंकि जीवन का प्रारम्भ इसी से होता है।

निषिक्तो यत्प्रयोगेण गर्भ संधार्यते स्त्रिया।
तद्गर्भालम्भनं नामकर्म प्रोक्तं मनीषिभिः ॥

रजोदर्शन प्रारम्भ से 4 रात्रि उपरान्त सम रात्रियों में रोहिणी, हस्त, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में मेष, कर्क, सिंह, धनु, मकर इन लग्नों मे तथा लग्न से 3-6-11 वें स्थान पर पाप ग्रह हो रवि, मंगल, और गुरु की लग्न पर दृष्टि, नवांश विषम राशि का हो (स्त्री का विशेष रूप से चन्द्र श्रेष्ठ हो) ऐसे समय का विचार कर गर्भाधान संस्कार करें। पुनर्वसु, अश्विनी, पुष्य, चित्रा नक्षत्रों में गर्भाधान मध्यम है।

श्रेष्ठ नक्षत्र - रोहणी, हस्त, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तीनों उत्तरा
मध्यम नक्षत्र - पुनर्वसु, अश्विनी, पुष्य, चित्रा
लग्न - मेष, कर्क, सिंह, धनु, मकर व लग्न से 3,6,11 वें पापग्रह
नवांश - 1, 3, 5, 7, 9, 11 राशि का हो
रात्रियां रजोदर्शन से - 6, 8, 10, 12, 14, 16 वीं

पुंसवन तथा सीमन्तोनयन मुहूर्त

गर्भधारण का निश्चय हो जाने के पश्चात् शिशु को पुंसवन नामक संस्कार के द्वारा अभिषिक्त किया जाता है। इसका अभिप्राय पुमान् (पुरुष) का सवन (जन्म) हो।

पुमान् प्रसूयते येन कर्मणा तत् पुंसवनमीरितम्।

गर्भ के तृतीय मास में रवि, मंगल, गुरुवार को दम्पति के श्रेष्ठ चन्द्र में, तारा शुद्धि मे रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, पुनर्वसु, हस्त, मूल. श्रवण, तीनों उत्तरा नक्षत्रों में जन्म नक्षत्र को त्याग कर, शुक्लपक्ष की 1, 2, 3, 4, 5, 7, 10, 11, 13 तथा कृष्ण पक्ष में दशमी पर्यन्त तिथियों में दिन के पूर्व भाग में पुरुष संज्ञक नवांश लग्न में होने पर तथा लग्न से 1, 4, 5, 7, 9, 10 स्थानों पर शुभ ग्रह तथा 3, 6, 11 वें स्थानों पर पापग्रहों की स्थिति में एवं चन्द्र की 1,6,8,12वें स्थिति न होने पर पुंसवन व सीमन्त संस्कार शुभ होता हैं इस संस्कार में गुरु व शुक्रास्त अविचारणीय है। गर्भ से 6, 8 मासों में मासाधिपति बली होने पर शुभ हैं।

मास - गर्भ से 6, 8 मासों में मासाधिपति बली होने पर शुभ है।

तिथि - शुक्लपक्ष की 1, 2, 3, 4, 5, 7,10, 11, 13 तथा कृष्ण पक्ष में दशमी पर्यन्त

नक्षत्र - रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, पुनर्वसु, हस्त, मूल. श्रवण, तीनों उत्तरा नक्षत्रों में जन्म नक्षत्र को त्याग कर

लग्न - 1, 3, 5, 7, 11 में

वार - रवि, मंगल, बुध, गुरु, मतान्तर से सोम, बुध, शुक्र में

स्तनपान मुहूर्त

जन्म से पांचवें दिन अथवा भद्रा, व्यतिपात, 4, 9, 14 तिथि को छोड़कर शुभ तिथि को सोम, बुध, गुरु, शुक्र वारों में पुनर्वसु, पुष्य, मृगशिरा, मघा, श्रवण, रेवती नक्षत्रों में बालक को प्रथम बार स्तनपान कराना शुभ हैं।

तिथि - 2, 3, 5, 8, 10, 11, 13, 15

वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र

नक्षत्र - पुनर्वसु, पुष्य, मृगशिरा, मघा, श्रवण, रेवती

त्याज्य - भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग और 4. 9. 14 तिथि

जलपूजन मुहूर्त

जन्म के अनन्तर प्रथम मास की समाप्ति पर बुध, गुरु, चन्द्र, वारों में 4, 9, 14, 30 तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, मूल, श्रवण नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन करना (कुंआ-पूजना) श्रेष्ठ है।

चैत्र, पौष, अधिमास, गुरु - शुकास्त का विचार एक मास के बाद ही करें।

तिथि - 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15

वार - बुध - गुरु - चन्द्र

नक्षत्र - मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा मूल, श्रवण, धनिष्ठा

त्याज्य - प्रथममासोपरान्त चैत्र, पौष, अधिमास, गुरु व शुक्रास्त, रिक्ता व अमावस्य तिथि

जातकर्म और नामकरण संस्कार मुहूर्त

जीवन में व्यवहार का सम्पूर्ण आधार नाम पर ही निर्भर होता है।

नामाखिलस्य जगतः व्यवहार हेतुः शुभावहं कर्मसु भाग्यहेतुः ।
नाम्नैव कीर्ति लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म ॥

जातकर्म अर्थात् शिशु के जन्म होने के बाद का कार्य नाल छेदन से पूर्व करना उचित है। नामकरण सूतक निवृत्ति के उपरान्त ब्राह्मण 11 वें दिन, क्षत्रिय 13वें दिन, शूद्र 21वें दिन, कुल की परम्परा के अनुसार करें। दस दिन से पूर्व कदापि शुद्धि के अभाव के करण नामकरण संस्कार न करें। सूतक समाप्ति पर 11वें या 12वें दिन नामकरण संस्कार विना विचारें कर लें। 12 दिन के बाद भद्रा. व्यतिपात, वैधृति, संक्रान्ति, रिक्ता रहित दिनों में 1, 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13 इन तिथियों में शुभवार, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, अभिजित, स्वाति, मूल श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में लग्न व नवांश के बल का विचार कर नामकरण करें।

तिथि - 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13

वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र

नक्षत्र - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, अभिजित, स्वाति, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती

त्याज्य - जन्म से 10 दिन, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति,रिक्ता संक्रान्ति रहित दिन

निष्क्रमण मुहूर्त

बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकलनें को ही निष्क्रमण कहते हैं। जन्म से बारहवें दिन बिना मुहूर्त विचार के बालक का निष्क्रमण कर, सूर्य नक्षत्र का पूजन कर सूर्य नक्षत्र व देवताओं का दर्शन करावें। यदि बारहवें दिन यह न हो पाये तब 3 मास में मंगल, शनिवार, रिक्ता, अमावस्य तिथि, विष्टि आदि अशुभ योग से भिन्न शुभ दिन में, अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्रों में प्रथम निष्क्रमण शुभ है।

तिथि - पञ्चमास में 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15

वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र

नक्षत्र - अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा

त्याज्य - मंगल, शनिवार व रिक्ता, अमावस्या तिथि, विष्टि, अशुभ योग

भूमि पर प्रथमोपवेशन मुहूर्त्त

जन्म से पञ्चम मास में रिक्ता, अमावस्य रहित तिथि, शुभवार, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य हस्त अनुराधा, ज्येष्ठा अभिजित, तीनों उत्तरा नक्षत्रों में स्थिर लग्न का विचार कर बालक की कमर में काला सूत्र बांधकर पृथ्वी और बराह का पूजन कर "पृथ्वी" पर बैठावें। इस समय बालक के सामने विविध वस्तुएं रखें आजीविका की जिस वस्तु को वह उठावे उसी से आजीविका समझनी चाहिये।

तिथि - पंचम मास में 1,2,3,5,6,7,8,10.11.12.13.15

वार- सोम, बुध, गुरु, शुक्र

नक्षत्र - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, अनुराधा, ज्येष्ठा, तीनों उत्तरा

लग्न - 2, 5, 8, 11

अन्नप्राशन मुहूर्त

बालक के नामकरण, निष्क्रमण, भूमि उपवेशन के बाद 6, 8, 10, 12वें मास में पुत्र को और 5, 7, 9वें मास में कन्या को अन्नप्राशन करावें।

विशेष - उक्त मासों में भद्रा व्यतिपात दोष रहित 1, 3, 5, 7, 10, 13, 15 तिथियों में शुभवार अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों उत्तरा, रेवती नक्षत्रों में 1, 3, 4, 5, 7, 9 स्थानों में शुभग्रह हो । जन्म लग्न या जन्मराशि से अष्टम लग्न या नवांश तथा 12,1.8 लग्न को त्यागकर पाप-शुद्ध दशम भाव इन सभी बातों का ध्यान कर अन्नप्राशन कराना श्रेष्ठ है।

मास - 6, 8, 10, 12वें मास में पुत्र का तथा 5,7,9 वें मास में कन्या का

तिथि - 1, 3, 5, 7, 10, 13, 15

वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र

नक्षत्र - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों उत्तरा, रेवती

लग्न - 1, 3, 4, 5, 6, 7, 9,10, 11

त्याज्य - जन्म लग्न या जन्मराशि से अष्टम लग्न या नवांश तथा 12,1, 8 लग्न, पाप-शुद्ध दशम भाव

कर्णवेध मुहूर्त

कर्ण वेध के महत्व के सन्दर्भ मे सुश्रुत ने कहा है कि कर्णवेध करने से अन्त्रवृद्धि, अण्डकोष वृद्धि आदि का निरोध होता है।

शंङ्खोपरि च कर्णान्ते त्यक्त्वा यत्नेन् सेवनीयम्।
व्यत्यासाद्वा शिरां विध्येद् अन्त्रवृद्धि निवृत्तये ॥

समवर्ष, चैत्र, पौष, जन्ममास, देवशयन, जन्म नक्षत्र व तिथि, क्षयतिथि व रिक्ता को छोड़कर जन्म से 12वें या 16वें दिन अथवा 6, 7, 8वें मास में या विषम वर्षों में शुभवार, अश्विनि, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण,

धनिष्ठा, रेवती नक्षत्रों में लग्न से अष्टम शुद्ध समय में वृष, तुला, धनु, मीन लग्न में तथा गुरु की लग्न में स्थिति होने पर कर्ण - वेध श्रेष्ठ होता है।

वर्षादि - विषम वर्ष, 6,7,8 वें मास, जन्म से 12वें या 16वें दिन

तिथि - 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15

वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र

नक्षत्र - अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती

लग्न - 2,7,9,12

त्याज्य - रिक्ता व क्षयतिथि, समवर्ष, चैत्र, पौष, जन्ममास, देवशयन, जन्म नक्षत्र व जन्म तिथि।

चूडाकर्म (मुण्डन) मुहूर्त्त

अपने कुल की परम्परा के अनुसार इष्टदेव या तीर्थ स्थान पर मुण्डन संस्कार और कर्ण वेध किया जा सकता है। यह चौलकर्म विषमवर्ष या उत्तरायण में 2, 3, 5,10, 11,13 तिथियों, शुभवारों में अश्विनी, मृगशिरा, पुनवर्स, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों मे करना श्रेष्ठ है। अष्टम भाव शुद्ध होना चाहिये। ज्येष्ठ, चैत्र मास मे न करें। बालक की माता को पांच मास की गर्भ स्थिति होने पर 5 वर्ष से न्यून अवस्था के शिशु का मुण्डन न करें।

सूनोर्मातरि गर्भिण्यां चूडाकर्म न कारयेत्।
पञ्चाब्दात्प्रागथेर्ध्व तु गर्भिण्यामपि कारयेत्॥

वर्षादि - विषमवर्ष या उत्तरायण

तिथि - 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13

वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र

नक्षत्र - अश्विनी, मृगशिरा, पुनवर्स, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।

त्याज्य - लग्न से अष्टम ग्रह, ज्येष्ठ, चैत्र मास, समवर्ष, दक्षिणायन ।

कन्या के नाक बिंधवाने का मुहूर्त्त

कन्या के नाक बेधन रिक्ता व अमावस्य तिथि,अशुभ योग रहित समय में शुक्लपक्ष में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार, प्रथम प्रहर, अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, तीनों उत्तरा, स्वाती, शतभिषा नक्षत्रों में शुभ होता है

पक्ष - शुक्लपक्ष

तिथि - 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15

वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र

प्रहर - प्रथम

नक्षत्र - अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, तीनों उत्तरा, स्वाती, शतभिषा।

अक्षरारम्भ मुहूर्त

बालक को विद्यारम्भ से पूर्व अक्षरारम्भ का विचार होता है। सूर्य उत्तरायण हो जन्म से 5,7वें वर्ष में 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12 तिथि, शुभवार, अश्विनी, आर्द्रा, पुनवर्स, पुष्य, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, रेवती इन नक्षत्रों में, चर लग्नों को छोड़कर, अन्य लग्नों में गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी तथा अपने देवताओं का पूजन कर अक्षरारम्भ करें।

अयन - उत्तरायण

वर्ष - 5, 7

तिथि - 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12

वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र

लग्न - 1, 3, 5, 6, 8, 9, 11, 12

नक्षत्र - अश्विनी, आर्द्रा, पुनवर्सु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, रेवती

विद्यारम्भ मुहूर्त

अक्षरारम्भ के उपरान्त विशेष ज्ञान को बढाने वाली किसी भी भाषास्थ विद्या (विशेषतः संस्कृत भाषस्थ विद्या) का प्रारम्भ फाल्गुन मास छोड़कर उत्तरायण 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12 तिथियों में, रवि, बुध, गुरु शुक्र वारों में और अश्विनी, आश्लेषा, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों पूर्वा, रेवती इन नक्षत्रों में श्रेष्ठ हैं। अंग्रेजी, फारसी, उर्दू के विद्यारम्भ के लिये रवि, मंगल, शनिवार, रिक्ता तिथि, ज्येष्ठा. आश्लेषा, मघा,तीनों पूर्वा, भरणी, कृतिका, विशाखा, आर्द्रा, उत्तराषाढ़ा, शतभिषा, इन नक्षत्रों मे शुभ है।

अयन - उत्तरायण

तिथि - 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12 तिथियों में

वार - रवि, बुध, गुरु, शुक्र

नक्षत्र - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आश्लेषा, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों पूर्वा, रेवती

विद्यारम्भ त्याज्य - फाल्गुन मास रिक्ता, अमावस्या तिथि।

उपनयन मुहूर्त

उपनयन संस्कार बालक के जन्म से या गर्भ से ब्राह्मण का 8वें, क्षत्रिय का 11वें, वैश्य का 12वें वर्ष में करना श्रेयस्कर है। इस काल के व्यतीत हो जाने पर ब्राह्मण का 16वें वर्ष, क्षत्रिय का 22वें वर्ष, वैश्य का 24वें वर्ष तक उपनयन संस्कार करा सकते हैं।-

विप्राणां व्रतबन्धनं निगदितं गर्भाज्जनेर्वाष्टमे।
वर्षे वाप्यथ पञ्चमे क्षितिभुजां षष्ठे तथैकादशे।
वैश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद् द्वादशे वत्सरे।
कालेऽथ द्विगुणे गते निगदिते गौणं तदाहुर्बुधाः ॥

बालक (बटुक) का गुरुबल तथा चन्द्रबल विचार करें। देवशयन से पूर्व तक उत्तरायण सूर्य मे, रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवारों में शुक्लपक्ष की 2, 3, 5, 10, 11, 12 तथा कृष्णपक्ष की 2, 3, 5 तिथियों में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती इन नक्षत्रों के क्रूर तथा वेधरहित होने पर, पूर्वाह्न में, अभिजित मुहूर्त में, यज्ञोपवीत संस्कार करावें।

चैत्र व मीन के सूर्य में, वृष या कर्क के पूर्ण चन्द्रमा के लग्न में रहने पर विशेष श्रेष्ठतम होता है। सामवेदियों को मंगलवार भी श्रेष्ठ होता है। तथा भौम बल विचार भी आवश्यक होता है। उपनयन संस्कार में दक्षिणायन सूर्य, ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीय, आषाढ़ शुक्ल 10, पौष शुक्ल 11, माघ शुक्ल 12, संक्रांति दिन, रोगबाण रवि के 8, 12, 26 गतांश, लग्नेश और चन्द्र, शुक्र, गुरु की 6,8,12 में स्थिति, 1, 5, 8 वें भावों में पापग्रह अशुभ हैं। अतः इन सब का परित्याग कर उपनयन संस्कार करें।

वर्ष - ब्राह्मण (8 से 16), क्षत्रिय (11 से 22), वैश्य-(12 से 24)

अयन - देवशयन से पूर्व तक उत्तरायण में

वार - रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्र

तिथि - शुक्लपक्ष की 2, 3, 5, 10, 11,12 तथा कृष्णपक्ष की 2, 3, 5

नक्षत्र - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा

गुरु - 5, 11, 9, 2, 7 राशि में श्रेष्ठ, 10, 6, 3, 1 राशि में पूज्य, 4, 8, 12 राशि में निन्दित

अन्य ग्राह्य - पूर्वाह्न, अभिजित मुहूर्त (सामवेदियों का भौमबल व मंगलवार भी)

त्याज्य - गुरु शुक्र का बाल वृद्धास्त, दक्षिणायन, संक्रान्ति दिवस रोगबाण तथा लग्नेश, चन्द्र, शुक्र, गुरु की 6, 8,12 में स्थिति, 1, 5, 8 वें भावों में पापग्रह अशुभ।

विवाह संस्कार मुहूर्त्त

भारतीय मनीषियों नें मानव जीवन को चार आश्रमों में विभाजित किया है - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास इन चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम की मुख्याधारा विवाह है। यह संस्कार ही वस्तुतः धर्मार्थकाममोक्षस्वरूपी चतुर्वर्ग फलप्राप्ति का आधार है। इस संस्कार के उपरान्त ही मनुष्य सन्तानोत्पत्ति के साथ देव-ऋषि एवं पितृ ऋणों से मुक्ति प्राप्त करता है। अतः विवाह संस्कार के समय का निर्णय हमारे ऋषिमुनियों ने बड़ी सूक्ष्मता से किया है। धर्मशास्त्रों में अष्टविध विवाह में विशेषरूप से आज कल गन्धर्व विवाह पद्धति (जिसको प्रेम विवाह कहा जाता है) को अपनाया जा रहा है।

"ब्राह्म विवाह" विधि में मुख्य रूप से वर कन्या की गोत्रादि भिन्नता, मेलापक (नक्षत्र व मंगली आदि का मिलान), जाति का विचार किया जाता है।

स्त्री को मुख्य रूप से धर्म-अर्थ काम की प्रदात्री मानकर तथा सन्तान सिद्धि का मुख्य साधन समझ कर विवाह के समय का विशेष विचार किया जाता है।

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशील युक्ता शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्याः।
तस्माद्विवाहसमयः परिचिन्त्यते हि तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः ॥

इस विवाह संस्कार को ब्रह्मचर्य के पश्चात् पुरुष 25 वर्षोपरान्त विषम वर्षों में कन्या 16 वर्षों के अनन्तर समवर्षों में शुभ समय का विचार कर करें। विवाह से पूर्व उसके अंगभूत वरवरण व कन्यवरण का भी विचार कर लें। इन सब में नाम राशि तथा जन्मराशि में से जन्मराशि का ही ग्रहण करें, क्योंकि-

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे ।
जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥
कुर्यात् षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते।
सर्वाण्यन्यपि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥

यदि जन्म की राशि अज्ञात हो तो नाम की राशि से मेलापकादि कार्य किये जा - सकते है। परन्तु महत्व जन्मराशि का ही है।

जन्मलग्नमिदमङ्गमङ्गिनां मेनिरे मन इतीन्दुमन्दिरम्।
सौहृदं हि मनसोर्न देहयोः मेलकस्तदयमिन्दुगेहयोः ॥

विवाह वृन्दावनम्

किसी का मत है कि यदि प्रसिद्ध नामराशि से ही मेलापक करना हो तो एक बात का विशेष ध्यान रहे कि वर का प्रसिद्ध नाम, कन्या का जन्म नाम व कन्या का प्रसिद्ध नाम वर का जन्मनाम ऐसा विपरीत ग्रहण न करें। दोनों का जन्म नाम ही लें अथवा दोनों का प्रसिद्ध नाम ही लें। क्योंकि-

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ॥

वर-कन्या की जन्मपत्रिका में मेलापक विचार वर-कन्या की कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट, तथा नाड़ी इन आठ बातों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। वर्ण का 1, वश्य के 2, तारा के 3, योनि के 4, ग्रहमैत्री के 5, गणमैत्री के 6, भकूट के 7, तथा नाड़ी के 8 गुण उत्तरोत्तर ग्रहण किये जाते हैं। इस प्रकार इन सभी गुणों का योग 36 होता है। यथा-

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रह मैत्रकम्।
गणमैत्रं भकूटञ्च नाड़ी चेते गुणाधिकाः ॥

गुण संख्या ग्रहण करने का विचार वर कन्या की कुण्डली का विचार करने पर 16 गुणों से कम गुण मिलने पर निन्द्य, 20 से कम मिलने पर मध्यम तथा 30 गुण से अधिक मिलने पर उत्तम कहा गया है।

गुणाः षोडशभिः न्यूना निन्द्या मध्यस्तु विंशतिः।
श्रेष्ठास्त्रिंशद् गुणाः प्रोक्ताः परतस्तूत्तमोत्तमाः ॥

दुष्ट भकूट, गणकूट का परिहार - यदि मिलान करने पर दुष्ट भकूट प्राप्त हो और वर कन्या के राशि के स्वामी एक हो अथवा राशि के स्वामियों में परस्पर मित्रता हो तथा नाड़ी नक्षत्र शुद्ध हों तो दुष्टभकूट का दोष नहीं होता तथा षडाष्टक से भिन्न राशियों में परस्पर राशियों के स्वामियों की शत्रुता में भी यदि राशि के नवांश के स्वामी बली और आपस मे मित्र हों और नाड़ी नक्षत्र शुद्ध हों तो दुष्टभकूट के दोषों का नाश करता है। तथा कन्या की तारा व नाड़ी नक्षत्र की परस्पर शुद्धि होने पर पुरुष राशि से स्त्री की राशि वश्य न होने पर भी दुष्ट-भकूट का परिहार हो जाता है।

प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्येशुभोऽ-
थोराशीश्वरसौहृदऽपि गदितो नाड्क्षशुद्धिर्यदि।
अन्यक्षेऽशपयोर्बलित्वसखिते नाड्क्षशुद्धौ तथा
ताराशुद्धिवशेन राशिवशताभावे निरुक्तो बुधैः ॥

इसी प्रकार वर - कन्या के राशि के स्वामियों तथा नवांश के स्वामियों की परस्पर मित्रता होने पर गणदोष का नाश करती है, तथा शुभ भकूट ग्रह शत्रुता के दोष को नष्ट कर देता है।

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथ-द्वन्ददस्याऽपि स्याद् गणानां न दोषः।
खेटारित्वं नाशयेत् सद् भकूटं खेटप्रीतिश्चाऽपिदुष्टं भकूटम् ॥

नाड़ी दोष तथा गणदोष का परिहार -

वर-कन्या की राशि एक हो तथा नक्षत्र भिन्न हो अथवा नक्षत्र एक हो और राशि भिन्न हो तो नाड़ि दोष तथा गण दोष का नाश होता है। एक नक्षत्र होने पर भी चरण के भेद से उक्त दोष नही होता।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमश्क्षं द्वयोः स्यान्। नक्षत्रैक्येराशियुग्मं तथैव ।
नाड़ी दोषो नो गणानां च दोषो। नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥
एकराशौ पृथग् धिष्ण्ये पुंतारा प्रथमा भवेत्।
अतीवशोभना प्रोक्ता स्वीतारा चेत्वशोभना ॥

वर-वरण मुहूर्त

विवाह संस्कार से पूर्व शुभलग्न, शुभवार, शुभतिथि, शुभ नवांश में कुयोग रहित दिन में कृत्तिया, रोहिणी, पूर्वा 3, उत्तरा 3 इन नक्षत्रों में चन्द्र बल देखकर ब्राह्मण वा कन्या का सहोदर (भाई) वस्त्र, यज्ञोपवीत, द्रव्य, मिष्ठान्न, श्रीफल, ऋतुफल आदि सहित वर के गृह पर आकर वर को वरण करे अर्थात् तिलक लगावें।

कन्या-वरण मुहूर्त

वर की माता या स्वयं वर अथवा वर के कुलाचार के अनुसार अन्य कोई-अशुभ योग रहित शुभ दिन में कृत्तिका, पूर्वा 3, स्वाती, अनुराधा, श्रवण. धनिष्ठा तथा विवाहोक्त नक्षत्रों, (रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, मृगशिरा, मघा, हस्त) में शुभ समय (लग्न) में वस्त्र भूषणादि सहित फलपुष्पादि से कन्या को वरण करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

सूर्य, गुरु एवं चन्द्र शोधन का विचार त्रिबल शुद्धि कहलाता है। त्रिबल शुद्धि के अन्तर्गत वर की राशि से सूर्य व चन्द्र का विचार तथा कन्या की राशि से गुरु व चन्द्र का विचार करना चाहिये। मुहूर्तचिन्तामणि के अनुसार कन्या के जन्म से 6 वर्ष की आयु के बाद रजोदर्शन से पूर्व गुरु की शुद्धि तथा वर की राशि से सूर्य की शुद्धि से विषम वर्षों में एवं दोनों की राशि से चन्द्र शुद्धि अनिवार्य है।

स्त्रीणां गुरुबलं श्रेष्ठं पुरुषाणां रवेर्बलम्।
तयोश्चन्द्रबलं श्रेष्ठमिति गर्गेण निश्चितम् ॥
गोचरे वा विलग्ने वा ये ग्रहारिष्टसूचकाः।
पूजयेत्तान प्रयत्नेन पूजिता स्युः शुभप्रदाः ॥

त्रिबल शुद्धि चक्र -

फल	सूर्य (वर)	गुरु (कन्या)	चन्द्र (वर - कन्या)
श्रेष्ठ	3, 6, 10, 11	2, 5, 7, 9, 11	1, 2, 3, 5, 6, 7, 9, 10, 11
पूज्य	1, 2, 5, 7, 9	1, 3, 6, 10	0
नेष्ट	4, 8, 12	4, 8, 12	4, 8, 12

ज्येष्ठ विचार

ज्येष्ठ विचार के अन्तर्गत त्रि ज्येष्ठ (ज्येष्ठ वर, ज्येष्ठ कन्या व ज्येष्ठ मास) नेष्ट और द्वि ज्येष्ठ (वर, कन्या व मास में से कोइ भी दो) मध्यम होता है। मुहूर्तचिन्तामणि के अनुसार-

ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं सम्प्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदापि।
केचित्सूर्य वह्निगं प्रोज्झ्य चाऽऽहुर्नैवान्योऽन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥

वर-कन्या तेलबान-दिन संख्या -

जन्म राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
तैल संख्या	7	10	5	10	5	7	7	5	5	5	5	7

विवाह लग्न शोधन

विवाह लग्न से 12वें शनि, 10वें भौम, 3रे शुक्र, लग्न में चन्द्र व पापग्रह (सू. भौ. श. रा. के.) शुभ नहीं होते हैं। 6वें स्थान पर लग्नेश, शुक्र और चन्द्र, 8वें स्थान में चन्द्र, भौम, लग्नेश व सभी शुभग्रह तथा सातवें स्थान पर सभी ग्रह त्याज्य हैं।

व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः।
लग्नेट् कविर्ग्लौश्च रिपौ मृतौ ग्लौर्लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे ॥

गोधूलि विचार

गोधूलि समय में यदि 6वें, 8वें व लग्न में चन्द्र हो तो कन्या के लिये अशुभ कारक तथा लग्न, 7वें एवं 8वें भाव में भौम हो तो वर के लिये अनिष्ट कारक होगा। गोधूलि वेला में यदि चन्द्र 2रे, 3रे और 11वें भाव में हो तो उपरोक्त दोनों दोषों का शमन कर शुभफल प्रदान करता है।

अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के लग्नान्मृत्यौ रिपुभवने लग्ने चेन्दौ।
कन्यानाशस्तनुमदमृत्युस्थे भौमे वोढुर्लाभे धनसहजे चन्द्रे सौख्यम् ॥

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
त्याज्य	पाप चन्द्र	0	शुक्र	राहू	0	चन्द्र शुक्र लग्नेश	सभी	च.भौम, शुभग्रह, लग्नेश	0	भौम	0	शनि
गोधूलि त्याज्य	चन्द्र भौम	-	-	-	-	चन्द्र	भौम	चन्द्र भौम	-	-	-	-

वधू-प्रवेश मुहूर्त

विवाह संस्कार हो जाने के बाद प्रथम बार वधू का पतिगृह में प्रवेश वधू-प्रवेश कहलाता है। विवाह से 16 दिन के अन्दर बिना तिथ्यादि का विचार किये भी स्थिर लग्न मे वधू प्रवेश शुभ है। एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त स्थिर लग्न में तीसरे पाञ्चवें वर्ष में भी शुभ हैं। इसके उपरान्त शुभ मुहूर्त (तिथ्यादि का) विचार कभी भी हो सकता है। वधू प्रवेश में रेवती, अश्विनी, राहिणी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्ता, स्वाति, भरणी, मघा, तीनों उत्तरा, पुष्य, अनुराधा इन नक्षत्रों में शुभ वारों में 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15 तिथियों में स्थिर लग्नों में चतुर्थाष्टम भाव शुद्ध होने पर शुभ होता है। व्यतिपात, क्षयतिथि, ग्रहण, वैधृति, अमावस्या, संक्रान्ति, रिक्ता तिथियों में वधू प्रवेश वर्जित है।

वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

दिन - विवाह से 16 दिन के अन्दर अथवा 7,5,9 वें दिनों में।

मास एवं वर्ष - विषम मास, विषम वर्ष।

वार - चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र।

तिथि - 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15

नक्षत्र - रेवती, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्ता, स्वाति, भरणी, मघा, तीनों उत्तरा, पुष्य, अनुराधा।

लग्न - स्थिर लग्नों में चतुर्थ एवं अष्टम भाव शुद्ध हो।

त्याज्य - व्यतिपात, क्षयतिथि, ग्रहण, वैधृति, संक्रान्ति, अमावस्या, रिक्ता तिथि।

द्विरागमन-मुहूर्त

वधुप्रवेशोपरन्त द्वितीय बार पिता के घर से पतिगृह में प्रवेश द्विरागमन कहलाता है। यह 1,3,5 इन विषम वर्षों में 1, 8, 11 राशि के सूर्य में सूर्य गुरु की शुद्धि देखकर शुभ वार 1, 2, 3, 6, 7, 12 लग्नों में हस्त, अश्विनी, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मूल, चित्ता, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ माना गया है।

वर्ष - विषम (5 वर्ष तक)

मास - 1, 8, 11 राशि के सूर्य और सूर्य गुरु की शुद्धि

तिथि - 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 15

वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र

लग्न - 1, 2, 3, 6, 7, 12

नक्षत्र - हस्त, अश्विनी, रेवती, तीनों उत्तरा रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, पुनर्वसु, पुष्य. श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मूल, चित्ता, अनुराधा

त्याज्य - सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र। (रेवती से मृगशिरा तक चन्द्र के रहने पर शुक्र शुभ हो जाता है। (सामान्य अवस्था में त्याज्य)

यात्रा मुहूर्त्त

शुभतिथि -

शुक्लपक्ष - 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15

कृष्णपक्ष - 1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13

शुभवार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र श्रेष्ठ

शुभनक्षत्र - अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा,रेवती

यात्रा काल में सूर्य विचार -

सूर्य स्थिति	यात्रा फल
मेष, सिंह, धनु	प्रशस्त
वृष, मिथुन, तुला, मकर कुम्भ मीन	मध्यम
कर्क, वृश्चिक, मीन	अधम

यात्रा काल में चन्द्रविचार -

दिशा	चन्द्र की राशि में स्थिति
पूर्व	मेष, सिंह, धनु
दक्षिण	वृष, कन्या, मकर
पश्चिम	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	कर्क, वृश्चिक, मीन

चन्द्र स्थिति वश फल -

चन्द्र स्थिति	यात्रा फल
सन्मुख	अर्थलाभ
दक्षिण भाग	सुख-सम्पत्ति
पृष्ठ भाग	प्राण हानि
वाम भाग	धन नाश

यात्रा मे दिशाशूल विचार -

दिशा	त्याज्य वार
पूर्व	शनि, चन्द्र
दक्षिण	गुरु
पश्चिम	शुक्र, रवि
उत्तर	बुध, मंगल

दिशाशूल परिहार वाक्य -

न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवकराणाम्।
दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥
सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा गुड़मंगारकेवारे बुधवारे तिलान्यपि।
गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि माषान्भुक्त्वा शनेवरि गच्छञ्छूले न दोषभाक्॥

गृह-निर्माण मुहूर्त

भूमि परीक्षण -

इष्ट भूमि पर जहां मकान का निर्माण होना है एक हाथ गहरा एक हाथ लम्बा एक हाथ चौड़ा गढ्ढा बनावें। उसको पानी से पूर्ण कर दें। प्रातः वेला में उसे देखें। यदि जल युक्त पूर्ण हो तो शुभ निर्जल मध्यम तथा निर्जल छिन्न भिन्न हो तो अशुभ भूमि।

शुभ मास - वैशाख, श्रावण, मर्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन, एवं मेष, वृष कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ सूर्य रहते गृहाराम्भ शुभ तथा भाद्रपद-कार्तिक मास भी समान्यतया मान्य है।

शुभतिथि - 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 15 तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा।

शुभवार - चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभनक्षत्र - हस्त, रेवती, तीनों उत्तरा रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य

शुभ लग्न -

मेष मिथुन सिंह कन्या वृश्चिक कुम्भ मीन तथा लग्न बल हेतु केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह तथा 3, 6, 11 में पाप ग्रह एवं अष्टम स्थान शुद्ध होने पर नवीन भवन निर्माण शुभ रहता है।

भूशयन गणना क्रम -

सूर्य जिस नक्षत्र में रहें उससे 5, 7, 9, 12, 19, 26 इन दिन नक्षत्रों में पृथ्वी शयन शील रहती है। इन नक्षत्रों में भी क्रमशः 4, 8, 5, 3. 6. 7 घटी कालांश मात्र में भूशयन शेष घटियों में सुप्त नही इनमें कूप, तडाग, बीज वपन, हल चलाना, खननेक्ट है।

भूशयने मतान्तरम् -

इष्ट सूर्य संक्रान्ति से 5, 7, 11, 9, 15, 20, 22, 23, 28 इन दिनों में धरती शयन दोष कतिपय विद्वान 5, 7, 9, 15, 21, 24 दिन मात्र में ही भूशयन मानते है।

गृहारम्भे वृषभ वत्स गणना -

सूर्य नक्षत्र से इष्ट दिन नक्षत्र गणना 7 तक अशुभ, तदग्रे 11 तक शुभ तदग्रे 10 गणना तक अशुभ, अभिजित सहित गणना करना चाहिए।

भूमि क्रय विक्रय मुहूर्त्त -

दानो पक्ष की 5, 6, 10, 11, 15 तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा। गुरु तथा शुक्रवार एवं आश्लेषा, मघा, रेवती, मृगशिरा, पुनर्वसु, मूल, अनुराधा, पूर्वा 3, विशाखा आदि नक्षत्रो में भूमि खरीदना व बेचना शुभ फल देता है।

अग्निवास विशेषता -

नित्य नैमित्तिक कार्य, जन्म समय, दुर्गा पूजा, यात्रा, विवाह, ग्रहणरोग, पीड़ा तथा दुर्भिक्ष शान्ति यज्ञ विवाह याज्ञोपवीत आदि में अग्निवास का विचार नहीं करें।

विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चूड़ोपनीतिग्रहणे यंक्तगादौः।
दुर्गा विधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिंतनीयम्॥

नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

मास - वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन आदि चान्द्र मास विशेष शुभ तथा कार्तिक मार्गशीर्ष मास सामान्यतया मान्य हैं

तिथि - चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी रहित सभी तिथि मान्य

शुभ वार - चन्द्र बुध, गुरु, शुक्र, शनि

शुभ नक्षत्र - रेवती, तीनों उत्तरा रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा विशेष शुभ एवं जीर्ण गृह में पुष्य स्वाति धनिष्ठा शतभिषा भी मान्य है।

शुभ लग्न - वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ लग्नों में सामान्यतः 3, 6, 9, 12 लग्नों में भी मान्यता। लग्न से 1, 2, 3, 4, 5, 7, 9, 10 इन स्थानों शुभ ग्रह तथा 3, 6, 11 भावों में पाप ग्रह रहे तथा चन्द्रमा 1, 4, 6, 8, 12 स्थानों में नहीं होवें तथा चतुर्थ अष्टम भाव शुद्ध हो। जन्म राशि से अष्टम राशि का लग्न न हो तथा कलश चक्र की शुद्धि देखकर सन्मुख में गाय, कन्या, जलपूर्ण कलश पुज्पमाला, श्रीफल। सहित वेदध्वनि मालिक गायन वाद्य के साथ नवगृह प्रवेश शुभ है।

कलशचक्र गणना - अभिजित नक्षत्र रहित करे सूर्य नक्षत्र से इष्ट दिन नक्षत्र गणना 5 तक अशुभ, अग्रिम 8 तक शुभ, तदग्रे 8 तक अशुभ एवं आगे 6 तक शुभ शुद्धि गणना समझे।

खात विचार

देवालय निर्माण में सूर्य राशि के अनुसार राहु मुख विचार

सूर्य राशि	मेष वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु	मकर कुम्भ मीन
राहु मुख	ईशान कोण	वायव्य कोण	नैऋत्य कोण	आग्नेय कोण
खात दिशा	आग्नेय कोण	ईशान कोण	वायव्य कोण	नैऋत्य कोण

गृह निर्माण में सूर्य राशि के अनुसार राहु मुख विचार

सूर्य राशि	सिंह कन्या तुला	वृश्चिक धनु मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क
राहु मुख	ईशान कोण	वायव्य कोण	नैऋत्य कोण	आग्नेय कोण
खात दिशा	अग्नेय कोण	ईशान कोण	वायव्य कोण	नैऋत्य कोण

जलाशय निर्माण में सूर्य राशि के अनुसार राहु मुख विचार				
सूर्य राशि	मकर कुम्भ मीन	मेष वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला,वृश्चिक धनु
राहु मुख	ईशान कोण	वायव्य कोण	नैऋत्य कोण	आग्नेय कोण
खात दिशा	अग्नेय कोण	ईशान कोण	वायव्य कोण	नैऋत्य कोण

काकिणी विचाार

स्ववर्ग द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्
अष्टभिः हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

गांव के नाम वर्ग संख्या एवं गृहस्वामी के नाम वर्ग को संख्या अलग-अलग दुगुना करके परस्पर एक दूसरे की वर्ग संख्या में जोड़कर आठ से भाग देनेपर शेष में जो भी अधिक हो उसे हानि होगी। तात्पर्य यह है कि गृहस्वामी की संख्या यदि स्थान के नाम की संख्या से अधिक है तो वहां निवास करने से उस व्यक्ति विशेष को हानि होगी। निम्नलिखित आधार पर वर्गों की संख्या एवं वर्णों को तथा सारणी द्वारा निवास के लिए शुभाशुभ फल को जानना चाहिए -

अवर्ग = 1- सभी स्वर	कवर्ग = 2 - क, ख, ग, घ, ङ
चवर्ग = 3 - च, छ, ज, झ, ञ	टवर्ग = 4 - ट, ठ, ड, ढ, ण
तवर्ग = 5 - त, थ, द, ध, न	पवर्ग = 6 - प, फ, ब, प, म
यवर्ग = 7 - य, र, ल, व	शवर्ग = 8 - श, ष, स, ह

यद्वं द्वयङ्कसुतेशदिङ्गितमसौ ग्रामः शुभो नामभात्
स्वं वर्गं द्विगुणं विधाय परवर्गाढयं गजैः शेषितम् ।
काकिण्यस्त्वनयोश्च तद् विवरतो यस्याधिकाः सोऽर्थदो-
ऽथ द्वारं द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनां हितं पूर्वतः ॥

स्थान	अवर्ग	अवर्ग	अवर्ग	अवर्ग	अवर्ग	अवर्ग	अवर्ग	अवर्ग
गृहस्वामी	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
फल	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ
स्थान	कवर्ग	कवर्ग	कवर्ग	कवर्ग	कवर्ग	कवर्ग	कवर्ग	कवर्ग
गृहस्वामी	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
फल	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ
स्थान	चवर्ग	चवर्ग	चवर्ग	चवर्ग	चवर्ग	चवर्ग	चवर्ग	चवर्ग
गृहस्वामी	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
फल	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
स्थान	टवर्ग	टवर्ग	टवर्ग	टवर्ग	टवर्ग	टवर्ग	टवर्ग	टवर्ग
गृहस्वामी	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
फल	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
स्थान	तवर्ग	तवर्ग	तवर्ग	तवर्ग	तवर्ग	तवर्ग	तवर्ग	तवर्ग
गृहस्वामी	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ
स्थान	पवर्ग	पवर्ग	पवर्ग	पवर्ग	पवर्ग	पवर्ग	पवर्ग	पवर्ग
गृहस्वामी	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ
स्थान	यवर्ग	यवर्ग	यवर्ग	यवर्ग	यवर्ग	यवर्ग	यवर्ग	यवर्ग
गृहस्वामी	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
फल	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
स्थान	शवर्ग	शवर्ग	शवर्ग	शवर्ग	शवर्ग	शवर्ग	शवर्ग	शवर्ग
गृहस्वामी	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
फल	अशुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	शुभ

तिथि एवं वार के योग से बनने वाले विभिन्न शुभाशुभ योग

योग \ वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि	-	-	3,8,13	2,7,12	5,10,15	1,6,11	4,9,14
मृत्यु योग	1,6,11	2,7,12	1,6,11	3,8,13	4,9,14	2,7,12	5,10,15
विष योग	4	6	7	2	8	6	7
हुताशनयोग	12	6	7	8	9	10	11
क्रकच योग	12	11	10	9	8	7	6

नक्षत्र एवं वार के योग से बनने वाले विभिन्न शुभाशुभ योग

योगवार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
दग्धयोग	भरणी	चित्रा	उत्तराषाढ़ा	धनिष्ठा	उत्तराफाल्गुनी	ज्येष्ठा	रेवती
यमघंटयोग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
सर्वार्थसिद्धि योग	अश्वि.पुष्य,हस्त, मूल,उत्तरा-3	श्रवण,रोहिणी,मृग, पुष्य,अनुराधा	अश्वि,उ.भा., कृत्ति.,आश्ले.	रोहिणी,अनु,हस्त, कृत्ति.मृग.	रेवती,अनु,अश्वि. पुन.,पुष्य	रेवती,अनु,अश्वि, पुन,श्रवण	श्रवण,रोहिणी,स्वाती

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति तिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ॥ मु.चि.1/4
नन्दा भद्रा नन्दिकाख्या जया च रिक्ता भद्रा चैव पूर्णा मृतार्कात् ।
याम्यं त्वाष्ट्रं वेश्वदेवं धनिष्ठार्यम्णं ज्येष्ठान्त्यं रवेर्दग्धभं स्यात् ॥ मु.चि.1/4

षष्ठ्याद्यादितिथयो मन्दाद्विलोमं प्रतिपद् बुधे।
सप्तम्यर्केऽधमाः षष्ठचाद्यामाश्च रदधावने ॥
मु.चि.1/4

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् ॥ मु.चि.1/28
जोवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोभम् ।
शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वैः ॥ मु.चि.1/29

गण्डमूल नक्षत्र-घटी बोधक चक्र

अश्विनी, मघा, मूल की आरम्भिक 3, 4, 9 घटी एवं रेवती,
आश्लेषा, ज्येष्ठा की अंतिम 12, 11, 6 घटी गण्डमूल संज्ञक होती हैं।

नक्षत्र	अश्विनी	मघा	मूल	रेवती	आश्लेषा	ज्येष्ठा
घटी	3	4	9	12	11	6
स्थिति	आरम्भिक	आरम्भिक	आरम्भिक	अंतिम	अंतिम	अंतिम

षोडश कक्ष व्यवस्था

ईशान			पूर्व			आग्नेय
	मन्दिर	भण्डारकक्ष	स्नानगृह	दधिमन्थन	रसोईघर	
	औषधिकक्ष				घी/तेल कक्ष	
उत्तर	कोषागार		आंगन		शयनकक्ष	दक्षिण
	रतिकक्ष				शौचालय	
	धान्य/पशुशाला	रोदनकक्ष	भोजनगृह	अध्ययनकक्ष	शस्त्र/भण्डार	
वायव्य			पश्चिम			नैऋत्य

विंशोत्तरी महादशा एवं अन्तर्दशा बोधक चक्र

सूर्य 6 वर्ष कृ., उ.फा., उ. षा.				चन्द्र 10 वर्ष रोहि. हस्त, श्रव.				मंगल 7 वर्ष मृग, चित्रा, धनि.				राहु 18 वर्ष आ., स्वा., शत.				गुरु 16 वर्ष पुन., विशा., पू.भा.			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	0	3	18	चं.	0	10	0	मं.	0	4	27	रा.	2	8	12	बृ.	2	1	18
चं.	0	6	0	भौ.	0	7	0	रा.	1	0	18	बृ.	2	4	24	श.	2	6	12
मं.	0	4	6	रा.	1	6	0	बृ.	0	11	6	श.	2	10	6	बु.	2	3	6
रा.	0	10	24	बृ.	1	4	0	श.	1	1	9	बु.	2	6	18	के.	0	11	6
बृ.	0	9	18	श.	1	7	0	बु.	0	11	27	के.	1	0	18	शु.	2	8	0
श.	0	11	12	बु.	1	5	0	के.	0	4	27	शु.	3	0	0	सू.	0	9	18
बु.	0	10	6	के.	0	7	0	शु.	1	2	0	सू.	0	10	24	चं.	1	4	0
के.	0	4	6	शु.	1	8	0	सू.	0	4	6	चं.	1	6	0	में.	0	11	6
शु.	1	0	0	सू.	0	6	0	चं.	0	7	0	मं.	1	0	18	रा.	2	4	24

शनि 19 वर्ष पुष्य, अनु., उ.भा.				बुध 17 वर्ष आश्ले., ज्ये.,रेव.				केतु 7 वर्ष मघा, मूल, अश्वि.				शुक्र 20 वर्ष पू.फा., पू.षा., भर.			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
श.	3	0	3	बु.	2	4	27	के.	0	4	27	शु.	3	4	00
बु.	2	8	9	के.	0	11	27	शु.	1	2	0	सू.	1	0	00
के.	1	1	9	शु.	2	10	0	सू.	0	4	6	चं.	1	8	0
शु.	3	2	0	सू.	0	10	6	चं.	0	7	0	मं.	1	2	0
सू.	0	11	12	चं.	1	5	0	म.	0	4	27	रा.	3	0	0
चं.	1	7	0	मं.	0	11	27	रा.	1	0	18	बृ.	2	8	0
मं.	1	1	9	रा.	2	6	18	बृ.	0	11	6	श.	3	2	0
रा.	2	10	6	बृ.	2	3	6	श.	1	1	9	बु.	2	10	0
बृ.	2	6	12	श.	2	8	9	बु.	0	11	27	के.	1	2	0

योगिनी दशा एवं अन्तर्दशा बोधक चक्र

मंगला 1 वर्ष श्रव., आर्द्रा चित्रा			पिंगला 2 वर्ष धनि.,पुन. स्वाती			धान्या 3 वर्ष शत., पुष्य विशाखा			भ्रामरी 4 वर्ष अश्वि., आश्ले. अनु., पू.भा			भद्रिका 5 वर्ष भर., मघा ज्ये., उ.भा.			उल्का 6 वर्ष कृत्ति., पू.फा. मूल, रेवती			सिद्धा 7 वर्ष रो., उ.फा., पू. षा.			संकटा 8 वर्ष मृग., हस्त उ.षा		
यो.	मा.	दि.	यो.	मा.	दि.	यो.	मा.	दि.	यो.	मा.	दि.	यो.	मा.	दि.	यो.	मा.	दि.	यो.	मा.	दि.	यो.	मा.	दि.
मं.	0	10	पिं.	1	10	धा.	3	0	भ्रा.	5	10	भ.	8	10	उ.	12	0	सि.	16	10	सं.	21	10
पिं.	0	20	धा.	2	0	भ्रा.	4	0	भ.	6	20	उ.	10	0	सि.	14	0	सं.	18	20	मं.	2	20
धा.	1	0	भ्रा.	2	20	भ.	5	0	उ.	8	0	सि.	11	20	सं.	16	0	मं.	2	10	पि.	5	10
भ्रा.	1	10	भ.	3	10	उ.	6	0	सि.	9	10	सं.	13	10	मं.	2	0	पिं.	4	20	धा.	8	0
भ.	1	20	उ.	4	0	सि.	7	0	सं.	10	20	मं.	1	20	पिं.	4	0	धा.	7	0	भ्रा.	10	20
उ.	2	0	सि.	4	20	सं.	8	0	में.	1	10	पिं.	3	10	धा.	6	0	भ्रा.	9	10	भ.	13	10
सि.	2	10	सं.	5	10	मं.	1	0	पिं.	2	20	धा.	5	0	भ्रा.	8	0	भ.	11	20	उ.	16	0
सं.	2	20	मं.	0	20	पिं.	2	0	धा.	4	0	भ्रा.	6	20	भ.	10	0	उ.	14	0	सि.	18	20

नैसर्गिकमैत्री एवं उच्च नीच चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चं. मं. गु	सू. बु.	सू. चं. गु .	सू.शु.	सू.,चं. मं.	बु.,श.	बु.शु.
सम	बु.	मं. गु. शु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.
शत्रु	शु. श.	.	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.
उच्च	मे.10	वृष.03	म.28	कं.15	क.05	मी.27	तु.20
नीच	तु.10	वृ.03	क.28	मी.15	म.05	कं.27	मे.20

पुरुष कुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रह फल

भाव / ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	एकादश	द्वादश
सूर्य	अंगपीड़ा	धनहानि	आरोग्य	दुःख	सन्तानहानि	शत्रुक्षय	दुष्टपत्नी	अल्पायु	दुष्टबुद्धि	पराक्रमी	धनवान	दुष्टस्वभाव
चन्द्र	कान्तियुक्त	सम्पत्तियुक्त	कीर्तिवान्	सुखी	धन,पुत्रयुक्त	अल्पायु	सुशीलापत्नी	योगी	धर्मात्मा	तेजवान	धनवान	कामी
मंगल	रक्तविकार	ऋणी	पराक्रमी	दुःख	पुत्रहीन	शत्रुक्षय	स्त्रीक्षय	शरीरकष्ट	पापबुद्धि	तेजवान	धनवान	दुष्टपत्नी
बुध	सुखी	धन,गुणयुक्त	शत्रुक्षय	सुखी	अल्पपुत्र	रोगयुक्त	धर्मज्ञ	गुणवान	सुखी	कीर्तिमान	धनवान	दरिद्र
बृहस्पति	विद्वान	धनागम	पापरत	सुखी	प्रतापवान	कामी	सुशीलापत्नी	नीचस्वभाव	धर्मरत	सम्पत्तियुक्त	लाभ	दुष्ठ
शुक्र	सुखी	धनयुक्त	पापरत	सुखी	बुद्धिमान	रोगयुक्त	कामी	नीचस्वभाव	तपस्वी	सम्पत्तियुक्त	सुमतिः	रोगी
शनि	दुःखी	धनहानी	पराक्रमी	दुःखी	पुत्रहीन	शत्रुक्षय	दुष्टपत्नी	नेत्रविकार	दुष्टबुद्धि	पराक्रमी	धनवान	दुःखी
राहु	रोगी	निर्धन	पराक्रमी	मातृकष्ट	दुर्बुद्धि	बलयुक्त	पत्नीकष्ट	रोगी	दीन	मानसम्मान	सुविख्यात	पतित
केतु	कामी	दुष्ट	पराक्रमी	दुःखी	मन्दबुद्धि	बलवान	पत्नीहानी	क्लेश	पापी	पिताकीहानी	धनवान	दुर्जन

स्त्री कुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रह फल

भाव / ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	एकादश	द्वादश
सूर्य	क्रोधी	दरिद्रा	सुपुत्रयुक्ता	पीड़ा	विपुत्रा	सुखिनी	दुःखकष्ट	वैधव्य	धर्मज्ञा	सुकर्मयुक्ता	लाभयुक्ता	रोगिणी
चन्द्र	अल्पायु	बहुधनयुक्ता	सुखिनी	सुभगा	सुपुत्रयुक्ता	रोगिणी	पतिप्रिया	रोगिणी	सुखिनी	धर्मज्ञा	गुणवती	हीनांगी
मंगल	वैधव्य	वन्ध्या	विसहजा	दुःखकष्ट	विपुत्रा	आरोग्या	वैधव्य	नेत्ररोग	दुःखी	कुपुत्रा	लाभयुक्ता	दुष्टा
बुध	सुभगा	धनयुक्ता	पुत्रवती	सुगृहा	बुद्धितेजयुक्ता	क्रोधी	पतिव्रता	कृतघ्ना	सुभोगा	सत्कर्मा	पतिव्रता	कृशांगी
बृहस्पति	सती	धनयुक्ता	सुसहजा	सुखी	गुणवती	विपत्ति	कीर्तियुक्ता	रोगिणी	पुत्रवती	साधवी	सुपुत्रा	सुव्यया
शुक्र	सुखी	सुभगा	धनवती	सुखी	पुत्रवती	दरिद्रा	पतिप्रिया	विसुखा	धर्मरता	धनवती	सुपुत्रा	सुव्यया
शनि	वन्ध्या	दुःखी	सुदक्षा	हृदयरोगी	विपुत्रा	गुणवती	वैधव्य	दुःखी	वन्ध्या	पापी	लाभयुक्ता	मुर्खा
राहु	अपुत्रा	दरिद्रा	धनयुक्ता	रोगकष्ट	विपुत्रा	धनयुक्ता	दुःखिता	वैधव्य	वन्ध्या	दुष्कर्मा	आरोग्या	दुष्टा
केतु	दुःखी	दुःखकष्ट	रोगयुक्ता	मातृहानि	अपुत्रा	धनयुक्ता	वैधव्य	दुःखी	शोकयुक्ता	पापरता	सुभगा	रोगयुक्ता

द्वादश भावों में स्थित गोचर ग्रह फल

ग्रह \ भाव	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	एकादश	द्वादश
सूर्य	स्थानहानि	भय	धनलाभ	मानहानि	दीनता	विजय	यात्रा	कष्ट	पुण्यक्षय	सिद्धि	धनलाभ	धननाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यहानि	धनलाभ	स्त्रीसुख	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	धननाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	कष्ट	धनलाभ	कष्ट	सुख	धनलाभ	धननाश
बृहस्पति	भय	धननाश	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजसम्मान	पीड़ा	सुख	दीनता	धनलाभ	कष्ट
शुक्र	शत्रुक्षय	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धननाश
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	मनमुटाव	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	शत्रुता	शोक	धनप्राप्ति	क्लेश	मृत्यु	दुःख	शत्रुता	सुख	शोक
केतु	रोग	शत्रुता	सुख	भय	सुख	क्लेश	धनलाभ	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

वर्ष कुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रह फल

ग्रह \ भाव	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	एकादश	द्वादश
सूर्य	त्रिदोषपीड़ा	परिवारविरोध	भ्रातृकष्ट	कृषिपशुहानि	पित्तप्रकोप	शत्रुक्षय	पत्नीकष्ट	भ्रातृकष्ट	भ्रातृकष्ट	धन,सम्मान	धनीविलासी	उद्विग्नता
चन्द्र	कफपीड़ा	कुटुम्ब प्रभाव	धनीभ्रात्सुख	व्यापारलाभ	प्रबुद्धमित्र	वादविवाद	खांसीवातरोग	मूत्ररोग	भाग्योदय	शत्रुक्षयधनी	व्यापारलाच	नेत्ररोग
मंगल	नेत्ररोग	धनहानि	वाहनसुख	व्रण,अग्निभय	पुत्रकष्ट	शत्रुक्षय	स्त्रीरोग	शत्रुपीड़ा	भाग्ययशवृद्धि	धनलाभ	राज्यधनलाभ	व्यय,व्याधि
बुध	पत्नीसुख	वाहनसुख	धनयशपुत्रसुख	भूमिलाभ	धनपुत्रलाभ	पत्नीकष्ट	विलासी	ज्वर,कफ	पुत्र,धनलाभ	पुत्र,धनलाभ	धन,वालाभ	शत्रुभय
बृहस्पति	यशस्वी	धनलाभ	कीर्तिलाभ	वाहनसुख	सन्तानसुख	पत्नी,शत्रुकष्ट	दाम्पत्यसुख	ज्वरपीड़ा	धनलाभ	राज्यलाभ	विजय	रोग,शत्रुभय
शुक्र	यशस्वी	धन,मानलाभ	भ्रातृसुख	वाहनकृषिसुख	सन्तानलाभ	उदरपीड़ा	पत्नीसुख	शरीरपीड़ा	धर्म,शील	व्यापारी,धनी	सन्तानलाभ	नेत्र,चर्मरोग
शनि	वातरोग	भ्रातृहानि	पराक्रमी	अग्निभय	पुत्रहानि	कीर्तिलाभ	पत्नीकष्ट	ज्वरपीड़ा	भाग्योदय	कृषिहानि	कोर्तिलाभ	विशेषव्यप
राहु	पत्नीकष्ट	बन्धुविवाद	धन,यशलाभ	वाहनकष्ट	बुद्धिनाश	शत्रुक्षय	गुप्तरोग	मृत्युतुल्यकष्ट	धर्मवृद्धि	यशवृद्धि	शत्रुक्षय	स्थानच्युत
केतु	चिंता,व्रण	परिवारकलह	यशलाभ	वाहनकष्ट	दुर्बुद्धि	रोगनाश	विवाद	अरिष्टप्राप्ति	भाग्यहानि	धनलाभ	विविधलाभ	दुष्टसंगति

शतपद चक्र

नक्षत्रों	अक्षर	राशि	स्वामी	वर्ण	वश्य	योनी	गण	नाड़ी
अश्विनी	चु, चे, चो, ला	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	देव	आदि
भरणी	ली, लू, ले, लो	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	मनुष्य	मध्य
कृत्तिका	आ, ई, उ, ए	मेष। वृष ।।।	मंगल। शुक्र ।।।	क्ष.। वै. ।।।	चतुष्पद	गज	राक्षस	अन्त्य
रोहिणी	ओ, वा, वी, वू	वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	मनुष्य	अन्त्य
मृगशिरा	वे, वो, का, की	वृष ॥ मिथुन ॥	शुक्र ॥ बुध ॥	वै. ॥ शुद्र ॥	चतु. ॥ मनु. ॥	सर्प	देव	मध्य
आर्द्रा	कु, घ, ङ, छ	मिथुन	बुध	शुद्र	मनुष्य	श्वान	मनुष्य	आदि
पुनर्वसु	के, को, हा, ही	मिथुन ।।। कर्क।	बुध ।।। चन्द्र।	शुद्र ।।। ब्रा.।	मनु. ।।। जल.।	मार्जार	देव	आदि
पुष्य	के, को, हा, ही	कर्क	चन्द्र	ब्राह्मण	जलचर	मेष	देव	मध्य
अश्लेषा	डी, डू, डे, डो	कर्क	चन्द्र	ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	राक्षस	अन्त्य
मघा	मा, मी, मू, मे	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	चतुष्पद	मूषक	राक्षस	अन्त्य
पूर्वाफाल्गुनी	मो, टा, टी, टू	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	चतुष्पद	मुषक	मनुष्य	मध्य
उत्तराफाल्गुनी	टे, टो, पा, पी	सिंह । कन्या ।।।	सूर्य। बुध ।।।	क्ष.। वै. ।।।	चतु.। मनु. ।।।	गौ	मनुष्य	आदि
हस्त	पू, ष, ण, ठ	कन्या	बुध	वैश्य	मनुष्य	महिष	देव	आदि
चित्रा	पे, पो, रा, री	कन्या । तुला ।।।	बुध। शुक्र ।।।	वै. ॥ शुद्र ।।।	मनुष्य	व्याघ्र	राक्षस	मध्य
स्वाती	रू, रे, रो, ता	तुला	शुक्र	शुद्र	मनुष्य	महिष	देव	अन्त्य
विशाखा	रू, रे, रो, ता	तुला ॥ वृश्चिक ॥	शुक्र ॥ मंगल ॥	शुद्र ॥ ब्रा. ॥	मनु. ॥ कीट ॥	व्याघ्र	राक्षस	अन्त्य
अनुराधा	ना, नी, नू, ने	वृश्चिक	मंगल	ब्राह्मण	कीट	मृग	देव	मध्य
ज्येष्ठा	नो, या, यी, यू	वृश्चिक	मंगल	ब्राह्मण	कीट	मृग	राक्षस	आदि
मुल	ये, यो, भा, भी	धनु	गुरु	क्षत्रिय	मनुष्य	श्वान	राक्षस	आदि
पुर्वाषाढा	भू, धा, फा, ढा	धनु	गुरु	क्षत्रिय	मनु. चतु.	वानर	मनुष्य	मध्य
उत्तरषाढा	भे, भो, जा, जी	धनु। मकर ।।।	गुरु। शनि ।।।	क्ष.। वै. ।।।	चतुष्पद	नकुल	मनुष्य	अन्त्य
श्रवण	खी, खू, खे, खो	मकर	शनि	वैश्य	चतु.जल.	वानर	देव	अन्त्य
धनिष्ठा	गा, गी, गू, गे	मकर ॥ कुम्भ ॥	शनि	वै. ॥ शुद्र ॥	जल. ॥ मनु. ॥	सिंह	राक्षसा	मध्य
शतभिषा	गो, सा, सी, सू	कुम्भ	शनि	शुद्र	मनुष्य	अश्व	राक्षसा	आदि
पूर्वभाद्रपद	से, सो, दा, दी	कुम्भ ।।। मीन।	शनि ।।। गुरु।	शुद्र ।।। ब्रा.।	मनु. ।।। जल.।	सिंह	मनुष्य	आदि
उत्तरभाद्रपद	दु, थ, झ, ञ	मीन	गुरु	ब्राह्मण	जलचर	गौ	मनुष्य	मध्य
रेवती	दे, दो, चा, ची	मीन	गुरु	ब्राह्मण	जलचर	गज	देव	अन्त्य

मेलापक विमर्श

वर्ण विचार (1)

वर / कन्या	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
विप्र	1	0	0	0
क्षत्रिय	1	1	0	0
वैश्य	1	1	1	0
शूद्र	1	1	1	1

वश्य विचार -2

वर / कन्या	चतु.	मानव	जल.	वन.	कीट
चतु.	2	1	1	0	1
मानव	1	2	0.5	0	1
जल.	1	0.5	2	1	1
वन.	0	0	1	2	0
कीट	1	1	1	0	2

तारा विचार -3

व / क	1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
2	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
3	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
4	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
5	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
6	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
7	1.5	1.5	0	1.5	3	1.5	0	1.5	1.5
8	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
9	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3

गण विचार -6

वर / कन्या	देव	मानव	राक्षस
देव	6	5	0
मानव	5	6	0
राक्षस	0	0	6

नाड़ी विचार -8

वर / कन्या	आद्य	मध्य	अन्त्य
आद्य	0	8	8
मध्य	8	0	8
अन्त्य	8	8	0

योनी विचार -4

व / क	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा	मा.	मू.	गौ	म.	व्या	मृ.	वा.	न.	सि.
अ.	4	2	3	2	2	3	3	3	1	1	3	2	2	1
ग.	2	4	3	2	2	3	3	3	3	2	2	2	2	0
मे.	3	3	4	3	2	3	3	3	3	1	3	0	3	0
स.	2	2	3	4	2	2	1	1	2	2	2	2	2	0
श्वा.	2	2	2	2	4	1	1	2	2	1	0	2	2	1
मा.	2	2	3	2	1	4	0	2	2	1	2	2	2	2
मू.	2	2	2	1	1	0	4	2	2	2	2	2	2	1
गो.	3	2	3	2	2	2	2	4	3	0	3	2	3	1
म.	1	3	3	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	3
व्या	1	2	1	2	1	1	2	0	1	4	2	1	2	2
मृ.	3	2	3	2	0	2	2	3	2	1	4	2	2	3
वा.	2	3	0	2	2	2	2	2	2	1	2	4	2	3
न.	2	2	3	0	2	2	2	3	2	2	2	4	4	2
सि.	1	0	1	2	1	2	2	2	3	2	2	2	2	4

ग्रहमैत्री विचार - 5

वर / कन्या	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
चन्द्र	5	5	4	1	4	0.5	0.5
भौम	5	4	5	0.5	5	3	0.5
बुध	4	1	0.5	5	0.5	5	4
गुरु	5	4	5	0.5	5	0.5	3
शुक्र	0	0.5	3	5	0.5	5	5
शनि	0	0.5	0.5	4	3	5	5

भकूट विचार - 7

वर / कन्या	मेष	वृष	मि.	क.	सिंह	कं.	तु.	वृ.	धनु	म.	कुं.	मीन
मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	7
वृष	0	7	0	7	7	7	0	7	0	0	7	7
मि.	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7
कर्क	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0
सिंह	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0
कं.	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7
तु	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
वृ.	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
धनु	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7
म.	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7
कं.	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0
मीन	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7

मंगली दोष विचार

मेलापक के द्वारा दम्पत्ति के भावी जीवन के सुख-दुःख, सम्पत्ति विपत्ति, लाभ-हानि, आय-व्यय आदि घटनाओं का मनोवैज्ञानिक एवं तात्त्विक विवेचन ज्योतिषशास्त्र करता है। यदि वर एवं कन्या के शुभ-अशुभ ग्रहयोगों की सामञ्जस्यता एवं मित्रता होगी, तो उनका भावी जीवन सुख-शान्तिपूर्वक आनन्दमय व्यतीत होगा। यदि ग्रहों में परस्पर शत्रुता एवं एक की कुण्डली में शुभग्रह तथा एक की कुण्डली में अरिष्टकारक ग्रह बैठे हों तो संघर्षमय जीवन के साथ-साथ एक-दूसरे के लिए घातक सिद्ध हो सकते हैं। अतः कुण्डली मिलान के समय अरिष्ट योगों का विशेष रूप से विचार किया जाना चाहिए। वर या कन्या की जन्मकुण्डली या चन्द्रकुण्डली अथवा शुक्रकुण्डली से लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या व्यय स्थान में मंगल स्थित हो तो इस प्रकार की कुण्डली मंगली कही जाती है। यदि वर की कुण्डली में उपर्युक्त स्थानों में मंगल हो तो कन्या को तथा यदि कन्या की कुण्डली में हो तो वर के लिए अशुभ होता है। यथा-

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
कन्याभर्तृविनाशाय भर्ताकन्याविनाशदः ॥

मंगली दोष परिहार-

यदि वर या कन्या में से किसी एक की कुण्डली में मंगलीयोग कारक ग्रह स्थित हो तो परस्पर अरिष्टकारक होते हैं, किन्तु यदि वर व कन्या दोनों की कुण्डली में समान मंगलीयोग कारक ग्रह स्थित हों तो दोनों का मंगली दोष कट जाता है। यह ध्यातव्य है कि वर के मंगलीयोग का, कन्या के मंगली योग से प्रबल होना आवश्यक है।

1- **शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।**
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्॥

यदि एक की कुण्डली में मंगल योगकारक स्थानों 1, 4, 7, 8, 12 में हो तथा दूसरे की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल अरिष्ट योगकारक शनि, राहु, केतु आदि पापग्रह स्थित हों तो एक-दूसरे के दोष को नष्ट कर देते हैं।

2. - **यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुके तथा।**
अष्टमे द्वादशे चौव भौमदोषो न विद्यते ॥

यदि शनि सप्तम, लग्न, चतुर्थ, अष्टम या द्वादश हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

3. - **अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।**
द्यूने मृगे कर्कि चाष्टौ भौमदोषो न विद्यते ॥

यदि मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चतुर्थ में, मकर राशि का सप्तम में, कर्क राशि का अष्टम में तथा धनु राशि का व्यय स्थान में हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

4. - **अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे ।**
वृषे जाये घटे रन्ध्र भौमदोषो न विद्यते ॥

यदि मेष राशि का मंगल लग्न में, धनु राशि का द्वादश में, वृश्चिक राशि का चतुर्थ में, वृष राशि का सप्तम में तथा कुम्भ राशि का अष्टम स्थान में हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

5. - **सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवा भौमे।**
वक्रनीचारिगृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोषः ॥

यदि लग्न या सप्तम भाव में बली गुरु अथवा शुक्र हो तथा मंगलवक्री, नीचस्थ, शत्रुगृही तथा अस्तंगत हो तो भी मंगल का दोष समाप्त हो जाता है।

6. - **न मंगली चन्द्रभृगुर्द्वितीये न मंगली पश्यति यस्य जीवः।**
न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न मंगली मंगलराहुयोगे॥

अर्थात् द्वितीय भाव में चन्द्र और शुक्र स्थित हों, मंगल पर गुरु की दृष्टि हो तथा केन्द्र स्थित राहु मंगल की युति हो, तो मंगली का दोष नहीं होता है।

7. - **केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद् ग्रहाः ।**
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदनपस्तथा ॥

यदि केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा 3, 6, 11वें भाव में अशुभ ग्रह हों। सप्तमेश सप्तम गृह में हो तो भौम का दोष नहीं होता है।

8.- **राशिमैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत्।**
अथवा गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते ॥

अर्थात् राशि की मित्रता, गण की ऐक्यता तथा गुणों की बहुलता मंगली दोष को नष्ट कर देती है।

9. -

आचार्य रामदैवज्ञ ने बालवैधव्य का विचार करके सावित्री या पीपल के वृक्ष का व्रत कराकर विष्णु की प्रतिमा (शालिग्राम) पीपल वृक्ष या कुम्भ से विवाह के अनन्तर चिरंजीवी वर के साथ विवाह का विधान कहा है

जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतं,
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतया दद्यादिमां वा रहः।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटं
दद्यात्तां चिरंजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः ॥

विवाह योग

आदौ सम्पूज्य रत्नादिभिरथ गणकं वेदयेत्स्वस्थचित्तं
कन्योद्वाहं दिगीशानलहयविशिखे प्रश्नलग्नाद्यदीन्दुः ।
दृष्टो जीवेन सद्यः परिणयनकरो गोतुलाकर्कटाख्यं
वा स्यात्प्रश्नस्य लग्नं शुभखचरयुतालोकितं तद्विदध्यात् ॥

प्रातः स्मरणीय श्लोक

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं सिन्दूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम्।
उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्डमाखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम्।।
प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिनाशं नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम् ।।
प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ।।
प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम्।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम्।।
प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि।
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम्।।
ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।
भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।
सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।
सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त।
भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।
पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः।
नभः सशब्दं महता सहैव कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।
इत्थं प्रभाते परमं पवित्रं पठेत् स्मरेद्वा शृणुयाच्च भक्त्या।
दुःस्वप्ननाशस्त्विह सुप्रभातं भवेच्च नित्यं भगवत्प्रसादात्।।

मेलापक सारणी (खण्ड -1)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 4	भरणी 4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 3	रोहि.4	मृग.2	मृग.2	आर्द्रा 4	पुनर्व 1	पुनर्व.1	पुष्य 4	अश्ले.4	मघा 4	पू.फा. 4	उ.फ. 1	उ.फ. 3	हस्त 4	चित्रा 2
मेष	अश्विनी 4	28 8	33	28-5 3	18-5 173	21·5 173	22 5 173	26 135	17 1835	19 1835	23.5 83	31.5 3	28 6	21 276	25 27	15 5 2783	11 27835	9 134578	13 2735
	भरणी4	34	28 8	29 6	19 167	21.5 163	14.5 1738	18 8135	26 135	27 135	31.5 3	23.5 83	25.5 63	20 672	18 278	26 27	21.5 175	20 1753	4 176835
	कृत्तिका 1	27.5 63	29 6	28 8	18 178	10 6187	16.5 6173	20 613	20 613	21 6135	25.5 63	26.5 63	23.5 83	16.5 2783	20 627	20 627	15.5 627	15.5 627	18 173
वृष	कृत्तिका 3	18.5 673	20 67	19 78	28 8	20 68	26.5 63	17.5 6173	17.5 6173	18.5 6173	22 635	23 635	20 835	18.5 8235	22 256	22 256	21 67	21 67	23.5 73
	रोहिणी 4	23.5 73	23.5 73	11 678	20 68	28 8	36	27.5 17	23.5 173	22.5 1734	26 345	27 35	12 68354	10.5 234568	24.5 2345	27 52	26 7	26 7	20 67
	मृगशिरा 2	23.5 73	14.5 783	18.5 673	27.5 36	35	28 8	19 178	24 17	22.5 1347	26 345	19 358	21 3546	19.5 65234	15.5 52834	24.5 257	23.5 73	26 7	13 786
मिथुन	मृगशिरा 2	27 35	18 358	22 356	19.5 763	27 7	20 78	28 8	33	31.5 34	19 72345	12 87235	14 723465	23.5 2346	19.5 2834	28.5 23	31.5 3	34	21 86
	आर्द्रा 4	19 358	27 35	21 356	18.5 673	24.5 73	26 7	34	28 8	25 84	12.5 68345	20 7235	13 765234	23.5 632	29.5 23	21.5 238	24.5 38	24.5 38	27 46
	पुनर्वसु 1	20 358	27 35	23 35	20.5 763	22.5 37	23.5 347	31.5 34	24 84	28 8	15.5 2578	22.5 257	17 23567	22.5 4236	26.5 423	21.5 823	24.5 38	25.5 38	27.5 36
कर्क	पुनर्वसु 1	22.5 138	29.5 13	25.5 136	22 1356	24 1345	25 1345	18 172345	10.5 124578	14.5 13578	28 8	35	29.5 36	16.5 13467	20.5 1347	15.5 1378	18 3578	19 12358	21 16235
	पुष्य 4	30.5 13	21.5 138	26.5 136	23 1356	25 135	18 1358	11 123578	18 12357	21.5 1257	35	28 8	30 6	19.5 1367	15.5 1378	23.5 137	26 1235	27 1235	12 1234568
	अश्लेषा 4	26 16	24.5 136	22.5 138	19 1358	11 134568	19 13456	12 1234567	12 123567	15 123567	28.5 63	29 6	28 8	15 1478	15.5 13467	18.5 2367	21 12356	21 12356	26 1235
सिंह	मघा 4	20 267	20 267	16.5 2783	17.5 12583	9.5 1236584	17.5 123564	21.5 12364	22.5 1236	20.5 12643	16.5 6743	19.5 673	16 874	28 8	30 6	27.5 63	16.5 21673	16.5 21673	21.5 1273
	पू.फा. 4	26 27	18 278	20 267	21 1256	23.5 12534	15.5 218534	19.5 21834	28.5 213	26.6 2134	22.5 473	17.5 783	16.5 6743	30 6	28 8	35	24 217	22.5 2173	7.5 213687
	उ.फ. 1	16.5 2738	26 27	20 267	21 2165	26 215	24.5 2153	28.5 213	20.5 2138	21.5 2138	17.5 783	25.5 73	19.5 673	27.5 36	35	28 8	17 2178	16 2178	13.5 214367
कन्या	उ.फ. 3	13 7835	22.5 75	16.5 675	21 67	26 7	24.5 73	31.5 13	23.5 138	24.5 813	20 8235	28 235	22 6235	17.5 6273	25 72	18 278	28 8	27 8	24.5 463
	हस्त 4	10 47835	20 735	17.5 752	22 76	25 7	26 7	33 1	22.5 318	24.5 138	20 8235	28 235	23 2356	18.5 2736	22.5 273	16 278	26 8	28 8	28 46
	चित्रा 2	13 36745	5 378645	19 7345	23.5 734	20 67	12 678	19 618	26 164	25.5 136	21 6234	12 682345	27 235	22.5 273	8.5 62783	14.5 24673	24.5 643	27 64	28 8

मेलापक सारणी (खण्ड -2)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्ता 2	स्वाती 4	विशा. 3	विशा. 1	अनु. 4	ज्येष्ठा 4	मुल 4	पु. षा. 4	उ. षा. 1	उ. षा 3	श्रवण 4	धनिष्ठा 2	धनिष्ठा 2	शत. 4	पू. भा. 3	पू. भा. 1	उ.भा. 4	रेवती 4
मेष	अश्विनी 4	22.5 1436	26.5 134	22.5 3146	18.5 6734	25.5 73	14 786	13.5 768	25 7	23.5 73	25 135	26 135	20 13456	20 13456	15 18356	16 18345	14.5 8734	24.5 73	26 7
	भरणी4	13.5 16834	29.5 13	21.5 6134	17.5 6734	17.5 873	19.5 673	20 67	18 87	26 7	27.5 15	26 135	10 146835	10 146835	20 6135	24 1435	22.5 374	17.5 873	26.5 73
	कृत्तिका 1	27.5 134	15.5 1683	19.5 1834	15.5 7834	19.5 673	25.5 73	24.5 73	18 674	12 678	13.5 1685	11.5 14568	25 1345	25 1345	27 135	19 16345	17.5 6734	19.5 673	11.5 6738
वृष	कृत्तिका 3	22.5 1734	10.5 61783	14.5 17384	20.5 834	24.5 63	30.5 3	20 735	13.5 4675	7.5 6785	12 678	10 4678	23.5 734	29.5 134	31.5 13	23.5 6134	20 6345	22 635	14 6835
	रोहिणी 4	19 761	15.5 1783	9.5 31687	15.5 683	29.5 3	23.5 63	14 6735	19 5734	11.5 4785	16 748	17 874	20 67	26.5 61	24.5 613	30.5 13	27 35	27 35	19 583
	मृगशिरा 2	12 7186	25 17	18.5 1736	24.5 36	21.5 83	24.5 36	15 7356	10 87345	17 4735	21.5 743	25 74	13 876	19 168	27 16	29.5 13	26 35	18 835	27 35
मिथुन	मृगशिरा 2	14 876	27 7	20.5 736	14 72356	11 72835	14 72356	23 356	18 8345	25 435	20 7423	23.5 724	11.5 8726	13 876	21 76	23.5 73	25.5 325	17.5 8235	26.5 235
	आर्द्रा 4	20 674	27 7	20 674	13.5 56274	17 37245	3 4362785	16 6835	28 35	28 35	23 723	23 723	17.5 6724	19 674	12 768	17 874	19 8524	26.5 235	26.5 235
	पुनर्वसु 1	20.5 736	28 7	22 76	15.5 2756	21.5 275	7 562783	14 45386	27 35	27 35	22 237	23 237	17 23746	18.5 7634	14 876	16 874	18 5842	28 52	27.5 235
कर्क	पुनर्वसु 1	20.5 1356	28 251	22 2516	20 67	26 7	11.5 3678	8 2317684	21 1723	21 1723	26 135	27 135	21 16345	12.5 1723465	8 172865	10 175824	16 874	20 7	25.5 73
	पुष्य 4	11.5 681234	26.5 1235"	21 51624	19 746	18 78	21 76	17 61723	11 417382	21 1723	26 135	25 1435	13 618345	4.5 71642835	14.5 123567	18 12745	24 74	18 87	27 7
	अश्लेषा 4	25.5 1235	12.5 123568	17.5 81235	15.5 873	20 67	26 7	22.5 1724	16 61273	8 612783	13 61583	13 16385	26 1345	17.5 172345	19.5 17235	11.5 6172345	17.5 6734	21 67	13 678
सिंह	मघा 4	24.5 1235	11.5 123568	16.5 12358	22.5 823	25.5 623	33 2	25 72	19 627	8.5 267834	3.5 1534678	4.5 153678	18.5 1537	24.5 1235	25.5 1235	18.5 12563	18.5 673	19.5 673	13 678
	पू.फा. 4	10.5 213568	25.5 1235	18.5 12563	24.5 623	23.5 823	25.5 623	19 627	17 728	24 728	17 1574	18.5 137	4.5 153678	10.5 123568	19.5 12563	24.5 1253	24.5 73	17.5 873	25.5 73
	उ.फ. 1	16.5 123465	25.5 1235	16.5 124635	22.5 4263	31.5 23	17.5 6238	9.5 62873	25 72	25 72	20 157	20 157	11.5 153674	17.5 123564	11.5 123685	15.5 123854	15.5 8734	26.5 73	25.5 73
कन्या	उ.फ. 3	16.5 61473	25.5 173	16.5 61473	18 42365	27 235	13 62385	14 6835	29.5 5	29.5 5	24.5 72	24.5 72	16 67234	16.5 61734	10.5 61873	14.5 17834	17.5 38245	28.5 235	27.5 235
	हस्त 4	20 1746	26.5 173	18.5 17346	20 26345	26 235	13 82356	15 8356	27 35	28.5 5	23.5 72	24.5 72	18.5 7624	19 1736	8.5 147836	13.5 17835	16.5 28345	26.5 235	27.5 235
	चित्ता 2	20 178	19 6174	26.5 173	28 235	11 628345	25 2345	27 345	14 6835	22 635	17 673	18.5 672	15.5 7284	16 1478	24 174	16.5 61374	19.5 62345	10.5 642835	19.5 26345

मेलापक सारणी (खण्ड -3)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 4	भरणी 4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 3	रोहि.4	मृग.2	मृग.2	आर्द्रा 4	पुनर्व 1	पुनर्व.1	पुष्य 4	अश्ले.4	मघा 4	पू.फा. 4	उ.फ. 1	उ.फ. 3	हस्त 4	चित्रा 2
तुला	चित्रा 2	22.5 634	14.5 3468	28.5 34	23.5 734	20 67	12 678	13 678	21 67	19.5 673	20.5 6523	11.5 684253	26.5 235	25.5 235	11.5 25683	17.5 24635	17.5 4673	20 674	21 78
	स्वाती 4	27.5 43	29.5 3	17.5 38	12.5 783	15.5 783	26 7	27 7	26 7	28 7	29 25	27.5 235	14.5 8235	13.5 2368	25.5 235	25.5 235	25.5 73	27.5 73	21 746
	विशाखा 3	22.5 346	22.5 346	20.5 348	15.5 3784	10.5 6738	18.5 673	19.5 673	20 674	21 67	22 625	21 635	18.5 8235	17.5 2538	19.5 2536	17.5 24536	17.5 4673	18.5 6734	27.5 73
वृश्चिक	विशाखा 1	16.5 61743	16.5 16743	14.5 17843	19.5 1843	14.5 1683	22.5 163	12 125673	12.5 124675	13.5 12675	19 67	18 674	15.5 783	21.5 1283	23.5 1263	21.5 12643	17 312645	18 126345	27 1235
	अनुराधा 4	24.5 713	15.5 1783	19.5 1763	24.5 136	27.5 13	20.5 183	10 123875	15.5 312574	20.5 1275	26 7	18 78	21 76	24.5 1236	20.5 1238	29.5 123	25 1235	26 123	11 125834
	ज्येष्ठा 4	12 1678	18.5 1637	24.5 173	29.5 13	22.5 163	22.5 163	12 312675	2 3214678	5 53125678	10.5 3678	20 67	26 7	31 21	23.5 1263	16.5 31268	12 312685	12 312685	24 12345
धनु	मुल 4	12 678	20 67	24.5 73	19 1753	13 16375	13 51637	21 1635	15 16835	12 516384	8 467283	17 6723	23.5 724	25 27	19 267	9.5 32678	13 35168	13 35168	26 5134
	पु. षाढा 4	26 7	18 78	18 674	12.5 14675	18 17345	10 517348	18 18345	27 135	27 135	23 723	13 47823	17 6723	19 267	17 278	25 27	28.5 15	27 135	13 31685
	उ. षाढा 1	24.5 37	26 7	12 678	6.5 51478	10.5 14578	17 14375	25 1435	27 135	27 135	23 723	23 723	9 67283	8.5 362478	24 274	25 27	28.5 15	28.5 15	21 6135
मकर	उ. षाढा 3	27 35	28.5 5	14.5 685	12 678	16 784	22.5 473	20 1437	22 173	22 1723	28 35	28 35	14 6835	4.5 345678	20 574	21 57	24.5 73	24.5 27	17 6723
	श्रवण 4	27 35	26 35	13.5 485	11 4768	16 784	25 74	22.5 1724	21 1723	22 1723	28 3	26 435	15 835	6.5 36578	18.5 573	20 75	23.5 72	24.5 72	19.5 72
	धनिष्ठा 2	20 6345	11 46835	26 345	23.5 734	20 67	12 678	9.5 21678	16.5 24167	16 26137	22 635	13 56834	28 35	19.5 573	5.5 36578	12.5 34567	16 67234	17.5 672	15.5 7824
कुम्भ	धनिष्ठा 2	20 6345	11 46385	26 345	30.5 34	27 6	19 68	12 678	19 674	18.5 673	13.5 67235	4.5 3456782	19.5 7235	25.5 235	11.5 23568	18.5 25634	17.5 6734	19 674	17 478
	शतभि. 4	15 6835	21 365	28 35	32.5 3	25.5 63	27 6	20 67	12 678	13 678	8 67285	14.5 67235	20.5 2735	26.5 253	20.5 2563	12.5 25368	11.5 3687	8.5 34687	25 74
	पू. भा. 3	18 8345	25 345	20 3456	24.5 346	31.5 3	31.5 3	24.5 73	17 784	18 78	13 782	20 7524	18.5 67235	19.5 2536	25.5 253	16.5 25483	15.5 783	15.5 7834	175 6734
मीन	पू. भा. 1	14.5 17384	21.5 1347	16.5 13467	19 13456	26 135	26 135	25.5 1235	18 18245	19 8125	18 87	25 74	18.5 673	17.5 1637	23.5 173	14.5 17384	16.5 518234	16.5 518234	18.5 516234
	उ.भा. 4	24.5 173	16.5 1378	18.5 1367	21 1356	26 135	18 8135	17.5 81235	25.5 1523	28 215	27 7	19 78	21 67	18.5 6137	16.5 178	25.5 173	27.5 1235	26.5 1235	9.5 1352468
	रेवती 4	25 17	24.5 137	11.5 36178	14 18356	17 2835	26 135	25.5 1352	24.5 5123	26.5 5123	25.5 73	27 7	14 768	13 1768	23.5 173	23.5 173	25.5 1523	26.5 1523	19.5 145236

मेलापक सारणी (खण्ड -4)

वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या		चिला 2	स्वाती 4	विशा. 3	विशा. 1	अनु. 4	ज्येष्ठा 4	मुल 4	पु. षा. 4	उ. षा. 1	उ. षा 3	श्रवण 4	धनिष्ठा 2	धनिष्ठा 2	शत. 4	पू. भा. 3	पू. भा. 1	उ.भा. 4	रेवती 4
तुला	चिला 2	28 8	27 64	34.5 3	23.5 723	6.5 462387	20.5 7234	27 345	14 6735	22 635	25 632	26.5 62	23.5 824	18 874	26 74	18.5 6734	12.5 672345	3.5 2346785	12.5 456723
	स्वाती 4	28 46	28 8	20 846	9 72486	21.5 723	16.5 7236	23 356	27 356	19 85	22 823	23 823	26.5 246	21 467	20 647	25 47	19 2745	19.5 2375	12.5 23785
	विशाखा 3	34.5 3	19 684	28 8	17 728	16 6274	20.5 7234	27 345	22 635	14 6358	17 6823	17 6823	30 234	24.5 734	26 74	20 674	14 67245	13 64735	4.5 6728345
वृश्चिक	विशाखा 1	22.5 1273	7 126874	16 1287	28 8	27 64	31.5 34	21.5 12347	16.5 12673	8.5 126873	12 61835	12 61835	25 1345	24 12345	25.5 1245	19.5 12645	19 674	18 647	9.5 67834
	अनुराधा 4	6.5 1234678	21.5 1273	16 12746	28 46	28 8	31 6	15.5 123467	13.5 31287	21.5 1237	25 135	26 135	12 341856	11 3412856	21 12356	24.5 1245	24 74	18 87	27 7
	ज्येष्ठा 4	19.5 12734	15.5 31267	19.5 12734	31.5 34	30 6	28 8	14 12874	16.5 12367	16.5 12367	20 6235	20 6135	25 1345	24 12345	18 12853	10 3124685	9.5 67384	21 67	21 67
धनु	मुल 4	26 3145	21 6135	26 3145	22.5 7234	15.5 62734	15 4287	28 8	28 6	26.5 63	15 61723	15 61723	20 17234	28.5 124	21.5 183	14.5 68134	16 68234	25 623	26 72
	पु. षाढा 4	13 61385	27 135	21 6135	17.5 6273	15.5 7283	17.5 6273	28 6	28 8	34	22.5 172	23 1723	6 6172834	14.5 61384	23.5 613	28.5 134	30 234	23 823	31 23
	उ. षाढा 1	21 6135	18 8135	13 61835	9.5 62783	23.5 723	17.5 6273	26.5 63	34	28 8	16.5 1728	14.5 1728	15 61273	23.5 613	23.5 613	29.5 13	31 23	31 23	23 823
मकर	उ. षाढा 3	24 613	22 8123	16 6183	13 6835	27 35	21 635	16 6723	23.5 72	17.5 872	28 8	26 8	26.5 63	17 62713	17 62713	23 1723	30.5 3	30.5 3	22.5 83
	श्रवण 4	26.5 126	22 8123	17 81623	14 835	27 35	22 35	17 7236	23 723	14.5 872	25 8	28 8	28 46	18.5 17246	18 17235	21 17234	28.5 34	29.5 3	22.5 83
	धनिष्ठा 2	22.5 8124	24.5 6124	29 1234	26 345	12 68345	26 345	21 7234	7 674283	16 6723	26.5 63	27 64	28 8	18.5 1782	23.5 1724	19 61237	26.5 63	15.5 6834	22.5 643
कुम्भ	धनिष्ठा 2	18 874	20 674	24.5 734	25 3245	11 624385	25 3245	29 34	15.5 6384	24.5 36	18 6723	18.5 6724	19.5 728	28 8	33 4	28.5 63	18 6723	7 367284	14 64273
	शतभि. 4	26 74	19 746	26 74	26.5 425	21 6235	19 8235	22.5 83	24.5 63	24.5 63	18 6723	18 6723	24.5 724	33 4	28 8	19 684	8.5 67284	17 6723	16 6723
	पू. भा. 3	18.5 6734	26 74	20 674	20.5 6245	26.5 245	11 623485	15.5 8634	29.5 34	30.5 3	24 723	23 7234	20 7623	28.5 63	19 864	28 8	17.5 872	22.5 724	20 7243
मीन	पू. भा. 1	11.5 6127345	19 17245	13 612745	19 674	25 74	9.5 67834	15 62384	29 1234	30 123	29.5 13	28.5 134	25.5 613	17 6173	7.5 614738	16.5 1738	28 8	33 4	30.5 34
	उ.भा. 4	2.5 12345678	19.5 72135	12 625741	18 647	19 87	21 67	22 6123	22 8123	30 123	29.5 13	29.5 13	14.5 61384	6 6128734	16 61273	21.5 1734	33 4	28 8	35
	रेवती 4	12.5 172345	11.5 173285	4.5 12345678	10.5 87346	27 7	22 76	26.5 162	29 123	21 1238	20.5 813	21.5 813	22.5 1346	14 124736	16 17236	18 14723	29.5 43	34	28 8

वर्षफल निर्माण विधि

जिस वर्ष का वर्षफल अभीष्ट हो, उस अभीष्ट सम्वत् में से जन्म सम्वत् घटाने पर जो शेष बचे, वे जन्म से गतवर्ष अर्थात् 'गताब्द' होते हैं उन गताब्दों से प्राचीन मतानुसार वर्षप्रवेश सारणी के नीचे दिये गये वार घटी पल आदि फल लेकर उसमें जन्म के वार, इष्टघटी, पलादि जोड़ने पर वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्टकाल ज्ञात होता है। पल घटी आदि यदि 60 से अधिक हों, तो उन्हे सवर्ण करके तथा यदि वारादि संख्या 7 से अधिक हो तो 7 का भाग देने पर एकादि शेष रहने पर रवि आदि क्रम से वार तथा आगे वर्षेष्ट घटी पलादि होते हैं। जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य के राश्यंशादि की तरह वर्ष प्रवेशकालिक स्पष्ट सूर्य होता है। वर्षेष्ट के स्वदेशीय (समीपस्थ अक्षांश) लग्न सारणी से लग्न साधन करने पर वर्ष प्रवेश कालिक लग्न सिद्ध होता है। इस प्रकार वर्ष लग्न में वर्ष लग्न कालिक ग्रह स्थापित करने पर वर्ष कुण्डली बनती है।

मुन्थासाधन-

वर्ष कुण्डली में मुन्था भी लगाई जाती है। जन्म के प्रथम वर्ष में लग्न ही मुन्था होती है। यह प्रति वर्ष एक-एक राशि बढ़ती है। अतः गत वर्ष संख्या में जन्म लग्न जोडने पर यदि 12 से अधिक हो तो 12 का भाग देने पर शेष मुन्था की राशि होती है।

मुद्दादशासाधन-

गत वर्ष संख्या में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़कर जो संख्या उपलब्ध हो, उसमें 2 घटाकर 9 का भाग देने पर एकादि शेष बचने पर सूर्य चन्द्र मंगल राहु बृहस्पति शनि बुध केतु शुक्र की दशा होती है। सूर्यादि मुद्दादशा दिनादि पंचाग में दिये गये चक्र से जान सकते हैं।

हर्षबलसाधन-

वर्ष कुण्डली में स्थानबल, स्वोच्चबल, पुरुषस्त्रीबल तथा दिनरात्रिबल ये चार हर्ष बल कहलाते हैं। वर्ष कुण्डली में हर्षबल का सर्वाधिक महत्व होता है। क्योंकि हर्षबल के द्वारा ही वर्षेशादि का निर्णय होता है।

स्थानबल-

वर्ष लग्न से 9वें स्थान में सूर्य, 3रें में चन्द्रमा, 6 में मंगल, 1 में बुध, 11 में गुरु, 5 में शुक्र तथा 12 में शनि 5 हर्षवली होते हैं।

स्वोच्चबल-

प्रत्येक ग्रह अपनी तथा उच्च राशि में 5 हर्षबली होते हैं। अर्थात् सूर्य 1/5, चन्द्र 2/4, मंगल 1/8/10, बुध 3/6, गुरु 4/9/12, शुक्र 2/7/12, शनि 10/11/7 राशियों में सूर्यादि ग्रह हर्षित अर्थात् हर्ष बली होतें हैं।

पुरुषस्त्रीबल-

स्त्रीग्रह (चं. बु. शु. श.) 1,2,3,7,8,9 स्थानों मे तथा पुरुष ग्रह (सू. मं. गु.) 4,5,6,10,11,12 स्थानों में हर्ष बली होते हैं। हर्ष बली ग्रह के 5 बल होते हैं।

दिनरात्रिबल-

दिन में वर्ष प्रवेश हो तो पुरुष ग्रह रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो स्त्री ग्रह बली होते हैं। यहां यह ध्यान देना चाहिये जहां बल प्राप्त हो वहां 5 तथा जहां बलप्राप्त न हो वहां शून्य (0) रखना चाहिये। इस प्रकार सूर्यादि ग्रहों के चारों स्थानादि बलों का योग हर्षबल कहलाता है।

वर्षेश निर्णय-

जन्म लग्नपति, वर्ष लग्नपति, मुन्थाधिपति, त्रिराशिपति, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी तथा रात्रि का वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रमा जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी ये पञ्चाधिकारी कहलाते हैं। इन पञ्चाधिकारियों में जो बलवान होकर लग्न को देखता हो, वह वर्षेश होता है। बलवान होने पर भी यदि लग्न को न देखता हो तो, वर्षेश नही होगा। समान बली होने पर जो लग्न को अधिक दृष्टि से देखता हो वह वर्षेश होगा। लग्न को देखने वाला ग्रह यदि अल्प बली हो तो, मुन्थेश अर्थात् मुन्था जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी वर्षेश होगा। यदि पञ्चाधिकारियों में कोई भी ग्रह लग्न को न देखता हो तो जो ग्रह सबसे अधिक बलवान् होगा वही वर्षेश होगा। यदि चन्द्र वर्षेश प्राप्त हो तो वह पञ्चाधिकारियों में जिससे इत्थशाल करें, वह वर्षेश होगा। यदि इत्थशाल न करे तो चन्द्र जिस राशि में बैठा हो वह वर्षेश होगा।

वर्ष दृष्टि-विचार-

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस स्थान में स्थित हो, उससे 5/9 स्थान को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से, 3/11 स्थान को गुप्त मित्र दृष्टि से, 1/7 को प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा 4/10 स्थान को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखता है। प्रत्यक्षमित्र दृष्टि सभी कार्यों में शीघ्र सफलता देने वाली होती है, गुप्त मित्र दृष्टि कठिनता से सफलता देने वाली होती है। प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि शत्रुता उत्पन्न करने वाली, मित्र से शत्रुता कराने वाली, बनते काम बिगाड़ने वाली हानिकारक होती है। गुप्त शत्रुदृष्टि कार्यों को कठिनता से सफल कराने वाली तथा गुप्त रूप से शत्रु उत्पन्न कराने वाली होती है।

॥ वेधसिद्ध (नवीन) वर्षमानानुसारेण वर्ष प्रवेशसारिणी ॥

गताब्द	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
वार	1	2	3	5	6	0	1	3	4	5	6	1	2	3	4	6	0	1	2	4
घटि	15	30	46	1	16	32	47	3	18	33	49	4	19	35	50	6	21	36	52	7
पल	22	45	8	31	54	17	40	3	26	49	12	35	58	21	44	7	30	23	16	39
विपल	57	54	51	48	45	42	39	36	33	30	27	24	21	18	15	12	9	6	3	0
गताब्द	**21**	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**	**31**	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
वार	5	6	0	2	3	4	5	0	1	2	3	5	6	0	1	3	4	5	6	1
घटी	23	38	53	9	24	39	55	10	26	41	56	12	27	43	58	13	29	44	59	15
पल	1	24	47	10	33	56	19	42	5	28	51	14	37	0	23	46	9	32	55	18
विपल	57	54	51	48	45	42	39	36	33	30	27	24	21	18	15	12	9	6	3	0

गताब्द	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
वार	5	6	0	2	3	4	5	0	1	2	3	5	6	0	1	3	4	5	6	1
घटी	23	38	53	9	24	39	55	10	26	41	56	12	27	43	58	13	29	44	59	15
पल	1	24	47	10	33	56	19	42	5	28	51	14	37	0	23	46	9	32	55	18
विपल	57	54	51	48	45	42	39	36	33	30	27	24	21	18	15	12	9	6	3	0
गताब्द	**41**	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**	**51**	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
वार	2	3	5	6	0	1	3	4	5	6	4	5	0	1	2	3	5	6	0	1
घटी	30	46	1	16	32	47	2	18	33	49	39	55	10	26	41	56	12	27	43	58
पल	40	3	26	49	12	35	58	21	44	7	56	19	42	5	28	51	14	37	0	23
विपल	57	54	51	48	45	42	39	36	33	30	42	39	36	33	30	27	24	21	18	15
गताब्द	**61**	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**	**71**	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
वार	3	4	5	6	1	2	3	5	6	0	1	3	4	5	6	4	5	6	1	2
घटी	13	29	44	59	15	30	46	1	16	32	47	2	18	33	49	29	44	59	15	30
पल	46	9	32	55	18	40	3	26	49	12	35	58	21	44	7	4	27	50	13	36
विपल	12	9	6	3	0	57	54	51	48	45	42	39	36	33	30	12	9	6	3	0

॥ प्राचीनमानानुसारेण वर्ष प्रवेश सारिणी ॥

गताब्द	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
वार	1	2	3	5	6	0	1	3	4	0	6	1	2	3	4	6	0	1	2	4
घटी	15	31	46	2	17	33	48	4	19	35	50	6	21	37	52	8	23	39	54	10
पल	31	3	34	6	37	0	40	12	43	15	46	18	49	21	52	24	55	27	28	30
विपल	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0
गताब्द	**21**	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**	**31**	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
वार	5	4	0	2	3	4	0	0	1	2	4	5	6	0	2	3	4	5	0	1
घटी	26	10	57	12	28	43	59	14	30	45	1	16	32	43	3	18	34	49	5	21
पल	21	30	4	36	7	39	10	42	13	45	16	48	37	29	22	454	25	57	28	0
विपल	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	21	30	30	0	30	0	30	0

गताब्द	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
वार	2	3	5	6	0	1	3	4	5	6	1	2	3	4	6	0	1	3	4	5
घटी	36	52	7	23	38	54	9	25	40	56	11	27	42	58	13	29	44	0	15	31
पल	31	3	34	6	37	9	10	12	43	15	46	18	49	21	52	24	55	27	58	30
विपल	30	0	0	0	30	0	0	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0
गताब्द	**61**	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**	**71**	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
वार	6	1	2	3	4	6	0	1	2	4	5	6	0	2	3	4	5	0	1	2
घटी	47	2	18	33	49	4	20	35	51	6	22	37	53	8	24	39	55	10	26	42
पल	1	33	4	36	7	39	10	42	13	45	16	48	19	51	22	54	25	57	28	0
विपल	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0	30	0

विंशोत्तरी मुद्दादशाचक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहू	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0

योगिनी मुद्दादशाचक्र

योगिनी	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
मास	0	0	1	1	1	2	2	2
दिन	10	20	0	10	20	0	10	20

त्रिराशिपति चक्र

लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
दि.पति	सूर्य	शुक्र	शनि	शुक्र	गुरु	चन्द्र	बुध	मंगल	शनि	मंगल	गुरु	चन्द्र
लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रा.पति	गुरु	चन्द्र	बुध	मंगल	सूर्य	शुक्र	शनि	शुक्र	शनि	मंगल	गुरु	चन्द्र

अथ बृहद्गोदानविधिः

तत्र दाता सुस्नातः गोदानसामग्रीं स्वाग्रतः सम्पाद्य सुलिप्तायां भूमौ सपत्नीकः स्वासने उपविश्य यथोक्तलक्षणां सवत्सां गां प्राङ्मुखमिव स्थाप्य कुशतिलजलयवान्यादाय संकल्पं कुर्यात्।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्ये अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्मा सपत्नीकोऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तये सकलमनोरथसिद्धये च कृतैतच्छ्रीयज्ञपुरुषप्रीतये गोदानं करिष्ये ।

गोदानार्थं ब्राह्मणवरणम् -

तत्प्रतिग्रहणार्थं ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणञ्च करिष्ये।

उदङ्मुखं ब्राह्मणमर्घ्यादिभिः सम्पूज्य वरणसामग्रीं करे कृत्वा एभिः गन्धाक्षतपुष्प मालायज्ञोपवीतवस्त्रफलादिभिः गोदानप्रतिग्रहणार्थम् अमुकगोत्रस्यामुकवेदाध्यायिनम् अमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे।

वृणोस्मीति ब्राह्मणो वदेत्।

आवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रैलोक्यमातरम् ।
यस्याः स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुन्धरा ।
गायत्री त्वं च सावित्री गङ्गा त्वं च सरस्वती ॥
तृणानि भक्ष्यसे नित्यममृतं स्रवसे प्र भो ।
भूतप्रेतपिशाचांश्च पितृदेवतमानुषान् ॥
सर्वांस्तारयते देवी नरकात्पापसङ्कटात् ॥

इत्यावाह्य पूजयेत्।

सवत्सायै गवे नमः, पाद्यं स्नानं च समर्पयामि।

गोरङ्गपूजनम् -

नमो विश्वमूर्तिभ्यो विश्वमातृभ्य एव च।
लोकाधिवासिनीभ्यश्च रोहिणीभ्यो नमो नमः ॥

गो अग्रपादाभ्यां नमः। गोः पश्चात्पादाभ्यां नमः ॥

देहस्था या च रुद्राणां शंकरस्य सदाप्रिया।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥

गोरास्याय नमः

विष्णोर्वक्षसि या देवी स्वाहा या च विभावसोः।
चन्द्रार्कशक्रशक्तिर्या सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥

गोः शृंगाभ्यां नमः ॥ गोकर्णाभ्यां नमः ॥

चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्य्या लक्ष्मीर्धनदस्य च।
लक्ष्मीर्या लोकपालानां सा धेनु वरदास्तु मे ॥

गोः पृष्ठाय नमः ॥

स्वधा त्वं पितृमुख्यानां स्वाहा यज्ञभुजांस्तथा।
सर्वपापहरे धेनो तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे ॥

गोः पुच्छाय नमः ॥

यस्याः शृंगाग्रयोरिन्द्र उरसि स्कन्ध एव च।
तत्रास्ते शिरसि ब्रह्मा ललाटे वृषभध्वजः ॥
कर्णयोरश्विनौ देवौ चक्षुषोः शशिभास्करौ।
दन्तेषु मरुतो देवा जिह्वायां च सरस्वती ॥
अपाने सर्वतीर्थानि लांगूले सर्वमङ्गला।
ऋषयोः रोमकूपेषु पृष्ठे वैवस्वतो यमः ॥
वरुणो धनदश्चैव दक्षिणां कुक्षिमाश्रितः।
वामपार्श्वे महायज्ञो महोजास्तु महाबलः ॥
खुरमध्ये तु गन्धर्वाः खुराग्रे पन्नगास्तथा।
खुराणां पश्चिमे पार्श्वे गणा अप्सरसामपि ॥
गोमये वसते लक्ष्मीर्गोमूत्रे जाह्नवीजलम्।
हुंकारे निखिला वेदा रम्भाशब्दे प्रजापतिः ॥
चत्वारः सागराः पूर्णा धेनूनां स्तनमण्डले ।
अमृतं स्रवते नित्यं पिबन्ति सुरमानवाः ॥
न धेनु तुल्यं धनमस्ति किञ्चिद्धरत्यघं गुह्य बहिर्भवं च।
तृणानि भुक्ताप्यमृतं स्रवन्ती विप्राय दत्ता पितृमोक्षदा सा ॥

एककालं द्विकालं वा यो ददाति गवाह्निकम्।
पञ्चचामरपूर्णाङ्गविमानमधिरोहति ॥
उभे संध्ये च यो नित्यं गोसावित्रिं सदा पठेत्।
गोसहस्रफलं सोऽपि लभते वाञ्छितं फलम्॥
गवामङ्गेषु ति ष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥

वस्त्रम् - आच्छादनं मया दत्तं सम्यक् शुद्धं सुनिर्मलम्।
सुरभिर्वस्त्रदानेन प्रीयतां परमेश्वरी॥

गन्धम् - सर्वदेवप्रियन्देवि चन्दनं कुङ्कमान्वितम्।
कर्पूरादिसमायुक्तं गोगन्धं प्रतिगृह्यताम् ॥

अक्षताः - अक्षताश्च शुभ्राश्च कुङ्कमाक्ताःसुशोभनाः।
मयानीताः प्रियार्थैतान् गृहाण त्वं गवेश्वरि॥

धूपम् - आनन्दकृत्सर्वलोके देवानाञ्च सदाप्रिये।
गौस्त्वं पाहि जगन्माताधूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

दीपम् - साज्यं सद्वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि सर्वतस्तिमिरापहम्॥

गोः ग्रासः - सुरभिस्त्वं जगन्माता नित्यंविष्णुपदे स्थिता ।
गोग्रासं च मया दत्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥
सुरभिस्त्वं जगन्मातर्देवि विष्णुपदे स्थिता ।
सर्वदेवमयी ग्रासं मया दत्तमिमं ग्रस ॥

भूषणार्थ द्रव्यं - घण्टाचामरञ्च समर्ण्य, ततो गोः देहतीर्थानि पूजयेत्।

देहे देवतीर्थपूजनम् - गन्धाक्षतपुष्पैः

शृङ्गले ब्रह्माविष्णुभ्यो नमः ॥ सर्वतीर्थेभ्यो नमः ॥ शिरोमध्ये महादेवाय नमः ॥ ललाटे गौर्ये नमः ॥ नासारन्ध्र षण्मुखाय नमः ॥ नासापुटयोः कम्बलाश्वतराभ्यां नमः ॥ दन्तेषु वायवे नमः ॥ जिह्वायां वरुणाय नमः ॥ हुंकारे सरस्वत्यै नमः ॥ गण्डयोः मासपक्षाभ्यां नमः ॥ ओष्ठयोः सन्ध्याद्वाभ्यां नमः ॥ ग्रीवायां रक्षेभ्यो नमः ॥ कुक्षौ साध्ये नमः ॥ जंघासु धर्माय नमः ॥ खुरमध्ये गन्धर्वेभ्यो नमः ॥ खुराग्रे कुलपर्वतेभ्यो नमः ॥ खुरपश्चिमाग्रेषु अप्सरोगणेभ्यो नमः ॥ पृष्ठे एकादशरुद्रेभ्यो नमः ॥ सर्वसन्धिषु वसुभ्यो नमः ॥ श्रोण्यौ पितृगणेभ्यो नमः ॥ पुच्छे सोमाय नमः ॥ पुच्छकेशेषु सूर्य-रश्मिभ्यो नमः ॥ गोमूत्रे गङ्गायै नमः ॥ गोमये यमुनायै नमः ॥ क्षीरे सरस्वत्यै नमः ॥ दध्नि नर्मदायै नमः ॥ घृते वह्नये नमः ॥ रोमेषु कोटिदेवेभ्यो नमः ॥ उदरे पृथिव्यै नमः ॥ स्तनेषु चतुः सागरेभ्यो नमः ॥

एते यस्याः स्तनो देवा सा धेनुर्वरदो मम ॥

स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्रपृष्टां मुक्ताफलसमर्पितं लांगूलवती कांस्यगोदेविकां विधाय प्रार्थयेत्।

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥

गोपुच्छतर्पणविधिः-

सकुशाक्षतयवं गोपुच्छं च गृहीत्वा प्राङ्मुखी यजमानौ देवतीर्थेन देवास्तर्पयेत्।

ॐ या नन्दनी सुशीलाद्या कामदाश्चैव धेनवः ।
ताः सर्वा पुच्छतोयेन तर्पितास्तर्पयन्तु माम्॥
ब्रह्मा विष्णुर्महादेवः कार्तिकेयो गणाधिपः।
पुष्पचापो महेन्द्रश्च भगवानच्युताग्रजः॥
देवा समस्ताः सगणाः सवाहनपरिच्छदाः।
सवसवोऽष्टौ द्वादशार्का रुद्रा एकादशेऽवतु ॥
विश्वेदेवाश्च सोमश्च मरुतो मातरस्तथा।
गन्धर्वा गुह्यकाश्चैव सागरा सरितस्तथा॥
राक्षसाः यक्षवेतालाः पूतनाः पर्वताः द्रुमाः।
तीर्थान्यापसरश्चैव पशवः पन्नगाः खगाः॥
ऋक्षाणि राशयः योगाः मासवर्षर्तुवासराः।
अयने च युगाः कल्पास्तथा मन्वन्तराणि च॥
भुवनानि दिशाकाशं तथा सर्वेन्द्रियाणि च।
ॐकारश्चैव गायत्री छन्दस्त्वङ्गानि चैव हि॥
वेदाश्च स्मृतयश्चैव पुराणानि तथैव च।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गन्धर्वो मन्त्रपारगाः॥

औषध्यो वनसम्भूता ग्राम्याश्चैव सुप्पिपलाः।
सानुगा देवताश्चैव मुनयः सगणास्तथा॥
ऋषयः ऋषिपत्यश्च सिद्धाश्च सगणास्तथा।
प्रजा प्रजापतिश्चैव येऽन्ये विघ्नविनायकाः॥
विद्याधराश्च दैत्याश्चैवाचार्या गुरवस्तथा।
डाकिन्यः क्षेत्रपालश्च भैरवाश्चाष्टसंख्यकाः॥
स्थावरा जङ्गमाश्चैव भूतग्रामचतुर्विधाः।
अक्षयेनाऽमृतेनैव मङ्गलेन सुवारिणा॥
गोपुच्छाग्रच्युतमेह मद्दतेन हितेऽखिला।
शाश्वतीं तृप्तिमायान्तु दात्र्यै युक्तवरप्रदाः॥
सूर्यः सोमः कुजः सौम्यो गुरुः शुक्रः शनैश्वरः।
ग्रहाश्च तृप्तिमायान्तु राहुकेतू समन्वितौ॥
इन्द्रो वह्निर्यमो रक्षः पाशो वायुर्धनाधिपः।
ईशोऽनन्तस्तथा ब्रह्मा सर्वे ते तर्पिता मया॥
सावित्र्या सह लोकेशः सलक्ष्मीकश्चतुर्भुजः।
महेशश्चोमया सार्द्धस्तृप्तिर्यान्तु च शाश्वतीम्॥
अत्रिर्वशिष्ठो भृगुगौतमौ च मरीचि दक्षो पुलहः पुलस्त्यः।
प्रचेतसः काश्यपविश्वमित्रौ भारद्वाजसंज्ञो जमदग्निरेव।
अन्ये च सर्वे मुनिपुंगवाश्च गृह्णन्तु दत्तं जलमद्य तुष्टयः॥

(जीवित्पितृकस्य तर्पणे निषेधोऽतस्तेन तन्न कार्य्यम्) ततो यज्ञोपवीतं कण्ठावरोहणं कृत्वा साक्षतकुशैः मनुष्यतीर्थेन मनुष्यांस्तर्पयेत् -

सनकः सनन्दनश्चैव सनातनस्तथैव च।
कपिलश्चासुरैश्चैव वोढुपञ्चशिखस्तथा।
ते तृप्तिमखिलायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः॥

ततो अपसव्यं विधाय द्विगुणितकुशतिलजलैः पितॄन् तर्पयेत् -

कव्यवाडवानलः सोमो यमश्चैवार्य्यमा तथा।
अग्निष्वाताः सोमपाश्च तथा बर्हिषदश्च ये।
तर्पितास्तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः।
यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।
वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च।
औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने।
वृकोदरश्च चित्रश्च चित्रगुप्तस्तथैव च।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः।
पितापितामहश्चै व तथैव प्रपितामहः।
माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही।
मातामहः प्रमातामहः प्रमातामहोपरः।
मातामही प्रमातामही प्रमातामहीपरा।
तृप्तिमायान्तु सकलाः गोपुच्छोदकतर्पणैः।
पितृवंशे मृते ये च मातृवंशेऽपि ये मृताः।
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः क्रियालोपगतास्तथा।
आब्रह्मस्तम्बपर्य्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः।
तृप्यन्तु सर्वदा सर्वे गोपुच्छोदकतर्पणैः।

ब्राह्मणपूजनम् -

गन्धाक्षतपुष्पमालादिभिः विप्रमर्चयित्वा, अनन्तरं वस्त्रद्रव्यरत्नादिभिः च अलङ्करणं कुर्यात्। प्रार्थयेत्-

ॐनमस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः॥
आपध्वनन्ताय सहस्रभानवे समीहितार्थार्पणकामधेनवः।
अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥
ॐ भूमावेवाग्रजन्मासि विप्र त्वं पुरुषोत्तमः।
प्रत्यक्षो यज्ञपुरुषः पूजां मे प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ अ॰शुना ते अ॰शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
उदङ्मुखस्तु विप्रः स्यात्पात्रलक्षणलक्षितः।
आज्यपात्रं करे कृत्वा सुवर्णेन समन्वितम्॥

प्राङ्मुखीं गाम् उदङ्मुखी विप्रः पुच्छदेशे स्वयं स्थित्वा आज्यपात्रं सतिलं कनकेन (सुवर्णेन) अन्वितं (युक्तं) प्रगृह्य गोपुच्छं तत्पात्रे निधाय दानसंकल्पं कुर्यात् ॥

अद्येत्यादि अमुकोऽहं ममामुष्मिन् कर्मणि श्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफलवाप्तये गोरोमसंख्यकदिव्यवत्सरावच्छिन्न स्वर्गलोकस्थितिकामांश्च पितृणां निरतिशयानन्दब्रह्मलोकप्राप्तये परमेश्वरप्रीतये च इमां सुपूजितां सालंकारां सवत्सां गां रुद्रदैवतममुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

दानवाक्यम् -

यज्ञसाधनभूतायाः विश्वस्याघविनाशिनी।
विश्वरूपधरोदेवः प्रीयतामनया गवा ॥

ततो ब्राह्मणः स्वस्तीति वदेत्-

अद्य कृतैतद्गोदानकर्मणः सांगतासिद्धये इदं हिरण्यमयं दक्षिणामग्निदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

कोदादिति ब्राह्मणप्रतिवचनम्।

ततो ब्राह्मणगवोः प्रदक्षिणाचतुष्टयं कुर्य्यात्-

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥
मया जन्मसहस्रेषु ह्यर्जितं पापसंचयम् ।
तत् सर्वं नाशय क्षिप्रं प्रदक्षिणा पदे-पदे॥

ब्राह्मणः गोपुच्छोदकेनाभिषेकं कुर्यात्। मन्त्राशीषं च दद्यात्। ततो यजमानः ब्राह्मणेन समन्वितां गावः नमस्कारप्रदक्षिणाञ्च कुर्यात्।

नमस्कारः- **नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।**
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥
यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजङ्गमम् ।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम् ॥
पञ्चगावः समुत्पन्ना मथ्यमाने महोदधौ।
तासां मध्ये तु या नन्दा तस्यै देव्यै नमो नमः ॥

प्रदक्षिणा -

सर्वकामदुघे देवी सर्वतीर्थाभिषेचिनि।
पावनि सुरभिश्रेष्ठे देवि तुभ्यं नमो नमः ॥
पापानि सर्वाणि पदे पदे या हरत्यहो तत्क्षणमेव नृणाम्।
प्रदक्षिणां तां परभक्तिभावात् समाचरे धेनुवरे प्रसीद ॥
गवां दृष्ट्वा नमस्कृत्य कुर्याच्चैव प्रदक्षिणम्।
प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥
मातरः सर्वभूतानां गावः सर्व सुखप्रदाः।
वृद्धिमाकाङ्क्षता पुंसा नित्यं कार्या प्रदक्षिणा ॥

इति चतुःसंख्यकप्रदक्षिणां विधाय प्रार्थयेत् -

या लक्ष्मीर्लोकपालानां या च धेनुः सरस्वती।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥

ततो ब्राह्मणः गोपुच्छान्वितजलेन यजमानशिरसि निषिच्य तिलकमन्त्रपाठादीनि दद्यात्।

ततो दक्षिणां भूयसी च दद्यात्। तथा यथोपन्नेनान्नेन ब्राह्मणांश्च सन्तोषयेत्।

व्यतीपाते च संक्रान्तौ ग्रहणे ग्रहदौष्ट्यके ।
असूतक्रमे विवाहे च रात्रौ गोदानमिष्यते ॥

इति गोदानविधिः

लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनू रूपेण संस्थिता।
घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु ॥
अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥

यज्ञोपवीत धारण प्रयोग

किसी भी अवस्था में यदि यज्ञोपवीत अशुद्ध हो जाये, अथवा धागा टूट जाय, या फिर शौचादि के समय कान में डालना भूल जायें तौ अपवित्र हो जाता है तब नया यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। इसी प्रकार जननाशौच, मरणाशौच, श्राद्ध, यज्ञ आदि में तथा सूर्य-चन्द्रग्रहण के उपरान्त नवीन यज्ञोपवीत धारण करना अपेक्षित है। यज्ञोपवीत धारण करने से पहले उसे संस्कारित करके प्रत्येक तन्तु में देवताओं का आवाहन व प्रतिष्ठापन कर सिद्ध (अभिमन्त्रित) करना आवश्यक होता है। अतः सर्वप्रथम संङ्कल्प करें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्य....... मम श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं नूतनयज्ञोपवीतधारणमहं करिष्ये।

इस प्रकार सङ्कल्प कर यज्ञोपवीत निम्नलिखित मन्त्र से प्रक्षालित करें-

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसः तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः तस्मा अरं गमाम वः यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥

इसके बाद हाथों के सम्पुट में यज्ञोपवीत रखकर गायत्री का दश बार आवेष्टित जप करें। तदुपरान्त किसी पात्र में यज्ञोपवीत रखकर पुष्पाक्षत से प्रत्येक सूत्र में देवताओं का आवाहन करें।

प्रथमतन्तौ ॐकारायनमः, ॐकारमावाहयामि।
द्वितीयतन्तौ ॐअग्नये नमः, अग्निमावाहयामि।
तृतीयतन्तौ ॐसर्पदेवताभ्यो नमः, सर्पानावाहयामि।
चतुर्थतन्तौ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि।
पञ्चमतन्तौ ॐपितृभ्यो नमः, पितृनावाहयामि।
षष्ठतन्तौ ॐ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि,
सप्तमतन्तौ ॐअनिलेभ्यो नमः, अनिलमावाहयामि।
अष्टमतन्तौ ॐयमाय नमः, यममावाहयामि।
नवमतन्तौ ॐविश्वेदेवेभ्यो नमः। विश्वान् देवानावाहयामि।

अथ ग्रन्थिदेवतानामावाहनम् - **ग्रन्थिमध्ये ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ ब्रह्मणमावाहयामि। ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णुमावाहयामि। ॐरुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि। ॐ प्रणवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। प्रणवाद्यावाहितदेवताः यथा स्थानमहं प्रतिष्ठापयामि।**

इन मन्त्रों से यज्ञोपवीत की गन्धाक्षत से प्रतिष्ठा करें तथा यज्ञोपवीत का मानसोपचार से पूजन करें।

ध्यानम्- ॐ प्रजापतेर्यत्सहजं पवित्रं कार्पाससूत्रोद्भवब्रह्मसूत्रम्।
ब्रह्मत्वसिद्धयै च यशः प्रकाशं जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्मसूत्रम्॥

तदनन्तर निम्नमन्त्र से सूर्यनारायण को यज्ञोपवीत दिखाना चाहिये।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

अथ यज्ञोपवीतधारणम् -

विनियोगः - यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्तदेवता त्रिष्टुपछन्दो यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥

इस प्रकार मंत्र पढ़कर पहले दाहिनी भुजा में यज्ञोपवीत डालकर तब कण्ठ में धारण करें। प्रत्येक यज्ञोपवीत धारण के बाद आचमन करें।

जीर्णसूत्र त्याग -

निम्नमन्त्र को पढ़कर जीर्ण यज्ञोपवीत अर्थात् पुराने जनेऊ को पहले सिर की ओर से निकालें। और यथा शक्ति गायत्री मन्त्र को जपकर उसे जल में प्रवाहित करें।

एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वाच्च परित्यागो गच्छसूत्रं यथासुखम्॥

अर्पणम् -

अनेन नवयज्ञोपवीतधारणार्थं कृतेन यथाशक्तिगायत्री जपकर्मणा सवितादेवता प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

इति यज्ञोपवीत धारण विधि

अथ सन्ध्याप्रारम्भः

पवित्रीकरणम् - वामहस्ते जलमादाय दक्षिणहस्तेन आत्मानं अभिसिञ्चेत् ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु । ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

त्रिराचम्य - निम्नलिखित तीन मन्त्रों के उच्चारण के साथ आचमन करते हुए मन में स्वाहा शब्द का उच्चारण करें ।

ॐ केशवाय नमः (स्वाहा)। ॐ नारायणाय नमः (स्वाहा)। ॐ माधवाय नमः (स्वाहा)। हस्तौ प्रक्षाल्य - ॐ गोविन्दाय नमः ।

आसनशुद्धिः विनियोगः - **ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः ।**

निम्न मन्त्र पढते हुए तीन बार पृथ्वी का स्पर्श करें -

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।

ॐ आधारासनायै कमलासनायै पृथिव्यै नमः ।

पवित्रीधारणम् - कुशा धारण करते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करें -

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।

शिखाबन्धनविनियोगः - **ॐ मानस्तोकेति मन्त्रस्य कुत्स ऋषिः जगति छन्द एको रुद्रो देवता शिखाबन्धने विनियोगः।** (निम्न मन्त्र से शिखाबन्धन करें -)

ॐ मानस्तोके तनयेमानऽ आयुषिमानो गोषुमानोऽअश्वेषुरी रिषः ।

मानोव्वीरानुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ।

तिलकधारणम् - निम्न मन्त्र से तिलक धारण करें -

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः ।

तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥

ॐ मृत्तिका चन्दनं चैव भस्म तोयं चतुर्थकम् ।

एभिर्द्रव्यैर्यथाकालमूर्ध्वपुण्ड्रं भवेत् सदा ॥

संकल्पः - अर्घ्यपात्र में जल लेकर निष्काम भावना से सन्ध्या का संकल्प करें ।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपराधे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे जम्मूद्वीपे आर्यावर्तेकदेशान्तर्गते पुण्यप्रदेशे. जनपदे..... नगरे....... ग्रामे...... क्षेत्रे प्रभवादिषष्टि संवत्सराणां मध्ये........ - संवत्सरे सूर्ये उत्तरायणे/दक्षिणायने उत्तर दक्षिण गोले.... मासे शुभे शुक्ले/कृष्णे पक्षे शुभपुण्यतिथौ वासरे ...... नक्षत्रे ....योगे....... करणे...राशिस्थिते श्रीसूर्ये....... राशिस्थिते चन्द्रेगोलोत्पन्नो. ..शर्माऽहं (वर्माहं/गुप्तोऽहं) ममोत्पातदुरितक्षयपूर्वकं श्रीगायत्रीप्रीत्यर्थ प्रातः मध्याह्न/सायं सन्योपासनकर्म करिष्ये ।

निम्न विनियोग के उच्चारण के साथ आचमनी में जल लेकर विनियोग करें -

विनियोग - ॐ ऋतं चेति त्यृचस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण-ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोगः।

निम्न मन्त्र से उच्चारण के साथ आचमनी में जल लेकर उसे पियें ।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत । ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ।

प्राणायाम विधि - प्राणायाम के तीन भेद होते हैं 1. पूरक 2. कुम्भक 3. रेचक

1. अंगूठे से दाहिने नाक को दबाकर बायें नाक से श्वास को धीरे-धीरे खींचने को "पूरक" कहते हैं। पूरक प्राणायाम करते समय निम्न मन्त्रों का मन से उच्चारण करते हुए नाभिदेश में नीलकमलदल के समान नीलवर्ण चतुर्भुज भगवान् विष्णु का ध्यान करें । रें।
2. जब श्वास रुक जाए तब अनामिका और कनिष्ठिका अंगुली से नाक के बाए छिद्र को भी दबा दें और मन्त्र जपते रहें। यह "कुम्भक" कहलाता है। कुम्भक प्राणायाम करते समय हृदय में विराजमान लाल वर्ण वाले चतुर्भुज ब्रह्मा का ध्यान करें ।
3. अंगूठे को हटाकर दाहिने छिद्र से श्वास को धीरे-धीरे छोड़ें। यह "रेचक" कहलाता है। रेचक प्राणायाम करते समय ललाट में श्वेतवर्ण शंकर का ध्यान करें।

विनियोगः - ॐ कारस्य ब्रह्म ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिः गायत्र्युष्णिगनु ष्टुब्बृ हतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि अग्निवायुसूर्यबृहस्पति- वरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता आपोज्योतिरिति शिरसः प्रजापतिऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्यादेवताः प्राणायामे विनियोगः।

(निम्न मन्त्र का स्मरण करते हुए प्राणायाम करें -)

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपोज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥(हस्तौ प्रक्षाल्य)

प्रातराचमनीयम् - (केवल प्रातः संध्या में निम्न आचमन करे)

विनियोगः - ॐ सूर्यश्च मेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यमन्युमन्युपतयो रात्रिश्च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

आचमनी में जल लेकर मन्त्र उच्चारण करने के बाद पियें ।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

मध्याह्नाचमनीयम् - (केवल मध्याह्न सन्ध्या में निम्न आचमन करें)

विनियोग - ॐ आपः पुनन्त्विति नारायण ऋषिरनुष्टुप् छन्द आपः पृथिवी ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

आचमनी में जल लेकर मन्त्र उच्चारण करने के बाद पियें ।

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम् । पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम् । यदुच्छिष्टमभोज्यं यद्वा दुश्चरितं मम । सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहः स्वाहा।

सायमाचमनीयम् - (केवल सायं सन्ध्या में निम्न आचमन करें)

विनियोगः - ॐ अग्निश्च मेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निमन्यु मन्युपतयोऽहश्च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

आचमनी में जल लेकर निम्न मन्त्र उच्चारण करने के बाद पियें ।

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

मार्जनविनियोगः - आपो हिष्ठेति त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्द आपो देवता मार्जने विनियोगः।

बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की तीन उंगलियों अथवा कुशा निर्मित पवित्री से अपने ऊपर जल का सिंचन करें ।

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवः। ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ॐ महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसः। ॐ तस्य भाजयतेह नः । ॐ उशतीरिवमातरः । ॐ तस्मा अरं गमामवः। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ॐआपो जनयथा च नः।

अभिमन्त्रण विनियोगः - ॐ द्रुपदादिवेत्यश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयोऽनुष्टुप् छन्द आपो देवताः शिरस्सेके विनियोगः।

दाहिने हाथ में जल लेकर बायें हाथ से ढककर निम्न मन्त्र के उच्चारण के बाद जल को सिर पर छिड़कें ।

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ।
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥

अघमर्षण विनियोगः - ॐ ऋतञ्चेति त्र्यृचस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तं दैवतमघमर्षणे विनियोगः ।

निम्न मन्त्रोच्चारण के साथ दाहिने हाथ में जल लेकर उसे नासिका पर लगायें । मन्त्रोच्चारण के बाद उस जल को बायें तरफ फेंक दें।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः । समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् । दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः । (हस्तौ प्रक्षाल्य)

विनियोगः - ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्द आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः ।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम् ॥

सूर्यार्घ्यविनियोगः - ॐ कारस्य ब्रह्मऋषिर्दैवि गायत्री छन्दः परमात्मा देवता तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।

मन्त्रः- ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्य च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।
एहिसूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्य दिवाकरः ॥
ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय इदमर्घ्य दत्तं न मम ॥ (जल को आँखों से लगायें)

ध्यानम् - ॐ ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्वृतशङ्खचक्रः ॥
नमोऽस्तु सूर्याय सहस्रभानवे नमोऽस्तु वैश्वानरजातवेदसे ।
त्वमेव चार्घ्य प्रतिगृह्यण देव देवाधिदेवाय नमो नमस्ते ॥

सूर्योपस्थानविनियोगः - ॐ उद्वयमिति प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिर्निचृद्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता चित्रमिति कुत्साङ्गिरसऋषिस् त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरेकाधिका ब्राह्मी त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

प्रातः काल में दाहिने पैर की एडी उठाकर दोनों हाथों को सीधा रखें, मध्याह्न संध्या में दोनों हाथों को ऊपर की ओर करें तथा सायं काल में बैठकर हाथ बन्दकमल के समान जोडकर निम्न मन्त्रों के उच्चारण के साथ सूर्योपस्थान करें।

ॐउद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥1
ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥2 ॥
ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ग्वँग् सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥
ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं ग्वँग् शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

अङ्गन्यासः - मन्त्रों के साथ-साथ अंगो का स्पर्श करें ।

ॐ हृदयाय नमः । ॐ भूः शिरसे स्वाहा । ॐ भुवः शिखायै वषट् । ॐ स्वः कवचाय हुम् । ॐ भूर्भुवः नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ॥ ॐ पुनातु शिरसि । ॐ भूः पुनातु पादयोः । ॐ भुवः पुनातु नाभौ । ॐ स्वः पुनातु हृदये । ॐ महः पुनातु कण्ठे । ॐ जनः पुनातु नेत्रयोः ।ॐ तपः पुनातु ललाटे । ॐ सत्यम् पुनातु शिरसि। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ सर्व पुनातु सर्वाङ्गे ।

गायत्र्यावाहनविनियोगः - ॐ तेजोऽसीति धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापति-ऋषिर्यजुस्त्रिष्टुब्बृहत्युष्णिहौ छन्दसी सविता देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः ।
ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि । धाम नामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ।

गायत्रीध्यानम् - ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा,
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता ।
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा,
अक्षसूत्रधरादेवी पद्मासनगता शुभा ॥

गायत्र्युपस्थानविनियोगः - ॐ गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषिः स्वराण्महापङ्क्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत् ॥

गायत्री शापविमोचन मन्त्राः

ब्रह्मशापविमोचनविनियोगः - ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्भुक्तियुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः ।

ॐ गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः ।
तां पश्यन्ति धीराः सुमनसो वाचमग्रतः ॥
ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि, तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ।
ॐ देवि गायत्रि त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ।

वसिष्ठ-शापविमोचनविनियोगः- अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठ ऋषिर्वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थ जपे विनियोगः।

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतिरसोऽस्म्यहम् ॥

(योनिमुद्रा दिखाकर तीन बार गायत्री जपें)

ॐ देवि गायत्रि त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव।

विश्वामित्र-शापविमोचनविनियोगः - ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्रऋषिर्विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशापविमोचनार्थ जपे विनियोगः ।

ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भा यदुद्भवाः ।
देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये ॥
ॐ देवि गायत्रि त्वं विश्वामित्र शापाद्विमुक्ता भव ।

शुक्रशापविमोचनविनियोगः - ॐ अस्य श्रीशुक्रशापविमोचनमन्त्रस्य श्रीशुक्रऋषि अनुष्टुप् छन्दः देवी गायत्री देवता शुक्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः ।

मन्त्र - ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरर्कज्योतिरहं शिवः ।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम् ॥
ॐ देवि गायत्रि त्वं शुक्रशापाद्विमुक्ता भव ।

प्रार्थना- अहो देवि महादेवि संध्ये विद्ये सरस्वति ।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तुते ॥

ॐ देवि गायत्रि त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव, वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव, विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव, शुक्रशापाद्विमुक्ता भव ।

जपस्य पूर्व मुद्रा (गायत्री जप से पूर्व निम्न 24 मुद्राओं को करें ।)

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा ।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा ॥
षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम् ॥
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम् ।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा॥
एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः ॥

गायत्रीजपविनियोगः - ॐ कारस्य ब्रह्म ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

मालाप्रार्थना - ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धि परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा ॥

गायत्री मन्त्रः (निम्न गायत्री मन्त्र का 108 बार जप करें -)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

- माला विसर्जनम् (जप के पश्चात् निम्न मन्त्र से माला विसर्जन करें)

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

जपान्तरं मुद्राः (गायत्री जप के पश्चात् निम्न 8 मुद्राओं को करें -)

सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शंखोऽथ पङ्कजम्।
लिङ्गनिर्वाणमुद्राश्च जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत् ॥

जपसमर्पणविनियोगः - ॐ देवा गातुविद इति मनसस्पतिर्ऋषिर्विराडनुष्टुप्छन्दो वातो देवता जपनिवेदने विनियोगः ।

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित मनसस्पत। इमं देवयज्ञस्वाहा वातेधाः॥

अनेन यथाशक्तिकृतेन गायत्रीजपाख्येन कर्मणा भगवान् सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम। (पृथ्वी पर जल छोड़े)

तत्पश्चात् निम्नलिखित गायत्री कवच का पाठ कर सकते हैं-

विनियोगः - अस्य श्री गायत्रीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो गायत्रीदेवता भूः बीजं भुवः शक्तिः स्वः कीलकं गायत्रीप्रीत्यर्थं गायत्रीकवचपाठे विनियोगः।

ध्यानम् -

पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोटिसमप्रभाम् ।
सावित्रीं ब्रह्मवरदां चन्द्रकोटिसुशीतलाम् ॥
त्रिनेत्रां सितवस्त्रां च मुक्ताहारविराजिताम् ।
वराभयाङ्कुशकशाहेमपात्राक्षमालिकाम् ॥
शङ्खचक्राब्जयुगलं कराभ्यां दधतीं वराम् ।
सितपङ्कजसंस्थाञ्च हंसारूढां सुखस्मिताम् ।
ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्रीकवचं जपेत् ॥

ॐ ब्रह्मोवाच

विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्रीकवचं श्रृणु ।
यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत् क्षणात् ॥
सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी ।
ललाटं ब्रह्मदैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी ॥
कर्णौ मे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बिके ।
गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ ॥
द्विजान् यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती ।
सांख्यायनी नासिकां मे कपोलौ चन्द्रहासिनी ॥
चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी ।
स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी ॥
उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया ।
जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी ॥
पार्श्वौ मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गोगोप्त्रिकाऽवतु ।
ऊर्वोरोंकाररूपा च जान्वोः संध्यात्मिकाऽवतु ॥
जङ्घयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका ।
सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादाङ्गुलीषु च ॥
सर्वाङ्ग वेदजननी पातु मे सर्वदाऽनघा ।
इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्याः सर्वपावनम् ॥
पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्वरोगनिवारणम् ।
त्रिसन्ध्यं यः पठेद्विद्वान् सर्वान् कामानुवाप्नुयात् ॥
सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञः स भवेद्वेदवित्तमः ।
सर्वयज्ञफलं प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात् ॥
प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थाश्चतुर्विधान् ।

(श्रीविश्वामित्रसंहितोक्तं गायत्रीकवचं सम्पूर्णम्)

गायत्रीविसर्जनविनियोगः - ॐ उत्तमे शिखरे इति वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः गायत्री देवता गायत्रीविसर्जने विनियोगः ।

ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम् ।

सूर्यप्रदक्षिणाविनियोगः - ॐ विश्वतश्चक्षुरिति भौवन ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो विश्वकर्मा देवता सूर्यप्रदक्षिणायां विनियोगः ।

मन्त्रः - ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्ध्यावाभूमी जनयन् देव एकः ।

अनेन सन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु । ॐ शक्राय नमः । ॐ शतक्रतवे नमः ।

वीणाधरे विपुलमङ्गलदानशीले
भक्तार्तनाशिनि विरञ्चिहरीशवन्द्ये ।
कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे,
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥

षोडशोपचार पूजन विधि

पूजा में जो वस्तु विद्यामान न हो उसके लिये 'मनसा परिकल्प्य सर्मपयामि' कहें।

वैदिक एवं लौकिक मन्त्रों के साथ षोडशोपचार पूजन की विधि ।

हाथ में अक्षत लेकर ध्यान करे-

भगवान गणेश जी का ध्यान-

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

भगवती गौरी जी का ध्यान करे-

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥
श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यानं सर्मपयामि।

ध्यान के बाद भगवान गणेश जी का आवाहन करे-

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहेवसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष ।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा दे। फिर अक्षत लेकर गणेश जी की दाहिनी ओर गौरी जी का आवाहन करे।

भगवती गौरी का आवाहन-

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यस्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥
हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि च।

उपर्युक्त मन्त्र केवल गौरी गणेश जी के लिये विहित है अन्यथा जिस देवता का पूजन करना हो उनके लिये जो मन्त्र विहित हो उस मन्त्र से ध्यान आवाहन करे।

तदनन्तर अधोलिखित मन्त्र प्रायः सभी देव के लिये षोडशोपचार पूजा में प्रयोग कर सकते हैं।

प्राण प्रतिष्ठा-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो 3 म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

गणेशाम्बिके! सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्। प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः (आसन के लिये अक्षत छोड़ें)

पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नानीय, पुनराचमनीय-

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥

एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि सर्मपयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। (इस मन्त्र से जल चढा दे)

दुग्धस्नान-

ॐ पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः पयस्वतीः। प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। (दूध से स्नान करायें)

दधिस्नान-

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयूꣳ षि तारिषत्॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधिस्नानं समर्पयामि। (दही से स्नान कराये)

घृतस्नान-

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतमवस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥
नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि।
(घी से स्नान कराये)

मधुस्नान-

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव॰ रजः।
मधुद्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥
पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि। (मधु से स्नान करायें)

शर्करास्नान-

ॐ अपा॒ रसमुद्वयस॒ सूर्ये सन्त॒ समाहितम्। अपा॒ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥
इक्षुरससमुद्भूतां शर्करा पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करा स्नानं समर्पयामि।
(शर्करा से स्नान करायें)

पञ्चामृतस्नान-

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सश्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेऽभवत्सरित्॥
पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (पञ्चामृत से स्नान करायें)

गन्धोदकस्नानं-

ॐ अ॒ शुना ते अ॒ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विनिःसृतम्।
इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तञ्च गृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।
(गन्धोदक से स्नान कराये)

शुद्धोदकस्नानं-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्तारौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥
गङ्गा च यमुना चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
(शुद्ध जल से स्नान करायें) शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि
(आचमन के लिये जल दें)

वस्त्र-

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो3 मनसा देवयन्तः॥
शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र समर्पित करें)

आचमन-

वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि (आचमन के लिये जल दें)

उपवस्त्र-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप॰ सं व्ययस्व विभावसो॥

यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति ।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं ।
(उपवस्त्राभावे रक्तसूत्रं समर्पयामि उपवस्त्र समर्पित करें)

यज्ञोपवीत-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रां प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाणपरमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं सर्मपयामि ।
(यज्ञोपवीत समर्पित करें)

आचमन -

यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।आचमन के लिये जल दें।

चन्दन-

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि ।
चन्दन अर्पित करें

अक्षत-

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी ॥
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् सर्मपयामि ।
अक्षत चढायें।

पुष्पमाला-

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि ।
(पुष्पमाला समर्पित करें)

दूर्वा-

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च ॥
दुर्वाकुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दुर्वाकुरान् समर्पयामि ।
(दूर्वा चढायें)

सिन्दूरम् -

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि ।
(सिन्दूर अर्पित करें)

अबीर गुलालादि द्रव्याणि -

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परि पातु विश्वतः ॥
अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् ।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।
अबीर आदि चढायें।

सुगन्धिद्रव्यम् -

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा२सं परि पातु विश्वतः॥
दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि

(सुगन्धित द्रव्य अर्पण करें)

धूपम् -

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः।
देवानामसि वह्नितमँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि।

(धूप दिखाये)

दीपम् -

ॐ अग्निर्ज्योतिज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा॥
ज्योर्ति सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥
साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं दर्शयामि।

(दीप दिखायें)

हस्तप्रक्षालनम् - ॐ हृषीकेशाय नमः। कहकर हाथ धो लें।

नैवेद्यम्-

नैवेद्य को प्रोक्षित कर गन्ध पुष्प से आच्छादित करें। तदन्तर जल से चतुष्कोण घेरा लगाकर भगवान के आगे रखें।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष२ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्॥

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

नैवेद्य निवेदित करें।

आचमन - नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। जल समर्पित करें।

ऋतुफलम् -

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वँ हसः॥
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

(ऋतुफल अर्पित करें)

आचमन - फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनीय जल अर्पित करें)

उत्तरापोऽशनम् - उत्तरापोऽशनार्थे जलं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। (जल दें)

करोद्वर्तन-

ॐ अ२शुना ते अ२ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि।

(मलयचन्दन समर्पित करें)

ताम्बूलम् -

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

(इलायची, लौंग-सुपारी के साथ ताम्बूल अर्पित करें)

दक्षिणा द्रव्यम् -

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

(द्रव्य दक्षिणा समर्पित करें)

आरार्तिकं -

ॐ इद꣡ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर꣡ सर्वगण꣡ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥
ॐ आ रात्रि पार्थिव꣡ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदाँसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आयर्तिकं समर्पयामि।
(कर्पूर की आरती करें आरती के बाद जल गिरा दें)

पुष्पाञ्जलिः-

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः।
मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्॥
नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि

(पुष्पाञ्जलि अर्पित करें)

प्रदक्षिणाम्-

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषा꣡ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि

(प्रदक्षिणा करें)

यहाँ तक सभी पूजन में उपर्युक्त मन्त्रों का उपयोग कर सकते हैं।

विशेषार्घ्य - ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और, दक्षिणा रखकर अर्घ्यपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें।

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद॥
अनेन सफलार्घेण वरदोऽस्तु सदा मम॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

(विशेषार्घ्य दें)

प्रार्थना-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

(साष्टाङ्ग नमस्कार करें)

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम ॥
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम।

ऐसा कहकर समस्त पूजनकर्म भगवान को समर्पित कर दें।

तर्पण प्रयोग विधि

गायत्री मन्त्र से शिखा बाँधकर तिलक लगाकर प्रथम दाहिनी अनामिका में दो कुशों की और बायीं अनामिका में त्रिकुश की पवित्री धारण करें। फिर हाथ में त्रिकुश, यव, अक्षत और जल लेकर सङ्कल्प पढ़ें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तेक देशान्तर्गते पुण्यप्रदेशे नगरे ग्रामे ....क्षेत्रे संवत्सरे.......अयने........ऋतौमासे पक्षे............तिथौ............. वासरे.......गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्ता/दासोऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणेक्त-फलप्राप्त्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये ।

आवाहनम् -

ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः।
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोरवर्तिनः ॥

देवतर्पणम्

देव तथा ऋषि तर्पण में पूर्व दिशा की ओर मुख करें, जनेऊ को सव्य रखें, दाहिना घुटना जमीन पर लगाकर बैठें। अर्घ्यपात्र में चावल छोड़ कर त्रिकुश को पूर्व की ओर अग्रभाग कर रखें। जल की अञ्जलि एक-एक हो। देवतीर्थ से अर्थात् दायें हाथ की अङ्गुलियों के अग्रभाग से जल दें। जलाञ्जलि को सोना, चाँदी, ताँबा अथवा काँसे के पात्र में डालें वा सामर्थ्यानुसार उपलब्ध पात्र में डालें। यदि नदी में तर्पण किया जाय तो दोनों हाथों को मिलाकर जल से भरकर गौ के सींग जितना ऊँचा उठाकर जल में अञ्जलि डालें।

निम्नलिखित प्रत्येक नाम मन्त्र के बाद 'तृप्यताम्' कहकर एक-एक अञ्जलि जल दें।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम् । ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम् । ॐ देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् । ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् । ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम् । ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम् । ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम् । ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम् । ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् । ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्।

ऋषितर्पणम्

इसी प्रकार निम्नलिखित मन्त्रों वाक्यों में मरीचि आदि ऋषियों को भी एक-एक अञ्जलि दें।

ॐमरीचिस्तृप्यताम्। ॐअत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तु प्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐक्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वशिष्ठस्तृप्यताम्। ॐप्रचेतास्तृप्ताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

दिव्यमनुष्यतर्पणम्

दिव्य मनुष्य तर्पण में उत्तर दिशा की ओर मुख करें, जनेऊ कंठी की तरह कर लें, गमछे को भी कंठी की तरह कर लें, सीधा बैठें। कोई घुटना भूमि पर न लगाएं। अर्घ्यपात्र में जौ छोड़ें। त्रिकुश को उत्तराग्र रखें। प्रजापत्य (काय) तीर्थ से अर्थात् कुशों को दाहिने हाथ की कनिष्ठिका के मूल भाग में रखकर यहीं से दो-दो अञ्जलियाँ जल दें।

ॐ सनकस्तृप्यताम् (2)। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् (2)। ॐ सनातनस्तृप्यताम् (2)। ॐकपिलस्तृप्यताम् (2)। ॐ आसुरिस्तृप्यताम् (2)। ॐ वोढुस्तृप्यताम् (2)। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् (2)। दिव्यपितृतर्पणम् (2)।

दिव्यपितृतर्पणम्

पितृ तर्पण में दक्षिण दिशा की ओर मुख कर अपसव्य हो जाएं अर्थात् जनेऊ को दाहिने कंधे पर रखकर बायें हाथ के नीचे ले जाएं। गमछे को भी दाहिने कंधे पर रखें। बायां घुटना भूमी पर लगाकर बैठें, अर्घ्य पात्र में कृष्ण तिल छोड़ें, कुशा को बीच से मोड़कर उनकी जड़ और अग्रभाग को दाहिने हाथ के तर्जनी और अँगूठे के बीच में रखें, पितृ तीर्थ से अर्थात् अँगूठे और तर्जनी के मध्यभाग से प्रत्येक मन्त्र पर तीन-तीन अञ्जलियाँ जल दें। जल में गंगाजल प्रयोग करना सर्वाधिक श्रेयस्कर है। अभाव में गंगाजल मिश्रित जल प्रयुक्त करें। गंगाजल के

अभाव में किसी पवित्र नदी-स्रोत-तड़ागादि का जल भी ग्रहण किया जा सकता है।

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा ।

ॐ सोमस्तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (3)।

ॐ यमस्तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (3)।

ॐ अर्यमा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (3)।

ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्तामिदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा (3)।

ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्तामिदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा (3)।

ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्तामिदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा (3)।

यमतर्पणम्

इसी प्रकार निम्नलिखित प्रत्येक नाम से यमराज को पितृतीर्थ से ही दक्षिणाभिमुखि हो तीन-तीन अञ्जलियाँ दे-

ॐ यमाय नमः (3)। ॐ धर्मराजाय नमः (3)। ॐ मृत्यवे नमः (3)।

ॐ अन्तकाय नमः (3)। ॐ वैवस्वताय नमः (3)1 ॐ कालाय नमः (3)।

ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः (3)। ॐ औदुम्बराय नमः (3)। ॐ दध्नाय नमः (3)।

ॐ नीलाय नमः (3)। ॐ परमेष्ठिने नमः (3)। ॐ वृकोदराय नमः (3)।

ॐ चित्राय नमः (3)। ॐ चित्रगुप्ताय नमः (3)।

पितरों का तर्पण करने के पूर्व निम्नाङ्कित मन्त्रों से हाथ जोड़कर सर्वप्रथम उनका आवाहन करें -

ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत आ वह पितृन् हविषे अत्तवे ॥
आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥
ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु जलाञ्जलिम्।

इसी तरह नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण कर तिल के साथ तीन-तीन अञ्जलियाँ जल दें

अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकः (शर्मा/वर्मा/गुप्ता) वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा (3)।

अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकः (शर्मा/वर्मा/गुप्ता) रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा (3)।

अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकः (शर्मा/वर्मा/गुप्ता) आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा (3)।

अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी गायत्रीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा (3)।

अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकी देवी सावित्रीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा (3)।

अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकी देवी सरस्वतीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा (3)।

यदि किसी की सौतेली माता मर गयी हो तो उसको भी तीन बार जल दें।

अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता अमुकी देवी गायत्रीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा (3)।

इसके बाद निम्नाङ्कित नौ मन्त्रों को पढते हुए पितृतीर्थ से जल गिराते रहें-

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥1॥
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वय ँ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम ॥2॥
आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥3॥
ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन् ॥4॥

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वाधायिभ्यः अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥5॥

ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ उच न प्रविद्म।
त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञँ सुकृतं जुषस्व ॥6॥

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः ॥7॥

माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः ॥8॥

मधुद्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥9॥

ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम् ॥

फिर नीचे लिखे मन्त्र का पाठ करें-

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त ॥

द्वितीयगोत्रतर्पणम् -

इसके बाद द्वितीय गोत्रवाले (ननिहाल के) मातामह (नाना) आदि का तर्पण करें। यहाँ भी पहले की भाँति निम्नलिखित वाक्यों को तीन-तीन बार पढकर तिल सहित जल की तीन-तीन अञ्जिलियाँ पितृतीर्थ से दें -

अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकः वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा (3)।

अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुकः रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा (3)।

अमुकगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामहः (वृद्ध परनाना) अमुकः आदित्यरूपः तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा (3)।

अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी गायत्रीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा (3)।

अमुकगोत्रा अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी सावित्रीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा (3)।

अमुकगोत्रा अस्मद् वृद्धप्रमातामही (वृद्ध परनानी) अमुकी देवी सरस्वतीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा (3)।

पत्न्यादितर्पणम्

इसके आगे पत्नी से लेकर आप्तपर्यन्त जो भी सम्बन्धी मृत हो गये हो, उनके गोत्र ओर नाम लेकर एक-एक अञ्जलि जल दें -

अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नी अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा।

अमुकगोत्रः अस्मत्सुतः (बेटा) अमुकः तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।

अमुकगोत्रा अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकीदेवी तृप्यतामिदंसतिलं जलं तस्यै स्वधा।

अमुकगोत्रः अस्मत् पितृव्यः (पिता के भाई) अमुकः तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।

अमुकगोत्रः अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकः तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।

अमुकगोत्रः अस्मद्भ्राता अमुकः तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।

अमुकगोत्रः अस्मत्सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) अमुकः तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।

अमुकगोत्रा अस्मत्पितृभगिनी बुआ अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा।

अमुकगोत्रा अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा।

अमुकगोत्रा अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहन) अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा।

अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहन) अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा।

अमुकगोत्रः अस्मच्छ्वशुरः (श्वशुर) अमुकः - तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।

अमुकगोत्रः अस्मद्गुरुः अमुकः तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।

अमुकगोत्रा अस्मदाचार्यपत्नी अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा ।

अमुकगोत्रः अस्मच्छिष्यः - अमुकः तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।

अमुकगोत्रः अस्मत्सखा अमुकः तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।

अमुकगोत्रः अस्मदात्मपुरुषः अमुकः तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।

इसके बाद सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो सीधे बैठ जाय । त्रिकुश को सीधा कर उनके अग्रभाग को पूर्व की ओर कर लें। फिर नीचे लिखे श्लोकों - को पढ़ते हुए देवतीर्थ से जल गिरायें।

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कुष्माण्डास्तरवः खगाः॥
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।
तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः॥

इसके बाद अपसव्य होकर जनेऊ ओर अंगोछे को भी दाहिने कंधे पर रखकर दक्षिणाभिमुख हो जाए। त्रिकुश को बीच से मोड़कर इनकी जड़ और अग्रभाग को मिलाकर पितृतीर्थ से जल गिरायें-

नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।
तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया॥1॥
येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति॥2॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः।
तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्॥3॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः॥4॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदम स्तु तिलोदकम्॥5॥

वस्त्रनिष्पीडनम् -

इस प्रकार सब पितरों का तर्पण हो जाने के बाद अँगोछे की चार तह कर उसमें तिल तथा जल छोड़कर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर जल के बाहर बायीं ओर पृथ्वी पर निचोड़ें-

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

भीष्मतर्पणम् -

इसके बाद भीष्मपितामह को पितृतीर्थ और त्रिकुशों से जल दें।

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्॥

सूर्य को अर्घ्यदान

इसके पश्चात् पात्र को जल तथा मिट्टी से स्वच्छ कर लें। उसके बाद पूर्वोक्त रीति से आचमन और प्राणायाम कर सव्य हो जाय अर्थात् जनेऊ को बायें कंधे पर कर लें। अर्घ्य में फूल चन्दन लेकर निम्नलिखित मन्त्र से सूर्य को अर्घ्य दें-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥
एष अर्घ्यः श्री सूर्याय नमः॥

सूर्यार्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें। इसके बाद दिशाओं एवं उनके अधिष्ठातृ देवताओं का वन्दन करें

ॐ प्राच्यै नमः, ॐ इन्द्राय नमः, ॐ आग्नेय्यै नमः, ॐ अग्नये नमः,
ॐ दक्षिणायै नमः, ॐ यमाय नमः, ॐ नैर्ऋत्यै नमः, ॐ निर्ऋतये नमः,
ॐ प्रतीच्यै नमः, ॐ वरुणाय नमः, ॐ वायव्यै नमः, ॐ वायवे नमः,
ॐ उदीच्यै नमः, ॐ कुबेराय नमः, ॐ ऐशान्यै नमः, ॐ ईशानाय नमः,
ॐ ऊर्ध्वायै नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ अधरायै नमः, ॐ अनन्ताय नमः॥

इस प्रकार दिशाओं और देवताओं को नमस्कार कर आसन पर बैठकर के नीचे लिखे मन्त्र पढकर एक-एक जलाञ्जलि दें।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः।
ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पते नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः।
ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

निम्नाङ्कित वाक्य पढ़कर यह तर्पण कर्म भगवान् को समर्पित करे-

अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् पितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां, न मम।

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

तदन्तर हाथ जोड़कर भगवान् का स्मरण करते हुए पाठ करें -

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नामजपादपि ।
न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम् ॥
ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॥

इति तर्पणप्रयोगः

अथ पंचबलिविधिः

1. गोबलि (पत्ते पर सव्य होकर) -

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः ।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥

इदं गोभ्यो, न मम ।

2. श्वानबलि (पत्ते पर जनेऊ कंठी करके)

द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ ।
ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥

इदं श्वभ्यां, न मम ।

3. काकबलि (भूमि पर अपसव्य होकर) -

ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा ।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयार्पितम् ॥

इदं काकेभ्यः, न मम ।

4. देवादिबलि (पत्ते पर सव्य होकर)

ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसंघाः ।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम् ॥

इदमन्नं देवादिभ्यो, न मम ।

5. पिपीलिकादिबलि (पत्ते पर)

पिपीलिकाः कीटपतंगकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः ।
तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु ।

इदमन्नं पिपीलीकादिभ्यो, न मम ।

इति पंचबलिविधिः

विशेष - वसु, रुद्र, आदित्यस्वरूप तथा गायत्री, सावित्री, सरस्वती स्वरूप के अनुसार सम्बन्ध से आमश्राद्ध करना चाहिए अर्थात् पितृपक्ष तथा मातृपक्ष में जिसकी श्राद्ध तिथि हो उसके सम्बन्ध से ही आमश्राद्ध (आमान्न अर्थात् कच्चे अन्न द्वारा श्राद्ध) होगा।

आमश्राद्धम्

ॐ विष्णुर्विष्णुर्हरिर्हरिस्त्रिराचम्य ।

दीपं प्रज्वाल्य सामग्रीं सम्पाद्य, तर्पणकर्म कृत्वा, वामहस्तगतं जलं दक्षिणहस्तेनालोडयेत् -

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनात्विति

इति मन्त्रेणाभिमन्त्र्य, जलं शिरसि दत्वा, कुशतिल जलान्यादाय संकल्पं कुर्यात् -

अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्य पितुर्वसुस्वरूपस्यामुक शर्मणः सांवत्सरिकै को द्दिष्ट श्राद्धतिथौ (महालयपरपक्षे श्राद्धतिथौ वा) यमयातनाद्युपस्थित-प्राणाप्यायनकामनायै वैकुण्ठलोकावाप्तये आमश्राद्धं करिष्ये ।

ततः अञ्जलिं बद्ध्वा -

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

इति त्रिर्जप्त्वाऽपसव्येन भूमौ शंख चक्रं विलिख्य तत्र कर्मपात्रं संस्थाप्य तस्मिन् मोटकान् क्षिपेत् -

पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

ततः जलम् -

शन्नो देवी रभिष्ट्य आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्रवन्तु नः ।

ततः तिलान् -

ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः ।
प्रत्वनमद्भि पृक्तः स्वधया पितृन् लोकान् प्रीणाहिनः स्वाहा ।

तत्पश्चात् तूष्णीं भूत्वा गन्धाक्षतपुष्पाणि च निक्षिपेत् ।

ततस्त्रिगुणेन कुशेन समालोडयेत् -

ॐ यद्देवा देव हेडनं देवा सश्च कृमा वयम्।
अग्निर्मा तस्मादेव सो विश्वान् मुञ्चन्वंष हसः ॥
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेना सि चकृमा वयम्।
वायुर्मा तस्मादेव सो विश्वान्मुञ्चन्त्वः हसः ॥
ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एना सि चकृमा वयम्।
सूर्यो मा तस्मादेव सो विश्वान्मुञ्चन्त्वः हसः ॥

ततस्त्रिगुणेन तेन कुशेन सामग्रीं च सिक्त्वाऽपसव्येन कुशतिलजलान्यादाय आसनं दद्यात् -

अद्यामुक गोत्रस्य वसुस्वरूपस्यामुक शर्मणः पितुरामश्राद्धे इदमासनं ते स्वधा।
ततः मोटकं संस्थाप्य सव्येन इदमासनमास्यताम् इति वदेत्।

ततः तिलान्दत्वा-

ॐ अपाहता असुरा रक्षां सि वेदिषदः। पितरमहमावाहिष्ये इति वदेत्।

अनन्तरं अञ्जलिं बद्ध्वा आवाहनम् -

ॐ उशन्तस्त्वा नि धी मह्युशन्तः समिधीमहि ।
उशन्नुशत आ वह पितृन्हविषे अत्तवे ॥

ततोऽर्घपात्रे मोटकान् क्षिपेत्-

पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।

ततः जलम् -

शन्नो देवी रभिष्ट्य आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्रवन्तु नः।

ततः तिलान् -

ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः ।
प्रत्नमद्भि पृक्तः स्वधया पितृन् लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा।

तत्पश्चात् तूष्णीं भूत्वा गन्धाक्षतपुष्पाणि च निक्षिपेत्।

ततः तदर्घपात्रं वामहस्ते निधाय तद्गतं पवित्रं परिवेषणपात्रे निधाय जलेन सिक्त्वाऽधोमुखेन दक्षिणहस्तेनाच्छाद्य पठेत् -

या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शं स्योनाः सुहवा भवन्तु ॥

ततः - **अद्यामुकगोत्रे वसुस्वरूपास्मत्पितृन् अमुकशर्मन् महालया परपक्षे आमश्राद्धे (सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट तिथौ वा) एषोऽर्घस्ते स्वधा।**

तदर्घजलेन पितरं संस्नाप्य **अर्घ प्रत्यर्धमस्तु** इति परिवेषणपात्रस्थं पवित्रं पुनरर्घपात्रे निधाय,**पितृस्थानमसि** इत्युक्त्वा तदासन वामती न्युब्जीकुर्य्यात् ।

पुनः - **पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः** इति मंत्रेण पितृपूजनं विधाय, मौटकतिलजलान्यादाय पितृतीर्थन -

अद्यामुकगोत्रवस्वरूपामुकशर्मन् पितरश्राद्धे पूजनविधावेतानि गन्धाक्षत-पुष्प-धूप-दीप नैवेद्य-ताम्बूल-दक्षिणा-वासांसि ते स्वधा। इति।

ततः परिवेषणपात्रे जलेन वामावर्तमण्डलं कृत्वा तत्र अन्नं परिवेष्य, पितृदक्षिणपार्श्वे साज्यं जलपात्रं निधाय, दक्षिणहस्तेनाधोमुखेन परिवेषणपात्रमालभ्य-

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः ॥ माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः ॥ मधुद्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

ततो वामहस्तं चाधोमुखं दक्षिणहस्ताधः कृत्वा -

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पां सुरे स्वाहा।

ततो दक्षिणाङ्गुष्ठेन-

कृष्णगव्यमिदं रक्ष मदीयम्। इदमन्नम् (अन्न दिखायें) इमा आपः (जल दिखायें) इदं हविः (अन्न दिखायें)। इति प्रदर्शयन्,

अन्नोपरि तिलान् विकीर्य - **ॐ अपहता असुरा रक्षार्थ सि वेदिषदः।**

ततः मोटकतिलजलान्यादाय- **अद्यामुकगोत्राय वसुस्वरूपाय अमुकशर्मणे पित्रे, आमश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते स्वधा इति समर्पयेत्** । ततोञ्जलिं बद्ध्वा पठेत्-

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः ॥ माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः ॥ मधुद्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

ॐ मधु मधु मधु ।

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु ।

अन्नोपरि जलेन- **शिवा आपः सन्तु।**

पुष्पेण - **सौमनस्यमस्तु ।**

अक्षतेन - **अक्षतं चारिष्टं चास्तु।**

ततः कुशतिलजलान्यादाय - **अद्यामुकगोत्राय वसुस्वरूपायाऽमुक शर्मणे पित्रे आमश्राद्धेदत्ते एतवन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।**

अनन्तरं सव्येन सपरिवारं पुष्पोपायनहस्तो भूत्वा प्रार्थयेत्-

ॐ गोत्रं नो वर्धताम्। दातारो नोभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यग्मद् बहुदेयञ्च नोऽअस्तु। अन्नं च नो बहु भवेत् अतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु। मा च वाचिष्म कञ्चन। एताः सत्याशिषः सन्तु पितुः प्रसादात्।

तत **आमश्राद्धसम्बन्धिसोपस्करदक्षिणामान्नेभ्यो नमः** इति सम्पूज्य।

दानसंकल्पः- **अद्येत्यादि अद्यामुकगोत्रस्य वसुस्वरूपास्यामुकशर्मणः पितुः प्राणाप्यायनकामनायै आमश्राद्धकर्मणः सांगत्वसिद्धये प्रतिष्ठार्थमिमानि सोपस्करदक्षिणानि आमन्नानि प्रजापतिदैवतानि अमुकामुकगोत्रभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमुत्सृजे।**

प्रार्थना- **अन्नमेव सदा लक्ष्मीरन्नमेव जनार्दनः।**
अन्नं ब्रह्माखिलत्राणमस्तु मे जन्म-जन्मनि।

तत अपसव्येन पतितवामजानुः पितृविसर्जनं कुर्यात् -

ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादा मा द्यावापृथिवी विश्वरूपे ।
आ मा गन्तां पितरा मातरा च मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्।

तत सव्यं भूत्वा अर्घचालनम्, दीपनिर्वापणं विधाय प्रार्थयेत्-

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥
इति जलं समर्पयेत् ।

ततः पितरश्राद्धे वारत्रयं जपेत् -

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

अनन्तरं बलित्रयं दद्यादिति शम्।

॥ अथ पुरुषसूक्तम् ॥

हरिः ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १॥
पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ ८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ९॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥ १०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत ॥ ११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽकल्पयन् ॥ १३॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ १५॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ १६॥

॥ इति पुरुषसूक्तम् सम्पूर्णम् ॥

श्रीसूक्तम्

ॐ ॥ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम् ॥ ३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८॥
गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १०॥
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥ १५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ १६॥

इति श्रीसूक्तम्

अथ रुद्रसूक्तम्

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ १ ॥
या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥ २ ॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत् ॥ ३ ॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि ।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमना असत् ॥ ४ ॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव ॥ ५ ॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैनं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे ॥ ६ ॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥ ७ ॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥ ८ ॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ॥ ९ ॥
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत ।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥ १० ॥
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥ ११ ॥
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः ।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् ॥ १२ ॥
अवतत्य धनुष्ट्वं सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥ १३ ॥
नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥ १४ ॥
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥ १५ ॥
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥ १६ ॥

इति रुद्रसूक्तम्

अपराजितास्तोत्रम्

विनियोगः -

ॐ अस्या वैष्णव्याः पराया अजिताया महाविद्यायाः वामदेव-बृहस्पति-मार्कण्डेया ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती छन्दांसि। लक्ष्मीनृसिंहो देवता । ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं बीजम् । हुं शक्तिः । सकलकामनासिद्ध्यर्थं अपराजितविद्यामन्त्रपाठे विनियोगः ।

धयानं -

ॐ नीलोत्पलदलश्यामां भुजङ्गाभरणान्विताम् ।
शुद्धस्फटिकसङ्काशां चन्द्रकोटिनिभाननाम् ॥ १ ॥
शङ्खचक्रधरां देवी वैष्ण्वीमपराजिताम् ।
बालेन्दुशेखरां देवीं वरदाभयदायिनीम् ॥ २ ॥
नमस्कृत्य पपाठैनां मार्कण्डेयो महातपाः ॥ ३ ॥

मार्कण्डेय उवाच -

शृणुष्वं मुनयः सर्वे सर्वकामार्थसिद्धिदाम् ।
असिद्धसाधनीं देवीं वैष्णवीमपराजिताम् ॥ ४ ॥

ॐ नमो नारायणाय, नमो भगवते वासुदेवाय, नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रशीर्षायणे, क्षीरोदार्णवशायिने, शेषभोगपर्य्यङ्काय, गरुडवाहनाय, अमोघाय अजाय अजिताय पीतवाससे,ॐ वासुदेव सङ्कर्षण प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, हयग्रीव, मत्स्य कूर्म्म, वाराह नृसिंह, अच्युत, वामन, त्रिविक्रम, श्रीधर राम राम राम। वरद, वरद, वरदो भव, नमोऽस्तु ते, नमोऽस्तुते, स्वाहा,

ॐ असुर-दैत्य-यक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-कूष्माण्ड- सिद्ध-योगिनी-डाकिनी-शाकिनी-स्कन्दग्रहान् उपग्रहान्नक्षत्रग्रहांश्चान्या हन हन पच पचमथ मथ विध्वंसय विध्वंसय विद्रावय विद्रावय चूर्णय चूर्णय शङ्खेन चक्रेण वज्रेण शूलेन गदया मुसलेन हलेन भस्मीकुरु कुरु स्वाहा।

ॐ सहस्रबाहो सहस्रप्रहरणायुध, जय जय, विजय विजय, अजित, अमित, अपराजित, अप्रतिहत, सहस्रनेत्र, ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, विश्वरूप बहुरूप, मधुसूदन, महावराह, महापुरुष, वैकुण्ठ, नारायण, पद्मनाभ, गोविन्द, दामोदर, हृषीकेश, केशव, सर्वासुरोत्सादन, सर्वभूतवशङ्कर, सर्वदुःस्वप्नप्रभेदन, सर्वयन्त्रप्रभञ्जन, सर्वनागविमर्दन, सर्वदेवमहेश्वर, सर्वबन्धविमोक्षण, सर्वाहितप्रमर्दन, सर्वज्वरप्रणाशन, सर्वग्रहनिवारण, सर्वपापप्रशमन, जनार्दन, नमोऽस्तुते स्वाहा।

य इमामपराजितां परमवैष्णवीमप्रतिहतां पठति सिद्धां स्मरति सिद्धां महाविद्यां जपति पठति शृणोति स्मरति धारयति कीर्तयति वा न तस्याग्निवा युवज्रोपलाशनिवर्षभयं, न समुद्रभयं, न ग्रहभयं, न चौरभयं, न शत्रुभयं, न शापभयं वा भवेत् ।

क्वचिद्रात्र्यन्धकारस्त्रीराजकुलविद्वेषि-विषगरगरदवशीकरण-विद्वेषोच्चाटनवधबन्धनभयं वा न भवेत्। एतैर्मन्त्रैरुदाहृतैः सिद्धैः संसिद्धपूजितैः।

ॐ नमोऽस्तुते । अभये, अनघे, अजिते, अमिते, अमृते, अपरे, अपराजिते, पठति, सिद्धे जयति सिद्धे, स्मरति सिद्धे, एकोनाशीतितमे, एकाकिनि, निश्चेतसि, सुद्रुमे, सुगन्धे, एकान्नशे, उमे ध्रुवे, अरुन्धति, गायत्रि, सावित्रि, जातवेदसि, मानस्तोके, सरस्वति, धरणि, धारणि, सौदामनि, अदिति, दिति, विनते, गौरि, गान्धारि, मातङ्गी कृष्णे, यशोदे, सत्यवादिनि, ब्रह्मवादिनि, कालि, कपालिनि,करालनेत्रे, भद्रे, निद्रे, सत्योपयाचनकरि, स्थलगतं जलगतं अन्तरिक्षगतं वा मां रक्ष सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा।

यस्याः प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि ।
म्रियते बालको यस्याः काकवन्ध्या च या भवेत् ॥ ११ ॥
भूर्जपत्रे त्विमां विद्यां लिखित्वा गन्धचन्दनैः ।
एतैर्दोषैर्न लिप्येत सुभगा पुत्रिणी भवेत् ॥ १३ ॥
शस्त्रं वारयते ह्येषा समरे काण्डदारुणे ॥ १४ ॥
गुल्मशूलाक्षिरोगाणां क्षिप्रं नाश्यति च व्यथाम् ॥
शिरोरोगज्वराणां न नाशिनी सर्वदेहिनाम् ॥ १५ ॥

तद्यथा-एकाहिकद्वयाहिक त्र्याहिक-चातुर्थिकार्धमासिक-द्वैमासिक-त्रैमासिक-चातुर्मासिक-पञ्चमासिकषाण्मासिक-वातिक-पैचिक श्लेष्मिक, सान्निपातिक-सततज्वर-विषमज्वराणां नाशिनी सर्व देहिनां ओं हर हर कालि सर गौरि धम धम विद्ये आले ताले माले गन्धे पच पच विद्ये मथ मथ विद्ये, नाशय पापं, हर दुःस्वप्नं, विनाशय मातः, रजनि सन्ध्ये दुन्दुभिनादे मानसवेगे शंखिनी चक्रिणी वज्रिणी शूलिनी अपमृत्यु-विनाशिनी विश्वेश्वरी द्राविडि द्राविडि केशवदयिते, पशुपति सहिते, दुन्दुभिनादे मानसवेगे, दुन्दुभि-दमनी शवरि

किराती मातंगी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ ॐ श्रां श्रुं श्रं श्रौं श्रः ॐ क्ष्वौ तुरु तुरु स्वाहा । ॐ ये इमां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा तान् दम दम मर्दय मर्दय पातय पातय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय ब्रह्माणि माहेश्वरि ।

वैष्णवी वैनायकी कौमारी नारसिंही ऐन्द्री चान्द्री आग्नेयी चामुंडे वारणि वायव्ये रक्ष रक्ष प्रचण्डविद्ये ॐ इन्द्रोपेन्द्र-भगिनी जये विजये शान्तिपुष्टितुष्टिविवर्द्धिनी। कामांकुशे कामदुधे सर्वकामफलप्रदे सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाहा । ॐ आकर्षणी आवेशिनी तापिनी, धरणि धारिणी मदोन्मादिनी शोषिणी सम्मोहिनी महानीले नीलपताके महागौरि महाप्रिये महानान्द्रिका महासौरि महामायूरि आदित्यरश्मिनी जाह्नवी यमघण्टे किलि किलि चिन्तामणि सुरभिसुरोत्पन्ने सर्व-काम-दुधे यथाभिलषितं कार्यं तन्मे सिध्यतु स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ।

ॐ यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहा ।
ॐ बले बले महाबले असिद्धि साधिनी स्वाहा ।

-इति श्रीत्रैलोक्यविजया अपराजिता सम्पूर्णा-

महामृत्युञ्जयजपविधिः

विनियोगः -

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वसिष्टऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीत्र्यम्बकरुद्रो देवता श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः मम यजमानस्य वा शरीरे सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकसकलमनोरथसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

अथ ऋष्यादिन्यासः - ॐ वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे । श्रीत्र्यम्बकरुद्रदेवतायै नमः हृदये । श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ।ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥

अथ करन्यासः -

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय जीवय तर्जनीभ्यां स्वाहा ।

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट् ।

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं अनामिकाभ्यां हुँ ।

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ।

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥

हृदयादिन्यासः -

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः ।

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय जीवय शिरसे स्वाहा ।

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट् ।

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं कवचाय हुँ ।

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय अस्त्राय फट् ॥

वर्णन्यासः -

ॐ त्र्यं नमः दक्षिणचरणाग्रे । बं नमः कं नमः यं नमः जां नमः दक्षिणचरणसन्धिचतुष्केषु । मं नमः वामचरणाग्रे । हें नमः सुं नमः गं नमः धिं नमः वामचरणसन्धिचतुष्केषु । पुं नमः गुह्ये। ष्टिं नमः आधारे । वं नमः जठरे । र्द्धं नमः हृदये । नं नमः कण्ठे । ॐ उं नमः दक्षिणकराग्रे। र्वां नमः रुं नमः कं नमः मिं नमः दक्षिणकरसन्धिचतुष्केषु । वं नमः वामकराग्रे । वं नमः धं नमः नां नमः मृं नमः वामकरसन्धिचतुष्केषु । त्यों नमः वदने । मुं नमः ओष्ठयोः । क्षीं नमः घ्राणयोः । यं नमः दृशोः । मां नमः श्रवणयोः । मृं नमः भ्रुवोः । तां नमः शिरसि । पदन्यासः । त्र्यम्बकं शिरसि । यजामहे भ्रुवोः । सुगन्धिं दृशोः । पुष्टिवर्द्धनं मुखे । उर्व्वारुकं गण्डयोः । इव हृदये । बन्धनात्जठरे, मृत्यो-गुह्ये । मुक्षीय-उर्वोः । मा जानुनोः । अमृतात् पादयोः ॥

ध्यानम् -

चन्द्रोद्भासित-मूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्
हस्ताब्जेन दधत् सुदिव्यममलं हास्यायपङ्केरुहम् ।
सूर्येन्द्वग्नि-विलोचनं करतले पाशाक्षसूत्राङ्कुशा-
म्भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरे ॥

मन्त्र -

ॐ ह्रौं जूँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ भूर्भुवः स्वरों जूँ सः ह्रौं ओम् ॥

शुद्ध इष्टकाल ज्ञानार्थ इष्ट स्थान के सूर्योदय बनाने की विधि

सूर्योदय से जन्म काल तक के समय को इष्टकाल कहा जाता है। इसे प्रायः घटीपलात्मक काल में निकाला जाता है। किसी भी इष्ट स्थान का इष्टकाल बनाने के लिए वहां के सूर्योदय काल की आवश्यकता होती है। अतः जन्मकालीन स्टैण्डर्ड समय मे से वहां के स्टैण्डर्ड सूर्योदय को घटाने पर और 2.5 से गुणा करने पर घटीपलात्मक इष्टकाल प्राप्त होता है। इस कारण किसी भी स्थान के स्टैण्डर्ड सूर्योदय को बनाना महत्त्वपूर्ण है।

किसी भी स्थान के स्टैण्डर्ड सूर्योदय को निकालने के लिए वहां के अक्षांश, उस दिन की क्रान्ति, वेलान्तर और रेखांश की आवश्यकता होती है। छः घण्टे में चरकाल संस्कार करने पर स्थानीय सूर्योदय बनता है। तथा स्थानीय सूर्योदय में वेलान्तर व रेखान्तर का संस्कार करने पर वहां का स्टैण्डर्ड सूर्योदय बनता है।

उदाहरण - 1 जुलाई 2018 को दिल्ली का स्टैण्डर्ड सूर्योदय बनाना है। दिल्ली का उत्तरी अक्षांश 28: 39 अंश कला है। रेखांश 77: 12 पूर्व है। क्रान्ति सारिणी द्वारा इस दिन की उत्तरा क्रान्ति 23: 8 प्राप्त हुई। रेखांश 77:12 का भारतीय मानक रेखांश (82:30) से अन्तर 5: 18 है। जिसे चार से गुणा करने पर 21 मिनट 12 सैकण्ड रेखान्तर प्राप्त होता है। जो मानक रेखांश से कम (पश्चिम) होने के कारण धनात्मक है। उपर्युक्त उपकरणों द्वारा स्टैण्डर्ड सूर्योदय का साधन आसानी से किया जा सकता है।

स्थानीय सूर्योदय साधन - पंचांग में दी गई अक्षांश तथा रेखांश के द्वारा चर मिनटादि निकालना चाहिए। जैसे दिल्ली के अक्षांश 28: 39 तथा क्रान्त्यंश 23 अंश के नीचे चर मिनट 53: 38 तथा 24 अंश के नीचे 56 :19 लिखा हुआ है अभीष्ट चर क्रान्ति 23:08 का लाना है। अतः अभीष्ट चर मिनट निकालने के लिए निम्नलिखित प्रकार से अनुपात किया-

यदि 1 अंश क्रान्त्यन्तर (24- 23 = 1) में चर मिनट (56:19 - 53:38 =02:41) मिलते हैं तो क्रान्त्यंशान्तर (23: 8 - 23 : 00 = 00 :08) में क्या मिलेगा?

$$\frac{2:41 \times 0:8}{1:00} = 00:21:28 \text{ मिनटादि}$$

इसका 23 क्रान्त्यंश के चर मिनट 53:38 में जोड़ने पर 53 मिनट 59 सैकण्ड अभीष्ट चर हुआ।

चर संस्कार विधि - चर का साधन करने पर यदि उत्तरा क्रान्ति व उत्तरी अक्षांश हों तो चरमिनटादि छः घण्टे में घटाने पर एवं दक्षिणा क्रान्ति व उत्तरी अक्षांश हो तो चरमिनटादि जोड़ने पर स्थानीय सूर्योदय होता है। जैसे हमारे भारतवर्ष में सर्वत्र उत्तरी अक्षांश हैं। अतः यहां उपर्युक्त प्रकार से स्थानीय सूर्योदय का साधन किया जाता है। इसी प्रकार उत्तरा क्रान्ति व दक्षिण अक्षांश हो तो छः घण्टे में चरमिनटादि जोड़ने पर तथा दक्षिणा क्रान्ति व दक्षिणी अक्षांश हो तो छः घण्टे में चरमिनटादि घटाने पर स्थानीय सूर्योदय होता है। जैसे आस्ट्रेलिया का दक्षिणी अक्षांश है वहां पर इसी प्रकार से स्थानीय सूर्योदय क्रान्ति की दिशानुसार साधन करना चाहिए। स्थानीय समय से तात्पर्य धूप घड़ी द्वारा बतलाये जाने वाले समय से है।

हमारे उदाहरण के अनुसार 1 जुलाई को क्रान्ति उत्तरा है तथा अक्षांश भी उत्तरी है, अतः पूर्वोक्त साधित अभीष्ट चर मिनटादि का छः घण्टे में ऋणात्मक संस्कार किया जाएगा।

```
  6:00:00
- 0:53:59
  5:06:01 स्थानीय सूर्योदय
```

वेलान्तर व रेखान्तर संस्कार - वेलान्तर सारिणी में दिए हुए मिनटादि ऋणात्मक या धनात्मक मान को संस्कारित करने पर तथा रेखान्तर मिनटादि को मानक रेखा से अपना स्थान पूर्व में होने पर ऋण तथा पश्चिम में होने पर धन संस्कार करना चाहिए। पूर्वोक्त उदाहरण में। जुलाई को वेलान्तर सारिणी से 3:38 (+) मिनटादि वेलान्तर प्राप्त हुआ है। इसका संस्कार स्थानीय सूर्योदय में करने पर -

```
  5:06:01
+0:03:38
  5:09:39
```

इसमें रेखान्तर मिनट 21:12 का संस्कार भारतीय मानक रेखा से दिल्ली के पश्चिम में होने के कारण धनात्मक करने पर -

05:09:39
+00:21:12

05:30:51 स्वल्पान्तर से 5:31 स्टैण्डर्ड सूर्योदय है।

विशेष - प्रतिदिन का स्पष्टान्तर (रेखान्तर एवं वेलान्तर का संस्कार) पंचांग में दिनमान के बाद स्टैं. अं. कॉलम में अंकित किया गया है। स्थानीय सूर्योदय समय में इस स्पष्टान्तर का संस्कार करने पर भी स्टैंडर्ड सूर्योदय प्राप्त होता है। इस पंचांग में दिए गए सभी घण्टामिनटात्मक समय भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में है। जो हमारे हाथ घड़ी या प्रचलित व्यावहारिक समय के अनुसार है।

इष्टकाल साधन - सूर्योदय से जन्म काल तक के समय को इष्टकाल कहते है। इसे प्रायः घटीपलात्मक काल में निकाला जाता है। इष्टकाल साधन के निम्नलिखित नियम हैं -

1. यदि जातक का जन्म सूर्योदय के पश्चात् दोपहर 12 बजकर 59 मिनट तक हो तो प्राप्त स्टैंडर्ड सूर्योदय के मान को जन्मकालीन स्टैण्डर्ड समय में से घटाने पर और 2.5 से गुणा करने पर घटीपलात्मक इष्टकाल प्राप्त होता है।

उदाहरण - जातक का जन्म दिनांक 1 जुलाई 2018 को दिल्ली में प्रात: 12 बजकर 58 मिनट में हुआ। तब निम्नलिखित प्रकार से इष्टकाल साधन किया जाएगा

जन्म समय 12:58
सूर्योदय - 05:31

07:27

इस 07:27 मान को 2.5 से गुणा करने पर 18:37:30 घटीपलात्मक मान प्राप्त हुआ। यही इष्टकाल होगा।

2. यदि जातक का जन्म दोपहर 1:00 बजे से रात्रि 12 बजकर 59 मिनट तक हो तो जन्म समय में 12 घण्टे जोड़कर उसमें से स्टैंडर्ड सूर्योदय केमान को घटाने पर और 2.5 से गुणा करने पर घटीपलात्मक इष्टकाल प्राप्त होता है।

उदाहरण - जातक का जन्म दिनांक 1 जुलाई 2018 को दिल्ली में रात्रि 09 बजकर 58 मिनट में हुआ। तब निम्नलिखित प्रकार से इष्टकाल साधन किया जाएगा -

जन्म समय 09:58+12:00 = 21:58

21:58
सूर्योदय - 05:31

16:27

इस 16:27 मान को 2.5 से गुणा करने पर 41:07:30 घटीपलात्मक मान प्राप्त हुआ। तब यही इष्टकाल होगा।

3. यदि जातक का जन्मरात्रि 1:00 बजे से दूसरे दिन के सूर्योदय से पूर्व तक हो तो जन्म समय में 24 घण्टे जोड़कर उसमें से स्टैंडर्ड सूर्योदय के मान को घटाने पर और 2.5 से गुणा करने पर घटीपलात्मक इष्टकाल प्राप्त होता है।

उदाहरण - जातक का जन्म दिनांक 2 जुलाई 2018 को प्रातः 05 बजकर 30 मिनट में हुआ। क्योंकि 2 जुलाई के सूर्योदय 05:31 बजे से पूर्व का जन्म है अतः 1 जुलाई 2018 के सूर्योदय से इष्टकाल की गणना होगी। तब निम्नलिखित प्रकार से इष्टकाल साधन किया जाएगा -

जन्म समय 05:30+24:00 = 29:30

29:30
सूर्योदय -05:31

23:59

इस 23:59 मान को 2.5 से गुणा करने पर 59:57:30 घटीपलात्मक मान प्राप्त हुआ। तब यही इष्टकाल होगा।

4. यदि ठीक सूर्योदय काल का जन्म हो तो इष्टकाल 00घटी०० पल होगा।

जैसे-

पूर्वोक्त 2 जुलाई को 5:31 सूर्योदय के समय में ही जन्म होने पर इष्टकाल 00:00 जानना चाहिए।

नैसर्गिक पंचांग से इष्ट स्थान का तिथ्यादि घटीमान साधन

नैसर्गिक पंचांग के तिथि, नक्षत्र, योग एवं करण की घटियों में सामान्यतः स्पष्ट देशान्तर घटी (धन या ऋण) का संस्कार करने से इष्ट स्थान के तिथ्यादि घटी मान प्राप्त होते हैं। देशयोरन्तरं देशान्तरम्। अर्थात् दो देशों (स्थान विशेष) का अन्तर ही देशान्तर होता है। यह देशान्तर रेखांश एवं अक्षांश भेद से दो प्रकार का होता है। इन दोनों के आधार पर ही स्पष्ट देशान्तर साधन करना चाहिए। इस हेतु सर्वोत्तम विधि यह है कि नैसर्गिक पंचांग में दिल्ली का सूर्योदय स्टैण्डर्ड टाइम - में दिया ही गया है। अब अभीष्ट दुसरे स्थान का भी स्टैण्डर्ड सूर्योदय साधन करना चाहिए। फिर दोनों स्थानों के स्टैण्डर्ड सूर्योदयों (घण्टा व मिनट में) का अन्तर = निकाल कर उसे ढ़ाई से गुणाकर घटी पलात्मक बनायें। तत्पश्चात् घटीपलात्मक - इस अन्तर को दिल्ली के तिथ्यादि मान (घटीपलात्मक) में धन या ऋण संस्कार - कर दुसरे स्थान का तिथ्यादि मान (घटीपलात्मक) प्राप्त होता है। यदि अभीष्ट स्थान दिल्ली से पूर्व की ओर होगा तो नैसर्गिक पंचांग के घटीपलात्मक तिथ्यादि मान में धन संस्कार होगा। यदि अभीष्ट स्थान दिल्ली से पश्चिम है तो नैसर्गिक पंचांग के घटीपलात्मक तिथ्यादि मान में ऋणसंस्कार करना चाहिए।

उदाहरण- दिनांक 13 अप्रैल 2021 को नैसर्गिक पंचांग से हमें गढ़वाल (अक्षांश 30:15 उत्तर तथा रेखांश 79:30 पूर्व) का तिथ्यादि घट्यादि मान ज्ञात करना है। 13 अप्रैल 2021 को दिल्ली का स्टैण्डर्ड सूर्योदय 6 बजकर 02 मिनट है। अब गढ़वाल का स्टैण्डर्ड सूर्योदय साधन करते हैं।

गढ़वाल के रेखांश 79:30 (पूर्व) का भारतीय मानक रेखांश 82:30 पूर्व से अन्तर 3 अंश है। इसे 4 मिनट से गुणने पर रेखान्तर +12 मिनट हुआ।

गढ़वाल का चरमान साधनविधि - 13 अप्रैल को क्रान्ति सारिणी में देखने पर 9:8:17 क्रान्त्यंश मिलते हैं। अब चर सारिणी का प्रयोग करते हैं। सारिणी में गढ़वाल के अक्षांश 30:15 का क्रान्त्यंश नहीं दिये गये है। अतः सर्वप्रथम 30 अंश अक्षांश में 9 अंश क्रान्त्यंश के 20:59 मिनटादि चर तथा 31 अंश अक्षांश में 9 अंश क्रान्त्यंश के 21:50 मिनटादि चर को लेते हैं। फिर इनकी सहायता से 30:15 अक्षांश में 9 अंश क्रान्त्यंश का मिनटादि चर अनुपात से ज्ञात करते हैं। यदि (31-30=) एक अंश अक्षांशान्तर में 9 अंश के क्रान्त्यंशोंका अन्तर (21:50-20:59=) 0:51 मिनटादि प्राप्त होता है तो (30:15-30=) 00:15 अंशादि में क्या?

0:51 x 00:15 = 0:12:45 मिनटादि अथवा 0:13 स्वल्पान्तर से
01:00

उपर्युक्त मान को 30 अक्षांश के चरमान में जोड़ने पर 30:15 अक्षांश के 9 क्रान्त्यंश का चरमान 21:22 मिनटादि प्राप्त हुआ।

अब इसी प्रकार से 30:15 अक्षांश में 10 अंश क्रान्त्यंश का मिनटादि चर अनुपात से ज्ञात करते हैं। 30 अंश अक्षांश में 10 अंश क्रान्त्यंश के 23:22 मिनटादि चर तथा 31 अंश अक्षांश में 9 अंश क्रान्त्यंश के 24:21 मिनटादि चर को लेते हैं। फिर इनकी सहायता से 30:15 अक्षांश में 10 अंश क्रान्त्यंश का मिनटादि चर अनुपात से ज्ञात करते हैं। यदि (31-30-) एक अंश अक्षांशान्तर में 10 अंश के क्रान्त्यंशों का अन्तर (24:21-23:22=) 0:59 मिनटादि प्राप्त होता है तो (30:15-30-) 00:15 अंशादि में क्या?

0:59 x 00:15 = 0:14:45 मिनटादि अथवा 0:15 स्वल्पान्तर से
1:00

उपर्युक्त मान को 30 अक्षांश के चरमान में जोड़ने पर 30:15 अक्षांश के 10 क्रान्त्यंश का चरमान 23:37 मिनटादि प्राप्त हुआ।

अब 30:15 अक्षांश के 9 अंश क्रान्त्यंश तथा 10 अंश क्रान्त्यंश के चरमान का अन्तर (23:37-21:22-) 2:15 मिनटादि प्राप्त हुआ। परन्तु हमें 9:8:17 क्रान्त्यंश के चरमान अभीष्ट हैं। अतः पुनः अनुपात से अभीष्ट चरमान प्राप्त करते हैं। यदि (10-9) एक अंश क्रान्त्यंशान्तर में चरान्तर (23:37-21:22-)2:15 मिनटादि प्राप्त होता है तो अभीष्टान्तर (9:8:17-9-) 00:8:17 अंशाादि में क्या?

2:15 x 00:8:17 = 0:18:38 मिनटादि अथवा 0:19 स्वल्पान्तर से
1:00

उपर्युक्त मान को 9 क्रान्त्यंश के चरमान में जोड़ने पर अभीष्ट क्रान्त्यंश का चरमान 21:41 मिनटादि प्राप्त हुआ।

गढ़वाल का स्टैण्डर्ड सूर्योदय साधन -

गढ़वाल के अक्षांश उत्तरी हैं। 13 अप्रैल को उत्तरा क्रान्ति होने के कारण उपर्युक्त चरमान को 6 घण्टे में घटाने पर 5:38:19 स्थानीय सूर्योदय हुआ। इसमें 13 अप्रैल के बेलान्तर संस्कार+00:27 मिनटादि का संस्कार करने पर 5:38:46 हुआ। इसमें +12 मिनट रेखान्तर संस्कार करने पर 5:50:46 स्टैण्डर्ड सूर्योदय मान प्राप्त हुआ। स्वल्पान्तर से 13 अप्रैल 2021 को 5 बजकर 51 मिनट गढ़वाल का स्टैण्डर्ड सूर्योदय है। इसी प्रकार अन्य स्थानों का भी स्टैण्डर्ड सूर्योदय निकाला जा सकता है।

तिथ्यादि मान परिवर्तन - दिल्ली व गढ़वाल के स्टैण्डर्ड सूर्योदयों का अन्तर (6:02-5:51-) 00:11 घण्टा मिनटात्मक हुआ। इसे ढ़ाई से गुणा करने पर 0:27 स्वल्पान्तर से घट्यादि अन्तर हुआ। क्योंकि अभीष्ट स्थान गढ़वाल, दिल्ली से पूर्व की ओर है। अतः दिल्ली के घट्यादि प्रतिपदा तिथिमान 10:34 में उपर्युक्त 0:27 घट्यादि मान को जोड़ने पर गढ़वाल का घट्यादि तिथिमान 11:01 आ गया। इसी प्रकार दिल्ली के नक्षत्रादि घटीमान में उपर्युक्त घट्यादि स्पष्ट देशान्तर का संस्कार करने से गढ़वाल का मान प्राप्त हो जायेगा। 13 अप्रैल को पंचांग के घट्यादि मान दिल्ली व गढ़वाल में इस प्रकार से होंगे-

तिथ्यादि	दिल्ली में घट्यादि मान	गढ़वाल में घट्यादि मान
प्रतिपदा तिथि	10:34	11:01
अश्विनी नक्षत्र	20:36	21:03
विष्कुम्भ यांग	22:56	23:23
बव करण	10:34	11:01

विशेष - भारतीय मानक समय में दिये गये तिथ्यादि के घण्टा मिनटात्मक मान भारतवर्ष के सभी स्थानों के लिए एक समान ही रहेंगे। अभीष्ट देश के सूर्यादि ग्रहों का साधन अपने स्थानीय इष्टकाल तथा ग्रहपंक्ति पर से करना चाहिए। इसके लिए देशान्तर संस्कार की आवश्यकता नहीं है। लग्न और दशम लग्न का साधन अभीष्ट देश (स्थान विशेष) के इष्टकाल से करना चाहिए। कुछ पञ्चाङ्गों में स्थानीय सूर्योदय दिया रहता है एवं कुछ पञ्चाङ्गों में स्टैण्डर्ड सूर्योदय। किस पञ्चाङ्ग में स्थानीय सूर्योदय दिया गया है? इसको जानने का सरल तरीका यह है। कि जिस पञ्चाङ्ग के सूर्योदय एवं सूर्यास्त के मानों का योग 12 घण्टे या 24 घण्टे आता है, उसमें स्थानीय सूर्योदय दिया है। स्थानीय सूर्योदय में बेलान्तर एवं रेखान्तर का संस्कार (स्पष्टान्तर संस्कार) करने से स्टैण्डर्ड सूर्योदय होता है। दो देशों (स्थानों) के स्टैण्डर्ड सूर्योदयों का अन्तर ही स्पष्ट देशान्तर होता है।

चौघड़िया मुहूर्त

रविवार		चन्द्रवार		भौमवार		बुधवार		गुरुवार		शुक्रवार		शनिवार	
दिवा	रात्रि	दिवा	रात्रि	दिवा	रात्रि	दिवा	रात्रि	दिवा	रात्रि	दिवा	रात्रि	दिवा	रात्रि
उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ
चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग
लाभ	चर	शुभ	काल	चर	उद्वेग	काल	अमृत	उद्वेग	रोग	अमृत	लाभ	रोग	शुभ
अमृत	रोग	रोग	लाभ	लाभ	शुभ	शुभ	चर	चर	काल	काल	उद्वेग	उद्वेग	अमृत
काल	काल	उद्वेग	उद्वेग	अमृत	अमृत	रोग	रोग	लाभ	लाभ	शुभ	शुभ	चर	चर
शुभ	लाभ	चर	शुभ	काल	चर	उद्वेग	काल	अमृत	उद्वेग	रोग	अमृत	लाभ	रोग
रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल
उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ

गण्डमूल नक्षत्रों के चरण फल

नक्षत्र / चरण	अश्विनी	अश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती
प्रथम चरण	पितृ कष्ट	सुख	मातृ कष्ट	भ्रातृ कष्ट	पितृ कष्ट	लाभप्रद
द्वितीय चरण	सुख	धनहानि	पितृ कष्ट	भ्रातृ कष्ट	मातृ कष्ट	सुखद
तृतीय चरण	सुयोग	मातृ कष्ट	सुखद	मातृ कष्ट	धन हानि	शुभ
चतुर्थ चरण	सुखद	पितृ कष्ट	शुभ	शरीर कष्ट	सौख्यम्	कष्ट

शिव वास

वर्तमान तिथि गुणा 2 को 5 से जोड़कर 7 से भाग देने पर प्राप्त शेष एकादि होने पर क्रमशः शिव का वास निम्नानुसार जानें।

शेष	शिव वास	फल
1	कैलाश	श्रेष्ठ
2	गौरी सह	श्रेष्ठ
3	वृषभ पर	श्रेष्ठ
4	सभा में	सामान्य
5	ज्ञान वेला	श्रेष्ठ
6	क्रीड़ा में	नेष्ट
0	श्मशान में	मृत्यु

अग्निवास विचार

शुक्ल प्रतिपदा से इष्ट तिथि पर्यन्त जो संख्या आये उसमें सूर्यादि वार संख्या मिलाकर 1 जोड़ें फिर प्राप्त संख्या में 4 से भाग देनें पर शेष 3 व ० हो तो अग्निवास भूमि पर शुभहोता है तथा 1 शेष बचे तो स्वर्ग में प्राण नाशक और शेष 2 रहने पर अग्निवास पाताल में धन नाशक होता है, ऐसा जानना चाहिए।

ग्रहों की दान वस्तुएं, दान का समय एवं हवन समिधा ज्ञानार्थ चक्र

ग्रह	दान वस्तुएं	दान समय	होम समिधा
सूर्य	माणिक, सुवर्ण, ताम्र, गेहूं, गुड़, घी, रक्तपुष्प, केशर, मूंग, लाल गाय, लालवस्त्र, लाल चन्दन	सूर्योदय	अर्क
चन्द्र	मोती, सुवर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दही, श्वेतपुष्प, शंख, कर्पूर, श्वेत बैल, श्वेतवस्त्र, श्वेतचन्दन,	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा, सुवर्ण, ताम्र, मसूर, गुड़, घी, रक्तकेशर, केशर, कस्तूरी, लाल बैल, रक्तवस्त्र, लालचन्दन,	दिन की 2 घटीशेष	खदिर
बुध	पन्ना, सुवर्ण, कांस्य, मूंग, खांड, घी, सर्वपुष्प, हाथीदांत, कर्पूर, शस्त्र, हरितवस्त्र, फल	दिन की 5 घटीशेष	अपामार्ग
गुरु	पुखराज, सुवर्ण, कांस्य, दाल/चना, खांड, घी, पीतपुष्प, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, पीतवस्त्र, पीतफल	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा, सुवर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, श्वेतपुष्प, सुगन्ध, दधि, श्वेत घोड़ा, श्वेतवस्त्र, श्वेत चन्दन	सूर्योदय	उदुबर
शनि	नीलम, सुवर्ण, लोहा, उड़द, कुलथी, तेल, कृष्णपुष्प, कस्तूरी, कृष्णान्न, भैंस, कृष्णवस्त्र, उपानह	मध्याह	शमी
राहु	गोमेद, सुवर्ण, सीसा, तिल, सरसों, तेल, कृष्णपुष्प, खड्ग, कम्बल, घोड़ा, नीलावस्त्र, शस्त्र	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया, सुवर्ण, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूम्रपुष्प, नारियल, कम्बल, बकरा, धूम्रवस्त्र, शस्व	रात्रि	कुशा
मुन्था	भौम, सुवर्ण, चांदी, चावल, सुवर्ण, घी, श्वेतपुष्प, कपूर, मिश्री, श्वेतवस्त्र, श्वेतचन्दन, हाथीदांत	मुन्थेश काल	-

अंग स्फुरण फल - मनुष्य के शरीर के किसी भी अंग में अचानक स्फुरण होने पर प्राचीन आचायों द्वारा शुभाशुभ ज्ञान विधि कड़ी गई है, परन्तु यदि स्फुरण निरन्तर लम्बे समय तक होता रहे तो वह वायुविकार से सम्बन्धित होता है, उस स्फुरण द्वारा शुभाशुभ फल नहीं जानना चाहिए। यदि अंग में स्फुरण अत्यल्प काल के लिए हो तो वह भावी शुभाशुभ का बोधक होता है। सामान्यतया स्त्री का वामांग तथा पुरुष का दक्षिणांग स्फुरण शुभ माना जाता है। अंग स्फुरण का फल निम्नलिखित प्रकार से जानना चाहिए-

स्थान		फल	स्थान		फल	स्थान		फल	स्थान		फल
मस्तक	-	भूमिलाभ	भृकुटि	-	धनप्राप्ति	कण्ठ	-	आभूषण	पृष्ठ	-	पराजय
बाहुप्रदेश	-	प्रियप्राप्ति	ललाट	-	स्थानलाभ	नासिका	-	सुगन्धलाभ	ग्रीवा	-	शत्रुभय
नाभि	-	स्त्रीनाश	गुप्तांग	-	प्रियप्राप्ति	नेत्र	-	प्रियदर्शन	कान	-	आयुवृद्धि
स्कन्ध	-	मित्रभेंट	कुक्षि	-	सुप्रीति	जंघा	-	हानिप्रद	कपोल	-	स्त्रीसुख
वक्ष	-	विजय	कटि	-	प्रियप्राप्ति	घुटना	-	शत्रुसन्धि	भ्रूमध्य	-	सुखप्राप्ति
अधर	-	प्रियप्राप्ति	हृदय	-	इष्टसिद्धि	हस्त	-	धनप्राप्ति	पाद	-	स्थानप्राप्ति

नवग्रह शांति उपाय

सूर्य

वैदिक मन्त्र - ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

सूर्य गायत्री - आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरी मन्त्र - ॐ घृणि सूर्याय नमः ॥

बीज मन्त्र - ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः ॥

तान्त्रिक मन्त्र - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ॥

जप संख्या - 7000 (सप्तसहस्राणि)

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकलक्षणकारकः। विषमस्थानसम्भूतां पीड़ां दहतु मे रविः ॥

चन्द्र

वैदिक मन्त्र - ॐ इमन्देवाऽअसपत्न२ सुवध्वम्महते क्षत्रायमहतेज्येष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमीराजा सोमोस्माकम्ब्राह्मणाना२ राजा ।

चन्द्र गायत्री - ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलरूपाय धीमहि तन्नो सोमः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरी मन्त्र - ॐ सों सोमाय नमः ॥

बीज मन्त्र - ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः ॥

तान्त्रिक मन्त्र ॐ श्रीं श्रीं श्रीं सः चन्द्रमसे नमः ।

जप संख्या - 11000 एकादशसहस्राणि

रोहिणीशः सुधामूर्त्तिः सुधागात्रो सुधाशनः। विषमस्थानसम्भूतां पीड़ां दहतु मे विधुः ॥

भौम

वैदिक मन्त्र - ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् । अपा२ रेता२ सि जिन्वति ॥

भौम गायत्री - ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरी मन्त्र - ॐ अं अङ्गारकाय नमः ॥

बीज मन्त्र - ॐ हूँ श्रीं भौमाय नमः ॥

तान्त्रिक मन्त्र -ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः ॥

जप संख्या - 10000 (दशसहस्राणि)

भूमिपुत्रो महातेजा जगतो भयकृत्सदा। वृष्टिकृद-वृष्टिहर्ता च पीड़ां दहतु मे कुजः ॥

बुध

वैदिक मन्त्र - ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स२ सृजेथामयञ्च अस्मिन्त्सधस्थेऽ अध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

बुध गायत्री - ॐ सौम्यरूपाय विद्महेवाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरी मन्त्र - ॐ बुं बुधाय नमः ॥

बीज मन्त्र - ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः ॥

तान्त्रिक मन्त्र ॐ ब्रां ब्रीं श्रीं सः बुधाय नमः ॥

जप संख्या 9000 (नवसहस्राणि)

उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्यप्रियकरो विद्वान पीड़ां दहतु मे बुधः ॥

गुरु

वैदिक मन्त्र - ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषुयद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम् ।

गुरु गायत्री - ॐ आङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरी मन्त्र - ॐ बृं बृहस्पतये नमः ॥

बीज मन्त्र- ॐ ह्रीं क्लीं हूँ बृहस्पतये नमः ॥

तान्त्रिक मन्त्र - ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः ॥

जप संख्या - 19000 एकोनविंशतिसहस्राणि

देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेकशिष्यैः सम्पूर्णः पीड़ां दहतु मे गुरुः ॥

शुक्र

वैदिक मन्त्र - ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानठँशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ।

शुक्र गायत्री - ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय - धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरी मन्त्र - ॐ शुं शुक्राय नमः ॥

बीज मन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः ॥

तान्त्रिक मन्त्र - ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः ॥

जप संख्या - 16000 (षोडशसहस्राणि)

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्चमहाद्युतिः । प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीड़ां दहतु मे भृगुः ॥

शनि

वैदिक मन्त्र - ॐ शन्नो देवीरभिष्टय।आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः ।

शनि गायत्री - ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युपुरुषाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरी मन्त्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः ॥

बीज मन्त्र-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ॥

तान्त्रिक मन्त्र - ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः ॥

जप संख्या - 23000 (त्रयोविंशतिसहस्राणि)

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीड़ां दहतु मे शनिः ॥

राहु

वैदिक मन्त्र - ॐ कया नश्चित्र।आभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया व्वृता

राहु गायत्री - ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरी मन्त्र - ॐ रां राहवे नमः ॥

बीज मन्त्र - ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः ॥

तान्त्रिक मन्त्र - ॐ भ्रां श्रीं श्रौं सः राहवे नमः ॥

जप संख्या - 18000 (अष्टादशसहस्राणि)

महाशीर्षो महावक्त्रो महाद्रष्टो महायशाः। अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीड़ां दहतु मे तमः ॥

केतु

वैदिक मन्त्र - ॐ केतुङ् कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे । समुषद्भिरजायथा । **केतु गायत्री** - ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरी मन्त्र - ॐ कें केतवे नमः ॥ **बीज मन्त्र** - ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः ॥ **तान्त्रिक मन्त्र** - ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः ॥

जप संख्या - 18000 (अष्टादशसहस्राणि) अनेकरूपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्रशः। उत्पात रूपी घोरच पीड़ां दहतु मे शिखी ॥

वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली - 110016



बायें से दायें क्रमशः प्रो. देवीप्रसादत्रिपाठी, अध्यक्ष-वास्तुशास्त्रविभाग, प्रो. मुरलीमनोहरपाठक, कुलपति, श्री.ला.ब.शा.रा.सं.वि.वि., नई दिल्ली, महाराजा डॉ. टोनी नाडर, प्रमुख महर्षि विश्वविद्यालय (वैश्विक) एवं शोधकेन्द्र तथा राजा डॉ. लुईस, कुलपति, महर्षि विश्वविद्यालय, नीदरलैण्ड, परस्पर समझौता पत्र हस्ताक्षर करने के उपरान्त

1. **प्रमाणपत्र (प्रवेशिका) :** यह षाण्मासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम स्थापत्य वेद एवं वेदोत्तरवर्ती वास्तुशास्त्र की मूल संकल्पना एवं प्राथमिक जानकारी पर आधारित है।
2. **एकवर्षीय डिप्लोमा एवं द्विवर्षीय एडवांस डिप्लोमा :** ये दोनों पाठ्यक्रम वास्तुशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्तों का जन-जीवन में प्रयोग एवं उपयोग पर आधारित है। इनमें संस्कृत भाषा का भी प्राथमिक ज्ञान दिया जायेगा।
3. **शास्त्री (बी.ए.) :** यह त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है, जिसमें वास्तुशास्त्र का वैदिक परम्परा पर आधारित वास्तुशास्त्रीय मूलभूत संस्कृत भाषा में निबद्ध मानक ग्रन्थो के द्वारा विस्तृत अध्ययन किया जाता है।
4. **आचार्य (एम.ए.) :** यह द्विवर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम है जिसमें वास्तुशास्त्र के प्रमुख प्राचीन आधारभूत मानक ग्रन्थों का विस्तृत और गम्भीर विषयों का प्रायोगिक अध्ययन किया जाता है।
5. **विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) :** वास्तुशास्त्र के गम्भीर, जटिल एवं लोकोपयोगी विषयों पर अनुसन्धान के माध्यम से नवीन तथ्यों की अन्वेषण एवं लोककल्याण के लिये यह गवेषणात्मक पाठ्यक्रम चलाया जाता है।
6. **पी.जी.डिप्लोमा :** विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा मान्यता प्राप्त नवीकरण कार्यक्रम (इन्नोवेटिव प्रोग्राम) के तहत 2004 से द्विवर्षीय स्नातकोत्तरवास्तुशास्त्रोपाधि (पी.जी. डिप्लोमा) पाठ्यक्रम चल रहा है।

नोट- विश्वविद्यालय द्वारा संचालित उक्त सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश प्रक्रिया जुलाई में विश्वविद्यालय के निर्धारित नियमों के अनुरूप सम्पन्न होती है। वास्तुशास्त्र द्वारा षाण्मासिक प्रमाणपत्रीय, एकवर्षीय एवं द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की कक्षायें शनिवार एवं रविवार को सञ्चालित की जाती हैं। शेष पाठ्यक्रम सोमवार से शुक्रवार को विद्यापीठ के कार्य दिवसों में सम्पन्न किये जाते हैं।

विशेष- वास्तुशास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, दिल्ली तथा महर्षि विश्वविद्यालयों (वैश्विक) व शोधकेन्द्रों के साथ परस्पर समझौता पत्र (M.O.U), हस्ताक्षरित किये गये हैं जिससे शिक्षण एवं शोध की दिशा में परस्पर सहयोग किया जा सके।